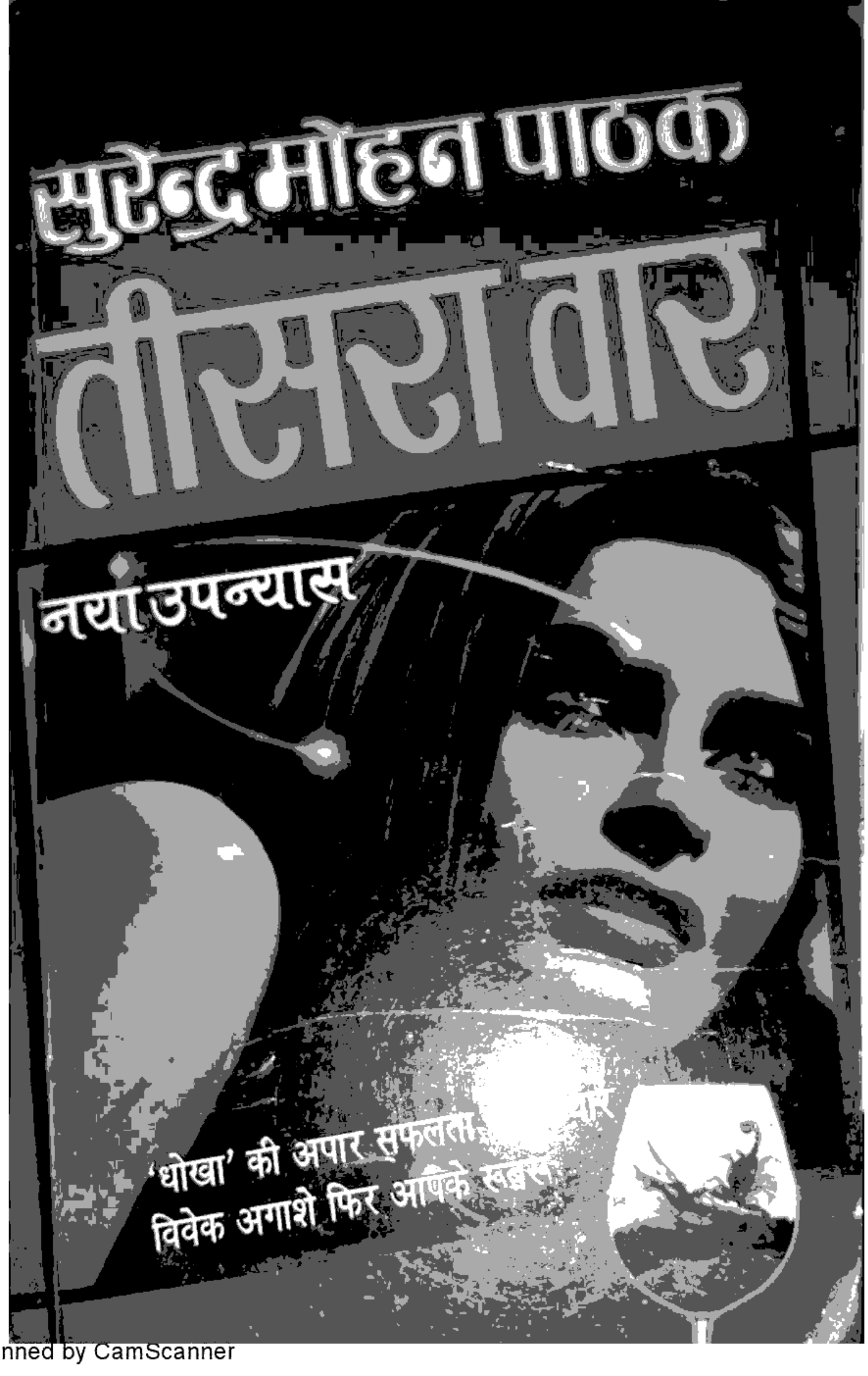
# सुरेन्द्र मोहन पाठक

# तीसरा वार

नया उपन्यास



'धोखा' की अपार सफलता
विवेक अगाशे फिर आपके रूबरू

Scanned by CamScanner



परमीत मेहरा को रंगीला राजा, मनचला, मजनू,
छैला बाबू, रोमियो, कैसानोवा, प्लेब्वाय
जैसे कई नामों से पुकारा जा सकता था
लेकिन उसकी असल जात औकात पहचानने वाला
कोई उसे लम्पट, शोहदा या
औरतखोर ही कहता।
इसी वजह से वीकएण्ड पर कार लेकर
दिल्ली की सड़कों पर भटकना
उसका पसंदीदा शगल था।
फिर एक रोज उसे अपना मेच मिल गया
और वो परमीत मेहरा से परमीत मेहरा मरहूम बन गया।

# तीसरा वार

नया [illegible] अतिविशिष्ट आयोजन!

[illegible]
पॉकेट
बुक्स

ISBN 81-7604-791-0
9 788176 047913
Price Rs. 60/-
A.H.W. TIGER SERIES

Scanned by CamScanner

थ्रिलर उपन्यास

# तीसरा वार

Scanned by CamScanner

# सुरेन्द्र मोहन पाठक
# के
# राजा पॉकेट बुक्स
# में अन्य उपलब्ध उपन्यास

| | | |
|---|---|---|
| ● | प्यादा | (सुधीर सीरीज) |
| ♦ | भक्षक | (सुनील सीरीज) |
| ● | जाल | (सुनील सीरीज) |
| ❖ | बिचौलिया | (सुनील सीरीज) |
| ● | नकाब | (सुनील सीरीज) |
| ❖ | मकड़जाल | (थ्रिलर) |
| ❖ | ग्रैंड मास्टर | (थ्रिलर) |
| ♦ | वहशी | (थ्रिलर/मुकेश माथुर) |
| ❖ | आठ दिन | (थ्रिलर/विकास गुप्ता) |
| ● | मिडनाइट क्लब | (थ्रिलर/जीता) |
| ● | धोखा | (थ्रिलर/विवेक आगाशे) |
| ● | तीसरा वार | (थ्रिलर/विवेक आगाशे) |
| ✡ | भड़कीली दुनिया | (नई जोक बुक) |
| ❑ | जाना कहां | (विमल सीरीज) |

प्रस्तुत उपन्यास

## सुरेन्द्र मोहन पाठक की आगामी पेशकश

# गवाही

## गैंगस्टर-पुलिस-गठजोड़ थ्रिलर

अपने निकट के पुस्तक विक्रेता, रोडवेज बुक स्टाल, ए.एच. व्हीलर एंड कंपनी व सभी रेलवे बुक स्टालों से खरीदें, न मिलने पर कोई भी 300/- या अधिक मूल्य के उपन्यासों का मनीऑर्डर **राजा पॉकेट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084** के पते पर भेजकर घर बैठे प्राप्त करें। डाक व्यय माफ। अपना फोन नम्बर अवश्य दें।

♦ निशान वाले उपन्यासों का मूल्य 30/- ❖ निशान वाले उपन्यासों का मूल्य 40/-
✡ निशान वाले उपन्यासों का मूल्य 50/- ● निशान वाले उपन्यासों का मूल्य 60/-
❑ निशान वाले उपन्यासों का मूल्य 100/-

Scanned by CamScanner

*कत्ल की वारदात हो तो हमेशा पहले उसकी वजह तलाश की जाती है। विवेक आगाशे की केस में दिलचस्पी की इतनी वजह काफी थी कि कत्ल की कोई वजह नहीं थीं।*

# तीसरा वार

विवेक आगाशे सीरीज का नवीनतम उपन्यास

## टॉप मिस्ट्री राइटर

# सुरेन्द्र मोहन पाठक

की रची नवीनतम मर्डर मिस्ट्री

'क्राइम क्लब', 'कोई गवाह नहीं', 'गन्दा खून' और 'धोखा' के सूत्रधार विवेक आगाशे फिर आपके रूबरू

# राजा पॉकेट बुक्स

## की गौरवशाली प्रस्तुति

Scanned by CamScanner

तीसरा वार

थ्रिलर (विवेक आगाशे-58)

© सुरेन्द्र मोहन पाठक 2009

ISBN : 978-81-8491-081-0

*पत्राचार के लिए लेखक का पता :*

सुरेन्द्र मोहन पाठक
पोस्ट बाक्स नम्बर : 9426
दिल्ली-110051

प्रस्तुत उपन्यास के सभी पात्र एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी जीवित अथवा मृत व्यक्ति से इनका कतई कोई सम्बंध नहीं है। उपन्यास में राजधानी दिल्ली का वर्णन केवल कथ्य को विश्वसनीय बनाने के लिये किया गया है। उपन्यास का उद्देश्य मात्र मनोरंजन है।

●

प्रकाशक
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27611038, 27612039

●

वितरक
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109

●

मुद्रक
राजा ऑफसेट
1/51, ललिता पार्क
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

---

**TEESRA VAR : THRILLER (VIVEK AGASHE)**
*SURENDER MOHAN PATHAK*

---

मूल्य : साठ रुपए

Scanned by CamScanner

# लेखकीय

मेरा नतीनतम उपन्यास 'तीसरा वार' आपके हाथों में है। प्रस्तुत उपन्यास मेरी पॉकेट बुक्स में अब तक प्रकाशित कुल रचनाओं में 272वां है और इसके माध्यम से विवेक आगाशे संस्थापक 'क्राइम क्लब' से आपकी मुलाकात पांचवीं बार होगी। हालिया मुलाकात 'धोखा' के माध्यम से हुई थी जो कि इसी साल जनवरी में प्रकाशित हुआ था और जिसे, मुझे यकीन है कि, आप भूले नहीं होंगे क्योंकि आप लोगों ने उसे अभूतपूर्व वाहवाही से नवाजा था। 'धोखा' की पसन्दगी का स्कोर सौ फीसदी था, इसी बात से प्रेरित होकर, और पाठकों की चौतरफा फरमायश के आगे नतमस्तक होकर, मैंने प्रस्तुत उपन्यास 'तीसरा वार' के माध्यम से विवेक आगाशे को इतनी जल्दी फिर आपकी सेवा में प्रस्तुत किया है। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि क्रिमिनालोजिस्ट विवेक आगाशे का मौजूदा कारनामा भी आपको वैसा ही प्रभावित करेगा जैसा कि 'धोखा' ने किया था। फिर भी आखिरी फैसला आपके हाथों में है, 'तीसरा वार' का जो पास फेल निकालना है, हमेशा की तरह आपने निकालना है। मुझे बड़ी आतुरता से प्रस्तुत उपन्यास के प्रति आपकी अमूल्य राय की प्रतीक्षा रहेगी।

O

हाल ही में एक इंगलिश के अखबार में नयी पुस्तकों की रिलीज सम्बन्धी एक कालम पर मेरी निगाह पड़ी थी जिसमें गौरतलब, बल्कि आंखेंफोड़, बात स्कॉटिश क्राइम राइटर इयान रैनकिन के उसके इन्स्पेक्टर रिबस सीरीज के एक उपन्यास के लिये ओरियन नामक प्रकाशक द्वारा अदा की गयी एडवांस रायल्टी की बाबत थी। प्रकाशक ने उक्त लेखक को एडवांस रायल्टी के तौर पर 103-रिपीट एक सौ तीन-करोड़ रुपये अदा किये थे। ऐसा ही एडवांस जो हमारे देसी लेखक विक्रम सेठ को 'ए सूटेबल ब्वाय' के बाद उसकी नयी पुस्तक 'ए सूटेबल गर्ल' के लिये पेंगुइन से मिला था, वो चौदह करोड़ रुपये था। लिहाजा सौ करोड़ रुपये से ऊपर का एडवांस एक जासूसी उपन्यास के लिये और चौदह करोड़ रुपये का एडवांस एक ऐसी रचना के लिये जिसकी विषयवस्तु की मुझे कोई खबर नहीं लेकिन जो यकीनन कोई जासूसी उपन्यास नहीं होगा क्योंकि विक्रम सेठ गम्भीर साहित्य का लेखन करने वाले रचनाकार हैं।

Scanned by CamScanner

उपरोक्त बात को मैं देसी लेखकों के नसीब के सन्दर्भ में हाइलाइट करना चाहता हूं।

भारतीय साहित्यकारों में कोई कलम दवात के सदके अमीर हुआ हो, ऐसे किसी एक भी लेखक की मुझे वाकफियत नहीं है। बंगाली लेखकों को उनकी लेखनी ने सम्पन्नता का मुंह दिखाया है लेकिन ऐसा नहीं हुआ कि यूं किसी की गिनती साहूकारों में होने लगी हो। मोहन राकेश, अमृतलाल नागर, श्रीलाल शुक्ल, कृष्ण चन्दर, राही मासूम रजा जैसे लेखक मोटी रायल्टी कमाने वाले थे लेकिन उनकी कमाई फैलो राइटर्स के मुकाबले में ही काबिलेजिक्र थी, शाहरुख खान या सचिन तेन्दुलकर के मुकाबले में नहीं। एक कमलेश्वर ने अर्थोपार्जन के लिहाज से भी फिनामिनल तरक्की की थी–फिल्मों से और सीरियल्स से अच्छा नावां पीटा था और दूरदर्शन की टॉप पोस्ट डायरेक्टर जनरल के पद तक पहुंचे थे–लेकिन उस तरक्की को सौ फीसदी कलम दवात से उपजी नहीं करार दिया जा सकता था।

अब मैं अपनी बिरादरी के लेखकों के अर्थोपार्जन का जिक्र करता हूं।

पॉकेट बुक्स में कोई काबिलेजिक्र पैसा किसी ने कमाया है तो वो एक और सिर्फ एक लेखक है जिसका नाम गुलशन नन्दा है। किताब से कमाई के सिलसिले में अगर गुलशन नन्दा को नम्बर एक पर रखा जाये तो आगे नम्बर दस तक कोई नहीं। हालांकि उनकी बड़ी औकात उनके फिल्मी लेखन ने बनाई थी लेकिन पॉकेट बुक्स में भी उजरत के मामले में जिन बुलन्दियों को उन्होंने छुआ था, उनकी रू में उनका दर्जा आल टाइम लीडर का था। उनकी पांच रुपये मूल्य की किताब की एडवांस रायल्टी लाखों में होती थी जबकि अपना लेखकीय जीवन उन्होंने भी कुछ सौ रुपयों की रायल्टी से ही शुरू किया था। गुलशन नन्दा के अलावा इस धन्धे में कोई लेखक अपनी माली औकात की कोई औनीपौनी हाजिरी लगा पाये तो वो ओमप्रकाश शर्मा, वेदप्रकाश शर्मा, रानू और राजहंस हैं। वेदप्रकाश कम्बोज, अकरम इलाहाबादी जैसे लेखकों ने भी इस धन्धे में अच्छे दिन देखे लेकिन दिन ही देखे, उनकी तर्जुमानी सालों, दशकों में न हो पायी। बाकी तमाम आये गये लेखक 'आल्सो रैन' थे और हैं।

आपको पढ़कर हैरानी होगी कि वेदप्रकाश कम्बोज की–जिन्होंने साठ के दशक में अच्छा नाम कमाया था–पहले उपन्यास 'कंगूरा' की फीस अट्ठाइस रुपये थे। तब ओमप्रकाश शर्मा को उपन्यास के सौ रुपये हासिल होते थे जबकि तब तक वो कई उपन्यास लिख चुके थे और अपनी राजेश-तारा सीरीज के सदके पहचाने जाने लगे थे। खुद आपके खादिम को सन 1963 में छपे अपने पहले उपन्यास 'पुराने गुनाह नये गुनहगार' के सौ रुपये मिले थे जिनमें कि उपन्यास का टाइटल बनाने की फीस भी शामिल थी।

मैंने सिर्फ इस बात को हाइलाइट करने के लिये ये सब लिखा है कि

Scanned by CamScanner

हिन्दी पॉकेट बुक्स के लेखक के लिये करोड़ों की क्या, लाखों की रायल्टी के सपनों का शीशमहल कितना सुहाना है, कितना लुभावना है....

और कितना दूर है!

मंगल ग्रह शायद इस सपने के मुकाबले में करीब है।

O

अपने पूर्वप्रकाशित उपन्यास 'नकाब' के लेखकीय में 'प्यादा' के प्रति मेरे मेहरबान पाठकों की राय का कोई विस्तृत वर्णन नहीं था क्योंकि पिछला लेखकीय लिखते वक्त 'प्यादा' का फीडबैक अभी शुरू ही हुआ था। वजह डाक विभाग है जिसकी मेहरबानी से लोकल लैटर भी 15-20 दिन में अपने मुकाम पर पहुंचता है। मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, बंगलौर जैसे मैट्रो टाउन्स की डाक कदरन जल्दी डिलीवर हो जाती है वर्ना छोटी जगहों के पत्रों के मेरे तक पहुंचने में एक महीने से ऊपर लग जाना भी कोई बड़ी बात नहीं। न पहुंचना भी कोई बड़ी बात नहीं। इसी वजह से नये उपन्यास में उससे ऐन पिछले उपन्यास के प्रति पाठकों की राय का समावेश मुमकिन नहीं रहा है। अलबत्ता नया उपन्यास ही पांच छः महीने में छप पाये तो बात जुदा है जो कि ईश्वर न करे कि हो।

'प्यादा' से सम्बन्धित प्रमुख बात–जो मेरे हर पाठक ने लिखी–ये है कि उसके साथ छपे लघु उपन्यास 'हमशक्ल' को 'प्यादा' से कहीं ज्यादा प्रशंसा हासिल हुई। कई पाठकों ने तो बाकायदा गिला किया कि वो लघु उपन्यास था ही क्यों, उसे फुल लैंग्थ उपन्यास क्यों न बनाया गया!

इस सन्दर्भ में निवेदन है कि पिछले उपन्यास में 'हमशक्ल' का दर्जा फिलर का था क्योंकि क्लेवर के मामले में 'प्यादा' की कोरम काल नहीं हो सकी थी, उसे मैं 320 पृष्ठों की कोरम काल के काबिल नहीं बना सका था। मैं 'प्यादा' को लम्बा खींच सकता था लेकिन वो लस्सी बनाने जैसा काम होता जो कि मैंने कभी नहीं किया। इसलिये कोरम काल के लिये मैंने 'प्यादा' के साथ लघु उपन्यास जोड़ा जो कि अच्छा बन पड़ा था लेकिन ये मैंने कभी नहीं सोचा था कि 'हमशक्ल' नाम की साइड डिश मेन डिश को मात कर देगी।

बहरहाल 'प्यादा' के बारे में मुझे मिली जुली राय प्राप्त हुई है जो अमूमन अच्छी है, हौसलाअफजाह है लेकिन उपन्यास को 'धोखा' की तरह सौ फीसदी पाठकों ने वाहवाही से नवाजा हो, ऐसा मैं नहीं कह सकता।

बान्दा के अश्वनी कुमार पाण्डेय को खेद है कि 'प्यादा' अपेक्षित मनोरंजन न कर सका, वैसे कतई बेकार लगा हो ऐसा नहीं था। उन्होंने पिछले उपन्यास न पढ़े होते तो 'प्यादा' उन्हें बेहतरीन लगता लेकिन हालिया उपन्यासों के बाद प्यादा ऐसा ही था जैसे बहुत मीठा खाने के बाद चाय फीकी लगती है। पाण्डेय जी को उपन्यास अच्छा लगा लेकिन जबरदस्त न लगा।

Scanned by CamScanner

सहारनपुर के अजीम खान को उपन्यास बेहतरीन लगा, शुरुआत धीमी लगी लेकिन बल्ली के आते ही उसमें जैसे पंख लग गये, ऐसी रफ्तार पकड़ी कि पता ही न चला कि कहानी कब समाप्त हो गयी। उन्हें 'हमशक्ल' ऐसा लगा जैसे खाना खाने के बाद होटल वाला रसमलाई फ्री दे दे।

बरेली के अतुल सक्सेना को 'प्यादा' ठीक ठाक लगा लेकिन उन्हें ज्यादा मजा नहीं आया, सुधीर उन्हें उसमें न खास हरामी लगा न किसी और तरीके से उसने उनके जेहन में कोई अतिरिक्त घन्टी बजायी। अलबत्ता लेखकीय में उठाया गया कलम-दवात वाला मुद्दा उन्हें खूब पसद आया और उसका समर्थन उन्होंने ने इन शब्दों में किया :

No matter how much thrilling experience can be gained by vibrator, but satisfaction (for woman) can only come by emotional thrusts of male whom she loves.

लिहाजा उनकी राय में ई-मेल या एसएमएस वाइब्रेटर हैं जो कलम दवात की-दि रीयल थिंग की-जगह नहीं ले सकते।

इन्दौर के कौशलेन्द्र सिंह सेंगर को 'प्यादा' की कहानी अच्छी लगी मगर सस्पेंस कमजोर लगा। खूनी कौन था, कावेरी कहां फंसी हुई थी, इसका अन्दाजा उन्हें बहुत जल्द हो गया। बकौल उनके सुधीर कोहली के पुराने नावल धुंआधार बारिश के रूप में होते थे, 'प्यादा' केवल सूखे धरातल के लिये रिमझिम फुहारों जैसा था।

'प्यादा' पढ़कर दोराहा के संजील कौशल की रूह को सकून आया, सुधीर कोहली हमेशा की तरह लाजवाब लगा, कावेरी का किरदार भी पसन्द आया लेकिन ज्यादा मुतमईन उन्हें महानगर के लोगों के लाइफ स्टाइल के सजीव चित्रण ने किया।

काठगोदाम के इन्द्रेश कुमार त्यागी को 'प्यादा' ने निराश किया, उन्हें शुरुआत उम्दा लगी लेकिन मध्य तक पहुंचते-पहुंचते सब कुछ साफ हो जाने से सस्पेंस खत्म हो गया।

दिल्ली के जितेन्द्र माथुर को 'प्यादा' बेहद दिलचस्प लगा जिसमें रहस्य को परत-दर-परत खोला गया था, उन्हें वास्तविकता को क्लाइमैक्स से पहले भांप जाना पाठक के लिये लगभग नामुमकिन लगा, सुधीर के खास फुन्दने लाजवाब लगे और उन्होंने उपन्यास को पूरे नम्बरों से पास किया।

पानीपत के धर्मवीर को 'प्यादा' के माध्यम से दिमागी खुराक मिली और बल्ली का किरदार खासतौर से पसन्द आया अलबत्ता सस्पेंस की डोज कमजोर लगी जो कि बढ़ाकर रखी जानी चाहिये थी।

लखनऊ के अभिषेक मिश्र की राय में 'प्यादा' 'धोखा' के कम्पैरिजन में ज्यादा अच्छा था। उन्हें कथानक बहुत चुस्त, कसा हुआ और तेजरफ्तार लगा और नावल उन्होंने एक सिटिंग में पढ़ा।

Scanned by CamScanner

रामगंज मंडी, कोटा के ओमप्रकाश जैन को 'प्यादा' ज्यादा ठीक नहीं लगा। बकौल उनके पेज 238 पर 'जर जन जमीन' मुहावरा मैंने गलत लिखा है, वो 'जर जोरू जमीन' होना चाहिये। मेरा उनसे निवेदन है कि 'जन' का मतलब औरत ही होता है जिसका झगड़े की बुनियाद बनने के लिये जोरू होना जरूरी नहीं होता।

हल्द्वानी के हेमन्त सिंह बागड़वाल को 'प्यादा' मेरी लेखनी का 'एक और' करिश्मा लगा, उसमें आगाज से अंजाम तक जो कसावट थी, उससे मन वाह वाह कर उठा।

शाहदरा, दिल्ली के नारायण सिंह को उपन्यास खूब पसन्द आया और बकौल उनके वो सुधीर की वजह से ही बेहतरीन बना है, और कत्ल का उद्देश्य नया–जमीन–होने ने भी उपन्यास को चार चान्द लगाये हैं जिनका कोई जवाब नहीं। उन्होंने उपन्यास की एक एक लाइन, एक एक पृष्ठ का आनन्द उठाया और समापन तक पहुंचते आनन्द दो गुणा नहीं, चार गुणा हो गया। सबसे ज्यादा तारीफी बात उन्होंने ये लिखी कि उपन्यास की कीमत 60/- की जगह 600/- भी होती तो नाजायज न होती।

जोधपुर के राजेश्वर प्रकाश माथुर को 'प्यादा' में सुधीर कोहली का कार्य अच्छा लगा, उसका वे आफ प्रेजेंटेशन अच्छा लगा लेकिन प्रकाशक के प्रकाशन के प्रति अपना खुद का निर्धारित टाइम शिड्यूल फालो न करने की उन्हें गम्भीर शिकायत हुई।

पेन्ड्रा के सपन खत्री ने 'प्यादा' को दस में से ग्यारह नम्बर दिये, रफ्तार इतनी तेज लगी कि 'सिर खुजाने की फुरसत न मिली'। 'हमशक्ल' को उन्होंने 'चिकन बटर मसाला' के साथ 'पनीर कढ़ाई' करार दिया। वो उन्हें गागर में सागर समाया लगा।

लुधियाना के जसबीर सिंह की राय में 'प्यादा' बढ़िया भी रहा, कमजोर भी रहा। उन्हें वो कांटा तो न लगा, फूल लगा लेकिन गेंदे का, गुलाब का नहीं! 'प्यादा' 'मूंगी–मसूरी' दाल है जिसे मैंने 'हमशक्ल' का तड़का तो मारा लेकिन फिर भी स्वाद न आया। कहानी कमजोर और घिसी पिटी लगी, कत्ल के तरीके में कोई पेंच न दिखा, कोई सस्पेंस न लगा।

गोंदिया के शरद कुमार दुबे के कथनानुसार उपन्यास ने राजाओं, वजीरों सा इन्तजार कराया लेकिन मलाल न हुआ क्योंकि पढ़ने के बाद 'प्यादा' शहनशाहों को मात देता लगा। उन्हें बल्ली लाटरीवाला का अन्दाजेबयां खूब पसन्द आया और कावेरी का चरित्रचित्रण भी अच्छा लगा। उपन्यास को उन्होंने इस बार भी पूरे नम्बरों से पास किया।

गाजियाबाद के राकेश कुमार अग्रवाल को 'प्यादा' 'धोखा' जितना तो क्या, आधा भी अच्छा न लगा। सबसे ज्यादा शिकायत उन्हें उपन्यास के सुस्त रफ्तार होने से हुई।

नागपुर के दिनकर सिन्हा की राय में 'प्यादा' कामयाबी से लिखा गया था सिवाय इसके कि उपन्यास का पटाक्षेप लगभग सौ पृष्ठ कम करके

Scanned by CamScanner

किया गया। उन्हें विश्वास है कि मेरे सारे पाठकों को ये शिकायत जरूर होगी। 'हमशक्ल' से भी सिन्हा साहब को ये ही शिकायत हुई है कि मैंने एक बेहतरीन कथानक को कम पृष्ठों में समेट कर पाठकों का दिल दुखी कर दिया वर्ना 'प्यादा' एक सुपरहिट थ्रिलर हो सकता था।

रायसिंहनगर, राजस्थान के राजेन्द्र गोदारा मेरे बड़े मेहरबान पाठक हैं जिन्होंने मेरे पिछले आठ उपन्यासों (वहशी, आठ दिन, भक्षक, बिचौलिया, जाल, मिडनाइट क्लब, धोखा, प्यादा) की तुलना सचिन के शतकों से की है और लिखा है कि प्रस्तुत उपन्यास 'नकाब' की कामयाबी के तौर पर अगर मैंने एक शतक और लगा लिया तो मैं एक बार साल में लगाये सचिन के नौ एकदिवसीय शतकों की बराबरी कर लूंगा। जमा, 'हमशक्ल' उन्हें 'प्यादा' से भी ज्यादा रोमांचक और तेजरफ्तार लगा।

अंत में दो पत्र इंगलिश के जिनमें से पहला दिल्ली के पुनीत वाही का है जो मेरे नये पाठक हैं :

In Pyada, using a concept of land was courageous, rest all was your magic pen. I can compare it to a delicious Biryani where every one adds rice, vegetables, chicken and spices but every cook has got his individual flavour and taste.

The other story 'Hamshakl' seemed unnecessary.

दूसरा पत्र बटाला के प्रोफेसर रवीन्द्र जोशी का है :

'Pyada' was so good that I paused after every twenty pages to think about the plot and the possible murderer. Sudhir Kohli was not in his true form and his encounter with Rajni had nothing new, though both, rather Rajni, is quite a smart talker. The end was too sudden, and the theory of two murderers shown perhaps for the first time in your novels, was not up to mark.

'Hamshakl' deserves a special mention. It is engrossing, suspenseful and beautiful. It could have, rather should have, been developed into a full fledged thriller. It was an add on attraction and not a space filler.

आगामी नये उपन्यास का नाम 'गवाही' है, जो थ्रिल, एक्शन, सस्पेंस का अनोखा त्रिकोण है।

प्रस्तुत उपन्यास के प्रति आपकी अमूल्य राय की प्रतीक्षा में,

विनीत

सुरेन्द्र मोहन पाठक

दिल्ली- 110051

10.11.2009

Scanned by CamScanner

# तीसरा वार

परमीत मेहरा को रंगीला राजा, छैला बाबू, रोमियो, कैसानोवा, प्लेब्वाय जैसे कई फैंसी नामों से पुकारा जा सकता था लेकिन उसकी जात औकात समझने वाला कोई उसे लम्पट, शोहदा या औरतखोर ही कहता। हर वीकएण्ड का ये उसका स्थापित शगल था कि वो शाम ढले सजधज कर अपनी सैकंडहैण्ड सान्त्रो कार पर–जो इन दिनों पीछे से ठुकी हुई थी–सवार होता था और उन सड़कों की खाक छानना शुरू कर देता था जिन पर किसी ईजी पिकअप की सम्भावना होती थी। ऐसा नहीं था कि वो अपने उस नापाक मिशन में हमेशा कामयाब होता था लेकिन नाकामी से कभी उसका हौसला पस्त नहीं होता था।

आखिर कभी हार कभी जीत–यू विन सम, यू लूज सम–तो जिन्दगी का दस्तूर था।

उम्र में वो पैंतीस साल का था, नयननक्श तीखे थे, रंग कदरन सांवला था, बाल फिल्म स्टार्स की तरह संवार कर रखता था और शुक्रवार शाम के लिये अपना खास बढ़िया सूट तैयार रखता था।

उस शाम भी वो हमेशा की तरह अपने 'मिशन ईजी राइड' पर निकला हुआ था और पिकअप की तलाश में जोरबाग रोड पर मंथर गति से अपनी कार ड्राइव कर रहा था।

वो अच्छी तनख्वाह वाली, फाइव डेज वीक वाली अच्छी नौकरी करता था, कैसी भी कोई पारिवारिक जिम्मेदारी उस पर आयद नहीं थी इसलिये उसे कभी किसी माली दुश्वारी का सामना नहीं करना पड़ा था, अपने वीकएण्ड के उस अभियान पर होने वाले 'खर्चेपानी' को वो बाकायदा अफोर्ड कर सकता था।

तब दिसम्बर का महीना चल रहा था, दिल्ली में सर्दियों का मौसम



Scanned by CamScanner

पूरी तरह से सैट हो चुका था, आसमान छः बजे ही काला हो गया था और वातावरण में हल्की सी धुंध भी छाने लगी थी।

अपने अभियान के लिये उसे वो इलाका बहुत पसंद था। उसके एक बाजू कई देशों के दूतावास थे और मेन रोड पर रंगीन जोड़ों की सैरगाह लोधी गार्डन था, करीब ही इन्डिया हैबीटैट सेंटर था, खान मार्केट का फैशनेबल और चहल पहल वाला इलाका भी वहां से ज्यादा दूर नहीं था, और दूसरे बाजू लोधी कालोनी थी जहां कई फैंसी इन्डियन, मुगलई और चायनीज रेस्टोरेंट थे।

जमा, उस रोज वहां उसकी कामयाबी की जैसे आकाशवाणी हुई थी, एक खास टाइम की जोरबाग रोड की उसकी हाजिरी का ईनाम मुकर्रर हुआ था।

वो 'खास टाइम' बस होने ही वाला था।

तभी परमीत मेहरा की निगाह एक लड़की पर टिकी जो उसी क्षण–शायद किसी करीबी इमारत से निकलकर–सड़क पर पहुंची थी। उसने एक उड़ती निगाह घूमकर पीछे डाली और फिर फुटपाथ पर आगे चलने लगी।

परमीत मेहरा ने देखा वो जींस और घुटनों तक आने वाला, मोटी ऊन से बुना हाईनैक पुलोवर पहने थी और उसके बाल बड़े फैशनेबल ढंग से कटे हुए थे।

गुड!

उसने लड़की के करीब पहुंच कर कार की रफ्तार कम की, फुटपाथ की तरफ का कार का शीशा नीचे गिराया और स्वर में मिश्री घोलता बोला–"हल्लो!"

लड़की ने गर्दन घुमाकर एक सर्द निगाह उसकी तरफ डाली।

"मेरी सोशल सर्विस में भारी दिलचस्पी है।"–वो बोला।

"तो?"–लड़की की भृकुटि तनी।

"लिफ्ट भी तो सोशल सर्विस ही है!"

"तो?"

"आ जाओ। कार में हीटर है, मजा आ..."

"गो टु हैल!"

"वहां भी चलेंगे बोलोगी तो, पहले..."

"आई विल कॉल दि पोलीस। आई विल पंच हंड्रेड।"

मेहरा को उसके हाथ में मोबाइल दिखाई दिया। तत्काल उसने कार की स्पीड बढ़ा दी!



Scanned by CamScanner

"साली!"–उसके मुंह से निकला–"सच में पुलिस को फोन लगाने लगी थी।"

थोड़ी देर बाद उसने रियरव्यू मिरर पर निगाह डाली तो वो लड़की उसे फुटपाथ पर न दिखाई दी।

अच्छा है दफा हुई! नाकामी का वजूद मिटा।

जाहिर था कि जो ईनाम उसे मिलना था, उसकी स्पांसर वो नहीं थी।

जरूर किसी ने उसके साथ मजाक किया था।

जरूर वो किसी होक्स का शिकार हुआ था।

*आज किस्मत साथ देती नहीं जान पड़ती, सड़क का एक चक्कर और काटता हूं, फिर खान मार्केट चलता हूं।*

वो सड़क के सिरे पर पहुंचा, वहां से उसने कार को यू-टर्न दिया और कार वापस दौड़ाई।

नो लक।

आगे से उसने कार को फिर यू-टर्न दिया और उसे फुटपाथ के करीब धीरे धीरे चलाने लगा।

तभी एक लड़की फुटपाथ पर चलती उसे दिखाई दी।

उसके मन में फिर उम्मीद जागी।

हैडलाइट्स की रोशनी में उसने देखा, वो मुश्किल से घुटनों तक आने वाली स्कर्ट, सफेद शर्ट और महरून कलर का, लेडीज कट का चमड़े का फैशनेबल कोट पहने थी। सिर पर उसने कोट से मैच करती चमड़े की कैप लगाई हुई थी जिसके नीचे से उसके लम्बे, हल्के भूरे बाल, कंधों पर बिखरे दिखाई दे रहे थे। अपने उस रखरखाव में वो कोई एयरहोस्टेस या फैशन मॉडल जान पड़ती थी।

परमीत मेहरा ने कार को लो गियर में डाला और उसे लड़की के साथ साथ चलाने लगा।

"हल्लो!"–वो बोला–"आई एम गोईंग युअर वे। ऐसा इत्तफाक बार बार नहीं होता।"

"अच्छा!"–उसकी भृकुटि तनी।

"हां।"

"लिफ्ट देना चाहते हो?"

"राही एक ही राह के हों तो एक को दूसरे के लिए ऐसी कर्टसी दिखानी ही चाहिये। नो?"

"आपको क्या पता मेरी राह कौन सी है?"



Scanned by CamScanner

"अभी बताओगी तो पता चल जायेगा न!"

"ये बात भी ठीक है। कहीं प्यार के राही तो नहीं हो? लाइक देवानन्द सांग 'हम हैं राही प्यार के...'?"

"है तो ऐसा ही कुछ कुछ।"

"कुछ कुछ?"

"फिलहाल! डायलॉग ऐसे कब तक चलेगा! कार में आ जाओ।"

वो ठिठकी, हिचकिचाई।

मेहरा ने कार को ब्रेक लगाई और उसकी तरफ का दरवाजा खोला।

"ओ, कम ऑन!"–फिर बोला।

लड़की कार में सवार हो गयी। उसने अपनी तरफ का दरवाजा बंद कर लिया। मेहरा ने बटन दबा कर पैसेंजर सीट का शीशा चढ़ा दिया और कार को आगे बढ़ाया।

"ये कार कुछ पहचानी सी लगती है।"–लड़की विचारपूर्ण स्वर में बोली–"कहीं ऐसा तो नहीं कि कभी पहले भी तुमने मुझे लिफ्ट दी हो!"

"हो सकता है।"

"या मैंने कार को इलाके में देखा हो! अक्सर!"

"हो सकता है।"

"इधर ही कहीं रहते हो?"

"नहीं। थोड़ी दूर।"

"कितना दूर?"

"निजामुद्दीन वैस्ट।"

"लेकिन प्रैक्टिस के लिये यहां आते हो। नो?"

"प्रैक्टिस! कैसी प्रैक्टिस?"

"लाइन मारने की। लिफ्ट देने की। वगैरह वगैरह की।"

"क्या बात करती हो!"

"तो निजामुद्दीन में रहते हो?"

"हां। वहां मेरा छोटा सा फ्लैट है। चलें?"

"कहां?"

"अरे, जहां का अभी जिक्र किया। मेरे फ्लैट में।"

"बीवी मूंडी काट के हाथ में दे देगी।"

"होगी तो देगी।"

"मूंडी?"

"अरे, बीवी।"

"शादी नहीं की? बैचलर हो?"



Scanned by CamScanner

"हां।"

"तुम्हारे जैसे सब यही कहते हैं।"

"अरे, मैं सच में शादीशुदा नहीं हूं। साथ चलो, तसदीक हो जायेगी।"

"हूं।"

सड़क पर से निगाह हटा कर मेहरा ने खुर्दबीनी अंदाज से उसका मुआयना किया।

वो जिस्म को ढीला छोड़कर पैसेंजर सीट पर पसरी हुई थी और उसके मिजाज से इत्मीनान टपक रहा था–जो कि उसके लिये अच्छी बात थी–शुरूआती दौर में वो लड़कियां भी टेंशन में बैठती थीं जो कि बाद में पट जाती थीं। सामने से आती किसी कार की रोशनी चमकती थी तो उसका चेहरा जगमगा उठता था–लिपस्टिक से रंगे उसके लाल होंठ और लाल लगने लगते थे और हल्के भूरे बाल चमकने लगते थे। वो टांग पर टांग चढ़ाकर बैठी हुई थी जिसकी वजह से उसकी स्कर्ट घुटनों से काफी ऊपर तक सरक गयी थी और नजारा मेहरा का ब्लड प्रेशर बढ़ा रहा था। बड़ी मुश्किल से वो उसे दबोच लेने की अपने मन में बलवती इच्छा को काबू में कर पा रहा था।

अपना उसकी ओर वाला हाथ उसने फिर भी उसकी नंगी जांघ पर सरकाया।

खफा होने की जगह लड़की ने मुस्कराते हुए हाथ उठाकर उसकी गोद में डाल दिया।

मेहरा को उसका वो एक्शन हौसलाअफजाई वाला ही लगा।

"शादी क्यों नहीं की अभी तक?"–वो बोली–"अब ये न कहना कोई पसंद की लड़की न मिली।"

"वजह तो यही है, तुम कहती हो तो नहीं कहता।"

"मिलती तो कर लेते?"

"हां। क्यों नहीं! जरूर।"

"आई सी।"

"अपनी बोलो।"

"मैं भी मैरीड नहीं हूं।"

"ड्रिंक करती हो?"

"वाइन। कभी कभार जिन एण्ड टॉनिक। बस।"

"मेरे फ्लैट पर दोनों हैं। अब मेरे साथ मेरे फ्लैट पर ड्रिंक्स शेयर करने का मेरा इनवीटेशन कुबूल करो।"

"क्या बात है, बहुत जल्दी है? या हो ही फास्ट वर्कर?"



Scanned by CamScanner

"ऐसी कोई बात नहीं। फ्लैट में सिर्फ तुम और मैं होंगे, बस इतनी सी बात है।"

"यहां भी सिर्फ तुम और मैं हैं।"

"लेकिन तनहाई..."

"यहां भी है। कार भी चलता फिरता कमरा ही होती है।"

"ये बात तो तुम्हारी ठीक है।"

"यहीं बातें करते हैं।"

"लेकिन ड्रिंक्स..."

"बाद में देखेंगे।"

बाद में देखेंगे–मेहरा खुश हो गया–गुड!

एक पेड़ की छांव में फुटपाथ के साथ लगा कर उसने कार रोकी। रोकते वक्त उसने यूं एकाएक ब्रेक लगाई कि कार को झटका लगा और उससे सम्भलने के लिये लड़की ने उसका सहारा लिया। यूं वो उसके साथ सट गयी।

वो परमीत मेहरा नाम के टॉप के हरामी की जांची परखी स्ट्रेटेजी थी।

इस बार उसने उसकी जांघ पर हाथ रखा तो उसने एतराज न किया, बल्कि यूं जाहिर किया कि उसके उस एक्शन से वो बेखबर थी।

मेहरा ने फिर उसे निहारा।

साली मेकअप बहुत हैवी करती थी।

लेकिन क्या फर्क पड़ता था!

लिपस्टिक खाने का, पाउडर चाटने का उसे अभ्यास था।

"तुम्हारे बाल बहुत खूबसूरत हैं।"–वार्तालाप आगे बढ़ाने की मंशा से वो बोला।

"नकली हैं।"–वो निचला होंठ दांतों में दबा कर मुस्कराती हुई बोली।

"मजाकपसंद लड़कियां मुझे अच्छी लगती हैं क्योंकि मैं खुद भी ऐसा ही हूं।"

"कैसा? मजाकपसंद?"

"हां।"

"और क्या पसंद है?"

"बोलूंगा न! मुझे हैरानी है कि इधर कहीं तुम मुझे पहले कभी न दिखाई दीं।"

"हो लो हैरान। हैरान होने पर कौन सा टैक्स लगता है!"

"कहीं तुम्हीं ने तो मेरे को फोन नहीं किया था?"



Scanned by CamScanner

"कैसा फोन?"
"ईनाम वाला फोन?"
"कैसा ईनाम?"
"यानी कि नहीं किया था। अभी ड्रिंक के बारे में क्या कहती हो?"
"धीरज रखो। अभी बहुत वक्त है। ईजी...ईजी डज इट। नो?"
"यस।"
"उसके लिये मैं अभी मूड बना रही हूं। बन जायेगा तो बोलूंगी। ओके?"
मेहरा ने जबरन सहमति में सिर हिलाया।
"सिग्रेट पीते हो?"
"पीता तो हूं लेकिन इस वक्त मेरे पास है नहीं।"
"फिर क्या फायदा हुआ पूछने का!"
"मेरे फ्लैट पर सब कुछ है। कुछ भी मांग कर देखना।"
"काहे को! मांगना मंगतों का काम होता है। मालूम?"
मेहरा हड़बड़ाया।
"मैं वसूल करती हूं।"
"क्या!"
"फार सर्विसिज रेंडर्ड।"
"ओह! तो ये बात है!"
"अभी आई समझ में।"
"क...क्या चार्ज करती हो?"
"कोई फिक्स्ड चार्जेज नहीं हैं। सब सामने वाले की पेईंग कपैसिटी पर डिपेंड करता है।"
"ऐसा?"
"हां। तुम्हारी कार सैकंडहैण्ड है, ठुकी हुई है, तुम खुद सैकंडहैण्ड हो, शायद ठुके हुए भी..."
"ठहर जा, साली।"
"...इसलिये तुम तीन लाल वाले गांधी ढीले करो।"
"तीन हजार रुपये।"
"एक घंटे के लिये।"
"हूं।"
"अब फैसला मेरी जांघ पर से हाथ हटा कर करो।"
फिर वो खुद भी परे सरक गयी, उसने अपना हैण्डबैग खोला और उसमें से कुछ निकाल कर अपने हाथ में लिया।



Scanned by CamScanner

नीमअंधेरे में मेहरा मुश्किल से भांप पाया कि वो चॉकलेट का पैकेट था।

"खाओगे?"–पैकेट खोलती वो बोली।

"नहीं।"–मेहरा कठिन स्वर में बोला।

"क्यों? पसंद नहीं करते?"

"खाता हूं कभी कभार लेकिन...इस वक्त नहीं।"

"क्या हुआ है इस वक्त को?"

मेहरा ने उत्तर न दिया।

उसने पैकेट में से एक चॉकलेट निकाली, और उसे अपने मुंह में रख कर तत्काल जुगाली सी करने लगी।

"बड़ा अच्छा टाइम छांटा चॉकलेट खाने का!"–मेहरा भुनभुनाया।

"पहले भी पूछा मैंने...क्या हुआ है टाइम को?"

"मुंह को एंगेज कर लिया! ताकि वो किसी और काम न आ सके।"

वो हंसी।

"कैसी चॉकलेट है? चबाती हो तो अजीब सी स्मैल आती है।"

"अजीब सी नहीं, बढ़िया सी। कोनियाक ब्रांडी की। जो कि चॉकलेट के भीतर भरी होती है। चबाने पर मुंह में आती है। लिकर चॉकलेट है। स्विट्जरलैंड की। मुझे खास पसंद है। तुम्हें भी जरूर पसंद आयेगी। एक खा के देखो।"

"नो।"

"मर्जी तुम्हारी।"–उसने पैकेट में से एक और चॉकलेट निकाली–"लेकिन फिर सोच लो। यादगार आइटम है। एक खाओगे तो देखना, फौरन दूसरी की मांग करोगे।"

मेहरा ने अनिश्चित भाव से हौले से इनकार में सिर हिलाया।

"इससे नशा हो जाता है?"–फिर पूछा।

"नहीं।"

"जब भीतर उम्दा ब्रांडी भरी होती है तो..."

"ढेर नहीं भरी होती, थोड़ी सी होती है। बस कुछ बूंदें।"

"ओह!"

"ढेर भरी होती तो जब मैंने अपने वाइन के और जिन एण्ड टॉनिक के शगल का जिक्र किया था तो ब्रांडी का नाम भी लिया होता।"

"ठीक!"

लड़की ने सावधानी से विंडस्क्रीन के पार सड़क पर निगाह दौड़ाई



Scanned by CamScanner

जो कि उस घड़ी सुनसान थी। उसने हाथ में थमी चॉकलेट अपने मुंह में रखी और पैकेट से एक और चॉकलेट निकाली।

"एक तो खा ही लो।"–वो चॉकलेट उसके मुंह के करीब लाती बोली–"अरे, क्यों नखरे झाड़ रहे हो! इतनी मनुहार तो तुम्हारी नयी ब्याही बीवी नहीं करने वाली। मुंह खोलो।"

मेहरा ने हिचकिचाते हुए मुंह खोला।

लड़की ने चॉकलेट उसके मुंह में धकेल दी।

"अभी बाग बाग न हो जाओ तो बोलना।"–वो बोली। एकाएक वो उसकी तरफ झुकी और उसने उसके होंठों को भरपूर किस किया।

वो हड़बड़ाया। तत्काल उसने सिर पीछे को झटका।

"अरे, धीरे। धीरे।"–वो बोला–"तुमने तो चॉकलेट मेरे हलक में ही धकेल दी।"

"उतर तो नहीं गयी गले से नीचे?"–वो हंसती हुई बोली।

"नहीं, बच गयी।"

"गुड!"

"इसका भीतरी हिस्सा तो सख्त जान पड़ता है! जैसे नट्स वाली चॉकलेट में होता है! भीतर लिकर की जगह बादाम या अखरोट या..."

"नानसेंस! लगता है चॉकलेट्स की बाबत कुछ भी नहीं जानते हो। अरे, लिकर चॉकलेट की भी इनर कोर हार्ड होती है। उसके बाद ऐन सेंटर में लिक्विड होता है। चबा कर देखो।"

उसने चॉकलेट को दांये जबड़े में ट्रांसफर किया और दाढ़ों के बीच दबा कर चबाया। तत्काल किसी चीज के चटकने की धीमी सी आवाज हुई और उसका मुंह किसी तरल पदार्थ से नम होने लगा। फिर वो तरल पदार्थ खुद ही उसके हलक में उतरने लगा। फिर एकाएक उसके चेहरे पर हाहाकारी भाव आये, उसने बोलने की कोशिश की तो गला रुंध गया, फिर जकड़ा गया, शब्दों की जगह उसके मुंह से अजीब सी घरघराहट की आवाज निकली। उसके शरीर ने यूं जोर का झटका खाया जैसे बिजली का करंट लगा हो, वो धनुष की तरह तना, ढीला हुआ, फिर तना, तड़पा।

लड़की खामोश बैठी स्थिर आंखों से उस पर होती हर प्रतिक्रिया नोट कर रही थी।

"आया मजा?"–फिर बोली।

मेहरा को आवाज बहुत दूर से आती महसूस हुई, उसने बोलने की फिर भरपूर कोशिश की लेकिन आवाज गले में ही इस हद तक



Scanned by CamScanner

घुटकर रह गयी कि अब वो घबराहट की सूरत भी न अख्तियार कर सकी।

लड़की ने फिर खाली सड़क पर दोनों तरफ निगाह दौड़ाई। कुछ क्षण पहले एक कार सड़क पर से गुजरी थी, उससे पहले फासले पर दो तीन लोग चलते दिखाई दिये थे लेकिन उस घड़ी सड़क बिल्कुल खाली थी।

उसने संतोषपूर्ण भाव से सिर हिलाया और मेहरा की तरफ फिर तवज्जो दी जो कि अब पहले की तरह तड़प नहीं रहा था। उसने आगे झुक कर अपने सुर्ख होंठ उसके गाल से सटाये तो होंठों की स्पष्ट छाप गाल पर बन गयी। वो वापिस पीछे हटी तो उसके होंठों पर एक विद्रुपपूर्ण मुस्कराहट थी और आंखों में कामयाबी की चमक थी। हौले से उसने कार का दरवाजा खोला, बाहर कदम रखा और संतुलित कदमों से फुटपाथ पर चलने लगी।

जो काम उसे निहायत मुश्किल लग रहा था, खौफजदा कर रहा था, वो असल में कितना आसान निकला था! किसी ने कुछ देखा नहीं था, कार में या उसके गिर्द उसकी मौजूदगी का कोई गवाह नहीं था, कार में कहीं अपनी उंगलियों के निशान न छोड़ने की दानाई उसने खासतौर से दिखाई थी।

बढ़िया। बढ़िया।

कार से थोड़ा दूर निकल आने के बाद उसके कदमों की रफ्तार अपने आप तेज हो गयी, वो धुंध में साया बनी तेजी से आगे बढ़ती चली गयी। उस वक्त अपने मुकाम पर पहुंचने की उसे इतनी जल्दी थी कि मोड़ काटते ही वो विपरीत दिशा से आते एक जैकेट और मफलरधारी युवक से टकराने से बाल बाल बची।

अनुराग जोशी ने गर्दन घुमा कर दूर जाती लड़की की तरफ निगाह दौड़ाई। वो खुद उसी इलाके का रहने वाला था इसलिये उसे लग रहा था कि उसने उस लड़की को पहले उधर कहीं देखा था।

कहां देखा था!

कहां रहती थी!

रहती तो यकीनन लोधी कालोनी में थी, देखा उधर या आसपास कहीं भी हो सकता था। पटाखा लड़की थी, सब चर्चा करते थे, फिर भी उस घड़ी उसे उसका नाम नहीं याद आ रहा था।

उस घड़ी खुद उसका निशाना लोधी कालोनी और आगे थर्ड एवेन्यू



Scanned by CamScanner

था जो कि उस सड़क के सिरे पर था और जहां उसकी होने वाली बीवी रहती थी। हैबीटैट सेंटर में 'स्लमडाग मिलियनेयर्स' की स्पैशल स्क्रीनिंग थी जिसमें श्रेया ने पहुंचना था लेकिन पहुंची नहीं थी और वो इस वजह से फिक्रमंद था। उस बात को वादाखिलाफी का दर्जा तो वो नहीं देना चाहता था, लेकिन वो खटक उसे बराबर रही थी क्योंकि ऐसा पहली बार हुआ था।

आगे बढ़ता वो फुटपाथ से लगी खड़ी नीली सान्त्रो के करीब से गुजरा और उससे आगे निकल कर ठिठका। नाहक ही उसकी निगाह उसके भीतर पड़ी थी तो उसे अहसास हुआ था कि वो खाली नहीं थी। उसकी ड्राइविंग सीट पर कोई मौजूद था और वो स्टियरिंग पर औंधे मुंह ढेर हुआ पड़ा जान पड़ता था।

क्या बात थी?

सोया पड़ा था, टुन्न था या बीमार था?

बीमार काहे को!

दिल का दौरा!

क्या बड़ी बात थी!

उसने सुना था कि ठण्ड के वैसे मौसम में हार्ट अटैक के ज्यादा चांस होते थे।

तनिक हिचकिचाता हुआ वो कार की ड्राइविंग साइड में पहुंचा। उसने पाया कि उधर की खिड़की का शीशा पूरा नीचे गिरा हुआ था।

"हल्लो!"–वो सावधान स्वर में बोला।

कोई जवाब न मिला।

उसने नीचे झुक कर खिड़की से भीतर हाथ डाला और उसका कन्धा पकड़कर हिलाया।

कोई प्रतिक्रिया सामने न आयी।

"अरे, भई"–उसने कंधा फिर हिलाया–"ठीक तो हो न!"

ठीक तो वो नहीं था–सोया पड़ा भी नहीं था–वर्ना अब तक कोई हिलडुल हुई होती। कोई दौरा-वौरा ही पड़ा था जिसमें वो कुछ भी नहीं कर सकता था। वो तो मामूली फस्ट एड भी नहीं जानता था।

तो?

हेमा को बोलता हूं।

हेमा साहनी उसकी मंगेतर श्रेया की मौसी थी, बहुत दुनियादार थी और ऐसी इमरजेंसीज को हैंडल करने का उसे तजुर्बा था। वहां से



Scanned by CamScanner

उसका घर भी अब थोड़ी ही दूर रह गया था, लिहाजा वो उसे चुला कर ला सकता था।

लपकता हुआ वो अपनी मंजिल पर पहुंचा। आयरन गेट ठेल कर वो भीतर दाखिल हुआ और फ्रंट डोर पर जाकर उसने कालबैल बजाई। उतावलेपन में साथ ही उसने दरवाजे पर दस्तक भी दी।

तत्काल कोई उत्तर न मिला।

भीतर टेलीविजन चल रहा था, शायद उस वजह से भीतर कालबैल की या दस्तक की हाजिरी ही नहीं लगी थी। हेमा और उसका पति शेखर साहनी दोनों ही शायद टीवी के सिरहाने बैठे हुए थे।

उसने फिर कालबैल बजाई।

"अरे, खुला है।"–भीतर से हेमा की ऊंची आवाज आयी।

उसने दरवाजे को धक्का दिया तो वो निशब्द खुल गया। उसने भीतर कदम डाला और आगे निगाह दौड़ाई तो उसे हेमा दिखाई दी जो उस घड़ी हाथ में चाय की ट्रे थामे किचन से बाहर निकल रही थी।

"अरे!"– अनुराग को देखते ही उसके मुंह से निकला–"तुम यहां क्या कर रहे हो! तुम्हारा तो पिक्चर का प्रोग्राम था! श्रेया कहां है?"

"वो यहां नहीं है?"–अनुराग ने पूछा।

"नहीं तो!"

"कमाल है!"

हेमा न मौसियों वाली उम्र की थी और न ही मौसी लगती थी। वो कोई सैंतीस साल की, लम्बी, छरहरी, खूबसूरत महिला थी जो श्रेया की मौसी लगने की जगह उसकी बड़ी बहन लगती थी। उसके चेहरे पर बुद्धिमत्ता की छाप थी और उस घड़ी उसने अपने बाल जूड़े की सूरत में कस कर गर्दन के पीछे बांधे हुए थे।

"कमाल क्यों है, भई?"–वो बोली।

"हैबीटैट तो वो पहुंची ही नहीं"–अनुराग उतावले स्वर में बोला–"यहां आप कहती हैं वो है नहीं, तो फिर कहां है?"

"श्रेया तुम्हें हैबीटैट में नहीं मिली, तुम बस इस वजह से बदहवास हो?"

"मैं! बदहवास! ओह!"

"क्या ओह?"

"शायद ऐसा ही है जो मैं असल बात कहना तो भूल ही गया। हेमा जी, यहां से थोड़ी ही दूर सड़क पर एक कार खड़ी है जिसमें एक आदमी पड़ा है।"



Scanned by CamScanner

"पड़ा है!"

"ड्राइविंग सीट पर लुढ़का। स्टियरिंग पर सिर डाले। बेहोश। पता नहीं क्या हुआ है उसे! भीतर हाथ डालकर मैंने उसे हिलाया डुलाया भी था लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ था। आपके अंकल डॉक्टर उपेन्द्रनाथ साईंटिस्ट थे और एक बार आपने खुद बताया था कि काफी अरसा आपने उनकी रिसर्च लैब में काम किया था। इस लिहाज से मैडीसिंस का, फस्ट एड का कोई तो तजुर्बा आपको जरूर होगा!"

"इस वक्त तुम्हारी मेजर प्राब्लम क्या है? श्रेया, जो हैबीटैट नहीं पहुंची या वो आदमी जो कार में बेहोश पड़ा है?"

"मुझे अन्देशा है।"

"क्या?"

"श्रेया को कुछ हो न गया हो!"

"नानसेंस! यहां के और हैबीटैट सेंटर के बीच क्या हो जायेगा उसे?"

"फिर भी..."

"फिर भी चाय पियो। आओ।"

वो आगे बढ़ा और उसके पीछे चलता ड्राईंगरूम में पहुंचा जहां शेखर साहनी आंखें मूंदे सोफे पर ढेर था।

शेखर साहनी हेमा का पति था और पब्लिक लायब्रेरी में लायब्रेरियन था। उम्र में चालीस का था लेकिन पचास के ऊपर का लगता था। बाल कनपटियों से पूरी तरह से सफेद हो चुके थे, सामने से उड़ने लगे थे और मोटे शीशों वाला निगाह का चश्मा लगाता था। कभी श्रेया के साथ चल रहा होता था तो लोग बाग सहज ही उसे श्रेया का पिता समझ लेते थे जबकि वो श्रेया से सिर्फ सत्तरह साल बड़ा था। हेमा और वो एक अरसे से विवाहित थे लेकिन उन्हें औलाद का मुंह देखना नसीब नहीं हुआ था। इस वजह से भी वो दोनों श्रेया पर बहुत स्नेह उंढ़ेलते थे जो कि हेमा की उससे बहुत बड़ी–दिवंगत–बहन की बेटी थी।

हेमा ने चाय की ट्रे सेंटर टेबल पर रखी।

अनुराग ने शेखर पर निगाह डाली।

"ये तो सो रहे हैं!"–फिर बोला।

"टीवी बंद करो"–हेमा बोली–"जाग जायेंगे।"

"बंद करने से?"

"हां।"



Scanned by CamScanner

"कमाल है!"

"लायब्रेरी से लौटते हैं तो टीवी आन करके उसके आगे बैठ जाते हैं, बैठे बैठे ऊंघ जाते हैं, ऊंघते ऊंघते सो जाते हैं। आजकल के मौसम में ये इनका पसंदीदा शगल है। टीवी समझो लोरी सुनाता है। लोरी सुनाई देनी बंद हो जायेगी तो नींद में विघ्न आयेगा ही न!"

"आप...मजाक कर रही हैं।"

वो हंसी।

अनुराग ने रिमोट उठाकर उसे 'म्यूट' पर किया।

तत्काल शेखर ने आंखें खोलीं।

"देखा!" –हेमा बोली।

अनुराग ने सहमति में सिर हिलाया।

"क्या है?"–शेखर बोला।

"चाय है।"–हेमा बोली–"और अनुराग है। सुनो, क्या कहता है!"

"क्या कहता है?"

"बाहर सड़क पर"–अनुराग नर्वस भाव से बोला–"एक कार में एक आदमी पड़ा है। पता नहीं बीमार है या क्या है लेकिन बेहोश पड़ा है। मैंने सोचा हेमा जी उसे देखें तो शायद..."

"तुम्हारा तो"–शेखर बोला–"श्रेया के साथ हैबीटैट में पिक्चर का प्रोग्राम था? ये कार में बेहोश आदमी बीच में कहां से आ घुसा?"

"दोनो इकट्ठे वहां नहीं गये थे।"–हेमा बोली–"श्रेया ने इसे हैबीटैट में मिलना था। वो यहां से अकेली गयी थी। तुम टीवी के सामने बैठे बैठे झपकी न लेने लगे होते तो तुम्हें ये बात मालूम होती।"

"नानसेंस! अरे, यूं ही जरा सा ऊंघ गया होऊंगा वर्ना मैं तो बराबर टीवी देख रहा था। इतनी बढ़िया पिक्चर थी–मर्डर मिस्ट्री। हूडनइट–जब कातिल का पता लगने वाला हो, तब कोई ऊंघता है! कम्बख्त मकतूल का चचेरा भाई ही कातिल निकला।"

हेमा ने शेखर को चाय दी।

अनुराग ने पहले ही इनकार कर दिया।

"श्रेया यहां से कब गयी थी?"–उसने पूछा।

"मैं तो टीवी देख रहा था"–शेखर बोला–"मुझे तो वक्त का कोई अंदाजा नहीं।"

"आधा घंटा पहले गयी थी।"–हेमा ने बताया–"बोल के गयी थी कि हैबीटैट जा रही थी जहां उसका तुम्हारे साथ पिक्चर का प्रोग्राम था।"



Scanned by CamScanner

"वहां तो वो पहुंची नहीं।"–अनुराग बोला।

"अरे, तो क्या आफत आ गयी।"–शेखर बोला–"कहीं अटक गयी होगी। कोई काम याद आ गया होगा। इधर उधर कहीं चली गयी होगी। लेट लतीफ तो वो है ही। गायबखयाल भी। घर से निकली होगी तो कोई और काम याद आ गया होगा। याद ही नहीं रहा होगा कि कब हैबीटैट पहुंचना था।"

"वो तो चलो ठीक है लेकिन कार में वो आदमी..."

"अरे, तुम्हें क्या? वो कोई अहम बात नहीं। अहम बात ये है कि मेरी चाय में चीनी कम है।"

"दो चम्मच डाली है।"–हेमा बोली–"हमेशा की तरह।"

"मुझे कम लग रही है।"

"तुम डायबटीज को दावत दे रहे हो।"

"अभी मेरी वो उम्र नहीं आयी।"

"डायबटीज की कोई उम्र नहीं होती। बच्चे को हो जाती है।"

"मैं बच्चा नहीं हूं। चालीस साल का हूं।"

"बात का मतलब समझो।"

"मैं कह रहा था"–अनुराग व्यग्र भाव से बोला–"कार में वो आदमी..."

"मैंने भी तो कुछ कहा।"–शेखर बोला–"तुम्हें क्या?"

"लेकिन श्रेया..."

"आ जायेगी।"–हेमा बोली–"तुम उसे हैबीटैट में न मिले तो और कहां जायेगी! यहीं तो आयेगी! तुम उस आदमी की बात करो।"

"क्या बात करे?"–शेखर बोला–"मैंने कहा न..."

"तुम एक मिनट चुप करो। लड़के को कुछ कहने दो।"

"कहो, भई। जो मर्जी कहो।"

"मैं चाहता हूं"–अनुराग हेमा से सम्बोधित हुआ–"कि आप चलकर जरा उसे देखें। हो सकता है उसे किसी फौरी फर्स्ट एड की ही जरूरत हो और वो आपके अटेंड करने से ठीक हो जाये!"

"ऐसा?"

"जी हां।"

"ठीक है, मैं चलती हूं।"

"खामखाह वक्त बरबाद करोगी"–शेखर खामोश न रह सका–"साला टुन्न होगा। नशा उतरेगा तो अपने आप ठीक हो जायेगा।"



Scanned by CamScanner

"वो नशे में था?"–हेमा ने अनुराग से पूछा।
"क्या पता!"–अनुराग बोला–"स्टियरिंग पर सिर डाले पड़ा था। कैसे पता चलता?"
"सांस चल रही थी?"
"सांस! हे भगवान! ये तो मैंने सोचा ही नहीं था! इस बात का तो मुझे खयाल तक नहीं आया था!"
"चलो, देखते हैं।"
"खामखाह टाइम बरबाद करोगी।"–शेखर बोला।
"तुम्हें फिक्र है मेरे टाइम की बरबादी की?"
"क्यों न होगी?"
"ठीक है।"
"ठीक है! क्या ठीक है?"
"तुमने मेरे टाइम को कीमती समझा, मैं थैंक्यू बोलती हूं। अब उठो।"
"क्या!"
"तुम टाइम बरबाद करना अफोर्ड कर सकते हो–कर रहे हो–टीवी देखना भी वक्त की बरबादी ही है। उठो और लड़के के साथ जाओ।"
"लेकिन मेरी चाय..."
"साथ ले जाओ। नाओ, कम आन..."
"कोई बेवड़ा हुआ तो गले पड़ जायेगा।"
"जाके तसदीक करो। हुआ तो लौट आना।"
शेखर ने एक आह सी भरी, अपना चाय का कप एक तरफ रखा और उठ खड़ा हुआ।
"किसी की जाती जिन्दगी में दखल देना नादानी होती है"–वो बोला–"लेकिन तुम कहती हो तो..."
"मैं कहती हूं।"
"...जाता हूं।"
"अभी।"
"हां, भई, अभी। और क्या परसों?"
हेमा खामोश रही।
"चलो, भई। दिखाओ कहां है वो कार? और कार वाला?"
दोनों वहां से बाहर निकले।
बाहर धुंध कदरन और गहरी हो गयी थी और अन्धेरा बढ़ गया था।
"इधर।"–अनुराग बोला।



Scanned by CamScanner

खामोशी से फुटपाथ पर चलते वो आगे बढ़े।
"अभी दूर है?"–कुछ क्षण बाद शेखर बोला।
"बस, जरा सा और आगे। पहुंचे ही समझिये।"
"क्या आदमी हो, यार! न चैन करते हो, न करने देते हो। इस वाहियात मौसम में घर से निकालकर ले आये!"
"मैं!"
"वजह तो तुम्हीं बने।"
"हेमा जी तो अच्छी भली खुद आ रही थीं, आप ही ने तो..."
"क्या मैंने ही तो?"
"वो रही कार! लेकिन...कुछ गड़बड़ है।"
"कैसी गड़बड़?"
"अब वहां दो कारें खड़ी हैं और...दूसरी कार तो...पुलिस की है? जीप है।"
"पीसीआर वैन।"–शेखर के मुंह से निकला।
पुलिस की गाड़ी परमीत मेहरा की नीली सान्त्रो के ऐन पीछे खड़ी थी और दो बावर्दी पुलिसिये सान्त्रो की ड्राइविंग साइड में मौजूद थे।
"माई डियर"–शेखर व्यग्र भाव से बोला–"ये पुलिस का मामला है..."
तभी एक एम्बूलेंस वहां पहुंची।
"...पुलिस का गम्भीर मामला है। हमारा यहां कोई मतलब नहीं। चलो।"
"लेकिन..."
"मैं कहता हूं चलो।"
"लेकिन, साहनी साहब..."
"अरे, तुम उस आदमी का मुआयना ही तो चाहते थे! अब ये काम पुलिस करेगी या नहीं करेगी!"
अनुराग ने जवाब एक अनिश्चयभरी खामोशी से दिया।
"अब पुलिस पता लगायेगी कि वो शख्स बीमार है, टुन्न है या कोई और बात है। मेरे खयाल से तो लगा ही चुकी होगी। इसी वजह से एम्बूलेंस आयी है। तुम पुलिस के काम में टांग अड़ाना चाहते हो?"
"नहीं।"
"तो चलो वापिस।"

घर अभी पचास कदम दूर था जबकि भूरे बालों वाली एक सुन्दर



Scanned by CamScanner

युवती साये की तरह उनके करीब पहुंची और उनके साथ चलने लगी।

"श्रेया!"–अनुराग के मुंह से निकला।

"क्या आदमी हो, भई!"–वो तनिक हांफती, तनिक भुनभुनाती बोली–"वहां रुके क्यों नहीं?"

"कहां!"

"अरे, हैबीटैट सेंटर में! ऑडीटोरियम के बाहर?"

"तुम वहां पहुंची थीं?"

"लो! तो और मुझे कैसे पता लगा कि तुम वहां गये थे लेकिन रुके नहीं थे!"

"ओह!"

"वहां मुझे तुम्हारा दोस्त कौशल मिला। उसी ने बताया कि तुम उससे भी मेरे बारे मे पूछ रहे थे। चले क्यों आये? रुके क्यों नहीं?"

"कब तक रुकता? इतनी देर तो रुका था तुम्हारे इंतजार में! शो शुरू होने लगा था तो तभी वहां से हिला था।"

"तब भी क्यों?"

"फिक्र हो गयी थी तुम्हारी।"

"खामखाह!"

"बहरहाल शुक्र है कि तुम ठीक ठाक हो!"

"मुझे क्या होना था?"

"लेकिन तुम भी तो न रुकी वहां!"

"क्या लोग हो, भई, तुम!"–शेखर बोला–"भागे फिरते हो, लुकाछिपी खेलते हो, फिर गिले शिकवे करते हो।"

"मैंने कोई लुकाछिपी नहीं खेली थी।"–श्रेया ने तत्काल विरोध किया–"वो तो हालात ही ऐसे बन गये थे कि..."

"क्या हुआ था?"

"राह चलते एक बच्चे को कोई कार वाला साइड मार गया। मुश्किल से छः साल का था। गनीमत हुई कि कुचला न गया।"

"ओह! काफी जख्मी हुआ?"

"काफी तो नहीं। हाथ पांव करारे ठुके थे, माथा फूटा था। अस्पताल तो पहुंचाना ही पड़ा।"

"कार वाला? उसने कुछ न किया?"

"वो तो कमीना रुका भी नहीं था।"

"पुलिस को खबर की होती! हिट एण्ड रन का केस बनता।"



Scanned by CamScanner

"क्या खबर करती? अन्धेरे में न कार का नम्बर दिखाई दिया, न रंग दिखाई दिया, न मॉडल दिखाई दिया। कम्बख्त ने एक्सीडेंट होते ही लाइट्स ऑफ कर दीं और भाग गया।"

"डर्टी रास्कल! बच्चा था कौन? कहां रहता था?"

"कॉलोनी का नहीं था। नाले के पार जो बंगलादेशियों की झुग्गी झोंपड़ी हैं, उनमें रहता बताता था। इसी वजह से मुझे उससे ज्यादा वास्ता रखना बखेड़े का, इनवाल्वमेंट का काम लगा। मैंने बस इतना किया कि उसे अस्पताल में कैजुअल्टी पर पहुंचा दिया। इसी चक्कर में हैबीटैट पहुंचने में देर हो गयी। पहुंची तो तुम न मिले। मजबूरन लौट आई। अनुराग, तुम्हें तो वहीं रुकना चाहिये था!"

"आई एम सॉरी। अब वापिस चलते हैं।"

"अब क्या फायदा! अब तो कितनी सारी फिल्म निकल भी चुकी होगी! फिर पता नहीं लेट एन्ट्री परमिटिड होगी या नहीं!"

"मैंने इतनी बार तुम्हारा मोबाइल बजाया। उस पर भी तो तुम कॉल रिसीव नहीं कर रही थीं! ये भी तो मेरी परेशानी की एक वजह थी!"

"मोबाइल घर पर है, खराब हो गया था, इसलिये।"

"ओह!"

"पीछे क्या हुआ था? मैंने सड़क पर पीसीआर वैन खड़ी देखी, फिर एम्बूलेंस पहुंचती देखी। कोई एक्सीडेंट हुआ?"

"नहीं। एक कार वाले को कुछ हो गया था। अपनी कार में स्टियरिंग पर औंधे मुंह पड़ा था।"

"कोई दौरा-वौरा पड़ा होगा!"

"क्या पता! दस मिनट पहले वो मुझे उस हालत में दिखाई दिया था तो मैंने सोचा था कि उसे मदद की जरूरत होगी। पुकारा था, हिलाया डुलाया था लेकिन कोई रिस्पांस नहीं मिला था। उसकी खातिर अभी मैं साहनी साहब को साथ लेकर वहीं वापिस लौट रहा था तो हमें पुलिस पहुंची दिखाई दी थी। साहनी साहब बोले कि अब हमारा वहां कोई काम नहीं था इसलिये..."

"ठीक बोला।"-शेखर बोला-"पुलिस से न्यारे न्यारे ही रहना चाहिये। ये करीब जाता, उस बाबत कुछ बोलता तो वो लोग बतौर विटनेस इसे वहीं बिठा लेते। मुझे भी।"

"आपको खामखाह!"-अनुराग बोला।

"अरे, रुकना तो पड़ता न मेरे को! तुम्हें क्या मैं पुलिस के हवाले छोड़ के चला जाता?"



Scanned by CamScanner

"ये भी ठीक है।"

वो कब के इमारत के आयरन गेट पर आ खड़े हुए थे। वार्तालाप में ब्रेक आया तो उन्हें भीतर दाखिल होने का खयाल आया।

तभी इमारत का मेन गेट खोल कर एक युवती ने बाहर कदम रखा।

युवती का नाम अविका नागपाल था। वो जींस और मोटी ऊन का बुना घुटनों तक आने वाला हाईनैक का पुलोवर पहने थीं और सिर के बालों को पोनीटेल की सूरत में बांधे थी। उसके सुन्दर चेहरे पर उस घड़ी किसी भी तरह का कोई मेकअप नहीं था, फिर भी वो निहायत खूबसूरत लग रही थी।

वस्तुत: वह वो लड़की थी जो परमीत मेहरा को पहले मिली थी और जिसने उसके छिछोरेपन से भड़क कर पुलिस को कॉल करने की धमकी दी थी।

उसका पिता रामनाथ नागपाल उस इलाके का प्रतिष्ठित समाजसेवी था और नजदीकी अलीगंज के अपने पुश्तैनी मकान में बालघर नाम का एक यतीमखाना चलाता था। इलाके के लोग उसे महाशय जी के नाम से पुकारते थे। उसका खुद का कहना था कि यतीमखाने का आधा खर्चा चन्दा उगाही से चलता था और बाकी का आधा वो पल्ले से करता था लेकिन बाज लोग–जो आदतन खुन्दकी थे या उससे खुन्दक खाते थे–कहते थे कि यतीमखाने को कई तरह की सरकारी ग्रांट हासिल थीं जिनकी पूरी की पूरी रकम यतीमों पर खर्च भी नहीं होती थी।

"हल्लो! गुड ईवनिंग।"–करीब आकर अविका मधुर स्वर में बोली–"मैं हेमा जी से मिलने आयी थी। बालघर में क्रिसमस मेले की तैयारियां चल रही हैं न! उसके लिये एक कमेटी बनाई जा रही है जिसमें सब का खयाल है कि हेमा जी को शामिल होना चाहिये।"

"हां बोल दी?"–शेखर के मुंह से अनायास निकला।

"अभी नहीं। कहती हैं एकाध दिन में सोच के जवाब देंगी।"

"तुम भी अपने डैडी की राह पर चल रही हो! सोशल सर्विस कर रही हो!"

"डैडी इतना काम करते हैं। उनका हाथ बंटाना मेरा फर्ज बनता है न!"

"ठीक।"

वो चली गयी।

"हेमा नहीं बोलेगी हां।"–पीछे शेखर यकीनी तौर पर बोला।

"बहुत गारन्टी से कह रहे हैं?"–अनुराग बोला।



Scanned by CamScanner

"हां। ऐसे कामों के लिये औकात बनानी पड़ती है, सजधज के निकलना पड़ता है। घर में तो कैसे भी रहा जा सकता है–जैसे कि रहने की उसने आदत बना ली है–रेत के बोरे की तरह। कभी ब्यूटी पार्लर में जाये, बाल बनवाये, फेशियल कराये, मसाज कराये, उम्दा मेकअप लगाये, तो प्रियंका चोपड़ा को शर्मिन्दा कर दे। लेकिन कौन जाये।"

"क्या जरूरत है! हेमा जी ऐसे ही इतनी खूबसूरत लगती हैं..."

"और खूबसूरत लगने पर कोई केस कर देगा? पुलिस पकड़ ले जायेगी?"

"हा हा। आप मजाक कर रहे हैं।"

"ये स्ट्रेटेजी है, भई। हर औरत कहती है न, सजना है मुझे सजना के लिये?"

"हां।"

"पति सजना नहीं होता न! होता है तो रहता नहीं। इसलिये क्या जरूरत है!"

"आप जरूर मजाक कर रहे हैं।"

"छोड़ो अब।"

"सर, खूबसूरत लगने के लिये खूबसूरत होना ही काफी होता है। मिसाल के तौर पर महाशय जी की बेटी को देखा आपने! कोई मेकअप था उसके चेहरे पर? किसी फैंसी तरीके से बाल संवारे हुए थे उसने! कोई तौबाशिकन पोशाक पहने थी वो! नहीं था ऐसा लेकिन क्या फिर भी खूबसूरत नहीं लग रही थी?"

"अरे, बरखुरदार, मर्सिडीज कार को भी पटका मारना पड़ता है, वैक्स पालिश लगाना पड़ता है।"

"यू हैव ए प्वायन्ट देयर, सर।"

"जिस लड़की की खूबसूरती की अभी तारीफ कर के हटे हो, वो साड़ी जैसी कोई ड्रैस पहन ले, मेकअप लगा ले, पार्लर की हवा खा आये तो तुम्हारे होश उड़ा देगी। श्रेया को छोड़ के उसके पीछे चल दोगे।"

"ओह, नो! नैवर!"

"मैंने मिसाल के तौर पर कहा।"

"आप लोग यहां खड़े शास्त्रार्थ कीजिये"–श्रेया बोली–"मैं जाती हूं भीतर।"

तत्काल दोनों मर्द भी आगे बढ़े।

हेमा दरवाजे पर खड़ी थी। उसने सबके लिये रास्ता छोड़ा और उनके पीछे दरवाजा बंद किया।



Scanned by CamScanner

"क्या हुआ तेरे को?"–उसने श्रेया से पूछा–"कहां चली गयी थी?"
श्रेया ने फिर बताया।
"और"–हेमा अनुराग की तरफ घूमी–"उस कार वाले की क्या बात निकली?"
"पता नहीं।"–अनुराग बोला–"हमारे पहुंचने से पहले वहां पुलिस पहुंची हुई थी।"
"हमने दखलअन्दाज होना मुनासिब नहीं समझा था।"–शेखर बोला–"अब चाय का क्या कहती हो?"
"क्या कहूं?"
"कहूं नहीं, करूं। फिर बनाओ सबके लिये।"
हेमा ने सहमति से सिर हिलाया और किचन की ओर बढ़ चली।

इन्स्पेक्टर हरिशंकर मीना जोरबाग रोड पहुंचा।
वो उस इलाके के थाने का एस.एच.ओ. था और हाल ही में करोलबाग थाने से ट्रांसफर होकर वहां आया था। नयी पोस्टिंग में अपरिचित स्टाफ पर अपना रौब जमाने के लिये वो ऐसी हलचल, ऐसी पहल जरूरी समझता था, बाद में शायद उसे थाने की कुर्सी से हिलना भी गवारा न होता।
मौके पर मौजूद उसके मातहत सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल ने उसे सैल्यूट मारा।
"क्या पता लगा?"–मीना ने पूछा–"धड़का लगा? दिल बैठ गया?"
"नहीं, जनाब।"–युवा सब-इन्स्पेक्टर अदब से बोला–"खुदकुशी का केस जान पड़ता है।"
"खुदकुशी! कैसे की?"
"जहर खाकर।"
"जहर?"
"आरसेनिक!"
"संखिया?"
"जी हां।"
"वो तो खतरनाक जहर है!"
"जी हां। तड़पने का मौका नहीं देता। तमाम लक्षण उसी के हैं।"
"लिहाजा मरा पड़ा मिला था?"
"जी हां। इसीलिये लैब वालों को तलब किया। आते ही होंगे।"



Scanned by CamScanner

"किसी चीज को छुआ तो नहीं?"

"नहीं, जनाब। खुली खिड़की से भीतर हाथ डालकर बस सिर्फ ये तसदीक की कि मरा पड़ा था।"

"ठीक। फिंगरप्रिंट्स–खासतौर से दरवाजों पर से–बरामद होंगे तो तफ्तीश के काम आयेंगे, भले ही केस खुदकुशी का जान पड़ता है। नहीं?"

"जी हां। मैंने खास एहतियात बरती है कि यहां कोई भी किसी चीज को न छुए।"

"बढ़िया। वैसे हैरानी की बात है कि इसने कार में बैठ के खुदकुशी की। कार पर इस कदरन सुनसान सड़क पर पहुंचा और उसे यहां खड़ी करके जहर खाया। घर में इतमीनान से मरता तो क्या फर्क पड़ जाता!"

"घर से निकलने के बाद जान देने का खयाल आया होगा।"

"तो लौट जाता!"

"मरने को तड़प रहा होगा।"

"इसलिये तड़प कर मरा! कोई शिनाख्त हुई? पता चला कौन है?"

"कुछ तो चला।"

"कुछ?"

"पूछताछ से पता चला है कि ये सैकण्डहैंड नीली सान्त्रो कार इस इलाके में काफी जानी पहचानी है, और कार की वजह से खुद ये काफी जाना पहचाना है। शाम को यहां और आसपास की सड़कों पर मंडराता अक्सर देखा जाता था।"

"मनचला मजनूं होगा! लड़कियां ताड़ता होगा!"

"ऐसा ही जान पड़ता है। कोई बड़ी बात नहीं थाने में इसकी हरामीपन्ती की कोई एकाध शिकायत भी दर्ज हो। रिकार्ड देखने से पता चलेगा।"

"नाम क्या है? कहां रहता था?"

"मालूम नहीं।"

"भई, कार चला रहा था तो ड्राइविंग लाइसेंस भी रखता होगा! ऐसी जानकारी ड्राइविंग लाइसेंस पर दर्ज होती है।"

"ड्राइविंग लाइसेंस की बरामदी के लिये इसकी जेबें टटोलना जरूरी था। ऐसी कोशिश में लाश की पोजीशन शिफ्ट हो सकती थी इसलिये फिलहाल मैंने ऐसा करना मुनासिब नहीं समझा था।"

"ठीक किया तुमने। अभी डाक्टर आकर इसका एक्सपर्ट एग्जामिनेशन कर ले, फोटोग्राफर आकर तसवीरें खींच ले फिर लाश को मूव करके कार को फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट के हवाले करेंगे।"



Scanned by CamScanner

पहले फोटोग्राफर पहुंचा।

वो अपने काम से फारिग हुआ तो तभी एक कार वहां पहुंची और सड़क के पार के फुटपाथ के साथ लग कर खड़ी हुई। तत्काल एक सूटधारी अधेड़ व्यक्ति ने कार से बाहर कदम रखा।

"डाक्टर अवस्थी।"–एस.आई. बहल बोला।

एस.एच.ओ. मीना ने सहमति में सिर हिलाया।

अवस्थी पुलिस का डाक्टर था इसलिये उसका उससे अक्सर वास्ता पड़ता रहा था।

वो करीब पहुंचा तो एस.आई. ने खामोशी से सान्त्रो की ड्राइविंग सीट की तरफ इशारा कर दिया और स्वयं परे हट गया।

डाक्टर ने मशीनी अंदाज से अपना काम शुरू किया। उसने सावधानी से भीतर की बत्ती जलाई और लाश का मुआयना करने लगा।

"कमाल है?"–वो हड़बड़ाया।

"क्या कमाल है?"–एस.एच.ओ. बोला।

"अभी। अभी।"

स्टियरिंग पर ढेर लाश को डाक्टर ने यूं पीछे को धकेला कि वो सीट की पीठ के सहारे टिक गयी और भीतरी लाइट की रोशनी सीधी चेहरे पर पड़ने लगी। लाश का जबड़ा लटका हुआ था, आंखें पथराई हुई थीं और चेहरे पर गहन वेदना और आश्चर्य के भाव फ्रीज हुए हुए थे।

"आरसेनिक प्वायजनिंग नो डाउट।"–डाक्टर बड़बड़ाया–"जहर कैप्सूल में था। चबाये जाने पर टूटा। टूटे टुकड़े अभी भी मुंह में हैं।"

"कैप्सूल!"–एस.एच.ओ. बोला–"जहर से भरा कैप्सूल इसके पास कहां से आया! कोई आम मिलने वाली चीज तो नहीं ये!"

"इसके पास कहां से आया क्या मतलब? आप इसे खुदकुशी समझ रहे हैं?"

"आपका कोई जुदा खयाल है?"

"मुझे ये खुदकुशी नहीं जान पड़ती।"

"क्यों भला?"

"इसके गाल पर लिपस्टिक की छाप देखिये। दोनों जनाना होंठ परफैक्टली छपे हुए हैं। खुद इसके होंठों पर भी लिपस्टिक के निशान हैं। साफ जाहिर होता है कि कोई नौजवान, फैशनेबल लड़की इसके साथ थी जिसके साथ इसने चॉकलेट शेयर की थी।"

"चॉकलेट!"



Scanned by CamScanner

"मुंह पर ब्राउन चॉकलेट के अवशेष साफ पता चल रहे हैं। मेरे खयाल से जहर का कैप्सूल चॉकलेट के भीतर था या कैप्सूल पर चॉकलेट की मोटी परत चढ़ी हुई थी।"

"एक ही बात है। लेकिन जहर खाकर खुदकुशी करने वाला शख्स पहले जहर को कैप्सूल में क्यों डालेगा? फिर उस पर चॉकलेट क्यों चढ़ायेगा? या कैप्सूल को चॉकलेट में क्यों रखेगा?"

"ऐग्जैक्टली।"

"मतलब क्या हुआ इसका?"

"पुलिस वाले हो। सोचो।"

"ये खुदकुशी का केस नहीं? किसी ने इसे ऐसी, पहले से तैयारशुदा, चॉकलेट खिला कर इसका कत्ल किया?"

"यू सैड इट, सर।"

"किसी लड़की ने?"

"लिपस्टिक के निशान इसी बात की चुगली करते हैं। जनाना होंठों की सुर्ख छाप इसके बायें गाल पर है जो कि पैंसेजर सीट की तरफ है।"

"कार में इसके साथ कोई नौजवान लड़की थी?"

"साफ ऐसा जान पड़ता है। ये खुद नौजवान है, नापाक इरादों से क्यों ये किसी उम्रदराज औरत को भाव देगा?"

"मनचला मजनूं!"–एस.आई. बहल यूं बोला जैसे कोई भूली बात याद दिला रहा हो।

"क्या!"–डाक्टर सकपकाया।

"इसकी कुछ औनी पौनी शिनाख्त हुई है"–एस.एच.ओ. बोला–"जिससे पता चला है कि ये प्लेब्वाय वाली छवि वाला नौजवान था। किसी पटने लायक लड़की की तलाश में शाम को कार लेकर सड़कों पर मंडराना इसका शगल था।"

"ऐसी कोई लड़की पट कर इसका काम कर गयी?"

"हो सकता है।"

"वजह?"

"कोई रंजिश होगी। कोई खुन्दक होगी।"

"पहले की?"

"हां।"

"ऐसी लड़की को इसने फिर पिक कर लिया?"

"खुन्दक की खबर इसे नहीं होगी न!"



Scanned by CamScanner

"उसने इसे ऐसी चॉकलेट थमा दी जिसके बीच में जहरीला कैप्सूल था?"

"न सिर्फ थमा दी, खाने पर मजबूर किया। प्यार से, मनुहार से, कैसे भी, किया।"

"कमाल है!"

"और कई बातें पोस्टमार्टम से पता चलेंगी।"

"बहरहाल इसके मुंह में चॉकलेट और कैप्सूल के खोल के टुकड़े खुदकुशी की थ्योरी को तो नकार ही रहे हैं!"

"हां।"

"तो ये कत्ल का केस है?"

"ऐसा ही जान पड़ता है।"

"नये थाने में काम का बोझ वैसे ही ज्यादा है"–एस.एच.ओ. असंतोषपूर्ण भाव से बड़बड़ाया–"एक नया काम और पल्ले पड़ गया।"

"लाश को पोस्टमार्टम के लिये भिजवा दीजिये"–डाक्टर कार से परे हटता बोला–"अब मेरा यहां कोई काम नहीं।"

एस.एच.ओ. ने सहमति में सिर हिलाया।

फिर लाश को फिंगरप्रिंट्स एक्सपर्ट के हवाले कर दिया गया।

एक घंटे बाद एस.एच.ओ. मीना थाने वापिस लौटा।

तभी एक रौबदार सूरत वाले, उम्दा तन्दुरुस्ती वाले, फौजियों जैसी मुस्तैद चाल वाले, कदरन उम्रदराज शख्स ने उसके ऑफिस में कदम रखा।

"मिस्टर आगाशे!"–तत्काल एस.एच.ओ. के मुंह से निकला।

"शुक्र है, पहचाना। हाल ही में करोल बाग थाने में आपसे मुलाकात हुई थी। तब मेरे साथ हैडक्वार्टर से इन्स्पेक्टर शिवनाथ राजोरिया थे जिन्होंने मेरा आपसे परिचय कराया था।"

"तशरीफ रखिये।"

"थैंक्यू।"

आगन्तुक–विवेक आगाशे–आयु में पचास साल का था और सेना से रिटायर्ड कर्नल था। व्यवसाय से प्राइवेट डिटेक्टिव था–लेकिन क्रिमिनालोजिस्ट कहलाना ज्यादा पसन्द करता था–बाराखम्बा रोड पर स्थित पीरामल टावर्स की सातवीं मंजिल पर सिग्मा सिक्योरिटीज के नाम से उसका छोटा सा ऑफिस था। शहर के बुद्धिजीवी वर्ग में और दिल्ली पुलिस के टॉप ब्रास में उसकी बेहतर शिनाख्त इसलिये थी कि वो क्राइम क्लब नाम की एक संस्था का संचालक था, उसको मिला कर



Scanned by CamScanner

छः सदस्यों से जिसकी शुरूआत हुई थी और जो अब बढ़कर इक्कीस सदस्यों तक पहुंच चुकी थी। उसकी रिहायश जोरबाग में ही थी जहां कि क्राइम क्लब की मीटिंग्स अक्सर आयोजित की जाती थीं।

"कैसे आये, जनाब?"–एस.एच.ओ. ने पूछा।

"अपने इलाके के थाने में आपकी पोस्टिंग पर आपको वैलकम बोलने आया और बधाई देने आया।"

"वैलकम के लिये तो खैर शुक्रिया लेकिन बधाई वाली तो कोई बात नहीं, आगाशे साहब! कोई तरक्की तो हुई नहीं है मेरी! बस, एक थाने से उठा कर दूसरे थाने में बिठा दिया गया हूं।"

"ये इलीट का थाना है, यहां उच्चवर्ग के लोग बसते हैं, दूतावासों का इलाका है। शान की जगह है।"

"इसी वजह से जहमत की जगह है। जहां के बाशिन्दे सीधे कमिश्नर, जायन्ट कमिश्नर से बात करते हों, उनके सामने एक अदना एस.एच.ओ. की क्या बिसात!"

"एस.एच.ओ. अपने थाने का बादशाह होता है।"

"कहने की बात है वर्ना इन्स्पेक्टर तो गजेटिड ऑफिसर भी नहीं होता।"

"यू हैव ए प्वायंट देयर।"

"आप चाय पियेंगे?"

"पेशकश का शुक्रिया लेकिन नहीं, जरूरत नहीं।"

"आगाशे साहब, मुझे लगता नहीं कि रात की इस घड़ी आपने थाने में आने की जहमत मुझे बधाई देने के लिये की! वैलकम बोलने के लिये की!"

आगाशे मुस्कराया।

"मैं आपकी तीखी, पारखी निगाह की दाद देता हूं।"–फिर बोला।

एस.एच.ओ. धीरज से उसके आगे बोलने की प्रतीक्षा करता रहा।

"मुझे"–आगाशे आगे बढ़ा–"टीवी से जोरबाग रोड वाले वाकये की खबर लगी..."

"अच्छा! खबर आ भी गयी टीवी पर!"

"ब्रेकिंग न्यूज के तौर पर। चालू न्यूज बुलेटिन के नीचे जो रिबन सा चलता है, उसमें मुख्तसर सी।"

"फ्लैग लाइन।"

"वही।"



Scanned by CamScanner

"इतना भी कोई कम नहीं। वारदात अभी होकर हटी नहीं कि ब्रेकिंग न्यूज में उसका जिक्र आ भी गया।"

"आजकल टीवी वाले बहुत फुर्तीले हो गये हैं। खबर पर बाज की तरह झपटते हैं। ऐसी खबर पर तो झपटते ही नहीं, उसे सैंसेशनेलाइज भी करते हैं। प्रेजेंटेशन ऐसी होती है कि थ्रिलर फिल्म का मजा आ जाता है। आप भी टीवी न्यूज देखते ही होंगे! क्या खयाल है आपका?"

"वही, जो आपका है। तो आपको इलाके में हुए हालिया कत्ल की खबर यहां लायी?"

"जी हां। मैं क्रिमिनालोजिस्ट हूं, मेरे घर से मुश्किल से दो फर्लांग दूर वो जगह है जहां कि कत्ल हुआ। ये कैसे हो सकता है कि उसमें मेरी दिलचस्पी न जागती!"

"ठीक!"

"एण्ड दिस इज नो आर्डीनेरी, गार्डन वैरायटी ऑफ मर्डर। राईट! टीवी वालों के 'चैन से सोना हो तो जाग जाइये' वाले फेमस अंदाज में कहूं, उनकी सनसनीखेज जुबान बोलूं तो इसमें मिस्ट्री है, सस्पेंस है, रोमांस है, जिगसा पजल वाली कैफियत है, वर्ना अब तक केस हल हो चुका होता, कातिल पकड़ा जा चुका होता।"

"जादू के जोर से?"

"नहीं, भई, लेकिन ड्रामेटिक इफैक्ट पैदा करने के लिये ऐसा ही तो कहा जाता है! नहीं?"

"हां।"

"ब्रेकिंग न्यूज में ये भी बताया गया था कि मरने वाले का नाम परमीत मेहरा था और वो निजामुद्दीन वैस्ट में कहीं रहता था!"

"जी हां।"

"कैसे पता चला?"

"उसकी जेब से बरामद हुए ड्राइविंग लाइसेंस से। उस पर उसकी उम्र–पैंतीस साल–दर्ज थी और निजामुद्दीन वैस्ट का जो पता दर्ज था वो, पता करने से मालूम हुआ कि, असल में एक गैस्ट हाउस था जहां फर्निश्ड फ्लैट माहाना किराये पर मिलते थे। नाम मिसेज सीरोज़ गैस्ट हाउस है जहां एक छोटे से–एक बैडरूम, ड्राईंग–डायनिंग–फ्लैट में वो रहता था।"

"ड्राइविंग लाइसेंस पर कोई ऐसा टेम्परेरी पता तो दर्ज नहीं कराता?"



Scanned by CamScanner

"वो वहां पौने पांच साल से रहता बताया जाता है।"

"तभी। और क्या पता चला वहां से?"

"गैरशादीशुदा था, वहां अकेला रहता था। शहर में उसके कोई रिश्तेदार हैं या नहीं, इस बाबत अभी कोई खबर नहीं लगी। नौकरी ईस्ट ऑफ कैलाश में थी जहां कि एक गार्मेंट्स एक्सपोर्ट फर्म में मैनेजर था। सान्त्रो उसके खुद के नाम रजिस्टर्ड थी।"

"आई सी।"

"शौकीन, फैशनेबल, खाने पीने का रसिया आदमी था और मिजाज आशिकाना था।"

"ये आखिरी बात कैसे पता लगी?"

"उसकी प्लेब्वाय वाली छवि मशहूर है इलाके में और आसपास। औरतखोरी पसन्दीदा शगल बताया जाता था उसका। थाने में कम्पलेंट तक आ चुकी थी।"

"आई सी। तो जहर चॉकलेट में था जो उसने अपनी मौत से पहले खायी थी?"

"कैप्सूल में था। कैप्सूल चॉकलेट में था।"

"इसका मतलब तो ये हुआ कि ऐसी जानलेवा चॉकलेट पहले से तैयार करके रखी गयी थी?"

"जी हां।"

"फिर तो ये इरादतन किया गया कत्ल हुआ! डेलीब्रेट, कोल्डब्लडिड मर्डर हुआ!"

"जी हां।"

"सुईसाइड का कोई मतलब नहीं?"

"कोई मतलब नहीं। उसके साथ एक फैशनेबल, नौजवान लड़की थी जिसके साथ कार में उसकी चूमाचाटी चलती रही थी। ऐसे माहौल में कैसे कोई शख्स खुदकुशी की सोच सकता था!"

"वो भी ऐसी चॉकलेट चबा कर जिसमें जहरभरा कैप्सूल पैवस्त था?"

"बताइये!"

"लिहाजा चॉकलेट उसने खाई नहीं, उसे खिलाई गयी! परोसी गयी!"

"जाहिर है।"

"ऐसा उसकी शाम की संगिनी ने किया?"

"और कौन करता!"



Scanned by CamScanner

"मुहावरे के तौर पर लोग बाग कहते हैं कि माशूक के हाथों जहर भी खा लेंगे। इस केस में माशूक ने खिलाया भी और आशिक ने खाया भी?"

"जाहिर है।"

"कातिल हसीना का कोई सुराग मिला?"

"अभी नहीं।"

"मिलने की उम्मीद तो बराबर होगी?"

"ऐसा तो मैं नहीं कह सकता क्योंकि इस सिलसिले में आगे बढ़ने में मदद करने वाला कोई क्लू तो हाथ आया नहीं है। हालात का इशारा साफ इस तरफ है कि परमीत मेहरा नाम के उस शख्स की मौत से पहले कोई लड़की उसके साथ थी लेकिन कार में कहीं से कोई एक भी जनाना फिंगरप्रिंट हासिल नहीं हुआ है।"

"जनाना फिंगरप्रिंट नहीं हासिल हुआ या कैसा भी कोई फिंगरप्रिंट नहीं हासिल हुआ?"

"और फिंगरप्रिंट्स हासिल हुए हैं, खाली उनमें जनाना फिंगरप्रिंट कोई नहीं था।"

"जो फिंगरप्रिंट्स हासिल हुए हैं, वो सब मर्दाना हाथों के थे?"

"हां।"

"शिनाख्त हुई?"

"एक तो मकतूल के ही थे..."

"जो कि स्वाभाविक बात थी। आखिर कार उसकी थी, वो उसमें सवार था, उसकी लाश उसमें पायी गयी थी।"

"जी हां।"

"और?"

"और एक ही मर्दाना प्रिंट बरामद हुआ है जो कि कार के ड्राइविंग साइड के दरवाजे के हैंडल पर बना था। वो प्रिंट उस हैंडल के अलावा बाकी कार में और कहीं नहीं था।"

"ये अजीब बात नहीं?"

"कार को पिछले चौबीस घंटों में वाश किया गया था और पालिश मारी गयी थी। उसपर से व्यापक रूप से फिंगरप्रिंट्स न उठाये जा सके होने की ये भी एक वजह थी।"

"दूसरे फिंगरप्रिंट्स की कोई शिनाख्त हुई?"

"अभी नहीं लेकिन रूटीन के तौर पर उन्हें पुलिस के फिंगरप्रिंट्स के कम्प्यूट्राइज्ड रिकार्ड से कम्पैरिजन के लिये भेजा गया



Scanned by CamScanner

है। हमारे फिंगरप्रिंट्स वाले का अरैस्ट का कोई रिकार्ड हुआ तो उनकी शिनाख्त हो जायेगी।''

''आई सी। इन्स्पेक्टर साहब, जहर का कैप्सूल में होना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन वो कैप्सूल चॉकलेट में किसलिये?''

''ये भी कोई पूछने की बात है!''

''उसका वजूद छुपाने के लिये!''

''और क्या?''

''लड़की ने–मकतूल की शाम की कम्पैनियन ने–चॉकलेट पेश की, मकतूल ने चॉकलेट कुबूल की, चॉकलेट खाई और भीतर मौजूद जहर की वजह से ढेर हो गया?''

''बिलकुल!''

''धोखा हुआ उसके साथ?''

''बराबर हुआ।''

''जहर आरसेनिक बताया जाता है जिसे कि देसी जुबान में संखिया कहते हैं। संखिया कोई राह चलते मिलने वाली चीज तो नहीं जो किसी पंसारी से, किसी कैमिकल बेचने वाले से, किसी कैमिस्ट से सहज ही खरीदी जा सकती हो! लड़की को वो जहर कैसे मुहैया हुआ? कहां से वो उसे हासिल कर पायी?''

''बड़ा सवाल है ये पुलिस के सामने।''

''जिसका फिलहाल आपके पास कोई जवाब नहीं!''

''है तो ऐसा ही।''

''और कार से कोई जनाना फिंगरप्रिंट्स बरामद नहीं हुए!''

''जी हां।''

''लिहाजा लिपस्टिक ही क्लू है जिसके दम पर आप कहते हैं कि कातिल कोई हसीना है!''

''मकतूल की फितरत भी तो क्लू है! शाम के वक्त उस रंगीले राजा के पहलू में लड़की के सिवाय–विलिंग गर्ल के सिवाय–किसी और की कल्पना नहीं की जा सकती।''

''लिपस्टिक का कोई अनैलेसिस किया गया?''

''उसके बारे में यही पता चला है कि वो लोरियल ब्रांड की सुर्ख लाल रंग की लिपस्टिक थी।''

''जो मकतूल के होंठों पर तब लगी थी जब उसने लड़की को किस किया था और उसके बायें गाल पर तब लगी थी जब लड़की ने उसे किस किया था?''



Scanned by CamScanner

"जी हां।"

"मकतूल के चॉकलेट खाने से पहले?"

"और कब? संखिया घातक जहर है जो पलक झपकते असर करता है, मुश्किल से तड़पने का मौका देता है।"

"कातिल कोई मर्द नहीं हो सकता...?"

"लोरियल ब्रांड की सुर्ख लिपस्टिक लगाने वाला?"–एस.एच.ओ. के स्वर में उपहास का पुट आ गया।

"...जिसने पहले जबरन या किसी बहाने से या किसी जुगत से मकतूल को जहर के कैप्सूल वाली चॉकलेट खिलाई और फिर उसके होंठों पर और गाल पर लिपस्टिक के निशान बनाये ताकि लगता कि कारनामा किसी औरत का था!"

एस.एच.ओ. हड़बड़ाया, उसने कई क्षण अपलक आगाशे को देखा।

"जनाब, हो तो सकता है।"–फिर बोला–"मकतूल के चेहरे पर लिपस्टिक कुछ ज्यादा ही थुपी हुई थी। इतनी लिपस्टिक तो कोई सुघड़, फैशनेबल लड़की अपने चेहरे पर नहीं थोपती–वो भी लोरियल जैसी कीमती लिपस्टिक।"

"आजकल तो नौजवान लड़कियों में लिपस्टिक यूं लगाने का रिवाज है कि लगे ही न कि लगी हुई है।"

"जी हां। जी हां। लेकिन कातिल अगर मर्द था तो चॉकलेट किसलिये? मर्द का मर्द को चॉकलेट पेश करना तो अपने आप में शक उपजाने वाला काम होता!"

"आपका मतलब है उसने मकतूल के पेट में जहर पहुंचाने की कोई और जुगत की होती!"

"जी हां, यही मतलब है मेरा।"

"आपकी बात में दम है। जवाब जो मुझे सूझता है वो ये है कि कातिल ने चॉकलेट की हाजिरी इसलिये लगाई ताकि समझा जाता कि कत्ल किसी औरत का काम था। नहीं?"

एस.एच.ओ. ने हिचकिचाते हुए सहमति में सिर हिलाया।

"लेकिन"–फिर बोला–"कोई मर्द मकतूल का इस हद तक दुश्मन क्योंकर हुआ कि कत्ल करने पर उतारू हो गया!"

"मकतूल उसकी बहन, बेटी, बीवी या माशूक के पीछे पड़ा होगा, उसे नहीं बर्दाश्त हुआ होगा!"

"हो सकता है। औरत के मामले में ऐसे बद्नीयते शख्स के सौ दुश्मन हो सकते हैं।"



Scanned by CamScanner

"सो देयर।"

"लेकिन पहले किसी तरीके से ये स्थापित तो हो कि कत्ल किसी औरत का नहीं, किसी मर्द का काम था!"

"वो तो आप कर ही लेंगे। नहीं?"

"देखेंगे। अभी तो शुरूआत है।"

"मिसज सीरो को–जो गैस्ट हाउस चलाती हैं और जो कोई भी वो है–उसकी मौत की खबर है?"

"अभी नहीं।"

"वजह?"

"जानबूझकर नहीं बताया। सुबह उसे थाने में तलब करेंगे..."

"सुबह?"

"औरत है न! इसलिये लिहाज है।...और फिर देखेंगे कि खबर का उस पर क्या रियेक्शन होता है!"

टिपीकल पोलीस एटीच्यूड!–आगाशे मन ही मन बोला–मोहम्मद विल नाट गो टु माउन्टेन, माउन्टेन विल भी आस्कड टु कम टु मोहम्मद।

आगाशे निजामुद्दीन वैस्ट पहुंचा।

वारदात में उसकी ऐसी रूचि जागी थी कि थाने से घर लौटते वक्त उसने अपनी मंजिल तब्दील की थी और वहां पहुंच गया था।

मिसेज सीरोज गैस्ट हाउस एक विशाल चारमंजिला इमारत थी जिस पर टंगे नाम के बोर्ड के नीचे लिखा था :

**फर्निश्ड रेजीडेंशल अकामोडेशन अवेलेबल.**
**आन शार्ट ऑर लॉंग लीज**

मिसेज सीरो एक उम्रदराज, भारी भरकम औरत निकली जो सूरत और रखरखाव से ऐंग्लो इन्डियन जान पड़ती थी।

कालबैल के जवाब में उसने खुद दरवाजा खोला था।

"सॉरी!"–आगाशे पर निगाह पड़ते ही वो बोली–"वैकेंसी नहीं है।"

"गुड फार बिजनेस।"–आगाशे मुस्कराता हुआ बोला–"गुड फार यू। कांग्रेट्स।"

उसके चेहरे पर उलझन के भाव आये।

"परमीत मेहरा इधर रहता था?"–आगाशे सहज भाव से बोला।

"परमीत मेहरा?"

"वही। इधर रहता था?"



Scanned by CamScanner

"ओह!"–तत्काल वो बदले स्वर में बोली–"प्लीज कम।"

प्रवेश द्वार के पहलू में ही ऑफिस था जहां कि उसने आगाशे को बिठाया और खुद उसके सामने बैठी।

"टीवी में खबर थी।"–आगाशे अर्थपूर्ण स्वर में बोला।

"मैं टीवी बहुत कम देखता है।"

"तभी। मकतूल की–परमीत मेहरा की, आपके गैस्ट हाउस के गैस्ट की–बाईनेम खबर थी। ब्रेकिंग न्यूज में।"

"न्यूज चैनल्स तो बहुत ही कम देखता है।"

"तभी!"

"क्या हुआ? कार से एक्सीडेंट किया? तुमने आते ही पूछा कि परमीत मेहरा इधर रहता था? 'था' बोला। ओ माई गॉड! कहीं मर ही तो नहीं गया!"

"बद्किस्मती से यही बात है।"

"क...कैसे? कैसे हुआ? कार खुद ठोकी या कोई दूसरा ठोक गया? अभी लास्ट वीक कोई बैक से ठोक दिया। बोलता था रेड लाइट पर खड़ा सिग्नल चेंज होने का वेट करता था। म्यूनीसिपैलिटी का डम्पर पीछू से हिट किया उसका सान्त्रो को। ऊपर से हूल देता था डम्पर का डिरेवर, बोलता था गौरमेंट का गाड़ी, अपना मेहरा कुछ भी नहीं करना सकता। बट गॉड मर्सी किया जो खाली सान्त्रो ठुका, ही वाज सेफ। बट नाओ! ओ माई गॉड! ओ माई गुड गॉड! जितना फैटल एक्सीडेंट्स इस सिटी में होता है, होल वर्ल्ड में किधर भी नहीं होता होगा। बट क्या करना सकता! दोज लव्ड बाई गॉड, डाई यंग। आई लॉस्ट माई ओल्डेस्ट एण्ड बैस्ट टेनेन्ट। जो ब्लडी सन आफ बिच एक्सीडेंट किया, पकड़ा गया!"

"मैडम, कोई एक्सीडेंट नहीं हुआ।"

"क्या बोला?"

"वो जोरबाग ग्रेड पर खड़ी अपनी कार के स्टियरिंग के पीछे मरा पड़ा पाया गया था।"

"यू मीन...ऐसीच मर गया! हार्ट अटैक आया सडनली?"

"मैडम..."

"विश्वास नहीं होता। ऐसा यंग, हैल्दी, स्ट्रांग..."

"...जहर से मरा।"

"वाट?"

"ही डाइड आफ आरसेनिक प्वायजनिंग।"



Scanned by CamScanner

"आ...आरसेनिक...प्वायजनिंग...यू मीन सुइसाइड किया? जहर खुद खाया?"

"खुद खाया या किसी ने खिलाया, अभी इस बात की पुलिस को खबर नहीं।"

"आई सी।"

"तो वो यहां अकेला रहता था?"

"यस। आलमोस्ट फाइव इयर्स हो गया। लिव्ड आल अलोन।"

"शहर में कोई रिश्तेदार थे।"

"मेरे को नहीं मालूम बट आई डोंट थिंक सो।"

"होम टाउन?"

"नहीं मालूम। कभी बोला नहीं। मैं कभी पूछा नहीं।"

"उसकी मौत की किसी को खबर करनी हो तो...कैसे होगा?"

"क्या बोलेगा! यू हैव ए प्राब्लम देयर। आई हैव ए प्राब्लम देयर।"

"तो वो इधर दो कमरों के फ्लैट में रहता था! कोई पांच साल से!"

"यस। नाइस मैन। नाइस टेनेंट। कभी कोई प्राब्लम नहीं। कभी कोई गलाट्य नहीं। टेम पर रैंट पे करता था। नैवर लेट इन पेमेंट। अब मेरे को ऐसा टॉप क्लास टेनेंट, ऐसा स्टेडी कस्टमर, किधर से मिलेगा! अभी उसका फ्लैट वैकेट करने का। इतना सामान किधर रखेगा! कब तक रखेगा!"

"किराया एडवांस में देता था?"

"यस। दैट्स दि रूल।"

"तो फ्लैट खाली करने की हड़बड़ी किसलिये? अभी तो महीने में बारह दिन बाकी हैं।"

वो सकपकाई।

"बट"–फिर बोली–"इनवेंट्री तो लेने का! सब कुछ चौकस तो करने का! कल को कोई बोले मैं कुछ निकाल लिया तो?"

"आपके पास उसके फ्लैट की चाबी है?"

"बट आफकोर्स! डेली क्लीनिंग मांगता कि नहीं मांगता! लाइक ए होटल! आई हैव ए की फार ऐवरी रूम।"

"आई सी। आवाजाही का क्या दस्तूर था?"

"मेन डोर है न! जिधर से तुम एन्टर किया। नो?"

"यस।"

"बाजू में एक साइड डोर। विद बिल्ट इन लॉक। मेहरा माई स्पैशल, प्रिविलेज्ड कस्टमर। इस वास्ते उसके पास साइड डोर का एक की परमानेंट करके।"



Scanned by CamScanner

"ताकि उसकी आवाजाही उसकी मर्जी से हो सके! कभी लेट आवर्स में लौटे तो मेन डोर नॉक न करना पड़े?"

"यू गॉट इट, मैन। साइड डोर से सैप्रेट स्टेयरकेस। स्ट्रेट अप टु हिज फ्लैट।"

"कार किधर खड़ी करता था?"

"बाजू में। नैक्स्ट टु साइड डोर।"

"मैडम, अगर आपको अन्देशा है कि उसके फ्लैट के सामान को लेकर आप पर कोई इलजाम आयेगा तो ऐसा न हो, इसका एक तरीका मैं आपको सुझा सकता हूं।"

उसकी भवें उठीं।

"आप अभी फ्लैट के सामान को चैक कीजिये। चैकिंग का, चौकसी का गवाह मैं बनने को तैयार हूं।"

"ऐसा?"

"हां।"

"ओके। मैं मास्टर की लाता है।"

"मैं साइड डोर पर जाता है।"

"बट दैट्स नाट नेसेसिरी। इधर से भी रास्ता..."

"आई नो। आई नो। बट मेरे को उसका स्पैशल, प्रिविलेज्ड, एन्ट्री रूट भी देखना मांगता है न!"

"ओह! ओके।"

दोनों वहां से उठे। वो भीतर कहीं चाबी लेने गयी तो आगाशे मेन डोर से निकल कर सामने सड़क पर आया और इमारत का घेरा काट कर बाजू की चौड़ी गली में पहुंचा, जहां एक ही बन्द दरवाजा था।

भीतर दाखिल होने को वो रास्ता मकतूल के लम्पट किरदार को पूरी तरह से सूट करता था। कोई लड़की उसके साथ वहां पहुंचती, रात भर उसके फ्लैट में रह कर सुबह रुखसत हो जाती तो किसी को कानोंकान खबर न लगती।

मिसेज सीरो ने भीतर की ओर से दरवाजा खोला।

भीतर एक ड्योढ़ी सी थी जिसकी परली तरफ एक दरवाजा था जिससे वो औरत वहां पहुंची थी और उसके और गली के दरवाजे के बीच में दायें से ऊपर को जाती सीढ़ियां थीं।

सीढ़ियां तय करके वे ऊपर पहुंचे तो पता चला कि ऊपर भी वैसी ही ड्योढ़ी थी और सीढ़ियों के ऐन सामने मेहरा के फ्लैट का बंद दरवाजा था जिसे मिसेज सीरो ने मास्टर की लगा कर खोला।



Scanned by CamScanner

आगाशे खामोशी से डिब्बे जैसे फ्लैट में फिरा।
कहीं कोई दिलचस्पी के काबिल चीज उसे न दिखाई दी।
"मैडम,"–वो बोला–"इधर निगाह मैली करने लायक, नीयत खोटी करने लायक कुछ नहीं है। जैसे इलजाम का आपको अन्देशा है, वो आप पर नहीं आने वाला। नहीं आयेगा।"
"दैट्स वैरी गुड।"
"कल पुलिस यहां की बारीक–सुई तलाशने जैसी–तलाशी लेगी लेकिन मुझे उम्मीद नहीं कि क्लू के तौर पर उनके हाथ यहां से कुछ लगेगा।"
"क्लू! कैसा क्लू? आई डोंट अन्डरस्टैण्ड।"
"यू विल, मैडम, यू विल।"
उसने गम्भीर हुंकार भरी।
"आइये, चलते हैं।"
"कल"–बाहर आकर फ्लैट को बदस्तूर लॉक करती वो बोली–"सब न्यूजपेपर्स में भी छपेगा?"
"बराबर छपेगा। जब टीवी में आया है–अभी और डिटेल से आयेगा, विद विजुअल्स आयेगा–तो प्रिंट मीडिया क्यों पीछे रहेगा?"
"माई गैस्ट हाउस विल गैट बैड नेम।"
"खामखाह!"
"ऐसीच होगा।"
"खामखाह! मर्डर इधर तो नहीं हुआ?"
"मर्डर! ओ माई गॉड! मेहरा का मर्डर हुआ?"
"ऐसा ही जान पड़ता है।"
"मैन, पहले तो बोला नहीं!"
"क्योंकि ऐसा जान पड़ता है–रिपीट, जान पड़ता है–जो जान पड़ता है, उसकी बियांड रीजनेबल डाउट तसदीक होना अभी बाकी है।"
"आल दि सेम मेरे को फिकर।"
"मैडम, अखबार वाले बहुत जिम्मेदारी से खबर छापते हैं। देख लीजियेगा न्यूज में आपकी इस जगह का बाई नेम जिक्र नहीं होगा। वो यही छापेंगे कि मकतूल निजामुद्दीन के एक गैस्ट हाउस में रहता था। और दरगाह की वजह से गैस्ट हाउस तो इस इलाके में दर्जनों में हैं। नो?"
"यस।"–वो अनिश्चित भाव से बोली।
"अब परमीत मेहरा के मिलने जुलने वालों की यहां आवाजाही के बारे में कुछ बताइये।"



Scanned by CamScanner

"मेरे को कुछ मालूम नहीं।"

"ऐसा कैसे हो सकता है! गाहेबगाहे लोगबाग, मेहमान, खुद भी आते होंगे और वो साथ भी लाता होगा। वीकएण्ड पर तो ऐसा जरूर होता होगा! नहीं?"

उसने उत्तर न दिया।

"वो नौजवान था, गैरशादीशुदा था, एलीजिबल बैचलर था, उससे मिलने आने वाली, या उसके साथ आने वाली, लड़कियों की आवाजाही तो यहां बराबर होती होगी!"

"वाट डू यू मीन, सर? मैं इधर अपने रेजीडेंट्स के गैस्ट्स की टांगझांग करता है?"

"क्या करता है?"

"टांगझांग करता है! आई कीप ए वाच आन दैम?"

"ओह! तांकझांक करता है।"

"नहीं करता है। इधर गैस्ट्स रिसीव करने पर कोई बैन नहीं है। मैं काहे को रेजीडेंट्स के–इस्पैशियली मिस्टर मेहरा के–गैस्ट्स पर विजिल रखेगा! मेरे को नहीं मालूम करने का कि मिस्टर मेहरा से कौन मिलने आता था, या मिस्टर मेहरा किस को अपना साथ लाता था। ही वाज ए नाइस मैन। टेम पर रैंट पे करता था, कभी मेरे को बादर नहीं करता था, फिर मैं क्यों उसको बादर करेगा? टांगझांग करेगा?"

"ही हैड ए रिप्यूट।"

"वाट रिप्यूट?"

"आफ ए प्लेब्वाय। कैसानोवा। लेडीज मैन। हमेशा कम्प्रोमाइजिंग लड़कियों की तलाश में रहता था। इसी काम से कार लेकर निकलता था–वीकएण्ड्स पर तो खासतौर से कार पर इलाके की खाक छानता देखा जाता था। ये कोई मानने की बात है कि ऐसा रंगीनमिजाज शख्स ऐसी किसी लड़की को यहां लेकर नहीं आता था...आता था तो आपको उसकी कभी खबर नहीं लगती थी?"

"यहीच बात है। दैट्स ऐग्जैक्टली इट। मेरे को ऐसा कोई खबर नहीं। मेरा नॉलेज में वो कभी किसी छोकरी लोग को इधर लेकर नहीं आया। ऐसा बोलना रांग। ऐसा हिंट भी देना अनचैरिटेबल। दिस इज ए रिस्पैक्टेबल प्लेस। इधर कोई ड्यूबियस कैरेक्टर का छोकरी लोग नहीं आता है। प्लीज डोंट से सच थिंग्स।"

उसका नाहक उत्तेजित होना, ऊंची आवाज में बोलने लग जाना ही जाहिर कर रहा था कि वो झूठ बोल रही थी, वो मकतूल मेहरा



Scanned by CamScanner

की वाहियात हरकतों से यकीनी तौर पर वाकिफ थी और उसके सन्दर्भ में अपने गैस्ट हाउस की तरफ उंगली उठना, उसपर कोई लांछन लगना उसे नाकुबूल था इसलिये अपना फर्ज मान कर वो विरोध में बोल रही थी और मेहरा की हिमायत कर रही थी।

अगर परमीत मेहरा के किरदार पर सवालिया निशान था तो उसकी लैंडलेडी उस औरत के किरदार पर भी सवालिया निशान था जो मेहरा की बेजा हरकतों की तरफ से इरादतन निगाहें फेर कर रखती थी। और इस वजह से सवाल होने पर उसकी उज्ज्वल छवि उकेरना अपना फर्ज ही नहीं, अपनी मजबूरी समझती थी।

वो थाने वापिस लौटा।

एस.एच.ओ. मीना अपने कमरे में मौजूद था।

"आप!"–वो तनिक अप्रसन्न भाव से बोला–"फिर आ गये!"

"एक गुनाह कुबूल करने आया।"–आगाशे सहज भाव से बोला।

"क्या!"–एस.एच.ओ. सकपकाया।

"ऐसे काम फौरन करने चाहियें। वर्ना कांशंस पर बोझ बन जाते हैं।"

"कैसा गुनाह? क्या किया आपने? किस सिलसिले में किया?"

"मैं मिसेज सीरो से मिला था।"

"मिसेज सीरो! मकतूल की लैंडलेडी?"

"वही।"

"निजामुद्दीन पहुंच गये!"

"खुराफाती दिमाग ने पहुंचाया। यहां से रवाना घर के लिये हुआ था लेकिन वहां पहुंच गया। करीब ही तो जाना था न!"

"आपको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

"तभी तो बोला गुनाह कुबूल करने आया।"

"अब उसे मालूम है कि उसके एक रेजीडेंट का कत्ल हो गया था। यानी कि जिस एलीमेंट आफ सरपराइज को मैं कैश करना चाहता था, उसमें आपने भांजी मार दी।"

"ये तो, गुस्ताखी माफ, एस.एच.ओ. साहब, आप ठीक नहीं कह रहे हैं। आपकी ऐसी कोई मंशा होती तो आपने इस काम को कल सुबह पर न छोड़ा होता जबकि आप मिसेज सीरो को थाने तलब करते। जो खबर टीवी पर पहुंच गयी, सुबह तक प्रिंट मीडिया में भी व्यापक तौर पर दिखाई देती, उससे क्या वो आपकी हाजिरी भरने तक बेखबर रहती!"



Scanned by CamScanner

"खैर, क्या कहती है वो औरत?"

"कुछ नहीं कहती।"

"कुछ तो कहती ही होगी!"

"जो कहती है, वो किसी गिनती में नहीं।"

"फिर भी?"

आगाशे ने 'फिर भी' का जवाब दिया।

"खैर!"–सुन चुकने के बाद एस.एच.ओ. बोला–"सुबह तलब तो उसे फिर भी करेंगे।"

"इन्स्पेक्टर साहब, मेरी इस केस में भारी दिलचस्पी जाग चुकी है। अगर मैं स्वतन्त्र रूप से इस पर काम करूं तो आपको कोई एतराज?"

"हमें कोई एतराज नहीं। आजकल तो मीडिया वाले भी यही करते हैं। खुद को रिपोर्टर बताने की जगह शान से इनवैस्टिगेटिंग जर्नलिस्ट बताते हैं–ये बात जुदा है कि किसी ने कोई केस तो आज तक हल करके दिखाया नहीं। वैसे"–एस.एच.ओ. ने जल्दी से जोड़ा–"ये बात आप पर लागू नहीं। आपने तो अपनी गहरी सूझबूझ और काबिलियत से पुलिस को बहुत बार चौंकाया है।"

"आप ऐसा समझते हैं तो शुक्रिया।"

"मैं ऐसा समझता हूं। पुलिस के कई उच्चाधिकारी ऐसा समझते हैं।"

"ये आप लोगों की जर्रानवाजी है..."

"लेकिन ताकीद रहे, पुलिस की लाइन क्रॉस न करें।"

"मैं ऐसा हरगिज नहीं करूंगा।"

"और जो जानकारी–जो कारआमद जानकारी–आपको हासिल हो, वो पुलिस के साथ शेयर करें।"

"भले ही ये वन वे ट्रैफिक साबित हो!"

"ऐसा नहीं होगा। पुलिस भी आपको अपनी तफ्तीश से वाकिफ रखेगी।"

"दैट्स वैरी काइन्ड ऑफ यू।"

"इसीलिये एक बात–एक खास बात–सुनिये जो दिलचस्पी से खाली नहीं।"

"सुनाइये।"

"मैंने आपको बोला था कि कार पर से दो टाइप के मर्दाना फिंगरप्रिंट्स बरामद हुए थे। एक फिंगरप्रिंट्स मकतूल के थे जिसकी



Scanned by CamScanner

कि कार थी और दूसरे फिंगरप्रिंट्स–जो दरवाजे के हैंडल पर से उठाये गये थे...''

''जो हैंडल के अलावा और कहीं नहीं थे!''

''वही। उनकी शिनाख्त हो गयी है क्योंकि वो हमारे कम्प्यूटराइज्ड रिकार्ड में थे।''

''दैट्स वैरी गुड।''

''वो फिंगरप्रिंट्स अनुराग जोशी नाम के शख्स के हैं जो इसी इलाके में, यहां से करीब ही, प्रगति विहार में रहता है।''

''कोई नोन क्रिमिनल!''

''नहीं। नोन क्या, क्रिमिनल ही नहीं है।''

''तो फिर रिकार्ड में उसके फिंगरप्रिंट्स का क्या काम?''

''गिरफ्तार हो चुका है। सजा पा चुका है। सजा काट चुका है।''

''फिर भी क्रिमिनल नहीं?''

''नहीं।''

''सर, प्लीज एक्सप्लेन।''

''वो एक नौजवान, इंकलाबी खयालात का लड़का है जो इस वक्त मुश्किल से अठ्ठाइस साल का है। ज्यूडीशियटी में करप्शन के मुद्दे पर उसने एक लेखमाला तैयार की थी जो कि एक डेली पेपर में कई किस्तों में छपी थी। उस पर इतना होहल्ला हुआ था कि किसी ने अखबार और लेखक पर हाई कोर्ट में केस डाल दिया था। हाईकोर्ट ने लेखक और प्रकाशक को सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने का हुक्म सुनाया था। प्रकाशक ने तत्काल माफी मांग ली थी और माफी की तसदीक करता अपना हलफनामा अदालत में दाखिल कर दिया था लेकिन लेखक ने–अनुराग जोशी ने–माफी मांगने से ये कहकर इनकार कर दिया था कि फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, उसका सम्वैधानिक अधिकार था। अदालत ने उसके इनकार को कोर्ट की अवमानना, कन्टैम्प्ट ऑफ दि कोर्ट माना था और उसे पन्द्रह दिन की साधारण कैद की सजा सुनायी थी। सजा सुनायी जा चुकने के बाद भी कोर्ट से उसे ऑप्शन थी कि अगर वो माफी मांगना कुबूल करता तो वो सजा माफ की जा सकती थी लेकिन उस इंकलाबी खयालात के नौजवान को जेल जाना कुबूल हुआ था, माफी मांगना कुबूल नहीं हुआ था। उस सजा के तहत गिरफ्तारी के वक्त रूटीन के तौर पर उसके फिंगरप्रिंट्स लिये गये थे जो कि दिल्ली पुलिस के सैन्ट्रलाइज्ड कम्प्यूटर रिकार्ड में आ गये थे।''



Scanned by CamScanner

"जो कि अब हालिया शिनाख्त के काम आये?"

"जी हां।"

"ऐसे इन्टलेक्चुअल नौजवान के फिंगरप्रिंट्स मकतूल की कार के दरवाजे के हैंडल पर थे?"

"जी हां। पक्की शिनाख्त हुई है।"

"ऐसा आदमी कातिल हो सकता है?"

"कैसा भी आदमी कातिल हो सकता है। दिल्ली गर्म मिजाज, जल्दी भड़कने वाले लोगों का शहर है। यहां लोगों को सब्र से काम लेने की आदत नहीं, विवेक से काम लेने का अभ्यास नहीं। सोचते बाद में हैं, एक्ट पहले करते हैं। भले ही बाद में पछताना पड़े। क्या पता ये अनुराग जोशी भी वक्ती जुनून के हवाले होकर उठाये अपने कदम पर घर बैठा पछता रहा हो!"

"देखना चाहिये।"

"मैंने अभी सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल को प्रगति विहार जाने को बोला था। वो चला गया होगा या जाने वाला होगा।"

"अगर आप मुझे उसके साथ जाने की इजाजत दें तो मुझे भारी खुशी होगी। तो आपको ये कहने का मौका नहीं मिलेगा कि मैंने पुलिस की लाइन क्रॉस की।"

"लेकिन लगता है एस.आई. बहल के साथ आप जा पायें या न जा पायें, आप उस लड़के से मिलेंगे जरूर!"

"जब आप उसे सम्भावित हत्यारे के तौर पर प्रोजेक्ट कर रहे हैं तो कैसे रुक पाऊंगा!"

"ठीक। मैं बहल का पता करता हूं।"

"थैंक्यू।"

विवेक आगाशे और एस.आई. बहल प्रगति विहार पहुंचे।

कालबैल बजाने पर दरवाजा एक अधेड़ औरत ने खोला जो कि अनुराग जोशी की हाउसकीपर निकली। अपना नाम उसने कलावती बताया।

मालूम हुआ कि साहब घर पर नहीं था, वो अपनी मंगेतर के साथ इन्डिया हैबीटैट सेंटर में पिक्चर देखने गया हुआ था।

"मंगेतर?"–एस.आई. बहल की भवें उठी।

"श्रेया सरीन।"–औरत ने बताया।

"कहां रहती है?"



Scanned by CamScanner

"पास ही।"

"पास ही कहां? नाम लो जगह का।"

"हाय, हाय तुम तो ऐसे पेश आ रहे हो जैसे नाम न लिया तो सूली पर टांग दोगे।"

एस.आई. भड़कने को हुआ।

आगाशे ने उसकी बांह दबाई और खुद औरत से सम्बोधित हुआ–"ऐसी कोई बात नहीं, बहन जी। हमारा जोशी साहब से मिलना निहायत जरूरी है इसलिये पूछ रहे हैं।"

"तो यूं कहिये न कि आप लोगों ने अनुराग से इस्पेशल करके मिलना है।"

"यही बात है। अब बताइये कहां रहती है साहब की होने वाली बीवी श्रेया सरीन?"

"लोधी कालोनी।"

"नम्बर?"

उसने बताया।

"अकेली रहती है?"

"हाय हाय, जवान जहान लड़की है, अकेली क्यों रहेगी!"

"अकेली नहीं रहती?"

"अपने मौसा मौसी के साथ रहती है। मौसा शेखर साहनी किताबखाने में काम करता है..."

"किताबखाना?"

"बड़ा। सरकारी।"

"लायब्रेरी?"

"हाय हाय, तो मैं और क्या बोली!"

"क्या काम करता है?"

"किताबों का अफसर है।"

"लायब्रेरियन!"

"हाय हाय, तो मैं..."

"लायब्रेरी का नाम मालूम?"

"मालूम।"

"क्या है? कहां है?"

"याद नहीं।"

"फिर क्या मालूम हुआ?"

"हुआ न! याद आता जाता रहता है। अभी याद आ जायेगा।"



Scanned by CamScanner

"मौसी भी एम्पलायड है?"

"क्या है?"

"कामकाजी महिला है?"

"नहीं, अब नहीं। हेमा साहनी–मौसी–पहले शायद कोई नौकरी करती थी लेकिन अब घर पर ही होती है। हाउसवाइफ करके। दोनों के कोई औलाद नहीं है। क्यों नहीं है, भगवाने जाने। वैसे शादीशुदा तो सालों से हैं।"

"श्रेया मौसी–मौसा के साथ क्यों रहती है?"

"मां बाप नहीं हैं न! बम विस्फोट में मारे गये। आये दिन तो बम फूटते हैं हर जगह। कोई भरोसा है जिन्दगी का! घर से सब्जी भाजी लेने को निकलो और किसी और ही घर पहुंच जाओ। उग्रवादी अपना काम करते हैं, सरकार अपना काम करती है, पब्लिक अपना काम करती है।"

"जी!"

"भई, उग्रवादी बम फोड़ते हैं, सरकार बयान देती है, पब्लिक मरती है। इतने ढेर सारे तो हैं हम! क्या फर्क पड़ता है! मेरा भारत तो महान है न!"

"बहुत काबिलियत की बात कही!"

"हाय हाय, मैं क्या अनपढ़ गंवार हूं जो काबिलियत की बात नहीं कर सकती? मिडल पास हूं। समझे!"

"तो श्रेया यतीम है?"

"और मैंने क्या कहा? और क्या अपने मां बाप से उसकी दुश्मनी है जो मौसा मौसी के पास रहती है! और क्या..."

"बहुत बोलती है।"–बहल अप्रसन्न भाव से बड़बड़ाया।

"क्या बोला?"

"थैंक्यू बोला।"–आगाशे जल्दी से बोला–"तो जोशी साहब वहां हो सकते हैं?"

"और कहां हो सकते हैं! पिक्चर तो कब की खत्म हो चुकी होगी! साहब अभी तक घर नहीं लौटा तो वहीं तो होगा!"

"ठीक।"

"वैसे आप पूछ क्यों रहें हैं जोशी साहब को?"

"कोई खास बात नहीं।"

"जब पुलिस वाले हो तो कोई खास बात तो जरूर होगी! खामखाह तो तुम अपने घर नहीं जाने वाले।"–वो एक क्षण ठिठकी और फिर बोली–"मैं समझ गयी।"



Scanned by CamScanner

"क्या समझ गयीं?"

"जोरबाग रोड पर कार में जो आदमी मरा पड़ा पाया गया था, उसका कोई लफड़ा है।"

"कैसे जाना? टीवी देखा?"

"नहीं।"

"तो?"

"सारे इलाके में चर्चा है। ऐसी बातें कहीं छुपती हैं! लोगों को बातें करने के अलावा कोई काम है!"

"बिल्कुल ठीक कहा।"–बहल भुनभुनाया।

"लेकिन उस आदमी से साहब का क्या मतलब?"

"यही तो मालूम करना है।"–आगाशे बोला।

"किसी को कार में धड़का लगा गया तो इसमें साहब का क्या कसूर! तो..."

"तुम्हें भी लग सकता है।"–बहल बोला।

"क्या?"

"धड़का। दिल उखड़ के मुंह के रास्ते भाग जायेगा इसलिये..."

"इसलिये क्या?"

"अक्लमन्द को इशारा और क्या?"

"ये कौन सी जुबान बोल रहे हो? मेरी तो कुछ समझ में नही आ रहा।"

"तो मैं क्या करूं? मेरा काम अम्मायें पढ़ाना है?"

वो भौंचक्की सी एस.आई. का मुंह देखने लगी।

"ढक्कन लग गया? अब मौके का फायदा उठा और जा, अन्दर जाके हाय हाय कर।"

आगाशे ने उसे बांह पकड़ कर खींचा तो वो खामोश हुआ।

वो लोधी कालोनी, थर्ड एवेन्यू पहुंचे।

कालबैल के जवाब में दरवाजा हेमा ने खोला। सामने एक बावर्दी सब-इन्स्पेक्टर को खड़ा देखकर वो सकपकाई। उसने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी तरफ देखा।

"अनुराग जोशी से मिलना है।"–एस.आई. बहल अधिकारपूर्ण स्वर से बोला–"वो यहां है?"

"हां, है।"–हेमा सशंक भाव से बोली–"लेकिन बात क्या है?"

"आपकी तारीफ?"



Scanned by CamScanner

"मैं हेमा हूं। हेमा साहनी। अनुराग की फियांसी श्रेया की मौसी। आप..."

"मेरा नाम पुनीत बहल है। लोकल थाने से हूं। ये मिस्टर आगाशे हैं। एक केस के सिलसिले में अनुराग जोशी से कुछ मालूमात करनी हैं। अब अगर..."

"आइये।"

हेमा के पीछे चलते वो दोनों ड्राईंगरूम में पहुंचे जहां अनुराग और श्रेया एक सोफे पर आजू बाजू बैठे हुए थे। करीब एक सोफाचेयर पर शेखर साहनी मौजूद था। तीनों काफी की चुस्कियां ले रहे थे।

पुलिस को आया देखकर वो हड़बड़ा कर उठे।

"क्या बात है?"–शेखर नर्वस भाव से बोला।

बहल ने सहज ही सोच लिया कि युवती के साथ मौजूद युवक अनुराग जोशी था, फिर भी उसने दबंग लहजे से सवाल किया–"आप में से अनुराग जोशी कौन है?"

"मैं हूं।"–अनुराग बोला–"क्या बात है?"

आगे बढ़ने से पहले बहल ने सिर से पांव तक उसका मुआयना किया जिससे उसने अनुराग को विचलित होता न पाया।

"मेरा नाम पुनीत बहल है।"–फिर वो बोला–"लोकल थाने से हूं। आपको मेरे साथ थाने चलना होगा।"

"क्यों?"–तत्काल अनुराग तीखे स्वर में बोला–"किसलिये? मैंने क्या किया है?"

"थाने उसी को तलब नहीं किया जाता जिसने कुछ किया हो। और भी वजह होती हैं।"

"जरूर होती होंगी। मेरे पर कौन सी वजह लागू है?"

"आप एक हालिया केस की तफ्तीश में हमारी मदद कर सकते हैं।"

"कौन सा केस? क्या हुआ है?"

"अभी कोई दो-ढाई घंटे पहले जोरबाग रोड पर परमीत मेहरा नाम का एक आदमी अपनी कार में मरा पड़ा पाया गया था। उसकी मौत की वजह घातक जहर था और वो जगह यहां से कोई ज्यादा दूर नहीं जहां कि उसकी कार खड़ी पायी गयी थी।"

"इलाके में और भी बेशुमार जगह हैं"–हेमा तनिक आवेश से बोली–"जो जोरबाग रोड से कोई ज्यादा दूर नहीं।"

अनुराग ने सहमति में सिर हिलाया।

"मुझे आपकी बात से इत्तफाक है, मैडम।"



Scanned by CamScanner

"उन सब जगह के बाशिंदों को आपने थाने तलब कर लिया?"
"हमारी जरूरत पर मुनहसर है ऐसा करना।"
"ये कहिये कि मर्जी पर मुनहसर है।"
"ये बात भी है।"
"ये धांधली है।"
जवाब में बहल ने कंधे उचकाये।
"इस वक्त"–अनुराग बोला–"खास मुझ पर नजरेइनायत क्यों है?"
"थाने चलिये"–एस.आई. बोला–"मालूम पड़ जायेगा।"
"अजीब बात है।"
"ये नहीं जायेगा"–हेमा तीखे स्वर में बोली–"आप यूं जबरन इसे..."
"मैडम, जबरन कुछ नहीं हो रहा। हो रहा है तो बताइये, क्या हो रहा है?"
"रात की इस घड़ी आप एकाएक यहां घुसे चले आये..."
"घुसे नहीं चले आये। घंटी बजाई। दरवाजा खोलकर आपने भीतर आने को बोला।"
"फिर भी..."
"क्या फिर भी?"
"बहस से कोई फायदा नहीं।"–अनुराग जल्दी से बोला–"जाहिर है कि जो कुछ हो रहा है, एक गलतफहमी के तहत हो रहा है, एक खामखयाली के तहत हो रहा है। अगर ये समझते हैं कि मैं इनके केस में इनकी कोई हैल्प कर सकता हूं..."
"गलत समझते हैं।"–हेमा आवेश से बोली–"नाजायज समझते हैं।"
"गलत तो नहीं समझते!"–बहल बोला–"नाजायज तो नहीं समझते! ये ऐसा समझते हैं तो कहें ऐसा! करें कोई ऐसा दावा!"
हेमा ने अनुराग की तरफ देखा।
अनुराग ने जोर से थूक निगली।
"जनाब"–फिर बोला–"आपको पता कैसे चला कि..."
वो खामोश हो गया।
"हां, हां। बोलिये। आगे बढ़िये।"
अनुराग खामोश रहा, उसने बेचैनी से पहलू बदला।
"आप कहने जा रहे थे कि हमें कैसे पता चला कि आप मरने वाले की–परमीत मेहरा की–कार में सवार थे?"
"ये बात गलत है"–अनुराग ने तत्काल विरोध किया–"बेबुनियाद



Scanned by CamScanner

है। मेरा उस शख्स की कार में क्या काम? मैं तो उसे जानता तक नहीं था। मैंने उसके बारे में कभी सुना तक नहीं था। मैं भला क्यों उसकी सान्त्रो में..."

बहल मुस्कराया।

अनुराग ने होंठ काटे।

"आपको कैसे मालूम उसकी कार सान्त्रो थी? आप टीवी का हवाला देंगे तो गलत हवाला देंगे। टीवी में वो खबर बहुत मुख्तसर तौर पर थी और उसके साथ मौकायवारदात का या मरने वाले की कार का कोई विजुअल नहीं था।"

"मैं वहां से गुजर रहा था।"–अनुराग दबे स्वर में बोला–"मैंने कार की खुली खिड़की से सिर्फ भीतर झांका था। जरूर किसी ने मुझे भीतर झांकते देखा था जिसने पुलिस के पास पहुंच कर एक की आठ लगाईं। ऐसे मुखबिर को..."

"आप नाहक भड़क रहे हैं। किसी ने आपकी मुखबिरी नहीं की।"

"तो फिर क्यों आपने कहा कि मैं मरने वाले की कार में सवार था?"

"नहीं कहा। कहा कि आप ऐसा कहने जा रहे थे।"

"ओह!"

"किसी ने आपको कार के भीतर या उसके करीब नहीं देखा था।"

"तो फिर...तो फिर..."

"कार के दरवाजे के हैंडल पर से आपके फिंगरप्रिंट्स बरामद हुए हैं, और फिंगरप्रिंट्स झूठ नहीं बोलते।"

"जिनकी शिनाख्त आप इसलिये कर पाये"–अनुराग असहाय भाव से बोला–"क्योंकि मेरे फिंगरप्रिंट्स सरकारी रिकार्ड में हैं। क्योंकि मैं सजायाफ्ता मुजरिम हूं। क्योंकि मेरे में और एक खूनी में, एक बलात्कारी में, एक बैंक डकैत में, एक नारकाटिक्स स्मगलर में, एक टैरेरिस्ट में कोई फर्क नहीं। कानून सबको एक ही सूरत में पहचानता है। मुजरिम की सूरत में। ठीक?"

"आप नाहक जज्बाती हो रहे हैं।"–आगाशे पहली बार बोला–"आप पर किसी तरह का कोई इलजाम नहीं लगाया गया है। आपके फिंगरप्रिंट्स मरने वाले की कार पर से बरामद हुए हैं, उनकी बाकायदा शिनाख्त हुई है, आपको अहसास होना चाहिये कि पुलिस इस बात को–इस अहम बात को–नजरअंदाज नहीं कर सकती। जैसे पुलिस का आपके पास पहुंचना स्वाभाविक था, वैसे ही अब पुलिस



Scanned by CamScanner

से आपका सहयोग भी स्वाभाविक तौर पर होना चाहिये। या आप ऐसा नहीं समझते?''

''आपकी तारीफ?''

आगाशे ने परिचय दिया।

''आप''–अनुराग विस्मय से बोला–''क्राइम क्लब वाले मिस्टर आगाशे हैं!''

''हूं तो वही।''

''आपका तो मैंने बहुत चर्चा सुना है। बहुत नाम सुना है।''

''जहेनसीब।''

''आपका पुलिस के साथ क्या काम?''

''काम तो कोई नहीं। लेकिन फिर है भी। दरअसल मैं इसी इलाके में–जोरबाग में–रहता हूं। क्रिमिनालोजिस्ट हूं इसलिये अपने ही इलाके में हुई वारदात में मेरी दिलचस्पी हो जाना स्वाभाविक था। फिर पुलिस की मेहरबानी हुई कि उन्हें मेरा साथ कुबूल हुआ।''

''ओह!''

''अब बताइये क्या माजरा है? क्योंकर आपके फिंगरप्रिंट्स मरने वाले की कार के हैंडल पर पहुंचे?''

''वो क्या है कि मेरा अपनी मंगेतर के साथ''–उसने एक उड़ती निगाह श्रेया पर डाली–''इंडिया हैबीटैट सेंटर में पिक्चर देखने का प्रोग्राम था। ये वहां पहुंची नहीं। काफी इंतजार किया मैंने। फिर भी न पहुंची तो मुझे फिक्र हो गयी। इसकी तलाश में मैं वहां से वापिस लौटा, जोरबाग रोड पर से गुजरा तो मुझे वो...कार दिखाई दी जिसके स्टियरिंग पर वो...वो आदमी औंधे मुंह लुढ़का पड़ा था। मैंने समझा बीमार था या बेहोश था और शायद उसे मदद की जरूरत थी। इसी वजह से उसका मुआयना करने की नीयत से मैंने कार की खिड़की से भीतर झांका। तभी शायद मेरा हाथ उधर के दरवाजे के हैंडल पर पड़ा और मेरे फिंगरप्रिंट्स उस पर छप गये। उस वक्त मुझे क्या मालूम था कि वो शख्स मरा पड़ा था! आप ही सोचिये, कातिल अगर मैं होता तो मैं पीछे अपने फिंगरप्रिंट्स छोड़ने की हिमाकत करता?''

''आपको क्या लगा था?''

''बेहोश पड़ा लगा था। इसीलिये मैं लपकता हुआ यहां पहुंचा था।''

''यहां क्यों?''

''एक तो मैंने यहां आना ही था–श्रेया की तलाश में यही मेरी



Scanned by CamScanner

मंजिल थी–दूसरे मैडम को''–उसने हेमा की तरफ इशारा किया–''ऐसी किसी इमरजेंसी को हैंडल करने का बेहतर तजुर्बा था।''

''इन्हें साथ लेकर आप कार के पास वापिस लौटे थे?''

''इन्हें नहीं, साहनी साहब को।''

आगाशे ने शेखर की तरफ देखा।

''जी हां।''–शेखर साहनी बोला–''लेकिन तब हम कार के करीब नहीं फटके थे।''

''वजह?''

''वहां पहले ही पुलिस पहुंची हुई थी।''

''ओह!''

''हमने यही फैसला किया कि अगर उस शख्स को वाकेई किसी मदद की जरूरत थी तो अब वो उसे पुलिस मुहैया करा सकती थी। लिहाजा हम उलटे पांव वापिस लौट आये।''

''बस, इतनी सी बात है।''–अनुराग बोला–''उस शख्स के साथ कार में सवार होने का मेरा कोई मतलब ही नहीं था। मैं उस शख्स को जानता नहीं था, कभी सूरत तक नहीं देखी थी, मैं भला क्यों एक अजनबी की जान लेता! मुझे तो ये भी नहीं मालूम था कि वो कैसे मरा था! अब आपकी जुबानी सुनकर ही मालूम हुआ कि उसकी मौत जहर से हुई थी।''

''हूं।''

आगाशे को वो युवक सच बोलता लगा।

''जब आप उस सड़क से''–बहल ने सवाल किया–''उस कार के करीब से गुजर रहे थे तो आपने आसपास किसी को देखा था?''

''किसको?''–अनुराग बोला।

''किसी को भी! मैं आपको अन्धेरे में नहीं रखना चाहता। ये कत्ल का केस है और उस शख्स का–परमीत मेहरा का–कत्ल आपके वहां से गुजरने से थोड़ी देर पहले ही हुआ जान पड़ता है। अगर आपने तब वहां किसी को देखा था...''

''नहीं, नहीं देखा। तब सड़क सुनसान थी।''

''हूं।''

''कुछ नहीं रखा।''–आगाशे धीरे से बोला।

बहल ने सहमति में सिर हिलाया।

''सहयोग का शुक्रिया, मिस्टर जोशी''–फिर वो कदरन ऊंची



Scanned by CamScanner

आवाज में बोला–"लेकिन मेरे साथ थाने आपको फिर भी चलना पड़ेगा।"

"फिर भी?"

"अपना बयान दर्ज कराने के लिये। यकीन जानिये आप दस मिनट में फारिग हो जायेंगे।"

"ठीक है फिर।"

"और हो सकता है उस दौरान आपको कोई नयी, कोई भूली बिसरी बात याद आ जाये।"

"इन्स्पेक्टर साहब, सच पूछें तो एक बात तो मुझे अभी याद आ रही है...आ गयी है।"

"दैट्स वैरी गुड। क्या याद आया आपको?"

"वहां सड़क पर एक लड़की थी जो कि कार की तरफ से आ रही थी और सिर झुकाये इतने तेज कदमों से चल रही थी कि मेरे मोड़ काटते ही मेरे से टकराने से बाल बाल बची थी। मेरे खयाल से ये मेरे उस कार के करीब पहुंचने से एक या दो मिनट पहले की बात होगी। यूं समझिये कि वो उस कार की तरफ से आ रही थी और मैं उसकी तरफ जा रहा था।"

"और?"

"हो सकता है, बराबर हो सकता है, कि उसका वारदात से कोई वास्ता न हो लेकिन वहां उस सड़क पर, उस कार के करीब तो वो थी।"

"देखने मैं कैसी थी?"

"वहां धुंध थी, नीमअंधेरा था, मोड़ काटते ही एकाएक वो मेरे सामने पड़ गयी थी, इसलिये उसकी सूरत तो मैं ठीक से नहीं देख पाया था..."

"कुछ तो देखा होगा?"

"जी हां, कुछ तो देखा था।"

"क्या? वही बताइये।"

"उसकी पोशाक देखी थी। वो महरून कलर का, लेडीज कट का वैसा चमड़े का कोट पहने थी जो कूल्हों से बस जरा नीचे तक आता है, कॉलर वाली सफेद कमीज और किसी गहरे रंग की घुटनों तक आने वाले स्कर्ट पहने थी। सिर पर उसने कोट से मैच करती चमड़े की ही, बड़ी स्टाइलिश कैप पहनी हुई थी जो कि गोल्फ कैप से मिलती जुलती थी और कैप के नीचे से निकलकर उसके हल्के भूरे रंग के बाल उसके कन्धों पर बिखरे हुए थे।"



Scanned by CamScanner

"और तेज चल रही थी? यानी कि जल्दी में थी?"

"जरूरी नहीं। ठण्ड में भी लोग तेज चलते हैं। बल्कि यूं कहिये कि चाल खुद ही तेज हो जाती है।"

"सूरत आप उसकी न देख सके?"

"पहचानने लायक न देख सका घुंध और अन्धेरे की वजह से। फिर भी इतना मैंने नोट किया था कि उसने गहरा मेकअप किया हुआ था और होंठों पर ढेर लिपस्टिक लगाई हुई थी। वो...वो..."

"लगता है कुछ और याद आया?"

"आया तो सही।"

"क्या?"

"लेकिन जो याद आया, उस बाबत मैं कोई दावा नहीं कर सकता।"

"आप कुछ कहिये तो सही!"

"पहले मेरी इस बात की तरफ तवज्जो नहीं गयी थी लेकिन अब मुझे लगता है कि वो लड़की इस इलाके की ही थी।"

"कौन थी?"

"अगर थी तो..."

"तो?"

"वो इधर लोधी कालोनी में ही कहीं रहती है। नाले की तरफ जो मन्दिर है, उसके करीब कहीं...जहां कि उसका फ्लैट है...जिसमें वो अकेली रहती है। मैंने उससे कभी बात नहीं की लेकिन इलाके में विचरते मैंने उसे अक्सर देखा है।"

"तुम"–हेमा एकाएक बोली–"एकता शुक्ला की बात तो नहीं कर रहे हो?"

"मुझे नाम नहीं मालूम..."

"जो कुछ तुमने कहा, वो सब एकता शुक्ला पर फिट बैठता है। वही चमड़े का वैसा महरून कोट पहनती है, वही वैसी मैचिंग कैप पहनती है जिसका तुमने जिक्र किया। उसकी ये ड्रैस यूं समझो कि उसका ट्रेडमार्क है, उसकी खास शिनाख्त है। उसी के बाल वैसे हल्के भूरे हैं, जैसे बाहर के मुल्कों में ब्लोंड कहलाते हैं। वही ऊंची से ऊंची स्कर्ट पहनती है। मौसम का लिहाज नहीं करती। आइटम है।"

"क्या मतलब हुआ इसका?"–बहल तीखे स्वर में बोला।

"मैंने उसका लिहाज किया जो आइटम बोला। असल में मुझे झांकी कहना चाहिये था। ये मतलब हुआ।"

"आई सी।"



Scanned by CamScanner

"खुद को एक्ट्रेस बताती है। लेकिन बताने से क्या होता है! कोई भी नौजवान लड़की जो कोई रेगुलर जॉब न करती हो, या ऐसा काम करती हो जिसका जिक्र उसे भारी पड़ता हो, खुद को एक्ट्रेस बता सकती है, मॉडल बता सकती है। वो भी खुद को एक्ट्रेस इसीलिये बताती है ताकि वो न कहना पड़े जो कि वो है।"

"क्या है?"

"लेडी ऑफ ईजी वर्च्यू!"

"मैं अभी भी नहीं समझा।"

"कालगर्ल!"–आगाशे दबे स्वर में बोला।

"यू सैड इट, सर।"–हेमा बोली।

"हेमा"–शेखर बोला–"तुम्हें किसी के बारे में ऐसा कुछ कहने का कोई अख्तियार नहीं।"

"मैंने कब कहा! जो कुछ कहा, इन्होंने कहा।"

"कहलवाया।"

"खामखाह!"–फिर वो अनुराग की तरफ घूमी–"तो उस कार की तरफ से आते तुमने एकता शुक्ला को देखा था!"

"शायद।"–अनुराग कठिन स्वर में बोला–"मैं दावे से इस बारे में कुछ नहीं कह सकता। जब मैं उसकी बाबत श्योर नहीं, सर्टेन नहीं तो मैं नहीं समझता कि मुझे एक कत्ल की वारदात के साथ उसका नाम जोड़ना चाहिये। हो सकता है मेरी खामखयाली हो कि मैंने उसे देखा था। मैं दावे से उसकी बाबत–एकता शुक्ला की बाबत–कुछ नहीं कह सकता लेकिन ये मैं दावे से कह सकता हूं कि जिस लड़की को मैंने कार की तरफ से आते देखा था, जो मेरे से टकराने से बाल बाल बची थी, वो चमड़े का महरून कोट पहने थीं, महरून कैप लगाये थी, कालर वाली शर्ट पहने थी, घुटनों तक आने वाली स्कर्ट पहने थी और उसके बाल हल्की भूरी रंगत के थे।"

"ये एकता शुक्ला का ही ट्रेडमार्क है।"

"हेमा, प्लीज!"–शेखर बोला।

उपेक्षा का प्रदर्शन करती हेमा परे देखने लगी।

"आप"–आगाशे ने श्रेया से पूछा–"मकतूल से वाकिफ थीं?"

"किससे?"

"उस शख्स से जो अपनी कार में मरा पड़ा पाया गया था? परमीत मेहरा से?"

"नहीं।"



Scanned by CamScanner

"कभी वास्ता नहीं पड़ा? कभी आमना सामना नहीं हुआ?"

"नहीं।"

"वो रंगीन मिजाज शख्स था, नौजवान लड़कियों पर लाइन मारना उसका शगल था, कभी आपके साथ यूं पेश न आया?"

"नहीं। आया होता तो मैं कम से कम उसकी सूरत से वाकिफ होती।"

"आपका मिस्टर जोशी के साथ हैबीटैट में पिक्चर का प्रोग्राम था। ये कहते हैं आप वहां पहुंची नहीं थीं। वजह?"

श्रेया ने वजह बयान की।

"आखिर मुलाकात कहां हुई?"

"यहीं हुई। हैबीटैट से अनुराग पहले लौटा, मैं बाद में लौटी। ये बीच में कार वाले एपीसोड में फंस गया, जिसकी वजह से यहां हम लगभग एक साथ पहुंचे।"

"तब से यहीं हैं?"

"नहीं। डिनर के लिये बाहर गये।"

"बाहर कहां?"

"पंडारा रोड। आपके आने से पांच मिनट पहले ही लौटे थे।"

आगाशे ने अनुराग की तरफ देखा।

अनुराग ने सहमति में सिर हिला कर श्रेया की बात का अनुमोदन किया।

"बाई दि वे"–आगाशे बोला–"आप काम क्या करते हैं?"

"काम!"–अनुराग बोला–"काम तो वही करता हूं जिसकी वजह से जेल की हवा खानी पड़ी।"

"लेखक हैं?"

"जी हां। और स्तम्भकार। फ्री लांस।"

"बावक्तेजरूरत कहां पाये जाते हैं?"

"अपने घर पर। मैं प्रगति विहार में..."

"आपकी रिहायश की हमें खबर है। वहीं से मालूम हुआ था कि आप यहां मौजूद हो सकते थे। मैं ये जानना चाहता था कि आप घर पर न हों तो कहां होते हैं?"

"तो यहां होता हूं। वैसे शाम के चन्द घंटों को छोड़कर मैं हमेशा घर पर होता हूं।"

"आई सी। एकता शुक्ला का फ्लैट आपने मन्दिर के करीब कहीं बताया। उसका माकूल पता बता सकते हैं?"

वो काम हेमा ने किया।



Scanned by CamScanner

"मैंने उस लड़की के बारे में नाहक अनापशनाप बोला"–फिर खेदपूर्ण स्वर में बोली–"भगवान के लिये मेरी कही बातों की वजह से आप उसके पीछे न पड़ियेगा। मैंने वही कहा जो उसकी बाबत तकरीबन हर कोई कहता है लेकिन हो सकता है सब गलत हो, बेबुनियाद हो। आई विश एवरीथिंग आई हर्ड इज रांग एण्ड शी इज ए रिस्पैक्टेबल गर्ल।"

"होगी ही।"–शेखर बोला–"तुम्हें किसी पर तोहमत लगाने का, किसी के चरित्र पर लांछन लगाने का कोई अख्तियार नहीं। लोगों की तो आदत होती है 'मैं उजला तू काला' वाली। तुम्हें क्या पड़ी है जो..."

"आई एम सॉरी आलरेडी।"

"वैसे है कौन ये लड़की? मैंने तो उसकी बाबत कभी नहीं सुना!"

"इतने बिजी जो रहते हो! दिन भर लायब्रेरी में खपते हो, शाम को टीवी देखने बैठ जाते हो। राह चलते किसी की तरफ ध्यान नहीं देते हो। उस रोज महाशय जी ही शिकायत कर रहे थे कि नजफखान रोड पर उन्होंने तुम्हें विश किया, तुमने जवाब तक न दिया।"

"मुझे नहीं मिले थे वो।"–शेखर भुनभुनाया–"एक अरसे से मैंने उनकी सूरत नहीं देखी। जोकि अच्छी ही बात है। मुझे वो शख्स पसंद नहीं है। खामखाह गले पड़ता है। बहरहाल बात ये हो रही थी कि हमारी वजह से उस लड़की का–एकता शुक्ला का–कोई गलत इम्प्रेशन इन पुलिस वालों पर नहीं पड़ना चाहिये। अगर वो खुद को एक्ट्रेस बताती है तो, भई, होगी एक्ट्रेस। हम कौन होते हैं कहने वाले कि ऐसा नहीं है! और लोग कहते हैं तो कहें, हमें उनकी गप्पबाजी में शामिल होने की क्या जरूरत है!"

"मुझे तुम्हारी बात से इत्तफाक है। अब छोड़ो ये किस्सा। और आप दोनों साहबान...प्लीज मेरी किसी बात को खातिर में न लायें। मैं जोश में कुछ ज्यादा बोल गयी जिसके लिये मैं शर्मिन्दा हूं। फिर सौ बातों की एक बात, अनुराग ने कभी नहीं कहा कि जो लड़की उससे टकराई थी, वो एकता शुक्ला थी। ये अन्दाजा मैंने लगाया था और अन्दाजा फिर अन्दाजा ही होता है, वो हकीकत की जगह नहीं ले सकता। अनुराग ने जो लड़की देखी थी, वो जरूर कोई और थी। सर, आई होप यू अंडरस्टैण्ड।"

बहल ने सहमति में सिर हिलाया।

"गुस्ताखी माफ, जनाब"–आगाशे शेखर से सम्बोधित हुआ–"आपके टीवी पर फ्रेम में जड़ी एक तसवीर रखी है जिसमें



Scanned by CamScanner

आप मिस्टर शशांक साहनी के साथ दिखाई दे रहे हैं जो कि बहुत बड़े आदमी हैं, साहबेजायदाद हैं, शायद गोल्फलिंक्स में रहते हैं। कामन सरनेम की वजह से पूछ रहा हूं, क्या आपका मिस्टर शशांक साहनी से कोई रिश्ता है?''

''मेरा छोटा भाई है।''–शेखर के स्वर में गर्व का पुट आ गया–''गोल्फलिंक्स में मार्बल आर्क नाम की महल जैसी कोठी में रहता है।''

''वो तो बहुत मशहूरोमहरूफ हस्ती हैं। तो वो आपके सगे भाई हैं?''

''जी हां।''

''इधर आते रहते हैं?''

''आना ही हुआ।''–जवाब हेमा ने दिया–''कभी नयी मर्सिडीज एस.एल.आर-380 दिखानी होती है, कभी आस्टिन मार्टिन डीबी-नाइन का रौब गांठना होता है, कभी बीएमडब्ल्यू...''

''हेमा!''–शेखर गुस्से से बोला।

''कुछ गलत कह दिया मैंने प्रातःस्मरणीय, धनकुबेर, शानेगोल्फलिंक्स श्रीमन्त शशांक साहनी साहब के बारे में!''

शेखर ने असहाय भाव से गर्दन हिलाई।

''तुम्हें ऐसी बातें नहीं कहनी चाहियें।''–फिर बोला–''खासतौर पर इन लोगों के सामने। इनका इस बात से कोई लेना देना नहीं कि तुम मेरे छोटे भाई को नापसंद करती हो।''

''सॉरी!''–हेमा बेमन से बोली–''जुबान फिसल गयी।''

''मेरे भाई के जिक्र पर जो कि फिसलती ही रहती है।''

''मैं आइन्दा ध्यान रखूंगी। आइन्दा सुदामा के घर कृष्ण भगवान भले ही हैलीकाप्टर में पधारें, कुछ नहीं बोलूंगी। हैपी नाओ?''

''वाट हैपी नाओ! यू आर ऐडिंग इंसल्ट टु इंजरी।''

आगाशे ने बहल को कोहनी मारी।

''हम चलते हैं।''–तत्काल बहल बोला –''मिस्टर जोशी, इस वक्त आपको हमारे साथ जाने की जरूरत नहीं। अपना बयान दर्ज कराने के लिये आप कल सुबह थाने आ सकते हैं। ओके?''

''यस।''–अनुराग बोला–''दैट्स फाइन।''

दोनों जने वहां से रुखसत हुए।

''क्या कहते हैं?''–घर से थोड़ा दूर निकल आने के बाद बहल बोला।

''किस बारे में?''–आगाशे बोला।



Scanned by CamScanner

"उस लड़के के बारे में। कातिल हो सकता है?"

"नहीं।"

"बड़े यकीन से कह रहे हैं!"

"अपनी फीलिंग जाहिर कर रहा हूं। अपना खयाल जाहिर कर रहा हूं। वो आदर्शवादी लड़का है, अपने आदर्शों की खातिर जिसे जेल जाना कुबूल हुआ। उसकी ऊंची सोच, सुथरी सोच उसे कत्ल जैसा जघन्य अपराध करने की इजाजत नहीं दे सकती।"

"उसकी सोच उसके कनफ्यूज्ड माईंड का नतीजा हो सकती है। जेल यात्रा की वजह उसकी ढिठाई हो सकती है जो कि आजकल के छोकरों में भरपूर है। जमा, आप कार पर मिले उसके फिंगरप्रिंट्स को खातिर में नहीं ला रहे हैं।"

"वो महज इत्तफाक है। और पुलिस रिकार्ड में उसके फिंगरप्रिंट्स होना उसकी बद्किस्मती है।"

"और?"

"और पोस्टमर्डर उसकी मूवमेंट्स गौरतलब हैं।"

"मतलब?"

"इतना सर्दमिजाज वो नहीं जान पड़ता कि पहले कत्ल करता, फिर इत्मीनान से पंडारा रोड जाकर होने वाली बीवी के साथ डिनर करता। उसके पास कत्ल का कोई उद्देश्य भी नहीं जान पड़ता।"

"जनाब, मंगेतर बहुत हसीन है और मकतूल का किरदार उजागर है।"

"भई, श्रेया के पीछे तो मकतूल कभी पड़ा ही नहीं था। इस वजह से लड़के का कत्ल कर देने की हद तक भड़क जाने का क्या मतलब?"

"ये बात तो ठीक है।"

"कत्ल का कोई और उद्देश्य उस लड़के के पास जान नहीं पड़ता। ये उसकी बद्किस्मती है कि उसके फिंगरप्रिंट्स का रिकार्ड है जिसकी वजह से यूं आननफानन उसकी शिनाख्त हुई वर्ना खुद उसके बताये बिना उसकी बाबत तुम लोग कभी कुछ न जान पाते।"

"ठीक।"

"मैंने तुम्हारे एस.एच.ओ. साहब पर ये खयाल जाहिर किया था कि कातिल कोई मर्द भी हो सकता था लेकिन अब मुझे ही अपनी वो बात लचर लग रही है। कत्ल यकीनन किसी औरत का काम है–किसी मर्द ने कत्ल के बाद ये स्टेज सैट नहीं की थी कि वो किसी औरत का काम लगता–कोई ऐसी औरत जिसे मकतूल से इस हद तक नफरत थी कि वो उसके कत्ल पर उतारू हो गयी थी,



Scanned by CamScanner

जिसने मकतूल के प्लेब्वाय वाले इमेज को अपना हथियार बनाया था, मकतूल से पट गयी होने का बहाना करके उसकी कार में दाखिल हुई थी और मनुहार से उसे जहर के कैप्सूल वाली चॉकलेट खिलाने में कामयाब हो गयी थी।''

''कातिल कोई लड़की!''

''हां।''

''नौजवान! खूबसूरत! लम्बी ऊंची! हल्के भूरे बालों वाली!''

''हां।''

''ऐसा एक नग उस हाउसहोल्ड में मौजूद है।''

आगाशे सकपकाया।

''क्या कहना चाहते हो?'' – वो बोला।

''कुछ नहीं। लाउड थिंकिंग कर रहा था। बहरहाल ये बात भी उस लड़के के हक में जाती है कि कातिल कोई लड़की है!''

''हां।''

''जनाब, सच पूछें तो इसी वजह से मैंने उसे थाने ले जाने की जिद छोड़ी थी।''

''ठीक किया था।''

''और बोलिये।''

''और यही कि नेक, शरीफ, फ्रेंडली फैमिली है। वो औरत–हेमा– थोड़ी फायरी थी जो अपने देवर से अपनी ईर्ष्या छुपा भी नहीं रही थी।''

''सोशल स्टेटस में इतना फर्क हो तो ईर्ष्या का दखल बन ही जाता है। छोटा भाई फिल्दी रिच हो और गोल्फलिंक्स जैसे पॉश इलाके में महलों जैसे मैंशन में रहता हो और बड़ा भाई मामूली लायब्रेरियन हो और लोधी कालोनी के मामूली मकान में रहता हो तो मुहावरे की जुबान में हम इसे क्या कहेंगे, आगाशे साहब?''

''कहां राजा भोज, कहां गंगू तेली!''

''यू सैड इट, सर।''

एकता शुक्ला का फ्लैट तलाशने में उन्हें कोई दिक्कत पेश न आई।

वो फ्लैट एक इमारत के ग्राउन्ड फ्लोर पर था जिसके फ्रंट में एक की जगह दो दरवाजे थे। एक पर कालबैल लगी थी जिसे बहल ने दबाया लेकिन भीतर से कोई जवाब न मिला।

''घर पर नहीं जान पड़ती।''–आगाशे धीरे से बोला–''भीतर कोई बत्ती भी नहीं जल रही।''



Scanned by CamScanner

"बत्ती न जलती होने की वजह और भी हो सकती है।"–बहल बोला।

"क्या? सो रही होगी?"

"जैसा किरदार पीछे उसका बयान किया गया था, उसकी रू में मेरे खयाल से तो अभी उसका सोने का टाइम नहीं हो गया होना चाहिये।"

"तो?"

"गश्त पर होगी।"

"गश्त पर?"

"गश्ती बताई जाती है तो यही तो बोला जायेगा!"

"तौबा! पुलिस वालों की जुबान!"

"ओके। ओके। आई करैक्ट माईसैल्फ, सर। कालगर्ल बताई जाती है तो कॉल पर होगी!"

आगाशे खामोश रहा।

"आपके खयाल से वो कातिल हो सकती है?"

"किसी वजह से परमीत मेहरा जैसे शख्स से उसे कोई रंजिश हो गयी हो, वो उसके खिलाफ हो गयी हो, ये तो कोई बड़ी बात नहीं लेकिन मैं एक कालगर्ल की कल्पना किसी ऐसी लड़की के तौर पर नहीं कर सकता जो अपने साथ आरसेनिक जैसे जहर से भरा कैप्सूल लेकर फिरती हो।"

"ठीक।"

"अब क्या इरादा है?"

"लौट चलते हैं। सुबह खबर लेंगे इसकी और..."

"एक कार इधर आ रही है।"

बहल खामोश हो गया और सड़क पर करीब आती कार की तरफ देखने लगा।

"टैक्सी है।"–आगाशे बोला।

बहल ने सहमति में सिर हिलाया।

दोनों खामोशी से प्रतीक्षा करते रहे।

टैक्सी उसी इमारत के सामने आकर रुकी। एक आधुनिक, सजीधजी लड़की ने बाहर कदम रखा और टैक्सी का भाड़ा चुकाने लगी।

"हल्के भूरे बाल!"– आगाशे दबे स्वर में बोला–"गहरा मेकअप। लाल लिपस्टिक।"

"हां।"–बहल बोला–"लेकिन ड्रैस जुदा है।"

"बदल ली होगी!"



Scanned by CamScanner

"हां, क्या बड़ी बात है!"

टैक्सी को रुखसत करके एड़ियां ठकठकाती वो करीब आयी, अपने फ्लैट के दरवाजे पर दो अजनबियों को मौजूद पाकर ठिठकी।

"एकता शुक्ला!"–बहल एक कदम आगे बढ़कर बोला।

तब उसकी निगाह पुलिस की वर्दी पर पड़ी, उसके नेत्र फैले।

"हां।"–वो सशंक भाव से बोली–"आप कौन? क्या माजरा है? क्या हो गया है?"

"कौन बोला कुछ हो गया है?"

"रात की इस घड़ी पुलिस की यहां मौजूदगी बोली और कौन बोला!"

"काफी समझदार हैं।"

"क्या बात है?"

"भीतर चलिये, बताते हैं।"

"फिर भी?"

"आपसे कुछ पूछताछ करनी है।"

"किस सिलसिले में?"

"मैंने बोला न"–बहल का स्वर तनिक कर्कश हो उठा–"भीतर चलिये, बताते हैं।"

वो हड़बड़ाई, फिर उसने आगाशे पर निगाह डाली।

"आप तो पुलिस नहीं जान पड़ते!"–फिर बोली–"रात की इस घड़ी एक अकेली रहने वाली लड़की के फ्लैट पर दो जने आकर बोलें वो पुलिस हैं, एक वर्दी में हो..."

"एक वर्दी काफी नहीं?"

"किनारी बाजार में किराये पर मिलती है। जितनी मर्जी ले लो।"

बहल ने एक गहरी सांस ली, फिर उसने उसे अपना आई. कार्ड दिखाया।

"ओह!"–वो बोली–"आई एम सॉरी।"

"ये किनारी बाजार में नहीं मिलता?"–बहल व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला।

"आई सैड आई एम सॉरी।"

बहल ने आई. कार्ड वापिस अपनी वर्दी की जेब में रखा।

आगे बढ़कर युवती ने मुख्यद्वार का ताला खोला और भीतर दाखिल होकर बिजली के कुछ स्विच ऑन किये।

"आइये, पुलिस जी।"–वो बोली।

दोनों भीतर दाखिल हुए।



Scanned by CamScanner

"तशरीफ रखिये।"

उन्होंने बैठने की कोशिश न की।

"अब बताइये, क्या बात है?"

"आप परमीत मेहरा नाम के किसी शख्स से वाकिफ हैं?"–बहल ने पूछा।

"परमीत मेहरा! वो कौन है?"

"आप बताइये।"

"मैं इस नाम के किसी शख्स को नहीं जानती।"

"शख्स को नहीं जानतीं, कभी नाम भी नहीं सुना?"

"नहीं, नहीं सुना। कौन है वो? क्या बात है उसकी जो आप लोगों को रात की इस घड़ी यहां लायी है?"

"घड़ी को कुछ नहीं हुआ, अभी सिर्फ साढ़े दस बजे हैं।"

"सर्दियों के इस मौसम में साढ़े दस लेट घड़ी होती है।"

"जो अभी गश्त से लौटा हो, उसके लिये..."

"कहां से लौटा हो?"

"मेरा मतलब है जिस घड़ी को आप लेट बता रही हैं, जब उस घड़ी आप घर पर नहीं थीं तो आपके लिये वो लेट क्योंकर हुई? आपका लेट विंटर आवर्स का हवाला देने का क्या मतलब?"

उसको जवाब न सूझा। फिर उसने बात बदली।

"परमीत मेहरा–जो कोई भी वो है–की क्या बात है?"

"वो अब इस दुनिया में नहीं है। कुछ अरसा पहले वो जोरबाग रोड पर खड़ी अपनी कार में मरा पड़ा पाया गया था और उसकी मौत की वजह आरसेनिक–संखिया–नाम का घातक जहर थी।"

"मुझे उससे हमदर्दी है। लेकिन ये आप मुझे क्यों बता रहे हैं?"

"क्योंकि ऐन वारदात के वक्त मौकायवारदात से रुखसत होती एक नौजवान लड़की देखी गयी थी जो कि रखरखाव में, कदकाठ में मोटे तौर पर आप सरीखी बताई जाती है। अब आप ये बताइये कि..."

"वाट नानसेंस!"–वो भड़की–"आप तो मेरे पर कत्ल का इलजाम लगा रहे हैं! लगा क्या रहे हैं, थोप रहे हैं। एक तो एक वाहियात, बेबुनियाद बात कर रहे हैं; दूसरे, रात की इस घड़ी मेरे सामने खड़े हो के कह रहे हैं। किसने कहा आपको कि मैं वहां थी! मेरे सामने लाइये उसे। मुंह नोच लूंगी कमीने का। कमाल है, भई! घटिया, जलील, गैरजिम्मेदार लोग ऐसी बकवास करते हैं और आप लोग उस बकवास को खातिर में लाते हैं।"



Scanned by CamScanner

"आप शान्त हो जाइये..."

"क्यों! क्यों शान्त हो जाऊं...?"

"आप नाहक भड़क रही हैं।"

"भड़काऊ बात पर भड़का ही जाता है, ताली बजाकर डांस नहीं किया जाता। मैं आपके मरने वाले को जानती नहीं, मुझे ये नहीं पता वो कब मरा, मैं आज शाम से अब तक जोरबाग रोड के करीब नहीं फटकी..."

"अगर सच में ये बात है..."

"यकीनन ये बात है। ये ही बात है। एण्ड दिस इज गॉड्स ट्रुथ।"

"..तो फिर आपके लिये परेशान होने वाली कोई बात नहीं। पुलिस को कोई क्लू मिले तो उस पर काम तो करना पड़ता है! कोई खबर मिले तो उसकी तसदीक तो करती पड़ती है! पुलिस को अपनी ड्यूटी तो करनी होती है!"

"वो तो ठीक है लेकिन..."

"वारदात के वक्त आप कहती हैं कि आप जोरबाग रोड पर या उसके पास नहीं थीं तो नहीं थी। समझ लीजिये कि कुबूल की मैंने आपकी बात।"

"थैंक्यू।"

"अब आप शान्ति से, धीरज से मेरी एक जुदा बात का जवाब दीजिये।"

"पूछिये।"

"आप इस वक्त जींस पहने हैं..."

"तो?"

"कब से पहने हैं?"

"कब से क्या मतलब?"

"जिस ड्रैस में आप इस वक्त दिखाई दे रही हैं, उसे आप कब से पहने हैं?"

"कब से पहने हूं?"

"हां। सिम्पल सवाल है। जवाब दीजिये।"

"यही कोई...साढ़े छः बजे से, जबकि मैं घर से निकली थी।"

"क्या करने?"

"उससे आपको कोई मतलब नहीं होना चाहिये।"

"ऐसा तो नहीं कि घर से निकलते वक्त आप कोई और ड्रैस पहने हों, लौटी हों, ड्रैस चेंज की हो और फिर घर से निकली हों?"



Scanned by CamScanner

"नहीं, ऐसा नहीं है। एक बार घर से निकलने के बाद में अभी वापिस लौटी हूं।"

"श्योर?"

"यस, आफकोर्स।"

"आप स्कर्ट भी पहनती हैं?"

"पहनती हूं।"

"इस मौसम में भी?"

"हां।"

"अक्सर?"

"जब भी मेरी मर्जी होती है।"

"मर्जी अक्सर होती है?"

"चलिये, ऐसे ही सही। होती है।"

"फैशनेबल स्कर्ट! टाइट स्कर्ट! इन थिंग! घुटनों तक आने वाली! या और ऊंची!"

"हां? मुझे ऐसी ही स्कर्ट पसन्द आती है। घघरी नहीं पहनती मैं।"

"इस मौसम में साथ में क्या पहनती हैं? पुलोवर–जैसा इस घड़ी पहने हैं–कार्डीगन! कोट!"

"कोट?"

"आपके पास कोई महरून कलर का, लेडीज कट का, चमड़े का कोट है?"

"क्यों जानना चाहते हैं?"

"जवाब दीजिये।"

"है तो सही।"

"कब से है?"

"पांच छः साल से।"

"साथ में मैचिंग कैप! गोल्फकैप जैसी?"

"वो भी है। दरअसल ऐसी कैप ऐसे कोट के साथ ही आती है, खरीदने वाली पहने या न पहने।"

"आई सी।"

"लेकिन क्यों पूछ रहे हैं आप ये सब? कैप की क्या बात है? कोट की क्या बात है? स्कर्ट की क्या बात है? इन चीजों का आपके केस से क्या ताल्लुक है?"

"अभी मालूम पड़ता है। आप जरा अपनी लिपस्टिक दिखाइये।"

"क्या!"



Scanned by CamScanner

"हैण्डबैग में ही रखती होंगी! निकालकर दिखाइये जरा।"

"लेकिन क्यों?"

"मैडम"–बहल का लहजा सर्द हो उठा–"मेरी नर्मी का नाजायज फायदा न उठाइये। जो कहा है, कीजिये वर्ना..."

"क्या वर्ना?"

"गिरफ्तार करके थाने ले जाऊंगा। एक ही रात में नानी याद आ जायेगी। आप रात हवालात में काटना चाहती हैं?"

लड़की का सिर स्वयंमेव इनकार में हिला।

"तो फिर जो कहा है, कीजिये।"

"ये धांधली है।"

"है तो नहीं, आप समझती हैं तो मुझे कोई एतराज नहीं।"

"मैं इस बारे में...कुछ करूंगी। जरूर करूंगी।"

"जरूर कीजियेगा। लेकिन फुर्सत में। इत्मीनान से। इस वक्त आप कुछ नहीं कर सकतीं। कर सकती हैं तो बताइये क्या कर सकती हैं?"

उससे उत्तर देते न बना।

"सो, देयर यू आर। नाओ, लिपस्टिक, प्लीज।"

उसने खामोशी से हैण्डबैग खोला, उसमें से लिपस्टिक बरामद की और उसे सब-इन्स्पेक्टर की सामने फैली हथेली पर रखा।

बहल ने लिपस्टिक को हथेली पर उलटा पलटा, फिर आगाशे को दिखाता बोला–"लोरियल। चेरी रेड।"

आगाशे ने सहमति में सिर हिलाया।

बहल ने वर्दी की जेब से एक कागज बरामद किया, उस पर तीन चार बार लिपस्टिक को रगड़ा, कागज को दोहरा कर के सावधानी से वापिस जेब में रखा और लिपस्टिक लड़की को वापिस लौटा दी।

"थैंक्यू, मैडम।"–वो मशीनी अन्दाज से बोला।

"वो तो हुआ"–वो बोली–"लेकिन बात क्या है? क्यों मेरी लिपस्टिक में आपको दिलचस्पी है? क्यों एक खास ड्रैस के बारे में आपने इतने सवाल किये?"

"रूटीन में किये।"

"कैसी रूटीन है ये! जिस शख्स को आप मरा बताते हैं, कसम उठवा लीजिये, उसके बारे में मैं कतई कुछ नहीं जानती। आपका खयाल भी करना, कि उस शख्स का कत्ल मैंने किया है, मेरे साथ जुल्म है। मैं किसी ऐसे शख्स का कत्ल भला क्यों करूंगी जिसे मैं जानती तक नहीं!"



Scanned by CamScanner

"क्या वाकेई?"

"क्या क्या वाकेई?"

"कि आप उस शख्स को नहीं जानतीं?"

"हे भगवान! अब मैं आपको कैसे यकीन दिलाऊं.."

"कुछ बातें हैं जो आपके कातिल होने की तरफ इशारा करती हैं..."

"मां का सिर करती हैं। मेरे पास एक खास ड्रैस होना ऐसा कोई इशारा नहीं है।"

"और कुछ बातें अभी तफ्तीश से सामने आयेंगी।"

"कुछ सामने नहीं आयेगा। मेरी लिपस्टिक के शेड से आप कुछ साबित नहीं कर सकेंगे। या आप कहना चाहते हैं कि मैनुफैक्चरर ने एक ही लिपस्टिक बनाई–खास मेरे लिये। एक ही कोट बनाया, एक ही कैप बनाई, एक ही स्कर्ट बनायी–खास मेरे लिये।"

"बहस अच्छी कर लेती हैं।"

"मैं आपकी जितनी ज्यादती बर्दाश्त कर सकती थी, कर चुकी। जितनी धमकियां सह सकती थी, सह चुकी। आप मुझे कामन क्रिमिनल की तरह नहीं ट्रीट कर सकते। रात की इस घड़ी आपके–मेरी मर्जी के बिना–किसी तफ्तीश के बहाने मेरे घर में घुस आने का कोई मतलब नहीं। मैं आपके मौकायवारदात पर तो क्या, इस इलाके में ही नहीं थी। शाम को मैं यहां से कोसों दूर थी। मैं साबित कर सकती हूं।"

"इससे अच्छी और बात क्या हो सकती है! कीजिये।"

"मेरा वकील करेगा।"

"जो काम आप खुद ही कर सकती हैं, वो कोई वकील क्यों करेगा? आप बताइये आप शाम सात और आठ बजे के बीच कहां थी, ताकि ये किस्सा ही खत्म हो। अगर आप सच में मौकायवारदात से कोसों दूर थी, अगर आप सच में मकतूल को नहीं जानती थीं तो आपके लिये डरने की कतई कोई बात नहीं। अब बोलिये, क्या कहती हैं?"

उसने उत्तर न दिया, वो सोचने लगी।

"परमीत मेहरा नाम का जो आदमी जान से गया है"–आगाशे मीठे स्वर में बोला–"वो चरित्र का अच्छा आदमी नहीं था। वीकएण्ड पर अपनी कार लेकर लड़कियों की फिराक में भटकना उसका पसन्दीदा शगल था। जहां सड़क पर अकेली लड़की देखता था, खामखाह उसके गले पड़ता था, उसे लिफ्ट आफर करता था..."

एकाएक एकता के नेत्र फैले।



Scanned by CamScanner

"लगता है कुछ याद आया आपको?"

"वो!"–वो तनिक उत्तेजित स्वर में बोली–"वो आदमी जान से गया है? उस मनचले मजनूं की बात कर रहे हैं आप? वो कमीना तो एक शाम मेरे पीछे भी पड़ा था। मैं अकेली पैदल घर लौट रही थी तो मेरे साथ साथ कार चलाने लगा था और लिफ्ट ऑफर करने लगा था। पुलिस को फोन करने की धमकी दी थी तो तभी टला था।"

"तो आखिरकार"–बहल बोला–"आपने माना कि आप उसे जानती थीं?"

"नहीं माना। नहीं जानती थी। मेरे से जबरदस्ती कुछ कहलवाने की कोशिश न करें। दिल्ली शहर में शोहदों का कोई घाटा है! राह चलते अक्सर मिलते हैं। जबरन बतियाने लगते हैं, लाइन मारने लगते हैं। इतने से क्या कोई किसी को जानता हो जाता है! मैंने सिर्फ इतना कहा है कि उस बद्नीयते शख्स से उसकी बद्चलन हरकतों की वजह से एक बार मेरा भी वास्ता पड़ा था। इतने में क्या मैं उसे जानती हो गयी? और अभी तो ये भी नहीं पता कि हम एक ही शख्स की बात कर रहे हैं।"

खामोशी छा गयी।

उस दौरान आगाशे ने लड़की के कथन पर गम्भीर मनन किया। वो इसी नतीजे पर पहुंचा कि लड़की उसकी अपेक्षा से ज्यादा चतुर सुजान हो सकती थी, वो झूठ बोलती हो सकती थी। मकतूल की जान ले लेने की हद तक उससे नफरत करने की उसके पास कोई वजह बराबर हो सकती थी। उसके हल्के भूरे बाल अनुराग जोशी के बयान से ऐन मैच करते थे। हैण्डबैग से बरामद हुई लिपस्टिक का शेड–पैंडिंग लैबोरेट्री कनफर्मेशन–ऐन मैच करता था। चमड़े का मैचिंग कोट और कैप का सैट उसने खुद कुबूल किया था कि उसके पास था और हाई स्कर्ट उसने माना था कि उसकी पसन्दीदा ड्रैस थी।

"मैडम"–बहल ने खामोशी भंग की–"अब आप बताइये कि शाम सात और आठ बजे के बीच आप कहां थीं–बल्कि ये बताइये कि शाम सात बजे से अब तक आप कहां थीं–और ये कहानी खत्म कीजिये।"

"मैंने बोला न"–वो बोली–"मैं जोरबाग से मीलों दूर थी।"

"कहां?"

"बहुत दूर कहीं। जगह का नाम याद नहीं रहा।"

"ऐसा कहीं होता है।"

"गायबखयाली में होता है। मेरा मूड खराब था। मूड खराब हो तो



Scanned by CamScanner

हमेशा मैं लांग वॉक पर निकल जाती हूं और तब तक चलती रहती हूं जब तक मूड ठिकाने नहीं आ जाता। मुझे ध्यान नहीं चलती चलती मैं कहां पहुंच गयी थी और कहां से वापिस लौटी थी।''

''टैक्सी पर?''

''थक कर चूर हो गयी थी। और चलने की हिम्मत नहीं रही थी।''

''इसलिये वापिसी के लिये टैक्सी की?''

''हां।''

''कहां से?''

''ध्यान नहीं।''

''टैक्सी वाले को कितना किराया दिया?''

''जितना उसने मांगा।''

''कितना?''

''ध्यान नहीं। लेकिन दो सौ से कम था। मैंने सौ सौ के दो नोट उसे दिये थे।''

''कोई रकम वापिस न ली?''

''हां।''

''क्यों?''

''यूं ही।''

''दरियादिली दिखाई! 'कीप दि चेंज' वाला विलायती अंदाज अपनाया!''

वो खामोश रही।

''घर से निकली ही लांग वॉक के लिये थीं?''

''घर से निकल पड़ी थी बस। फिर लांग वॉक का आइडिया आ गया था।''

''और आप चलती गयीं, चलती गयीं, चलती गयीं?''

''हां।''

''फट्टा है।''

''क्या है!''

''ऐसा कहीं होता है!''

''मेरे साथ होता है। अक्सर होता है। मैं बहुत मूडी लड़की हूं।''

''साथ कौन था?''

''कब?''

''जब आप लांग वॉक कर रही थीं?''

''कोई नहीं था। मैं अकेली थी।''



Scanned by CamScanner

"अकेली आप तीन-चार घंटे चलती रहीं। यहां से मीलों दूर निकल गयीं?"

"हां।"

"नहीं चलेगा।"

"क्या नहीं चलेगा?"

"कहानी ही करनी थी तो कोई ढंग की तो गढ़ी होती!"

"ये कहानी नहीं है, हकीकत है।"

"लचर कहानी है। नहीं चलने वाली। कोई बच्चा नहीं यकीन करने वाला इस पर। आप साफ साफ नहीं बतायेंगी कि उस वक्फे के दौरान कहां थीं तो नतीजा गम्भीर होगा।"

"क्या होगा?"

"आपका अंजाम बुरा होगा।"

"आप मुझे धमकी दे रहे हैं?"

"वार्निंग दे रहा हूं।"

"दोस्ताना मशवरा समझिये।"-आगाशे ने जोड़ा-"सच बोलिये। हकीकत बयान कीजिये। इसी में आपकी गति है। सच बोलने से कभी किसी का कुछ नहीं बिगड़ा।"

"उपदेश का शुक्रिया, पिताजी। सच यही है कि मैं लांग वॉक पर थी और मुझे नहीं पता चलती चलती मैं कहां पहुंच गयी थी और कहां से वापिस लौटी थी! जो मैंने कहना था, कह दिया। इसके अलावा मैंने कुछ नहीं कहना। अब आप लोग या तो मेरी बात पर यकीन कीजिये या..."

"या क्या?"

"भाड़ में जाइये।"

तत्काल बहल का चेहरा सुर्ख होने लगा।

आगाशे ने उसका कन्धा पकड़ कर दबाया और आंखों आंखों में उससे बेकाबू न होने की गुजारिश की।

बड़ी कठिनाई से बहल ने अपने भड़कते मिजाज पर काबू पाया।

"अच्छी बात है।"-वो कठिन स्वर में बोला-"भाड़ में जाने की आपकी राय पर तो मैं अमल नहीं कर सकता लेकिन...जाता हूं। फिलहाल जाता हूं।"

"शुक्रिया।"

"नहीं, शुक्रिया की कोई बात नहीं। मैं सुबह लौट के आने के वादे के साथ आपसे रुखसत पा रहा हूं। कल सुबह तक का वक्त है



Scanned by CamScanner

आपके पास अपना वाहियात, नामाकूल, नाकाबिलेएतबार जवाब विदड्रा करने का और सही, सटीक, मुनासिब जवाब सोच कर रखने का। ऐसा आपने न किया तो एक वकील से आपका कुछ नहीं बनेगा, दो चार का इन्तजाम करके रखियेगा। ओके?''

वो खामोश रही।

''और कल सुबह मैं यहीं आपके दर्शन पाऊं।''

''क्या मतलब?''

''सोचियेगा मतलब। इतना मुश्किल नहीं है। समझ में आ जायेगा।''

''आप समझते हैं मैं घर बार छोड़ के कहीं खिसक जाऊंगी?''

''आपको ऐसा कोई कदम उठाने की पूरी इजाजत है। लेकिन फिर जब आप पकड़ी जायेंगी तो...''

''तो क्या?''

''तो भगवान ही आपका मालिक होगा। नमस्ते।''

''क्या खयाल है?''–बाहर पहुंच कर आगाशे बोला–''भाग जायेगी?''

''उसकी मजाल नहीं हो सकती।''–बहल पूरे यकीन के साथ बोला।

''तो कहा क्यों?''

''खौफजदा करने के लिये। साइकॉलोजिकल प्रेशर बनाने के लिये।''

''और पुलिसिया रौब गालिब करने के लिये?''

पुलिसिया हंसा।

''उसकी लांग वॉक की बाबत क्या कहते हैं?''–फिर उसने पूछा।

''लांग वॉक, माई फुट। लोग बाग उसे पलक पांवड़ों पर बिठाते होंगे। वॉक क्यों करेगी? लांग वॉक पर अकेली निकलेगी तो मनचलों की कतार पीछे लग लेगी।''

''तो?''

''तो जो बात कामन सेंस पर खरी उतरती है, वो ये है कि किसी ऐसे शख्स के साथ थी जिसका किसी वजह से नाम जुबान पर नहीं लाना चाहती।''

''कालगर्ल बताई जाती है। कोई क्लायन्ट! कोई खास क्लायन्ट!''

''हो सकता है।''

''लिहाजा उसकी ये बात सच हो सकती है कि वो मौकायवारदात से कोसों दूर थी?''



Scanned by CamScanner

"हां, वो किसी ऐसे शख्स के साथ थी जिसका नाम लेने से डरती है, ऐसी जगह पर थी जिसका जिक्र उस शख्स का नाम लेने जैसा ही होता।"

"कौन शख्स?"

"क्या पता! लेकिन जो कोई भी होगा, रुतबे और रसूख वाला होगा, मान सम्मान और समाजी प्रतिष्ठा का आधार स्तम्भ होगा, बतौर एलीबाई जिसका नाम लेने से उसकी रूह कांपती है।"

"कोई ऐसा शख्स जो एक कालगर्ल के क्लायन्ट के तौर पर एक्सपोज होना अफोर्ड नहीं कर सकता?"

"हां।"

"जरूर लड़की का स्टेडी होगा। कैजुअल क्लायन्ट का कौन लिहाज करती है?"

"ठीक।"

"लिहाजा उस औरत हेमा साहनी की इस बात में दम है कि लड़की कालगर्ल है?"

"हाई क्लास! उसके फ्लैट की शानबान, उसकी खुद की सजधज यही जाहिर करती है। मेरी राय में इस लड़की के खुल के पीछे पड़ने की जगह खामोशी से इसकी निगाहबीनी कराना ज्यादा मुफीद साबित होगा।"

"जनाब, जब मैं एस.एच.ओ. साहब को रिपोर्ट करूंगा तो, देख लीजियेगा, उनका फैसला यही होगा कि लड़की को हिरासत में ले लिया जाना चाहिये था। कातिल हसीना की जो छवि सामने आयी है, उस पर ये ऐन फिट बैठती है। अनुराग जोशी उससे टकराई लड़की का जो हुलिया बयान करता है वो ऐन इस पर फिट बैठता है। कातिल हसीना की पोशाक जैसी पोशाक की मिल्कियत ये लड़की अपनी जुबानी कुबूल करती है। कत्ल के वक्त के आसपास वो कहां थी, ये बताने को वो तैयार नहीं। फट्टा मारती है कि लांग वॉक पर थी और समझती है कि चल जायेगा। कहीं और किसी के साथ थी तो उसका जिक्र नहीं करना चाहती, अपने हक में इतनी मजबूत एलीबाई को कैश नहीं करना चाहती। इतना सब कुछ हिरासत में लिये जाने के लिये एस.एच.ओ. साहब काफी ही नहीं, कहीं ज्यादा काफी मानेंगे। वो इसी को कातिल करार देंगे और हवालात में बंद करके इन्तजार करेंगे इसका इसकी जुबानी ऐसा कुबूल करने का।"

"जबकि तुम्हारा खयाल जुदा है! तुम्हें इस बात की पूरी पूरी



Scanned by CamScanner

सम्भावना लगती है–अभी तुमने इस तरफ इशारा भी किया था–कि वो बेगुनाह है, कत्ल के वक्त वो किसी ऐसे शख्स के साथ थी जिसको बतौर एलीबाई वो पेश नहीं कर सकती!''

''वो बस खयाल है मेरा।''

''उसे अपने एस.एच.ओ. साहब पर जाहिर तो करोगे या वो भी नहीं?''

''जाहिर तो करूंगा लेकिन मेरे खयाल पर उन्होंने कान से मक्खी उड़ाई तो उस बाबत जिद नहीं कर पाऊंगा।''

''लेकिन जो बात लड़की के कातिल होने की थ्योरी के खिलाफ जाती लगेगी, उसको प्वायन्टआउट तो करोगे?''

''ऐसी कौन सी बात है?''

''आरसेनिक है न ऐसी बात! एकता शुक्ला जैसी लड़की को कहां से हासिल होगा वो?''

''कहां से हासिल होगा?''

''एस.आई. साहब, सवाल मैंने किया है।''

''जनाब, मेरे पास जवाब होता तो मैं सवाल के बदले में सवाल करता?''

''ठीक। मैं अब यहीं से रुखसत पाता हूं। सुबह एस.एच.ओ. साहब के केस की बाबत मिजाज का पता पाने थाने आऊंगा।''

''जनाब, आपका खुद का मिजाज मेरी समझ से परे है। आप क्यों इस नाशुक्रे काम में अपना टाइम जाया कर रहे हैं?''

''क्योंकि जाया करने के लिये टाइम है मेरे पास।''

''आपकी माया आप ही जानें।''

''प्लस, आई एम क्यूरियस।''

''सर, क्यूरासिटी किल्ड दि कैट।''

''देखते हैं। देखते हैं मेरी क्यूरासिटी मेरा क्या हश्र करती है। गुडनाइट, माई डियर।''

''गुड नाइट, सर।''

❑❑❑

अगली सुबह नौ बजे विवेक आगाशे थाने पहुंचा।

वहां पहली बात उसे यही पता चली कि एस.एच.ओ. हरिशंकर मीना अपने मातहत सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल पर बाकायदा खफा



Scanned by CamScanner

हुआ था कि उसने पिछली रात को एकता शुक्ला को हिरासत में क्यों नहीं लिया था।

दूसरी बात ये पता चली कि एकता शुक्ला की लिपस्टिक का जो सैम्पल पिछली रात एस.आई. बहल ने लिया था, वो उस लिपस्टिक से हूबहू मिलता पाया गया था जिसकी छाप जनाना होंठों की सूरत में मकतूल परमीत मेहरा के गाल पर बनी पायी गयी थी।

एस.एच.ओ. मीना की निगाह में वो लड़की के गुनाह का 'कनक्लूसिव प्रूफ' था।

"उस लिपस्टिक में एक्सक्लूसिव तो कोई बात नहीं।"–आगाशे सहज भाव से एस.एच.ओ. से बोला–"सिवाय इसके कि वो एक एक्सपेंसिव इन्टरनेशनल ब्रांड की लिपस्टिक है। लोरियल ब्रांड इन्डिया में आम अवेलेबल है, आम इस्तेमाल में आता है, और चेरी रैड कोई दुर्लभ शेड भी नहीं। मकतूल के गाल पर से बरामद लिपस्टिक और लड़की के हैण्डबैग में मौजूद लिपस्टिक ब्रांड और शेड में एक टाइप की थीं लेकिन ये साबित करने का कहां कोई जरिया आपके पास है कि एक ही थीं? कि लिपस्टिक की जो स्टिक लड़की की मिल्कियत थी, उसी की छाप मकतूल के गाल पर पायी गयी थी?"

"आगाशे साहब"–एस.एच.ओ. तनिक अप्रसन्न भाव से बोला–"आप केस में घुंडी डालने की कोशिश कर रहे है?"

"घुंडी निकालने की कोशिश कर रहा हूं।"

"आप उस लड़की की हिमायत करने की कोशिश कर रहे हैं।"

"बिलकुल भी नहीं। मैं एक सहज, स्वाभाविक, व्यवहारिक बात का जिक्र कर रहा हूं। लोरियल ब्रांड चेरी रैड लिपस्टिक हजारों की तादाद में बनाता होगा। हजारों नौजवान लड़कियों के हैण्डबैग में वो लिपस्टिक पायी जाती होगी। ऐसी आम प्रोडक्शन की आइटम उस लड़की के खिलाफ सबूत क्योंकर हो गयी?"

"और भी तो सबूत हैं!"

"वो भी इसी कैटेगरी के हैं। इसी क्वालिटी के हैं। निर्विवाद कोई नहीं। अकाट्य कोई नहीं।"

"अनुराग जोशी ने उसे देखा था।"

"उसकी पोशाक को देखा था, बालों का कलर नोट किया था, उसकी सूरत पहचानी होने का दावा उसने कभी नहीं किया था।"

"लगता है लड़की ने आपको रिटेन कर लिया है।"

"जी!"



Scanned by CamScanner

"बतौर पीडी। इसलिये उसको डिफेंड करना आप अपना फर्ज मान रहे हैं। आप तो अब इस अहम बात की भी पालिश उतार देंगे कि वो ये नहीं बताती कि कत्ल के वक्त के आसपास वो कहां थी, किसके साथ थी!"

"मैं ऐसा नहीं करूंगा लेकिन इसका एक जवाब आपके विवेचन अधिकारी एस.आई. पुनीत बहल के पास है।"

"ये कि वो किसी बड़े नेता की, किसी बड़े रसूख वाले शख्स की सोहबत में थी जिसका नाम लेने से वो डरती है?"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता?"

"होने को क्या नहीं हो सकता! लेकिन व्यावहारिक, दुनियादारी वाली बात ये है कि जब अपनी जान पर बनी हो, तब दूसरे की रुसवाई की परवाह नहीं की जाती।"

"अपना अपना खयाल है। लोगबाग दूसरे की खातिर जान दे देते हैं, जुबान नहीं खोलते।"

"कोई कालगर्ल वो लोगबाग नहीं होती।"

"एस.एच.ओ. साहब, ये कोई स्थापित तथ्य नहीं, उसके लाइफ स्टाइल से कुढ़ने वालों का, खुन्दक खाने वालों का महज एक अन्दाजा है, एक लांछन है, फतवा है।"

"आल थिंग्स सैड एण्ड डन, मेरा एतबार इसी बात पर है कि वारदात के फौरन बाद मौकायवारदात पर अनुराग जोशी से जो लड़की टकराई थी, वो यही एकता शुक्ला थी।"

"भले ही अनुराग जोशी ने उसकी सूरत नहीं देखी थी!"

"हां। शिनाख्त का वाहिद जरिया सूरत ही नहीं होता, शिनाख्त के और भी जरिये होते हैं। और जरिये सामने हैं और मेरी निगाह में सब काबिलेएतबार हैं।"

"एकता शुक्ला आरसेनिकभरा कैप्सूल क्योंकर मुहैया कर पायी?"

"बस, यही एक प्वायन्ट है जिसका कोई माकूल जवाब अभी हमारे पास नहीं है, जिस पर तफ्तीश जारी है। अब उस लड़की को तभी तक ढील दी जा रही है, जब तक हमें इस बात का जवाब हासिल नहीं हो जाता। उस घातक जहर का उसका क्या सोर्स था, उसने उसको कहां से हासिल किया, ये बात उजागर होते ही वो गिरफ्तार होगी और गिरफ्तार रहेगी। फिर उसको सजा होना महज वक्त की बात होगी।"

"उसके फिंगरप्रिंट्स मकतूल की कार पर कहीं नहीं पाये गये थे?"



Scanned by CamScanner

"आपको क्या मालूम?"

"माई डियर सर, कल आपने खुद कहा था कि सिर्फ दो ही जनों के फिंगरप्रिंट्स कार पर से बरामद हुए थे। एक जना खुद मकतूल था और ये बात हाथ के हाथ सामने आ गयी थी, दूसरा जना अनुराग जोशी था, ये बात आपके सैन्ट्रलाइज्ड रिकार्ड से थोड़ी देर बाद स्थापित हो गयी थी। अब इस बात को क्या अलग से कनफर्म किये जाने की जरूरत है कि मकतूल की कार के भीतर या बाहर कहीं उस लड़की एकता शुक्ला के फिंगरप्रिंट्स नहीं पाये गये थे?"

"हूं।"

"क्या कहते हैं आप इस बारे में?"

"वो जरूर"-एस.एच.ओ. पूरे इत्मीनान से बोला-"दस्ताने पहने रही होगी।"

"दस्ताने!"

"जब अपराध पूर्वनियोजित हो तो ऐसी सावधानियां बरती जाना क्या बड़ी बात है?"

"पूर्वनियोजित?"

"क्यों नहीं! चॉकलेट की कोर में जहरभरा कैप्सूल धंसा कर साथ लायी, ये पूर्वनियोजन नहीं तो और क्या है?"

"इसीलिये दस्ताने?"

"हां।"

"जो मकतूल को दिखाई न दिये?"

"क्या बड़ी बात है! डाक्टरों के काम आने वाले दस्ताने, जो कि सर्जीकल ग्लव्स कहलाते हैं, महीन रबड़ के होते हैं और चमड़ी की रंगत के होते हैं। रात के वक्त, कार के भीतर के अन्धेरे में ऐसे दस्ताने मकतूल को न दिखाई दिये होना क्या बड़ी बात है?"

"गुस्ताखी माफ, एस.एच.ओ. साहब, आप तो पंजे झाड़ के उसके पीछे पड़े हैं।"

"अभी नहीं। जरा जहर का राज उजागर हो जाये कि वो उसे क्योंकर मुहैया हुआ, फिर पड़ेंगे।"

"इस सिलसिले में आप क्या कर रहे हैं?"

"खामोशी से लड़की की बैकग्राउन्ड टटोल रहे हैं। हमें पूरी उम्मीद है कि कहीं न कहीं से जहर की उसको अवेलेबलिटी की बाबत कोई क्लू बहुत जल्द हमारे हाथ आयेगा।"

"जब तक ऐसा नहीं होगा तब तक वो आजाद है?"



Scanned by CamScanner

"अब तो है। बहल रात को पकड़ लाता तो बात जुदा होती।"

"वो फरार हो गयी तो?"

"फरार हो के कहां जायेगी? कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। पकड़ मंगवायेंगे। जमा, फरार होकर वो अपना ही नुकसान करेगी। खुद अपने गुनाह को मोहरबन्द करेगी।"

"बहरहाल आपका मुकम्मल एतबार उस लड़की के कातिल होने पर है।"

"खामखाह तो नहीं है!"

"कत्ल की कोई वजह होती है। डेलीब्रेट कोल्डब्लडिड मर्डर की कोई बड़ी वजह होती है। कोई वजह तो दिखाई नहीं देती! कत्ल का कोई उद्देश्य तो उसके पास नहीं दिखाई देता!"

"क्यों नहीं दिखाई देता? मकतूल का कैरेक्टरलैस किरदार, उसकी जलील हरकतें कत्ल का उद्देश्य नहीं? लड़की ने खुद कुबूल किया था कि एक बार उसका वास्ता उस हरामी शख्स से पड़ चुका था। वो इसी इलाके में रहती थी, निजामुद्दीन वैस्ट भी कोई ज्यादा दूर नहीं। क्या पता मकतूल किस हद तक लड़की के पीछे पड़ा था!"

"इस हद तक कि उसने मकतूल का कत्ल करने का फैसला कर लिया?"

"क्या बड़ी बात है?"

"है तो सही बड़ी बात!"

"मकतूल ने चैलेंज उछाला होगा कि वो उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी। उसने बिगाड़ कर दिखा दिया।"

"गैस वर्क है। उथली बातें हैं।"

"तो फिर कोई गहरी बात भी होगी। सामने आ जायेगी। अभी तो वारदात को वाकया हुए चौबीस घंटे भी नहीं हुए।"

"वो लड़की कालगर्ल बताई जाती है। एस.एच.ओ. साहब, किसी की छेड़ाखानी से हलकान होकर वो कत्ल करने पर आमादा हो गयी–इतने इन्ट्रीकेट, वैलप्लांड, क्लैवरली डिवाइस्ड तरीके से कत्ल करने पर आमादा हो गयी–ये बात हज्म होने वाली नहीं।"

"अरे, आगाशे साहब, औरत के मन में क्या है, ये कौन माई का लाल भांप सकता है?"

"ये मुहावरे वाली बात है, मैं व्यवहारिक बात कर रहा हूं। जरा इस बात को अपने तसव्वुर में लाइये कि कत्ल से ऐन पहले कार में क्या हुआ होगा? तब मकतूल परमीत मेहरा को एक ऐसी आम, हार्मलैस



Scanned by CamScanner

चॉकलेट कुबूल करने को उकसाया गया था जिसे उसने अपने मुंह में रख कर अपने दान्तों के बीच दबाया था तो उसे नहीं मालूम था कि चॉकलेट के भीतर एक कैप्सूल था जो दान्तों के बीच दब कर जब चटका था तो उसमें से एक घातक जहर निकल कर उसके मुंह में आ गया था और हलक में उतर गया था। ये कोई रोजमर्रा की किस्म का क्राइम नहीं था, ये कोई आम, मामूली, चालू, कत्ल का तरीका नहीं था। ये एक नयी, अनूठी, अनोखी चाल थी जिसको चलने की क्षमता मुझे उस लड़की में नहीं दिखाई देती थी। कल जब मैं उस लड़की से मिला था तो वो मुझे किधर से भी इतनी काबिल, इतनी शातिर, इतनी इंटेलीजेंट नहीं लगी थी कि कत्ल की ऐसी शैतानी योजना तैयार कर पाती। उसकी एक्सपर्टाइस तो किसी और ही महकमे में जान पड़ती थी।''

''किस में?''

''मर्द को पटाने में, रिझाने में, राजी रखने में, न कि उसका वजूद खत्म कर देने में। उसकी हस्ती मिटा देने में। कहने का मतलब ये है कि उसको हर हाल में कातिल साबित करने के लिये आप अपने मन में उसकी विध्वंसक छवि उकेरेंगे तो यकीनन अपनी तफ्तीश से भटकेंगे।''

''तौबा! इतनी तरफदारी!''

''मैं कोई तरफदारी नहीं कर रहा।''

''फिर ये हाल है! जरूर वो आपकी क्लायन्ट बन गयी है।''

''ऐसी कोई बात नहीं है।''

''तो फिर बात खत्म कीजिये। बतौर काातिल जब तक कोई दूसरा कैन्डीडेट सामने नहीं आ जाता, मेरा ऐतबार इसी लड़की के कातिल होने पर है।''

आगाशे फिर न बोला।

ऐन उस घड़ी अनुराग जोशी साहनीज के घर में ब्रेकफास्ट टेबल पर मौजूद था। वो श्रेया और शेखर के अपनी अपनी नौकरी पर जाने का वक्त था इसलिये सब व्यस्त थे। अनुराग वहां ये जानने पहुंचा था कि पुलिस का फेरा फिर तो नहीं लगा था और ये जान कर उसने राहत महसूस की थी कि ऐसा नहीं हुआ था।

खुद वो थाने का चक्कर लगा आया था जो कि रस्म अदायगी ही साबित हुआ था।

शेखर साहनी हड़बड़ी में ऑमलेट और टोस्ट जैसे निगल रहा था।



Scanned by CamScanner

"धीरज से खाओ।"–हेमा सखी से बोली–"अभी कोई देर नहीं हो गयी है।"

शेखर की रफ्तार में कोई फर्क नहीं आया।

"असल में ये जल्दी में नहीं हैं"–हेमा अनुराग से बोली–"नर्वस हैं।"

"नर्वस!"–अनुराग की भवें उठीं–"वो किसलिये?"

"छोटे भैय्या खफा हो गये होंगे!"

"वो किसलिये?"

"घर में पुलिस जो आई! पुलिस का फेरा तो चोर उचक्कों के घरों में, सन्दिग्ध चरित्र के लोगों के घरों में लगता है न!"

"कोई जरूरी तो नहीं!"

"मुझे क्या बताते हो? इन्हे समझाओ! वैसे चाहे भाई इनकी शक्ल न पहचाने, उसके मिजाज की इन्हें बराबर फिक्र है। छोटे भैय्या खफा होंगे! देखो तो!"

"अंकल"–श्रेया मीठे स्वर में बोली–"हममें से किसी का उस केस से कोई वास्ता नहीं। कल पुलिस भी इस बात की तसल्ली करके ही यहां से गयी थी। फिर आप काहे को फिक्र करते हैं! किस बात की फिक्र करते हैं! अभी तो कत्ल हमारे घर से थोड़ा फासले पर हुआ, वो ऐन हमारे घर के सामने हुआ होता तो हम क्या कर लेते!"

"पुलिस का काम है तफ्तीश करना।"–हेमा भुनभुनाई–"अपने काम को अंजाम देने के लिये वो यहां वहां जाती ही है। इसलिये यहां भी आ गयी। आ गयी तो क्या आफत आ गयी? या तो कहो कि कत्ल तुमने किया है।"

"पागल हुई हो?"

"या मैंने किया है। या श्रेया ने किया है। या अनुराग ने किया है।"

"अरे, क्या बक रही हो!"

"तो फिर बच्चों कि तरह मिमियाना बंद करो कि छोटे भैय्या सुनेंगे तो क्या कहेंगे। ये फर्जी, ड्रामाई बात है, अहमक लगते हो कहते हुए। मुझे मालूम है तुम्हारे भैय्या को तुम्हारी कितनी परवाह है। कम से कम इस वजह से वो यहां कदम नहीं रखने वाला, तुम भले ही अपने आप को कितने फुंदने लगाते रहो।"

"मैं फोन कॉल की उम्मीद कर रहा था।"–शेखर दबे स्वर में बोला।

"आ जायेगी आनी होगी तो। अभी तो पता नहीं उसे कत्ल की खबर भी लगी होगी या नहीं! बड़े लोगों का दिन दोपहर के करीब



Scanned by CamScanner

जाकर शुरू होता है। इसलिये अभी इन्तजार करो। इन्तजार नहीं होता तो खुद फोन कर लो।''

''किसलिये?''–शेखर तनिक हड़बड़ाया।

''गुनाह बख्शवाने के लिये।''

''गुनाह! कौन सा गुनाह?''

''जो तुमने ऐसी जगह के करीब रिहायश रख कर किया है जहां कि कत्ल हुआ है।''

''वाट नानसेंट!''

''अब देर नहीं हो रही तुम्हें?''

शेखर डायनिंग टेबल पर से उठ खड़ा हुआ।

तभी कॉलबैल बजी।

हेमा ने जाकर दरवाजा खोला।

चौखट पर शशांक साहनी खड़ा था।

वो लंबा ऊंचा, फिल्म स्टार्स जैसा खूबसूरत और सजाधजा आदमी था जो शेखर से चार साल छोटा था। वो शानदार सूट पहने था और उसके चेहरे पर वो रौब था जो कि साधनसम्पन्न लोगों के चेहरों पर स्वाभाविक तौर पर होता था।

हेमा के अभिवादन को लगभग नजरअंदाज करते हुए उसने भीतर कदम रखा और लम्बे डग भरता डायनिंग टेबल पर पहुंचा।

''भ्राजी,''–वो अप्रसन्न भाव से बोला–''ये मैं क्या सुन रहा हूं?''

''अभी मुझे काम पर पहुंचना है''–शेखर बात को टालने की गरज से बोला– ''मुझे पहले ही देर हो गयी है...''

''कोई देर नहीं हो गयी। हो गयी है तो होने दो। कत्ल का क्या किस्सा है? पुलिस यहां क्यों आयी? आपसे जवाबतलबी क्यों की? आपका कत्ल से क्या वास्ता? क्यों ऐसा लफड़ा खास आपके गले पड़ा?''

''देवर जी, आप नाहक भड़क रहे हैं।''– हेमा तीखे स्वर में बोली–''यहां ऐसा कुछ नहीं हुआ जिससे आपकी आन बान शान को बट्टा लगने का अंदेशा हो। न इन्होंने खुद कुछ किया है, न ये इलाके में कुछ होने को रोक सकते हैं।''

शशांक तनिक हड़बड़ाया, फिर बोला–''मैं भाई से बात कर रहा हूं।''

''इन्होंने लायब्रेरी पहुंचना है। आप मेरे से बात कीजिये। मुझे बताइये क्यों आप समझते हैं इलाके में हुए कत्ल के लिये ये जिम्मेदार हैं या पुलिस के यहां आने न आने पर हमारा कोई जोर है?''



Scanned by CamScanner

"हेमा, तुम चुप करो।"–शेखर जल्दी से बोला–"आई एम सॉरी, शशांक..."

"वाट सॉरी! किस बात के लिये सॉरी! क्या किया है तुमने?"

"हेमा, प्लीज..."

"क्या प्लीज! इन्हें तो हमें हयूमीलियेट करने की, बिलिटल करने की आदत पड़ी हुई है।"

"हेमा!"

उपेक्षा और असंतोष का स्पष्ट प्रदर्शन करती हेमा खामोश हुई।

"सब एक मिसअन्डरस्टैंडिंग के तहत हुआ।"–शेखर ने छोटे भाई को सफाई दी–"पुलिस एक खामखयाली से मुब्तला थी जो कि दूर हो गई है। कल शाम यहां से थोड़ी दूर एक आदमी अपनी कार में जहर से मरा पाया गया था। बकौल पुलिस, वो कत्ल का केस था और कत्ल किसी ऐसी लड़की ने किया था जिसकी उस शख्स से कोई खुन्दक थी। और इसे इत्तफाक कहो या अनुराग की बद्किस्मती कि ये ऐन उसी वक्त मौकायवारदात से गुजरा जबकि कत्ल बस हो के हटा था।"

"केस से कोई ताल्लुक है तो इसका है?"–शशांक एक उड़ती निगाह अनुराग पर डालता बोला–"पुलिस को कोई जवाबतलबी करनी थी तो इससे करनी थी?"

"हां।"

"तो वो यहां क्यों आयी?"

"क्योंकि तब ये यहां था।"

"क्यों था?"

"यहां मेरी आमद पर कोई पाबन्दी नहीं है।"–अनुराग जब्त से बोला–"जब मेरी फियांसी यहां रहती है तो..."

"तुम्हारी वजह से पुलिस यहां आयी।"

"जो कि मेरा बहुत बड़ा, न माफ किये जा सकने लायक, गुनाह है!"

शशांक ने घूरकर उसे देखा।

"क्यों तुम"–फिर बोला–"एक कत्ल के केस में इनवाल्व हुए?"

"कत्ल तो दूर की बात है, जनाब, पुलिस की आमद से पहले मुझे तो ये ही नहीं मालूम था कि वो शख्स कार में मरा पड़ा था। मैंने तो उसे बीमार या बेहोश पड़ा समझा था और इंसानियत के नाते उसकी दुश्वारी



Scanned by CamScanner

में उसकी कोई मदद करने का मन बनाया था। उसी कोशिश में कार के हैंडल पर मेरे फिंगरप्रिंट्स बन गये थे जिनकी वजह से मुझे तलाश करती पुलिस यहां पहुंच गयी थी। जब उनकी तसल्ली हो गयी थी कि मेरा–या यहां के किसी बाशिन्दे का–कत्ल से कोई लेना देना नहीं था तो वो लोग यहां से चले गये थे। बस, इतनी सी बात है।''

''फिंगरप्रिंट्स की क्या बात है? क्योंकर पुलिस कार के हैंडल से बरामद फिंगरप्रिंट्स की बतौर तुम्हारे फिंगरप्रिंट्स शिनाख्त कर पायी?''

''वो...वो मेरी...बदकिस्मती की एक दास्तान है...''

''क्या? साफ बोलो।''

''उसका कत्ल के मौजूदा केस से कोई वास्ता नहीं।''

''फिर भी बोलो।''

''ये''–हेमा बोली–''पन्द्रह दिन की जेल की सजा काट चुका है।''

''क्या!''

''इतना हैरान होकर दिखाने वाली कोई बात नहीं। चोरी नहीं की। डाका नहीं डाला। प्रिंट मीडिया की अवेयरनैस होती तो आपको मालूम होता कि इसने अपनी एक लेखमाला में ज्यूडीशियरी को करप्ट करार दिया था और कोर्ट में माफी मांगने से इनकार कर दिया था जिसे जज ने अदालत की अवमानना माना था और इसे पन्द्रह दिन की सिम्पल इम्प्रिजनमेंट की सजा सुनाई थी। ये थी इसके फिंगरप्रिंट्स पुलिस रिकार्ड में होने की वजह।''

''ये...ये जेलबर्ड है? इसका पुलिस रिकार्ड है?''

''मामूली वजह से।''

''श्रेया एक जेलबर्ड से शादी करने वाली है?''

''मुझे कोई एतराज नहीं।''–श्रेया आवेश से बोली।

''तुम बच्ची हो। नादान हो। और तुम्हारे ये सरपरस्त गैरजिम्मेदार हैं, वर्ना इन्होंने तुम्हें अक्ल करने की और ऐसे शख्स से दूर रहने की नसीहत की होती। अब इसकी वजह से जब तुम लोगों का नाम पब्लिक में उछाला जायेगा तो मैं क्या तब होने वाली बदनामी से अछूता बच जाऊंगा! है क्या ये? एक मामूली कलमघसीट जिसे इतनी भी अक्ल नहीं कि ज्यूडीशियरी से पंगा नहीं लेते।''

''सर''–अनुराग गुस्से से बोला–''यू डोंट हैव टु टैल मी हाऊ आई शुड कन्डक्ट माई बिजनेस।''

''समबॉडी हैज टु, माई डियर, समबॉडी हैज टु।''



Scanned by CamScanner

"आप नाहक तिल का ताड़ बना रहे हैं।"–हेमा बोली–"आपको यहां आकर श्रेया के होने वाले पति की इंसल्ट करने का कोई अख्तियार नहीं।"

"इसी बात का तो अफसोस है।"–शशांक बोला।

"किस बात का?"

"कि ये छोकरा इस घर का होने वाला दामाद है। कि ये मेरा भी रिश्तेदार बनने वाला है।"

"सर"–क्रोध से कांपती हेमा बोली–"प्लीज गैट आउट आफ माई हाउस।"

"माई डियर, दिस इज नाट युअर हाउस। दिस इज माई ब्रदर्स हाउस। इन्हें कहो मेरे को गैट आउट बोलें।"

हेमा ने अपने पति की तरफ देखा।

"हेमा"–उससे निगाह चुराता शेखर बोला–"तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिये।"

"अरे, तुम मर्द हो क्या हो?"

"नाओ काम डाउन।"

"आप इधर मेरी तरफ देखिये।"–दखलअंदाज होता अनुराग तीखे स्वर में बोला।

"क्या है?"–शशांक बोला।

"मैं जेलबर्ड हूं! मामूली कलमघसीट हूं! तो आप क्या हैं? गोल्फलिंक्स में रहते हैं, बड़ी कम्पनी के मालिक हैं तो समझते हैं खुदा हैं? या खुद को खुदा से भी दस हाथ ऊंचा समझते हैं?"

"तुम्हारी ये मजाल! तुम अपनी औकात..."

"मेरी क्या, आप तो अपने मांजाये बड़े भाई की कोई औकात नहीं समझते। जब आते हैं इनको छोटेपन का अहसास दिलाकर जाते हैं। बल्कि आते ही इसी मकसद से हैं। बड़े आदमी का ये कारोबार होता है! जो बड़ा होता है वो औरों को कर देता है बड़ा, मेहर रह सकता नहीं जर्रों को चमकाये बगैर। आप कैसे सूरज हैं जो यहां अपने मिजाज का मनहूस अंधेरा फैलाने आते हैं?"

"अनुराग!"–शेखर दहशतनाक लहजे से बोला।

"क्यों होती है ऐसी मजाल आपकी? क्योंकि आपकी औकात है, इनकी नहीं है? क्योंकि आप धनकुबेर हैं, ये मामूली लायब्रेरियन हैं? मेरे को आपने कलमघसीट बोला, आप तो वो भी नहीं। नोट गिनने के अलावा क्या आता है आपको? किस काबिल हैं आप? आपके सारे



Scanned by CamScanner

जीवन की सारी अपलब्धियां इसी बात में छुपी हैं कि लोग आपको बड़ा आदमी कहते हैं। मैं पूछता हूं कैसे बड़े आदमी हैं आप। किस किस्म के बड़े आदमी हैं आप! आप तो जानते ही नहीं असल बड़े आदमी कैसे होते हैं! क्या उनकी बानगी होती है! कहां उनका बड़प्पन छुपा होता है! मेरे से सुनिये बड़े आदमी कैसे होते हैं। जो आलाजर्फ होते हैं, हमेशा झुक के मिलते हैं; सुराही सरनगूं होकर भरा करती है पैमाने।''

''अनुराग! शट युअर माउथ।''

''ठीक कह रहा है ये।''–हेमा बोली–''मोटे विरसे के मालिक न बने बैठे होते तो लायब्रेरियन या कलमघसीट जितनी भी औकात न होती।''

''आई से शटअप बोथ आफ यू।''

खामोशी छा गयी।

''आई एम सॉरी, शशांक।''

''इट्स आल राइट।''–शशांक अनमने भाव से बोला।

''मुझे यकीन है पुलिस की हम लोगों की तरफ तवज्जो तुम्हारी एंगेजमेंट पर कोई असर नहीं डालेगी।''

''ओह, तो ये बात है!''–हेमा व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली–''काटनकिंग की बेटी शिवांगी पुंज से महीना पहले हुई आपकी सगाई को तो मैं भूल ही गयी थी। असल फिक्र आपको ये है कि राजे की बेटी को खबर लग जायेगी कि आपके हम लोगों जैसे मामूली हैसियत वाले रिश्तेदार भी हैं जिनको थाने जाकर पुलिस की हाजिरी भरनी पड़ती है और वो...''

''नानसेंस!''–शशांक बोला–''शिवांगी का जिक्र करने की जरूरत नहीं। मेरी सगाई का जिक्र करने की जरूरत नहीं। इन बातों से मेरी एंगेजमेंट पर कोई असर नहीं होने वाला। अलबत्ता मेरा इमेज खराब हो सकता है। वैसे मुझे शुरू से अंदेशा था कि श्रेया के इस बेहैसियत लड़के से ताल्लुकात मेरे लिये परेशानी का बायस बनेंगे।''

''मैं''–अनुराग बोला–''बाहैसियत बिगबॉस को सलाम करता हूं लेकिन...''

बाकी की बात सुनने के लिये शशांक साहनी वहां मौजूद नहीं था, फर्श रौंदता वो पहले ही वहां से रुखसत हो गया था।

पीछे कई क्षण सन्नाटा छाया रहा।

''जवाब नहीं आपके भाई का''–फिर हेमा ने खामोशी भंग की–''कैसे बात का बतंगड़ बना के गया! दौलत का हथौड़ा क्या हाथ में आ गया कि जो सामने पड़ गया वही कील हो गया! बड़े आदमी का बड़प्पन बस इसी



Scanned by CamScanner

बात में होता है कि दूसरे को हकीर समझे, हर किसी को कीड़ा मकौड़ा समझे! यहां पुलिस का फेरा लगने भर से उसके बड़े नाम की चमक धुंधली पड़ गयी! ऐसा अनरीजनेबल भी कोई न हो।''

''शशांक कैसा है, तुम्हें मालूम है।''–शेखर भुनभुनाया–''पर तुम दोनों को तो अपनी जुबान पर काबू रखना चाहिये था! घर आये का कोई तो लिहाज करना चाहिये था!''

''उसे नहीं करना चाहिये था? हमें ही करना चाहिये था? और क्या करने आये थे छोटे नवाब साहब? भ्रतृप्रेम दिखाने आये थे? बड़े भाई से प्यार मुहब्बत का दरिया बहाने आये थे? तुम्हारी खाट खड़ी करने आये थे। हमें जलील करने आये थे। हमें हमारी जात दिखाने आये थे। हमें अपनी अकड़ फूं का निशाना बनाया सो बनाया, अनुराग के पीछे क्यों पड़ गये? क्या कुछ नहीं कह गये इसे? जेलबर्ड! कलमघसीट! बेहैसियत! बेअक्ल! नाकाबिल! बड़े आदमी की ये भाषा होती है? बड़े आदमी के ये लच्छन होते हैं?''

''मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता लेकिन...''

''छोड़ो लेकिन वेकिन। लायब्रेरी पहुंचो। पहले ही लेट हो।''

शेखर और श्रेया इकट्ठे वहां से रुखसत हुए।

शशांक साहनी अपनी होंडा कार खुद चलाता लोधी कालोनी पहुंचा था। वो महसूस कर रहा था कि अच्छा था कि उस रोज वो ड्राइवर के साथ वहां नहीं आया था वर्ना पीछे छिड़ी अप्रत्याशित, कुरुचिपूर्ण तकरार का वो भी गवाह बना होता।

अब उसकी मंजिल नेहरू प्लेस थी जहां कि साहनी बिल्डर्स का भव्य ऑफिस था।

नेहरू प्लेस पहुंचने तक उसका मिजाज काफी हद तक शांत हो चुका था।

एक मल्टीस्टोरी ऑफिस कम्पलैक्स की अपने लिये रिजर्व पार्किंग में उसने कार खड़ी की और लिफ्ट द्वारा नौवीं मंजिल पर पहुंचा जहां कि उसका निजी कक्ष था और जहां पहुंचने के लिये वो अपनी सैक्रेट्री के सामने से गुजरा तो वो बोली–''गुड मार्निंग, सर।''

''गुड मार्निंग, अलीशा।''–वो बोला–''आई एम सॉरी आई एम लेट।''

''डजंट मैटर, सर।''



Scanned by CamScanner

"भारी जाम में फंस गया था।"

"दिल्ली का मार्निंग का ट्रैफिक ऐसा ही है, सर।"

"हर वक्त का ट्रैफिक ऐसा है।"

"यू सैड इट, सर। बाई दि वे, सर, एक मैडम का पिछले पन्द्रह मिनट में दो बार फोन आ चुका है।"

"मैडम, कौन मैडम? नाम बोला?"

"नो, सर।"

"क्या चाहती थी?"

"आपसे बात करना चाहती थीं।"

"किस सिलसिले में?"

"नहीं बोला। मैंने पूछा पर...नहीं बोला।"

"हूं। ठीक है।"

वो अपने कक्ष में पहुंचा और जाकर अपनी चमड़ा मंढ़ी एग्जीक्यूटिव चेयर पर ढेर हुआ।

किसका फोन होगा?

शिवांगी का!

क्या सच में ही वो उसके भाई की फैमिली के साथ बीते पोलीस एपीसोड पर अपनी कोई अप्रसन्नता प्रकट करना चाहती थी!

फिर उसे सूझा कि फोन शिवांगी का नहीं हो सकता था। फोन उस का होता तो मोबाइल बजा होता। वो कभी लैंडलाइन पर कॉल नहीं करती थी।

कैसा इत्तफाक था! आज ही वो जरा लेट आया था और दो फोन कॉल मिस हो गयीं थीं।

फोन का बजर बजा।

उसने रिसीवर उठाकर कान से लगाया।

"सर"–सैक्रेट्री की आवाज आयी–"उसी मैडम का फिर फोन है।"

"दो।"

लाइन कनैक्ट हुई।

"साहनी साहब!"–एक धीमी, भर्राई-सी, व्यग्र आवाज आई–"मेरे को आपसे फौरन, एब्सोल्यूटली अर्जेंट करके मिलने का है।"

वो आवाज शशांक ने साफ पहचानी।

एकता शुक्ला!



Scanned by CamScanner

"ईडियट!"–"शशांक फुंफकारता सा बोला–"क्या बोला था मैंने! कभी मेरे को ऑफिस में फोन न करना।"

"आई एम सॉरी, डार्लिंग।"–वो रुंआसे स्वर से बोली–"लेकिन बात ही ऐसी थी..."

"कैसी बात थी? कौन सा पहाड़ टूट पड़ा था?"

"मेरे लिये तो पहाड़ ही टूटा है।"

"क्या हुआ है? सस्पेंस मत क्रियेट करो। जल्दी बोलो।"

"मैं गिरफ्तार होने वाली हूं।"

"क्या!"

"पुलिस को कल शाम जोरबाग रोड पर एक कार खड़ी मिली जिसमें एक आदमी मरा पड़ा था..."

"तुम्हारा उससे क्या वास्ता?"

"कोई वास्ता नहीं। लेकिन पुलिस बना रही है। जबरन बना रही है। वो क्या है कि..."

"फोन पर डिटेल में जाने कि जरूरत नहीं।"

"तो क्या करूं? कैसे बोलूं? मैं मुसीबत में हूं। मैं..."

"आधे घंटे में मिलता हूं।"

"कहां?"

"वहीं।"

उसने रिसीवर क्रेडल पर पटका और असहाय भाव से गर्दन हिलाई।

अभी वो अपने भाई पर ही कलप के हटा था, उस वाकये की वजह से जिसके घर पुलिस पहुंच गयी थी, और अब एकता शुक्ला ये बुरी खबर सुना रही थी कि उसका भी उस वाकये में कोई दखल था, इस हद तक दखल था कि गिरफ्तार हो सकती थी। उस सिलसिले में एकता का जिक्र तो उसने कहीं से नहीं सुना था।

क्या माजरा था!

कई महीनों से उसके उस लड़की से ताल्लुकात थे लेकिन इस बात की किसी को कतई कोई खबर नहीं थी। उन ताल्लुकात को टॉप सीक्रेट बनाये रखने के लिये उसने कोई कोशिश उठा नहीं रखी थी। अपनी सगाई से बहुत पहले उसे अहसास होने लगा था कि वो सिलसिला गलत था, चलता नहीं रहना चाहिये था, लेकिन वो ऐसी मक्खी थी जिसे एकाएक न उगलते बनता था, न निगलते बनता था।



Scanned by CamScanner

अपनी सगाई के बाद उन नाजायज ताल्लुकात को हमेशा के लिये खत्म कर देने की दिशा में उसने मजबूत कदम उठाया था...उसने एकता को एक मोटी रकम अदा की थी और उसे सख्ती से बोल दिया था कि आइन्दा कभी वो उसके करीब भी फटकने की कोशिश हरगिज न करे। लड़की ने शुरुआत में उस बात पर बहुत आज्ञाकारिता के साथ अमल किया था लेकिन कल एकाएक फिर मिलने की जिद करने लगी थी, मनुहार करने लगी थी कि 'एक बार, सिर्फ एक बार और से क्या फर्क पड़ता था'। इनकार करता करता भी वो उसकी जिद कुबूल कर बैठा था और यूं अपनी कमजोरी को हवा दे बैठा था। उसकी वो कितनी बड़ी हिमाकत थी कि खुद वो ही अपनी बात पर खरा उतर कर नहीं दिखा सका था।

जिसका कोई हौलनाक नतीजा अब सामने आने वाला था।

उसके उस अफेयर की भनक भी पुंज फैमिली को लगने का मतलब था वो रिश्ता खत्म। एक उच्च कोटि के अत्यंत प्रभावशाली, शक्तिशाली, वैभवशाली परिवार से उसका गठजोड़ खत्म। एक ही छलांग में रुतबे और रसूख के आसमान पर पहुंचने का उसका सपना चकनाचूर। हाई सोसायटी में एक यादगार शादी का सिरमौर बनने की शान धूलिधूसरित। वो सगाई टूट जाने के खयाल से उसका दिल लरजता था। पुंज पिता पुत्री उसे प्रतिष्ठा और सम्मान का आधार स्तम्भ समझते थे, उसके एक कालगर्ल से अफेयर की पोल खुलती तो सपना अकेले उसका ही चकनाचूर न होता।

अपनी कमजोरी, अपने जिंसी लालच की वजह से वो खुद पर खफा था लेकिन अब कमान से छूटा तीर लौटाया तो नहीं जा सकता था न!

वो ऑफिस से निकला और एक टैक्सी पर सवार होकर सुंदर नगर पहुंचा जहां के एक छोटे से, उस घड़ी खामोश, रेस्टोरेंट के एक कोने के केबिन में एकता मौजूद थी।

एक अरसे से उनकी खुफिया मुलाकातों का वही पूर्वनिर्धारित ठिकाना था।

शशांक वहां हमेशा उसके पहलू में उसके साथ सट के बैठता था लेकिन तब वो धम्म से उसके सामने बैठा।

"अब बोलो"–वो बोला–"क्या बात है? कौन सी मुसीबत में हो? क्या किया?"

"मैंने कुछ नहीं किया..."

"अरे, क्या हुआ? किया या हुआ, अब कुछ बोलो तो सही!"



Scanned by CamScanner

"नाराज क्यों हो रहे हो?"
"नहीं नाराज हो रहा।"
"कलप के बोल रहे हो तो..."
"एकता, एकता, फार गॉड सेक, कम टु दि प्वायन्ट।"
"आप को जोरबाग रोड पर हुए वाकये की खबर है?"
"है।"
"एक आदमी अपनी कार में..."
"अरे, बोला न, खबर है। आगे...आगे बढ़ो।"
"किसी लड़की ने उसका कत्ल किया बताते हैं। कत्ल के फौरन बाद किसी ने एक लड़की को कार से परे जाते देखा था। पुलिस को अपने बयान में उसने उस लड़की का जो हुलिया मोटे तौर पर बताया है, वो मेरे से मिलता जुलता है। अब इसमें मेरी क्या गलती है अगर वो लड़की देखने में..."
"आई अंडरस्टैण्ड। आगे?"
"इसी वजह से पुलिस मेरे घर पहुंच गयी और कुल जहान के सवाल करने लगी, इलजाम लगाने लगी कि मैंने ही कत्ल किया था जबकि आप तो जानते हैं कि ऐसा नहीं हो सकता। मैं तो..."
"ठीक। ठीक। तुम उस शख्स को–मकतूल को–जानती हो?"
"मैं कैसे जानूंगी?"
"सवाल मत करो। सवाल का जवाब दो।"
"सूरत से वाकिफ हूं"–वो तनिक हिचकिचाती हुई बोली–"क्योंकि लोफर था। लड़कियों पर आम लाइन मारता फिरता था। एक बार मेरे पीछे भी पड़ा था इसलिये मामूली तौर पर सूरत से वाकिफ हूं।"
"हूं। पुलिस वालों ने इलजाम ही लगाया या और भी कुछ किया?"
"और भी कुछ किया।"
"क्या?"
"मेरी लिपस्टिक का सैम्पल लिया। उस सब–इस्पेक्टर ने जो लोकल थाने से था–शायद बहल नाम था–ढेरों सवाल पूछे। जैसे, क्या मैं स्कर्ट पहनती थी, पहनती थी तो कैसी स्कर्ट पहनती थी, क्या मेरे पास कोई चमड़े का महरून कोट था? उससे मैच करती कैप थी?"
"क्यों? क्योंकि वो कातिल लड़की ये ड्रेस पहने थी?"
"ऐसा ही जान पड़ता था। लेकिन वो लड़की मैं नहीं थी। ये महज



Scanned by CamScanner

इत्तफाक था कि जैसी ड्रैस पहने उस लड़की को देखा गया था, वैसी मेरे पास भी थी। वो लड़की मैं नहीं थी–कैसे हो सकती थी!...वो कोई और लड़की थी।''

''पक्की बात?''

''क्या मतलब?''

''साफ बोलो। तुमने कत्ल किया है?''

''क्या कह रहे हैं आप!''–वो भड़की–''आप ऐसा खयाल भी कैसे कर सकते हैं? जोरबाग रोड पर वो कत्ल शाम सात और आठ बजे के बीच हुआ बताया जाता है। आपको नहीं मालूम उस वक्फे में मैं कहां थी!''

''हूं।''

''क्या हूं? उस वक्त मैं जोरबाग रोड से कोसों दूर आपकी कार में आपके पहलू में, आपके साथ बैठी हुई थी। कहिये कि ऐसा नहीं था!''

शशांक खामोश रहा।

''अपने बचाव के लिये मेरे पास परफेक्ट एलीबाई थी। आप मेरे जामिन हैं कि मैं कातिल नहीं हो सकती, कि मैं मौकायवारदात से बहुत दूर आपके साथ थी लेकिन मैंने ऐसा नहीं कहा, आपकी खातिर मैं आपका नाम अपनी जुबान पर न लाई, और आप कहते हैं मैं साफ बोलूं! क्या साफ बोलूं? मेरा साफ बोलना रास आयेगा आपको? ऐसा है तो आपको क्या बोलना! मैं जाके पुलिस को साफ बोलती हूं।''

''चुप करो।''

''लेकिन...''

''कॉफी पियोगी?''

''नहीं। मैं...''

''पी लो। मिजाज ठिकाने आ जायेगा।''

''मेरा मिजाज ठिकाने है...''

''नहीं है।''

''...आप अपने मिजाज की फिक्र करें।''

''कॉफी मंगाते हैं। दोनों का मिजाज ठिकाने आ जायेगा।''

शशांक ने कॉफी का आर्डर दिया।

कॉफी सर्व होने तक कोई कुछ न बोला।

''देखो''–फिर शशांक बोला–''गलती तुम्हारी है...बीच में मत



Scanned by CamScanner

टोको। जो कहता हूं, सुनो...मैंने तुम्हें इतना पैसा एकमुश्त दिया, किसलिये दिया? कि तुम मेरा पीछा छोड़ो। और तुमने वादा किया कि तुम जो मैंने कहा वो करोगी। फिर भी तुम बाज न आयीं, कल मेरे पीछे पड़ गयीं, मुलाकात की जिद करने लगीं और मैंने अहमकों की तरह तुम्हारी जिद के आगे हथियार डाल दिये और तुम्हें एयरपोर्ट के उस होटल के बार में ले गया। अब देखो, मेरी उस एक नर्मी की वजह से कितना बड़ा बखेड़ा तुमने मेरे लिये खड़ा कर दिया है!''

''मैंने क्या किया है?''–वो रुआंसे स्वर में बोली–''मेरे को सपना आना था कि कल शाम ऐन उसी वक्त जोरबाग में किसी का कत्ल होने वाला था? मेरे को सपना आना था कि कातिल लड़की के बाल मेरे जैसे भूरे होने थे और उसने वो पोशाक पहने होना था जो कि मेरे पास भी थी? वो लड़की दिखने में मेरे जैसी थी, मैं नहीं थी। मैं नहीं हो सकती थी। क्योंकि मैं जोरबाग से मीलों दूर आपके साथ थी। आप मेरे गवाह हो कि...''

''ठीक है, ठीक है। एक ही बात बार-बार मत दोहराओ। कल रात मैंने तुम्हें फिर समझाया था कि मेरे तुम्हारे बीच का किस्सा खत्म था। और तुमने वादा किया था कि तुम फिर कभी...''

''सच्चा वादा किया था, दिल से वादा किया था, कोई फरेबी वादा नहीं किया था। आम हालात में वादे के मुताबिक मैं हरगिज आपसे कभी कान्टैक्ट न करती लेकिन हालात आम कहां हैं! मेरे पर कत्ल का इलजाम थोपा जा रहा है। मेरी जान पर बनी है। आपसे कान्टैक्ट न करती तो क्या करती? बोल देती कि आपके साथ थी? बोल देती तो आप ही कह रहे होते कि पहले आपको क्यों न बताया! बताने के लिये फोन किया तो आप मेरे पर वादाखिलाफी का इलजाम लगा रहे हैं।''

''नहीं...''

''क्या नहीं?''

शशांक खामोश रहा, उसने बेमन से कॉफी का एक घूंट पिया।

''कल शाम''–वो रुंधे कंठ से बोली–''आपसे मिलने की गुजारिश मैंने इसलिये की थी क्योंकि जज्बाती हो गयी थी। इतना वक्त हम दोनों ने इकट्ठे गुजारा, कैसे एकाएक, पलक झपकते मैं सब भूल जाती! सोचा, एक मुलाकात और हो जाती तो शायद ऐसी कोई सूरत निकल आती कि साथ बना रहता...आपकी जिन्दगी में आईन्दा आने वाली तब्दीली के बावजूद साथ बना रहता। और मैं अब भी कहती हूं कि साथ बना रह सकता है। सगाई क्या, आपकी शादी के बावजूद



Scanned by CamScanner

साथ बना रह सकता है। हम सावधानी बरतेंगे तो हमारे ताल्लुकात की खबर आपकी बीवी को कभी नहीं लगेगी।''

''फारगैट इट।''

''नो, आई कैननाट फारगैट इट। आपने खुद कहा था कि आपको अपनी होने वाली बीवी से कोई मुहब्बत नहीं, आप वो शादी महज अपनी व्यापारिक हैसियत बुलन्द करने के लिये कर रहे थे, एक ऊंचे खानदान से रिश्ता जोड़कर खुद को ऊंचा करने के लिये कर रहे थे। फिर...''

''इन बातों का अब कोई फायदा नहीं। हमने एक अच्छा टाइम साथ गुजारा, मौजमस्ती की, ये नियति थी। अब ये भी नियति है कि हम हमेशा के लिये एक दूसरे को भूल जायें। इंसानी जिंदगी में कुछ स्थायी नहीं होता। हर दौर का एक लाइफस्पैन होता है जिसने खत्म हो के रहना होता है। शादी भी एक दौर है जो मेरे आगे खड़ा है। उस दौर में तुम्हारे से ताल्लुकात बनाये रखना दो किश्तियों में सवार होने जैसा होगा। और तुम क्या जानती नहीं कि दो किश्तियों के सवार का क्या अंजाम होता है! वो मंझधार में गिरता है। दोनों से जाता है। मेरी शादी मेरी आइन्दा जिंदगी के लिये बहुत इम्पार्टेंट है, क्योंकि वो एक कैल्कुलेटिड बिजनेस मूव है, तुम्हारे से स्थायी रूप से रिश्ता तोड़े बिना जिसकी कामयाबी सन्दिग्ध है। कल रात फिर से यही बात मैंने तुम्हें समझाई कि ये ब्रेक फाइनल है। मेरे तुम्हारे बीच अब कुछ बाकी नहीं। ये रिश्ता खत्म है, मुकम्मल तौर से खत्म है। इस पर पुनर्विचार की अब कोई गुंजाइश नहीं।''

वो रोने लगी।

''कोई फायदा नहीं।''–वो धीमे किंतु दृढ़ स्वर में बोला–''मैं औरत के आंसुओं को समझता हूं। उनकी ताकत को भी समझता हूं। ये वो सैलाब है जिसमें कई बादशाहत बह गयीं लेकिन अपने भविष्य को मैं इसमें बहने नहीं दे सकता। मैं कोई सैल्फमेड मैन नहीं जिसे कि अपनी सलाहियात पर कोई गुमान हो। मेरी औकात मेरे बनाये नहीं बनी, मेरे बाप के बनाये बनी जो अपना वारिस मुझे करार देकर मरा। जो कुछ मेरे पास है, वो मैंने विरसे से हासिल किया था। मेरा बाप बिल्डर था, उसका एस्टैब्लिस्ड कंसट्रक्शन बिजनेस था जो कि चला चलाया मेरे हाथ में आ गया था। इसलिये बिजनेस वर्ल्ड में अपनी औकात बनाने के लिये मुझे वो मशक्कत और जानमारी नहीं करना पड़ी थी जो कि मेरे बाप ने अपनी जिंदगी में की थी और यूं बड़ा बिल्डर बन कर दिखाया



Scanned by CamScanner

था। मेरी होने वाली शादी मेरी जिंदगी का सबसे बड़ा दांव है, मेरी सबसे बड़ी छलांग है जो एक ही झटके में मुझे तरक्की और कामयाबी के सबसे ऊंचे शिखर पर पहुंचा देगी। छत्तीस साल की उम्र तक मैंने शादी के बारे में नहीं सोचा क्योंकि मेरी जिंदगी में शादी का, बीवी का कोई रोल नहीं था। अब सबब से वो रोल बन गया है। लेकिन बाजरिया शादी मैं बीवी से नहीं, बीवी के बाप से जुगलबंदी का तलबगार हूं जो कि काटनकिंग कहलाता है। अपने इस मकसद पर खरा उतरने के लिये मेरा आइन्दा काफी अरसा एक एक कदम फूंक-फूंक कर रखना जरूरी है। कल जो मैंने तुमसे मिलना कुबूल किया, वो मेरी बड़ी गलती थी, आज जो मैं यहां तुम्हारे सामने बैठा हूं, वो उससे भी बड़ी गलती है। इसलिये दरख्वास्त है, मेरी दुश्वारी को समझो और मेरी खैरख्वाह बन कर दिखाओ।''

''क्या करूं?''

''तुम्हें मालूम है। फिर भी मेरे से ही सुनना चाहती हो तो सुनो। मेरा नाम तुम्हारी जुबान पर न आये। पुलिस कितने भी तुम से सवाल करे, कितना भी तुम पर दबाब डाले, तुमने उनको हरगिज नहीं बताना है, किसी को भी नहीं बताना है कि कल रात तुम मेरे साथ थीं। ये तुम कैसे करोगी, तुम खुद जानो लेकिन ये तुमने हर हाल में करना है। झूठ बोलो, फरेब करो, कुछ करो लेकिन किसी भी सूरत में मेरा नाम तुमने अपनी जुबान पर नहीं लाना है।''

''कहना आसान है।''

''दिल से करोगी तो करना भी आसान होगा।''

''कैसे आसान होगा? कैसे मैं पुलिस का मुकाबला कर पाऊंगी? उन्हें मेरे पर कातिल होने का शक है। वो क्या आसानी से मेरा पीछा छोड़ देंगे? सवाल पूछ-पूछ कर, खोद-खोद कर सवाल पूछ-पूछ कर हाल बेहाल कर देंगे मेरा। कैसे मैं उनके सवालों की बौछार के आगे ठहर पाऊंगी?''

''तुम बात को बढ़ा चढ़ा कर कह रही हो। इतना मुश्किल काम ये नहीं है। कहना कि तुम किसी मर्द के साथ थीं लेकिन उसका नाम बताने से साफ इंकार कर देना। तुम अपनी जिद पर अड़ी रहोगी तो वो कुछ नहीं कर पायेंगे।''

''मुझे यकीन नहीं। उनका यही दावा होगा कि चमड़े के महरून कोट और कैप वाली लड़की मैं थी। वो मुझे गिरफ्तार कर लेंगे।''

''ऐसा कुछ नहीं होगा। ड्रैस वाला उनका वो सबूत तुम्हें खौफजदा



Scanned by CamScanner

करने के लिये काफी हो सकता है लेकिन तुम्हारे खिलाफ कुछ साबित करने के लिये कतई काफी नहीं है। तुम अपनी बात पर अड़ी रहोगी तो आखिर उन्हें तुम्हारा पीछा छोड़ना पड़ेगा। ये थोड़ी देर की जहमत है जो तुम्हें मेरी खातिर बर्दाश्त करनी होगी।''

''आपकी खातिर?''

''हां।''

''मेरी कोई खातिर नहीं?''

''क्या?''

''आप खातिर कराना ही सीखे हैं? खातिर करना नहीं सीखे?''

''ओह! तो ये बात है!''

''क्या बात है?''

''अपनी जात दिखा रही हो!''

''मेरी जात क्या आपसे छुपी है?''

''छुपी तो नहीं लेकिन...''

''आपने कोई भरम बनाये रखा तो अपनी खातिर बनाये रखा, मेरी खातिर नहीं।''

''क्या चाहती हो?''

''आपको मालूम है।''

''तुम समझती हो तुम मुझे ब्लैकमेल कर सकती हो?''

''मैं ऐसा कुछ नहीं समझती।''

''तो फिर?''

''फिर खुद समझिये।''

''और पैसा चाहती हो?''

''लोन।''

''क्या?''

''लांग टर्म। नानरिफंडेबल।''

''ऐसी चालाकीभरी बातें तुमने पहले तो कभी नहीं की थीं!''

''वक्त बहुत कुछ सिखा देता है। जरूरत सब कुछ सिखा देती है।''

''मैं उस सो काल्ड लांग टर्म नानरिफंडेबल लोन से इनकार करूं तो?''

''तो मैं आपको कॉफी का थैंक्यू बोलूंगी और थाने जाकर अपना बयान दर्ज कराऊंगी ताकि जिस सांसत में कल रात से मेरी जान फंसी है, वो उससे निकले।''



Scanned by CamScanner

"तो मेरे बारे में खामोश रहने की ये तुम्हारी शर्त है?"

"मजबूरी है। आपका नाम जुबान पर न लाने की उजरत है। जिसे उजरत आपको समझना ही नहीं चाहिये, बतौर शाबाशी, बाकायदा थैंक्यू बोल कर खुशी खुशी अदा करना चाहिये।"

"ठीक है। पचास हजार रुपये तुम्हारे पास पहुंच जायेंगे।"

"दो।"

"क्या दो?"

"लाख।"

"पागल हुई हो!"

"आपके घड़े की बूंद भी नहीं।"

"लेकिन दो लाख..."

"मेरे मन में आपका लिहाज है। इसलिये। वर्ना इरादा तो पांच मांगने का था।"

"लिहाज ऐसे करते हैं?"

"ऐसे *भी* करते हैं।"

"ठीक है।"

"क्या ठीक है?"

"जो तुम कह रही हो।"

"मैं क्या कह रही हूं?"

"अरे, दो लाख रुपये तुम्हारे पास पहुंच जायेंगे।"

"नकद। चैक नहीं।"

"हां, नकद।"

"आज ही।"

"ठीक है, आज ही।"

"कैसे पहुंचेंगे?"

"देखना।"

"ओके।"

"लेकिन एक बात याद रखना। वादाखिलाफी की, रकम हासिल करके भी पुलिस के सामने मेरा नाम बका तो जान से मार दूंगा। याद रखना मेरी बात। जिंदा नहीं छोड़ूंगा।"

"फिर आपका क्या होगा?"

"साली!"–शशांक दांत पीसता बोला–"मेरा जो होगा, उसे देखने को तू मौजूद नहीं होगी।"

एकता के शरीर ने स्पष्ट झुरझुरी ली।



Scanned by CamScanner

"ये कोई कोरी धमकी नहीं है। तूने पुलिस के आगे कुछ बका, जिसकी वजह से पुलिस मेरे तक पहुंची तो मैं इस बात से साफ इनकार कर दूंगा कि कल रात तू मेरे साथ थी। मैं तुझे जानता होने तक से साफ इनकार कर दूंगा। फिर तेरी एलीबाई की धज्जियां उड़ जायेंगी। मैं रुतबे और रसूख वाला आदमी हूं। तू क्या बला है, तेरे से बेहतर कौन जानता है। खुद ही फैसला कर ले कि पुलिस मेरे जैसे बाहैसियत शख्स का एतबार करेगी या एक..."

"खबरदार"–वो तमक कर बोली–"जो मेरे बारे में कुछ उलटा सीधा बोला। बहुत इज्जत कर ली मैंने तुम्हारी। मुझे धोखा दोगे तो खता खाओगे। कल रात तुम मेरे साथ थे, इस बात से तुम नहीं मुकर सकते। होटल के बार में बहुत जने हम दोनों की वहां हाजिरी के गवाह निकल आयेंगे। खासतौर से वो नौजवान स्टीवार्ड जो साफ मेरे पर लार टपका रहा था, मैंने रोका न होता तो जिसे तुम डांटने लगे थे। मुकरना इतना आसान नहीं होगा। हैसियत, रुतबा, रसूख सब धरा रह जायेगा। ऐसा जुलूस निकलेगा कि उस घड़ी को कोसोगे जब मेरे से ऊंची आवाज में बोलने की हिमाकत की थी।"

शशांक उठ खड़ा हुआ।

"क्या हुआ?"–एकता व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली–"कस बल ढीले पड़ गये?"

शशांक ने एक सौ का नोट अपने कॉफी के मग के नीचे रखा।

"रकम तुम्हारे पास कूरियर से पहुंचेगी।"–फिर बोला–"आज शाम को किसी वजह से न पहुंच पायी तो कल सुबह हर हाल में पहुंचेगी।"

"थैंक्यू, डार्लिंग।"–वो इठला कर बोली।

"मेरे जाने के पांच मिनट बाद यहां से उठना। मेरे पीछे न आना।"

एकता के दोबारा बोल पाने से पहले लम्बे डग भरता वो वहां से बाहर निकल गया।

दोपहरबाद कम्प्यूटर पर बैठा अनुराग अपने लेखन कार्य में व्यस्त था जबकि चाय के साथ उसकी हाउसकीपर कलावती वहां पहुंची। उसने चाय का कप कम्प्यूटर के पहलू में रखा।

"थैंक्यू।"–अनुराग बोला।

हाउसकीपर ने सहमति में सिर हिलाया, उसने वहां से जाने का उपक्रम न किया।



Scanned by CamScanner

अनुराग ने सिर उठाकर उसकी तरफ देखा।

"कोई खास बात है?"–फिर बोला।

"खास नहीं है"–वो बोली–"लेकिन बात है। बात है।"

"क्या?"

"वो लड़की गिरफ्तार हो गयी है।"

"कौन लड़की?"

"वो रसीली रसभरी जो मंदिर के करीब के फ्लैट में अकेली रहती है।"

"कौन?"

"जिसका कल वाले कत्ल में जिक्र था। एकता करके कुछ नाम था।"

"एकता शुक्ला!"

"वही।"

"तो आखिर वो ही कातिल निकली! लिहाजा मैंने ठीक पहचाना उसे! लेकिन पहचाना कहां था! सूरत कहां देखी थी! मुझे तो बस उसके भूरे बालों की और उसकी खास पोशाक की एक झलक मिली थी कि वो हवा हो गयी थी।"

"वही थी। और पता चला है कि उसका नाम भी ये नहीं है। नाम उसका सरला ढींगरा है।"

"ये कोई बड़ी बात नहीं। एक्ट्रेस जो ठहरी। इस धन्धे में लड़कियां अमूमन अपना नाम बदल लेती हैं। सरला ढींगरा से तो एकता शुक्ला अच्छा ही नाम है।"

"हाय हाय, काहे की एक्ट्रेस! कोई एक्ट्रेस-वेक्ट्रेस नहीं निकली वो। कुछ और ही निकली। और क्या निकली, ये कहते मेरा मुंह दुखता है। खुद ही सोचो यूं अकेली रहती जवान जहान लड़की और क्या निकली होगी! जब लच्छन ही बुरे हों तो नतीजे भी तो बुरे ही होंगे!"

"तुम्हें उसकी गिरफ्तारी की कैसे खबर है?"

"कैसे खबर है? यहां से मुश्किल से पचास गज पर तो है वो मंदिर जिसके बाजू के एक फ्लैट में वो रहती है। तुम्हें मालूम है सब्जी भाजी लेने मैं लोधी की मार्केट में जाती हूं जो कि यहां से करीब है। वहां हर किसी की जुबान पर इसी बात का चर्चा था। पुलिस वाले एक जीप में आये और उसे गिरफ्तार करके ले गये। अब इलाके का बच्चा-बच्चा कह रहा है कि कल जो आदमी अपनी कार में मरा पड़ा पाया गया था, वो पटाखा लड़की ही उसकी मौत की वजह थी। देखो तो! ये काम हैं लड़कियों के!"



Scanned by CamScanner

"आंटी, अभी गिरफ्तार ही तो हुई है! अभी कुछ साबित तो नहीं हो गया उसके खिलाफ!"

"हाय-हाय, गिरफ्तार क्या कोई खामखाह होता है! कुछ किया, तभी तो गिरफ्तार हुई! न कुछ किया होता तो गिरफ्तार होती! जो हुआ, अच्छा हुआ। इसी को कहते हैं जैसी करनी वैसी भरनी। बताओ तो, खून कर दिया किसी भलेमानस का। लड़की न हुई खूंखार बिल्ली हुई जिसने कोई चूहा दबोच के मार दिया। डरता ही कोई नहीं आजकल! कोई खौफ ही नहीं किसी को! न इंसान का, न भगवान का..."

आगाशे थाने पहुंचा तो सबसे पहले उसका सामना सब-इंस्पेक्टर पुनीत बहल से हुआ।

"तो"-आगाशे बोला-आखिर थाम ही लिया लड़की को।"

"एस.एच.ओ. साहब का हुक्म हुआ।"-बहल बोला।

"अफसर का हुक्म बजाया?"

"जी हां।"

"हुक्म न हुआ होता तो?"

"तो इस बाबत आप्शन ओपन रखता।"

"आप्शन ओपन रखते! क्या मतलब? तुमने एस.एच.ओ. साहब से अलग कोई कैन्डीडेट चुना हुआ है?"

"चुना नहीं हुआ, निगाह में है।"

"क्या फर्क हुआ?"

"अंडर कनसिडरेशन है। हर सम्भावना पर गौर करना पड़ता है न!"

"कहीं फिर तुम्हारा इशारा साहनी हाउसहोल्ड के उस नग की तरफ तो नहीं है जिसका कल तुमने जिक्र किया था?"

वो हंसा।

"बद्किस्मती से जिसके बाल भूरे हैं?"

वो तत्काल संजीदा हुआ।

"सिर्फ इस वजह से तो नहीं!"

"और क्या वजह है?"

"मैंने नाले के पार की बंगलादेशी झुग्गी झोंपड़ी का चक्कर लगाया था। वहां का कोई छः साल का बच्चा किसी एक्सीडेंट का शिकार नहीं हुआ था।"

"भई, उस बाबत कहे सुने में कोई चूक हुई होगी-बच्चे ने कहा



Scanned by CamScanner

कुछ और होगा, उस लड़की ने सुना कुछ और होगा–हस्पताल की कैजुअल्टी का चक्कर लगाना था।''

''वहां भी गया न!''

''अच्छा गये! वहां से क्या पता चला?''

''कल शाम सवा सात बजे के करीब एक बच्चा वहां पहुंचा था लेकिन उसे कोई नौजवान लड़की लाई थी, इस बात की हामी किसी ने न भरी।''

''बच्चे के अलावा कौन भरता! वो तो कहती ही थी कि वो उसे कैजुअल्टी पर पहुंचाकर चली आयी थी क्योंकि उसे अपने मंगेतर के पास हैबीटैट पहुंचने की जल्दी थी।''

''बच्चा ढूंढ़े नहीं मिल रहा। हस्पताल वालों ने उसे जो मलहम पट्टी जरूरी थी, वो करके भेज दिया था। हस्पताल से वो कहां गया, ट्रेस नहीं हो पा रहा।''

''छः साल का बच्चा था, कहीं दूर तो गया न होगा!''

''खुद न गया होगा तो ले जाया गया होगा। दिल्ली में ऐसे गैंग सक्रिय हैं जो बच्चों से भीख मंगवाते हैं। ऐसे कम उम्र बच्चे चौराहों पर लाल बत्ती पर खड़ी कारों के पीछे पड़े आम पाये जाते हैं। उनसे भीख मंगवाने वाले उनका फील्ड ऑफ आपरेशन बदलते रहते हैं।''

''आई सी।''

''कहने का मतलब ये है कि उस बच्चे के मिलने पर ही तसदीक हो सकती है कि श्रेया साहनी की शक्ल सूरत वाली किसी बहन जी ने उसे हस्पताल पहुंचाया था। कहने का और मतलब ये है कि ऐसी तसदीक नहीं होती तो लड़की की कत्ल के वक्त की एलीबाई सन्दिग्ध है।''

''उसे आरसेनिक कहां से हासिल हो सकता था?''

''ये बाद की बात है। चमड़े के कोट की तरह। मैचिंग कैप की तरह। उसकी तरफ तवज्जो जाने के लिये फिलहाल इतनी वजह काफी है कि उसे कत्ल के मौकायवारदात पर मौजूद होने की सहूलियत हासिल थी। बतौर सम्भावना उसके नाम को अंडर कनसिडरेशन रखने के लिये इतनी वजह काफी है। वैसे कातिला होने की ऑनर की हॉट कंटेंडर फिलहाल एकता शुक्ला ही है।''

''आई सी। उसे चार्ज लगा कर बुक कर दिया?''

''अभी नहीं। अभी सिर्फ पूछताछ के लिये हिरासत में लिया है।''

''ऐसा क्यों? सुबह तो एस.एच.ओ. साहब खफा हो रहे थे कि तुमने



Scanned by CamScanner

पिछली रात ही लड़की को गिरफ्तार क्यों न किया! वो तो पूरे यकीन से कह रहे थे कि वारदात के फौरन बाद जो लड़की मौकायवारदात पर अनुराग जोशी से टकराई थी, वो यही लड़की थी। फिर सिर्फ पूछताछ के लिये हिरासत में लिया गया होने का क्या मतलब?''

''जब तक उसके खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज नहीं की जाती तब तक यही मतलब है। अभी एक पत्रकार यहां पहुंच गया था और इस बाबत सवाल करने लगा था। तब तो मीना साहब ने हिरासत का भी नाम नहीं लिया था। बोला था वो पुलिस की मदद के लिये थाने में थी।''

''स्वयंसेविका थी!''

''अब मैं क्या बोलूं?''

''हूं।''

''चौबीस घंटे किसी को भी बिना वजह बताये थाने में रखा जा सकता है। एस.एच.ओ. साहब का कहना है कि इससे पहले वो सब बक देगी। अपना गुनाह अपनी जुबानी कुबूल कर लेगी।''

''और कोर्ट में जा के मुकर जायेगी। मैजिस्ट्रेट के सामने दावा करेगी कि बयान उससे जबरदस्ती लिया गया। क्या फायदा ऐसे इकबालेजुर्म का!''

''गुनहगार तो वो है। बराबर है।''

''लेकिन फिलहाल पुलिस के पास उसके खिलाफ अकाट्य सबूत कोई नहीं!''

''ये उसके खिलाफ जाने वाली बड़ी बात है, आगाशे साहब, कि वो नहीं बताती कि कल रात वो मौकायवारदात पर नहीं थी तो कहां थी! दूसरे, हालात का तकाजा ये ही हैं कि अनुराग जोशी ने जिस लड़की को वारदात के ऐन बाद देखा था वो यही थी। तीसरे, वो कुबूल करती है वो मकतूल से नावाकिफ नहीं थी, लिहाजा उसे मकतूल से कोई खुंदक, कोई रंजिश रही हो सकती है।''

आगाशे ने असंतोषपूर्ण भाव से इनकार में सिर हिलाया।

''आप हमें कहते हैं हम निर्विवाद रूप में साबित करके दिखायें कि वो लड़की गुनहगार है, आपको अगर वो बेगुनाह लगती है तो आप क्यों नहीं साबित करके दिखाते कि वो बेगुनाह है!''

''यू हैव ए प्वायंट देयर।''

''अनुराग जोशी ने अपने से टकराई लड़की का जो हुलिया बयान किया था, वो ऐन इस एकता शुक्ला से मैच करता है...''

''ऐन नहीं, माई डियर, ऐन नहीं। सिर्फ मोटे तौर पर। और सच



Scanned by CamScanner

बात तो ये है कि लड़की का हुलिया तो अनुराग जोशी ने बयान ही नहीं किया था। उसने एक पोशाक का हुलिया बयान किया था जैसी कि इत्तफाक से एकता शुक्ला भी पहनती थी। जैसी कि इत्तफाक से उसके पास भी थी। बाकी बालों की रंगत किसी की किस हद तक शिनाख्त मानी जा सकती है, इसका फैसला तुम खुद कर सकते हो।''

''आप ये कहना चाहते हैं कि अनुराग जोशी से टकराई लड़की एकता शुक्ला नहीं थी?''

''मैं ये कहना चाहता हूं कि ऐसा दावे के साथ किसी सूरत में नही कहा जा सकता कि वो लड़की एकता शुक्ला थी। दिल्ली जैसे फैशनेबल शहर में मैं नहीं मानता कि आजकल के मौसम को कम्पलीमेंट करते महरून कलर के चमड़े के लेडीज कट के कोटों का या मैंचिंग लैदर कैप्स का कोई घाटा होगा। आजकल बालों को भांति-भांति के रंगों में डाई करवाने का बड़े शहरों में पूरा-पूरा रिवाज है और लाइट ब्राउन कलर सबसे ज्यादा फैशनेबल माना जाता है। इसलिये इस रंग के बालों वाली नौजवान लड़कियों का भी इस शहर में कोई तोड़ा नहीं होगा। यही बात स्कर्ट पर लागू होती है। माई डियर, जो हुलिया और पोशाक शहर की हजारों नौजवान लड़कियों की मुमकिन है, उसकी बिना पर खास एक लड़की को सिंगल आउट कर लेना कहां का इंसाफ है! इन बातों की बिना पर पुलिस का केस क्योंकर कोर्ट में ठहरेगा! मामूली सूझबूझ और काबिलियत वाला डिफेंस अटर्नी भी पुलिस के केस की धज्जियां उड़ा के रख देगा।''

''ये बात एस.एच.ओ. साहब को समझाइये।''

''जैसे खुद वो समझते नहीं होंगे! थाने वालों का तफ्तीश का यही तरीका है आजकल। औनी पौनी इवीडेंस की बिना पर किसी को भी पकड़ कर अंदर कर दो और दावा करो कि केस को रिकार्ड टाइम में हल कर दिखाया।''

''अब मैं क्या कहूं! आखिर हूं तो मैं भी थाने वाला ही! बहरहाल मतलब ये हुआ कि आपका एतबार लड़की की बेगुनाही पर है?''

''इसलिए है क्योंकि गुनाह पर एतबार नहीं बन पा रहा, नहीं ठहर पा रहा।''

''वो बताती क्यों नहीं कल रात कहां थी?''

''क्योंकि किसी को प्रोटेक्ट करना चाहती है। वो लड़की ठीक दावा करती हो सकती है कि वारदात के वक्त वो मौकायवारदात से कोसों दूर थी लेकिन किसी मजबूरी के तहत या किसी दहशत के



Scanned by CamScanner

तहत इस बाबत वो अपनी जुबान नहीं खोल सकती, नहीं कह सकती कि असल में वो कहां थी।''

''आई सी।''

''लेकिन जब बिलकुल ही जान पर आ बनेगी तो देख लेना, जरूर बतायेगी। बतायेगी और साबित करके दिखायेगी कि वो मौकायवारदात से कोसों दूर थी। तब पुलिस के केस के ढेर हो जाने में क्या कसर रह जायेगी?''

''आपने कहा किसी मजबूरी या किसी दहशत के तहत वो खामोश है। एक और वजह भी तो हो सकती है!''

''लालच?''

''हां।''

''ये बात भी मेरे जेहन में आई थी। ऐसी लड़की को मानीटेरी गेन का लालच हो सकता है। हो सकता है कि अपने रात के जोड़ीदार के बारे में चुप रहने की उसको कोई मोटी फीस हासिल हो।''

''मोटी फीस का मतलब कोई मोटा आसामी?''

''हां।''

''कोई बड़ा आदमी? दौलत और हैसियत वाला?''

''हां।''

''फिर तो ये भी हो सकता है कि फीस उसे हासिल न हो, वो उसे वसूल कर रही हो! उसे बाकायदा ब्लैकमेल कर रही हो!''

''हो सकता है।''

''तो फिर एस.एच.ओ. साहब की तरफ से मैं इस थाने की इस काम की स्ट्रेटेजी तब्दील करता हूं।''

''क्या मतलब?''

''तसलीम करता हूं वो लड़की बेगुनाह है और जानती है उसके खिलाफ कुछ साबित नहीं किया जा सकता। समझ लीजिये कि उसे इसीलिये पूछताछ के लिये थाने लाया गया है कि वो दहशत महसूस करे, यहां के माहौल का खौफ खा के सच उगले।''

''आई सी।''

''कल तक खेल तमाशा देखने में कोई हर्ज नहीं, जनाब। इतने में उस लड़की की खामोश रहने की जिद न टूटी तो कल हम या तो उसको चार्ज लगा के बुक कर देंगे या रिहा कर देंगे।''

दो स्कूली बच्चे पार्क के करीब की एक तंग गली में लुका छिपी



Scanned by CamScanner

खेल रहे थे। उस घड़ी सूरज डूब चुका था और शाम का धुंधलका गहराने लगा था। गली में एक खंडहर मकान था जो कि एक अरसे से उजाड़ पड़ा था और जिसके अगले पिछले कम्पाउंड में झाड़ झंखाड़ उगे हुए थे। बच्चों की निगाह में वो छुपने की उम्दा जगह थी लेकिन इसी वजह से छुपे बच्चे को ढूंढ़ने की कोशिश सबसे पहले वहीं होती थी और इसी वजह से एक बच्चा मकान के सामने के कम्पाउड में दाखिल होकर मकान के भीतर से पिछवाड़े में पहुंचा था लेकिन वहां कहीं ठिठकने की जगह उसने आगे पार्क के किनारे पर की झाड़ियों के उस हिस्से को निशाना बनाया था जिसके सामने मुर्दा पत्तियों का झाड़ियों जितना ही ऊंचा ढेर लगा हुआ था।

उसने पत्तियों के ढेर में पांव डाला तो तत्काल वो ठिठका।

"ओये!"–उसके मुंह से निकला–"ये क्या है?"

झिझकते हुए उसने पहले एक पांव की ठोकर से और फिर झुककर दोनों हाथों से पत्तियों को इधर–उधर किया।

"कोट! भूरा है कि लाल है! लेकिन चमड़े का है!"

उसने झिझकते हुए चमड़े के कोट को छुआ।

उस पर सर्दियों के कोहरे वाली नमी नहीं थी और न ही पत्तियां उस पर चिपकी हुई थीं जिससे लगता था कि वो कोई बहुत लम्बे अरसे से वहां नहीं पड़ा हुआ था।

"मैं आऊं?"–फासले से आवाज आई–"ओये चिंकी, मैं आऊं?"

"लुकाछिपी के लिये नहीं, लवली"–चिंकी नाम का बालक उच्च स्वर से बोला–"वैसे ही इधर आ।"

"वैसे ही क्यों?"

"देख, यहां क्या पड़ा है!"

"क्या पड़ा है?"

"आ के देख न!"

दौड़ता हांफता लवली, जो चिंकी से एक साल बड़ा था, उसके करीब पहुंचा।

"क्या है?"–वो बोला।

चिंकी ने पत्तियों के ढेर की तरफ, जो उसने खुद बिखराया था, इशारा किया।

"कोट!"–लवली तत्काल बोला–"लड़कियों वाला! चमड़े का! महरून कलर का! बिल्कुल नया! यहां कहां से आया?"



Scanned by CamScanner

"किसी ने नया कोट फेंक दिया!"–चिंकी ने बालसुलभ हैरानी जताई।

"पता नहीं क्यों फेंका!"

"भीतर से फटा होगा!"

"हां, यार।"

लवली ने कोट को उठाया, उसे कॉलर से पकड़ कर उस पर लगी धूल और पत्तियों को झाड़ा और फिर बारीकी से उसका मुआयना किया।

"बिलकुल ठीक है।"–फिर बोला–"कहीं से फटा उधड़ा बिगड़ा नहीं हुआ। कोई बटन तक नहीं टूटा हुआ। मजा आ गया। मेरी बहन को ऐन फिट आयेगा।"

"अच्छा! ढूंढा तो मैंने है!"

"उठाया तो मैंने है!"

"पहले देखा तो मैंने था!"

"अभी हाथ में तो मेरे है!"

"इधर कर।"

"नहीं करता। तेरे को तो पता ही नहीं था ये क्या है!"

"पता करने को बुलाया न तुझे! पता लग गया। अब इधर कर।"

"बिलकुल नहीं। तू क्या करेगा? तेरी तो कोई बहन ही नहीं है।"

"ममी तो है।"

"बड़े वाले ढोल जैसी। ऐसे चार कोटों में नहीं आने वाली।"

"मेरी ममी को ढोल बोलता है! मैं अभी जा के ममी को..."

"अबे, चिंकी, चुप कर..."

"क्यों चुप करूं? तू मेरी ममी को ढोल बोले और मैं चुप करूं?"

"ओये, सुन तो!"

"क्या सुनूं?"

"अभी मेरे को एक बात याद आयी है।"

"क्या बात?"

"उस आदमी की बात जो कल कार में मरा पड़ा था। मेरे पापा किसी को बोल रहे थे कि उसे किसी ऐसे चमड़े के कोट वाली लड़की ने मारा था।"

"उन्हें क्या मालूम!"

"टीवी पर देखा। पेपर में पढ़ा। पड़ोस के सरदार जी से सुना। मैंने भी सुना।"



Scanned by CamScanner

"अब्बे!"–चिंकी के फैले–"ये उस लड़की का कोट है जिसने आदमी मारा!"

"हां।"

"फेंक दे इसे। पुलिस पकड़ लेगी।"

"हमने क्या किया है?"

"कोट है न हमारे पास! जिसके पास कोट, उसने आदमी मारा।"

"हां, यार। ये पकड़ अपना कोट।"

"मुझे नहीं चाहिये। तू ही रख। जा के अपनी बहन को दे।"

"अबे, तूने ढूंढ़ा था।"

"तूने उठाया था।"

"तूने पहले देखा था।"

"तेरे हाथ में है।"

"अबे, पकड़ अपना कोट नहीं तो..."

"मैं नहीं।"

"ये क्या हो रहा है!"

दोनों के प्राण कांप गये।

सामने बड़ी–बड़ी मूंछों वाला इलाके का चौकीदार खड़ा था।

संयोगवश आगाशे तब भी अभी थाने में ही था जबकि कोट की सनसनीखेज हाजिरी थाने में लगी।

कोट की और मैंचिग कैप की।

जो कि कोट की एक भीतरी जेब में से बरामद हुई।

चौकीदार और बच्चे वहां से रुखसत कर दिये गये तो सब–इन्स्पेक्टर पुनीत बहल आगाशे की ओर आकर्षित हुआ। चेहरे पर सन्तुष्टि के भाव लिये वो बोला–"अब क्या कहते हैं?"

"किस बारे में?"–आगाशे सहज भाव से बोला।

"कमाल है! आपको नहीं मालूम?"

"एकता शुक्ला की बात कर रहे हो?"

"उसकी बाबत जो बात थोड़ी देर पहले हम कर रहे थे, उसको आगे बढ़ा रहा हूं।"

"पार्क से बरामद कोट का रिश्ता उसके साथ जोड़ रहे हो?"

"मैं जोड़ रहा हूं! वो खुद ही नहीं जुड़ा हुआ?"

"हूं।"

"क्या हूं! ये उसी का कोट है।"



Scanned by CamScanner

"उसके कोट जैसा कोट है।"

"ये बाल की खाल निकालने वाली बात है। ये एकता शुक्ला का वो कोट है जिसकी मिल्कियत उसने हमारे सामने अपनी जुबानी कुबूल की थी। कल रात हमारे उसके यहां से चले आने के बाद या आज सुबह रोशनी होने से पहले जिसे उसने पार्क में ले जाकर सूखी पत्तियों के ढेर के नीचे छुपा दिया।"

"किसलिये?"

"ये कोई पूछने की बात है? अपने खिलाफ सबूत से पीछा छुड़ाने के लिये।"

"ये सबूत है?"

"बराबर है।"

"वो इस बात से बेखबर थी?"

"खामखाह! बेखबर होने का ड्रामा करती तो चल जाता? मैंने भी तो उसे कोट की बाबत बताया था! कैसे चलता उसका ड्रामा?"

"नहीं चलता।"

"तो?"

"तो उसने अपने पास ऐसी किसी आइटम की मौजूदगी की हामी क्यों भरी?"

"हड़बड़ी में भरी। बिना सोचे समझे भरी। या इसलिये भरी कि जानती थी कि तलाशी में कोट बरामद हो सकता था।"

"फिर उससे पीछा छुड़ाने की कोशिश का क्या मतलब हुआ! एक बार कोट की अपने पास मौजूदगी कुबूल कर चुकने के बाद अब हुक्म होने पर वो उसे कैसे पेश कर पायेगी! कल रात उसने खुद कुबूल किया था, मेरी सूरत में एक गवाह के सामने कुबूल किया था, कि ऐसा एक कोट उसके पास था। कैप इसलिए थी क्योंकि वो कोट के साथ आती है, खरीदने वाली पहने या न पहने। अब तुम वो कोट देखने की ख्वाहिश जाहिर करो तो वो कैसे दिखायेगी?"

"कह देगी चोरी चला गया।"

"कहां से?"

"जहां वो था।"

"उसके घर पर?"

"हां।"

"सिर्फ कोट? और कुछ नहीं?"

"और कैप।"



Scanned by CamScanner

"माई डियर, कैप, आई रिपीट, इज पार्ट ऑफ दि कोट। यू ट्रीट कैप एंड कोट ऐज वन वियरिंग ऐपरेल।"

"ये कोट पार्क में छुपाते वक्त उसने नहीं सोचा होगा कि कोट की बाबत अभी फिर उससे सवाल हो सकता था।"

"ये बात?"

"जी हां।"

"कोट में खास शिनाख्ती क्या है?"

"क्या मतलब?"

"चमड़े के आम कोटों जैसा कोट है। इस पर मैनूफैक्चरर का लेबल तक नहीं है। कैसे कह सकते हो कि ये कोट एकता शुक्ला का है? कैसे कह सकते हो कि उसने इसे पार्क की पत्तियों के नीचे दफनाया? इसकी शिनाख्त का कौन सा जरिया उपलब्ध है तुम्हारे पास?"

"क्या कहना चाहते हैं?"

"मैं जो कहना चाहता हूं वो तुम्हें कुबूल होगा? तुम्हारे एस.एच.ओ. को कुबूल होगा जो मुझ पर इलजाम लगा भी चुका है कि एकता शुक्ला ने बतौर पीडी मुझे रिटेन किया है, मैं उसके लिये काम कर रहा हूं?"

"ऐसा है?"

"नहीं है।"

"क्या कहना चाहते हैं? कहिये, फिर देखते हैं वो हमें कुबूल होगा या नहीं!"

"कोट को पार्क में छुपाने की करतूत हत्यारी की है..."

"जो कि एकता शुक्ला है।"

"असली हत्यारी की है जो वारदात के वक्त ये कोट पहने थी, जिसने न सिर्फ इस कोट से पीछा छुड़ाया, अपनी उस हरकत को शक की सूई एकता शुक्ला की तरफ घुमाने का मजबूत जरिया भी बनाया।"

"आगाशे साहब, जानते हैं आप क्या कह रहे हैं?"

"क्या कह रहा हूं?"

"आप कह रहे है कि किसी नौजवान लड़की ने—जोकि आपकी निगाह में असल हत्यारी है—जानबूझ कर चमड़े का ऐसा महरून कोट खरीदा जैसा कि उसे मालूम था कि एकता शुक्ला के पास था और उसके जरिये—मैचिंग कैप और स्कर्ट समेत—अपना हुलिया ऐसा बनाया कि वो देखने में मोटे तौर पर एकता शुक्ला जैसी लगती!"



Scanned by CamScanner

"हां।"

"उसने जानबूझकर, एक पूर्वनियोजित योजना के तहत, एकता शुक्ला को बतौर कातिला प्रोजेक्ट किया!"

"मैं यही कहना चाहता हूं। एकता शुक्ला इस इलाके की जानी पहचानी हस्ती है, वो क्या पहनती है, क्या पहनना पसंद करती है, इसकी खबर इलाके में हर किसी को होना क्या बड़ी बात है! लोगों ने ऐसा चमड़े का कोट और मैचिंग कैप पहने उसे इलाके में आम देखा होगा। कोट से ज्यादा शिनाख्ती आइटम कैप है जो अमूमन लड़कियां नहीं पहनतीं लेकिन जाहिर है कि एकता शुक्ला पहनती थी। फिर साफ दिखाई देता है कि ये कोट एकदम नया है, लिहाजा एक खास मकसद से बिलकुल हाल में खरीदा गया, जबकि एकता शुक्ला ने कल रात जिस कोट की मिल्कियत कुबूल की थी, उसको उसने पांच छः साल पुराना बताया था। क्या भूल गये?

"न-हीं। भूल तो नहीं गया।"

"तो फिर?"

"हूं।"

"इस बात की तसदीक अभी भी हो सकती है।"

"क्या! हां। हां। हो सकती है।"

"बराबर हो सकती है। लड़की के फ्लैट में एक बार झांकना भर ही तो होगा!"

"ठीक।"

"कोट अगर वहां हुआ तो मेरी बात खरी।"

"न हुआ तो?"

"तो कर्नल साहब की मूंछ नीची।"

वो हंसा।

आगाशे ने हंसी में उसका साथ दिया।

"लड़की"-बहल संजीदा हुआ-"हमें फ्लैट टटोलने देगी?"

"ये दिल्ली पुलिस बोल रही है?"

"हूं। आता हूं।"

वे एकता शुक्ला के फ्लैट पर पहुंचे।

सब-इंस्पेक्टर पुनीत बहल ने चाबी लगा फ्लैट का मुख्यद्वार खोला।

लड़की के बैडरूम में वार्डरोब में टंगे कपड़ों में कोट नहीं था।



Scanned by CamScanner

फ्लैट को बारीकी से टटोला गया, किचन तक की तरफ तवज्जो दी गयी।

कोट कहीं से बरामद न हुआ।

जो कि विवेक आगाशे के लिये हेठी की बात थी।

"अब क्या कहते हैं?"–बहल विजेता के से स्वर में बोला।

"क्या कहूं!"–आगाशे बोला।

"चमड़े का महरून कोट यहां नहीं है। क्या मतलब हुआ इसका? यही न कि लड़की ने खुद ले जाकर अपना वो कोट पार्क की पत्तियों में दफन किया।"

"कब?"

"आज सुबह। दिन का उजाला होने से पहले किसी वक्त।"

"कैसे कह सकते हो?"

"ये काम ही ऐसा है कि दिनदहाड़े तो यकीनन न किया गया होता! रात को हम लड़की के साथ थे और उसे अंदेशा होगा कि लौट के आ सकते थे। दोपहर तक उसे हिरासत में ले लिया गया था। अब बताइये, इस काम को अंजाम देने के लिये कौन सा टाइम बचा।"

"ठीक।"

"दूसरे, आजकल के मौसम की तरफ तवज्जो दीजिये। कोट रात भर पार्क में पड़ा रहा होता तो उस पर नमी आ गयी होती और नमी में घूल मिट्टी पत्तियां चिपक गयी होतीं, जबकि, चौकीदार बोलता था कि, कोट तो एक झटके से झाड़ने भर से सुथरा हो गया था, उतने से ही उस पर लगा कुछ भी टिका नहीं रह पाया था।"

"इसलिये ये काम आज सुबह मुंहअंधेरे किया गया?"

"हां।"

"लड़की ने–एकता शुक्ला ने–किया?"

"और किसने किया? कुबूल करते मुंह दुखता हो तो बताइये और किसने किया?"

"हूं।"

"क्या हूं? ये कोई जवाब हुआ! मूंछ तो आप रखते नहीं, जो कि नीची होने से बच गयी। और क्या कहते हैं?"

"मुझे ऐसी उम्मीद नहीं थी।"

"वो तो जाहिर है वर्ना, गुस्ताखी माफ, कर्नल की मूंछ कहीं दांव पर होती!"

"मुझे पूरा-पूरा यकीन था कि लड़की की मिल्कियत उसका



Scanned by CamScanner

चमड़े का कोट यहीं मौजूद होना था। क्यों न हुआ ऐसा? क्या किया उसने कोट का?''

''ये कोई पूछने की बात है?''

''क्यों किया?''

''खौफ खा गयी। पिछली रात के कोट की बाबत सवालों से खौफ खा गयी। अन्देशे से मुज्तला हो गयी कि कोट की उसके पास मौजूदगी उसके लिये मुसीबत का बायस बन सकती थी...''

''फिर भी उस बाबत सच बोला!''

''पुलिस से झूठ बोलना कोई हंसी खेल है! बड़ा तजुर्बा, बड़ा हौसला, बड़ा कलेजा चाहिये इस काम के लिये। नहीं?''

''हां। लेकिन...''

''अभी भी लेकिन?''

''भई, उसने अपने कोट को पांच छः साल पुराना बताया था।''

''खरीद के लिहाज से। न कि कोट की कंडीशन के लिहाज से। पांच छः साल पहले खरीदा कोट भी अगर कम पहना गया हो या तरीके से मेनटेन किया गया हो तो वो ऐन नये जैसा जान पड़ सकता है।''

''कोट खरीदा पांच छः पहले गया था लेकिन कंडीशन में नया था?''

''नये जैसा था।''

''ठीक।''

''उस वक्त तो उसने कोट की मिल्कियत की बाबत हामी भर दी, बाद में फिक्र सताने लगी। नतीजतन पहला सेफ मौका सामने आते ही कोट से पीछा छुड़ाया। उसे ले जाकर पार्क की सूखी पत्तियों में दफन किया। अब इस बात में छेद निकाल के दिखाइये!''

''मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं, भई। लेकिन यहां कोट की गैरमौजूदगी...''

तभी एकाएक कालबैल बजी।

बहल ने आगे बढ़कर दरवाजा खोला।

सामने एक युवक खड़ा था।

''क्या है?''–वो आदतन कर्कश स्वर में बोला।

बहल की वर्दी और उसके लहजे का युवक पर प्रत्याशित प्रभाव पड़ा।

''कू...कूरियर है।''–वो हकलाता सा बोला।

''किसका?''

''मिस एकता शुक्ला का।''

''मेरे को दे।''



Scanned by CamScanner

युवक से इनकार करते न बना, उसने एक मोटा, मजबूत, लम्बा, पीला लिफाफा बहल को सौंपा और अपनी लिस्ट और पीओडी पर उसके साइन कराकर वहां से रुखसत हो गया।

उसने लिफाफे को उलटा पलटा।

"ऊपर लोकल लिखा है"–वो बड़बड़ाया–"लेकिन भेजने वाले का नाम पता दर्ज नहीं है।"

"बड़ी कूरियर कम्पनियां"– आगाशे बोला–"डेली बेशुमार अर्टिकल हैंडल करती हैं, उनके यहां ऐसी कोताही हो जाना कोई बड़ी बात नहीं। दूसरे, भेजने वाले का अपना पता दर्ज करना अपने खुद के इन्टरेस्ट में होता है। किसी वजह से लैटर डिलीवर न हो तो वापिस तो आ जाता है। पता न होगा तो कैसे वापिस आयेगा!"

"ठीक। पाने वाले का नाम और पूरा पता कैपीटल लेटर्स में है। नाम तो लोगबाग ऐसे लिखते हैं, पूरा पता तो ऐसे कोई नहीं लिखता!"

"मर्जी पर मुनहसर है। मूड पर मुनहसर है। अब तुम्हारा क्या इरादा है?"

"मेरा इरादा! किस बाबत?"

"अरे, उस लैटर की बाबत, जिसे हाथ में थामे हो! जो एकता शुक्ला के लिये है लेकिन तुमने रिसीव कर लिया।"

"उसे दे दूंगा थाने जाकर।"

"गुड!"

"क्या गुड?"

"भई, तुमने सोशल स्पिरिट दिखाई, लड़की को सौंपने के लिये उसकी डाक रिसीव की, यही गुड और क्या गुड!"

"जनाब, सोशल स्पिरिट तो तभी तेल लेने चली गयी थी जबकि मैंने इस फ्लैट का दरवाजा खोला था।"

"क्या! चाबी लड़की की नहीं है?"

"उसी की है। लेकिन उसकी रजामन्दगी से मेरे पास नहीं है।"

"तौबा!"

"क्या तौबा! फ्लैट टटोलने का आइडिया तो आप ही ने सरकाया था!"

"मैंने समझा था कि लड़की से चाबी मांगोगे या उसे साथ लेकर चलोगे।"

"गलत सोचा था आपने। बहरहाल अब जब एक मामले में मैंने दिल्ली पुलिस बन के दिखाया है तो दूसरे में भी बन के दिखाता हूं।"

"क्या मतलब?"



Scanned by CamScanner

"ये मतलब!"

लिफाफे का एक सिरा फाड़ कर उसने उसे खोला।

भीतर से हजार हजार के बेशुमार नोट बरामद हुए।

बहल ने उन का मुआयना किया तो पाया कि वो पुराने, अक्सर इस्तेमाल शुदा नोट थे, गिना तो पाया कि दो सौ थे।

उनके साथ कोई कवरिंग लैटर लिफाफे में मौजूद नहीं था।

"तौबा!"–बहल के मुंह से निकाला–"इतनी बड़ी रकम यूं भेज दी! जरूर कोई अहमक ही होगा!"

"अहमक या मजबूर।"–आगाशे धीरे से बोला।

"मजबूर?"

"बकरा। जो दो लाख के लिये मुंडा।"

"आपका इशारा फिर किसी ऐसे रुतबे और रसूख वाले शख्स की तरफ है जिसका नाम लेने से लड़की की रूह कांपती है। कोई बड़ा आदमी एक कालगर्ल से अपने ताल्लुकात का एक्सपोजर नहीं चाहता इसलिये उसने लड़की को ये नजराना भेजा! उसकी खामोशी की उजरत अदा की!"

"या लड़की ने वसूल की।"

"हूं।"

"हश मनी की अदायगी ही ऐसे तरीके से होती है कि पाने वाले की ख्वाहिश–या डिमांड–पूरी हो जाये और अदा करने वाले पर हर्फ न आये, उसकी आईडेन्टिटी एक्सपोज न हो। दो लाख रुपया यूं कूरियर से अरसाल करना कोई भारी अंटी वाला शख्स ही अफोर्ड कर सकता है।"

"इसी वजह से उसने लिफाफे पर पता कैपीटल लेटर्स में लिखा! इसीलिये भेजने वाले के तौर पर अपना नाम पता दर्ज न किया!"

"और क्या!"

"इस लड़की की खैर नहीं। अब तो मीना साहब उसका बुरा हाल करेंगे।"

एकता शुक्ला का 'बुरा हाल' करने के लिये एस.एच.ओ. थाने में उपलब्ध नहीं था। मालूम हुआ कि डी.सी.पी. का तलब किया वो उसके ऑफिस में–जो कि वहां से काफी दूर, एक दूसरे थाने में था–गया था। लिहाजा एस.आई. बहल ने खुद उसकी क्लास लेने का फैसला किया।



Scanned by CamScanner

जो कि उन हालात में आगाशे के लिये मुफीद बात थी।

बहल ने एकता शुक्ला को अपने कमरे में तलब किया।

दोनों बहल के ऑफिस में पहुंचे।

बहल ने घन्टी बजाकर एक सिपाही को बुलाया और उसे एकता शुक्ला को वहां ले के आने को बोला।

सहमति में सिर हिलाता सिपाही चला गया।

"लाश की क्या पोजीशन है?"–पीछे आगाशे बोला।

"लाश की! मकतूल परमीत मेहरा की बात कर रहे हैं?"

"उसी की, भई।"

"क्या जानना चाहते हैं?"

"पोस्टमार्टम हुआ?"

"अभी नहीं। कल होगा।"

"लाश का कोई क्लेमेंट सामने आया?"

"नहीं। जो कि हैरानी की बात है।"

"न आया तो क्या होगा?"

"ऐसा तो नहीं होगा। कोई तो सामने आयेगा ही। ऐसा कहां कोई होता है जिसका कतई कोई न हो इस दुनिया में! वो भी एक पढ़े लिखे, माडर्न शख्स का। वाइट कॉलर एम्पलाई का।"

"फिर भी?"

"फिर भी की लम्बी प्रक्रिया है। अखबार में बमय तसवीर विज्ञापन देना होगा, एक निश्चित समय तक किसी क्लेमेंट का इन्तजार करना होगा, फिर लाश को किसी धार्मिक संस्थान के, जो कि धर्म कारज ऐसे काम करती हो, के हवाले करने की कोशिश की जायेगी। ऐसा कोई संस्थान भी आगे नहीं आयेगा तो बतौर लावारिस सरकारी संस्कार होगा।"

"ओह!"

तभी एकता शुक्ला वहां पहुंची।

थकी हारी। हलकान।

आगाशे ने नोट किया उसके भूरे, नफासत से कटे, लम्बे बाल बेतरतीब थे, चेहरे का मेकअप धुंधलाया सा जान पड़ता था और आंखों के पपोटे भारी थे।

थाने की कुछ ही घन्टों की हाजिरी के सस्पेंस ने उसको खंडहर नहीं तो खंडहर जैसा तो बना ही दिया था।

"रिहा कर रहे हो तो शुक्रिया।"–आते ही वो बोली।



Scanned by CamScanner

"बैठो।"–बहल सहज भाव से बोला।
"लेकिन अगर..."
"बैठ जाओ।"
वो एक कुर्सी पर ढेर हुई।
"तुम गिरफ्तार नहीं हो, इसलिये रिहाई का जिक्र बेमानी है।"
"जब मैं यहां से जा नहीं सकती तो..."
"जा सकोगी। अभी मेरी बात सुनो।"
"और क्या कर रही हूं? दोपहर से बातें ही सुन रही हूं तुम लोगों की।"
"अपने मतलब की बात सुनो।"
"मेरे मतलब की?"
"हां।"
"वो क्या बात हुई?"
"सुनो। मैं तुम्हारे फ्लैट पर गया था।"
"फ्लैट पर गये थे? क्यों?"
"उधर से गुजर रहा था इसलिये चला गया था।"
"जबकि तुम्हें मालूम था मैं यहां थी।"
"मेरी गैरहाजिरी में एस.एच.ओ. साहब ने तुम्हें यहां से रुखसत कर दिया हो सकता था।"
"खैर, फिर?"
"मैं तुम्हारे फ्लैट में गया..."
"क्या! भीतर गये?"
"हां। वो क्या है कि..."
"ताला तोड़ दिया? उसे जबरन खोल लिया?"
"अरे, नहीं, भई।"
"तो कैसे...कैसे भीतर गये?"
"बहुत लापरवाह हो तुम! दरवाजा खुला था..."
"नामुमकिन।"
"शायद सुबह की हड़बड़ी में खुला छूट गया था। या बेध्यानी में..."
"नानसेंस!"
"मैं ये सोच के भीतर गया था कि कहीं कोई चोर न घुसा बैठा हो!"
"घुसा बैठा कहां से होगा! तुम्हारे भीतर जाने के बाद ही वजूद में आया होगा।"



Scanned by CamScanner

"मुझे गोर कह रही हो?"

वो खामोश रही।

"खैर, तुम वो बात सुनो जो मैं कहने की कोशिश कर रहा हूं।"

"जो मेरे मतलब की है?"

"हां।"

"सुनाओ।"

"जब मैं भीतर था तो वहां कूरियर वाला पहुंचा था। इस लिफाफे के साथ।"–बहल ने भारी, पीला लिफाफा उसके सामने मेज पर रखा–"तुम्हारी तरफ से इसे मैंने रिसीव कर लिया।"

"वो तो चलो, अच्छा किया लेकिन ये तो...ये तो खुला है!"

"तुम्हारा पता इस पर कैपीटल लेटर्स में दर्ज है इसलिये हैंडराइटिंग तो पहचान में आना मुहाल होगा..."

"तुमने मेरी चिट्ठी क्यों खोली?"

"ये चिट्ठी नहीं है। कुछ और ही है। देखो, क्या है!"

"क्या है?"

"हजार-हजार के नोटों से भरा कंटेनर है। दो लाख रुपये हैं इस लिफाफे में। किसने भेजे?"

एकता के झपट कर लिफाफा उठाया और उसके भीतर झांका।

"हे भगवान!"–उसके मुंह से निकला–"ये तो..."

"क्या ये तो?"

वो खामोश हो गयी, उसने होंठ भींच लिये।

बहल ने हाथ बढ़ा कर बड़ी सफाई से लिफाफा उसकी उंगलियों से निकाल लिया।

"ये क्या हरकत है!"–वो भड़की, उसने लिफाफा वापिस कब्जाने की नाकाम कोशिश की–"वापिस करो। ये मेरा पैसा है।"

"किसने भेजा?"

"कैसे लोग हो तुम! मेरे फ्लैट में घुस गये! मेरी डाक रिसीव कर ली! उसे खोल लिया! हे भगवान! ऐसी धांधली!"

"किसने भेजा?"

"किसी ने भी भेजा। तुम्हें क्या?"

"है मुझे।"

"तुम्हें?"

"पुलिस को। जवाब दो।"

"एक वाकिफकार ने भेजा।"



Scanned by CamScanner

"क्यों?"

"उधारी है। टैम्परेरी लोन है।"

"कौन है वो वाकिफकार, वो सखी हातिम, जिसने कर्जा देने का ये गुमनाम तरीका अख्तियार किया? क्यों उसने रकम तुम्हारी हथेली पर न रखी? नाम लो उसका।"

उसने मजबूती से इनकार में सिर हिलाया।

"कुबूल करो कि ये कर्जा नहीं, उजरत है। फीस है।"

"फीस!"

"फार सर्विसिज रेंडर्ड। अब ये भी मैं बताऊं कि तुमने उसकी क्या सर्विस की?"

उसने फिर होंठ भींच लिये।

"ये वही शख्स है जिसके साथ होने का तुम कल रात दावा कर रही थीं। पुलिस से कल रात के वास्ते की रू में आज सुबह तुम जिससे मिलीं और मिल कर जिसकी बाबत अपनी खामोशी को ये उजरत, ये कीमत मुकर्रर की। लिहाजा तुम सच कह रही थीं कि कल रात कत्ल के मौकायवारदात से तुम कोसों दूर थीं। अब उस शख्स का नाम लो ताकि सच मोहरबन्द हो और तुम्हें यहां से निजात मिले। इसी में तुम्हारी भलाई है।"

"जैसे तुम लोगों को मेरी भलाई की फिक्र है! जब तुम मानते हो कि कत्ल के वक्त मैं मौकायवारदात से कोसों दूर थी तो क्यों दोपहर से मुझे यहां बिठा के रखा हुआ है?"

"बहस न करो।"

"मैं तुम्हें कुछ नहीं बताने वाली। चाहे जितना मर्जी जोर लगा लो। और ये लिफाफा इधर करो। इसे अपने पास रखने का तुम्हें कोई अख्तियार नहीं।"

"तो ये तेवर हैं?"

"हां, ये तेवर हैं। जबरन, ताला तोड़ कर मेरे घर में घुसे, मेरी डाक रिसीव की, न सिर्फ रिसीव की, उसे खोल भी लिया, इसका खामियाजा तुम्हें भुगतना पड़ेगा।"

"क्या करोगी? मेरे खिलाफ एफ.आई.आर. दर्ज कराओगी?"

"मैं उससे बेहतर कुछ करूंगी।"

"वकील करोगी? कोर्ट में जाओगी?"

"मीडिया के पास जाऊंगी। प्रैस वाले तुम्हारे बम बुला देंगे। देखना तुम।"



Scanned by CamScanner

"काफी चालाक हो!"

"नहीं, काफी नहीं हूं। काफी से कम हूं। बहुत कम हूं। वर्ना जो कहा, अब तक उस पर अमल कर चुकी होती।"

बहल के चेहरे पर चिंता के भाव आये। उसने आगाशे की तरफ देखा।

"शांत हो जाओ।"–खंखार कर गला साफ करता आगाशे बोला–"तुम्हारा फ्लैट सेफ है। तुम्हारा पैसा सेफ है। और इसका तुम्हारे हवाले होना महज वक्त की बात है। अब बोलो, ये बताने में क्या हर्ज है कि ये पैसा तुम्हें किसने भेजा?"

"है हर्ज।"

"क्या?"

"मैं नहीं समझती कि इस बात का पुलिस की तफ्तीश से कोई मतलब है, कोई रिश्ता है। जब सब-इन्स्पेक्टर साहब खुद मानते हैं कि मैं मौकायवारदात से कोसों दूर किसी के साथ थी..."

"तसदीक तो होनी चाहिये न!"

"मैं कर तो रही हूं तसदीक!"

"तुम कह रही हो। तसदीक वो शख्स करेगा जिसके साथ तुम थीं। तसदीक गवाह से होती है। तुम खुद अपना गवाह नहीं बन सकतीं।"

"मैं उस बाबत कुछ नहीं कहने वाली।"

"तो फिर यहीं रहोगी।"–बहल भड़का।

"ये धांधली है"–वो चिल्लाई–"गुंडागर्दी है। जिसका खामियाजा और कोई भुगते न भुगते, तुम जरूर भुगतोगे।"

"अच्छा!"

"हां। न तुम्हारी वर्दी उतरवा दी तो बोलना।"

"ठहर जा, साली।"

"तुम एक गवाह के सामने मेरे से बदजुबानी कर रहे हो, इसका अंजाम तुम्हें भुगतना पड़ेगा।"

"गवाह!"

"ये। ये पुलिस वाले नहीं हैं। इनमें इन्सानियत का कोई माद्दा होगा तो ये मेरे हक में गवाही देंगे कि तुमने मेरे साथ गाली गलौच की।"

बहल हड़बड़ाया, उसने सशंक भाव से आगाशे की तरफ देखा।

"नाओ"–आगाशे मीठे स्वर में बोला–"काम डाउन।"

"वाट काम डाउन! लगता है मैंने आपके बारे में गलत सोचा है।



Scanned by CamScanner

लगता है आप पर चोर का भाई गिरहकट वाली मिसाल लागू होती है।''

''ऐसी बात नहीं है।''

''नहीं है तो इसकी जगह मेरा तरफदार बन के दिखाइये। ये नहीं समझता तो आप तो समझिये कि जिस आदमी को मैं जानती तक नहीं थी, क्यों मैं उसका कत्ल करूंगी! क्यों ये लोग उस कत्ल को मेरी जाती जिन्दगी में दखलअंदाज होने का बहाना बना रहे हैं! क्यों ये अपनी जात दिखाने पर तुले हैं!''

''अभी कहां दिखाई!''–बहल आंखे निकालता बोला।

''क्या! क्या बोला?''

''अभी तो तुम्हें अपनी दुश्वारियों का कोई अंदाजा ही नहीं है। होता तो यूं बढ़–बढ़ के बोलने की जगह बकरी की तरह मिमिया रही होतीं।''

वो सकपकाई, उसने अपलक बहल की तरफ देखा।

''कल रात तुमने कुबूल किया था कि तुम्हारे पास एक महरून कलर का चमड़े का कोट है!''

''तो?''

''कहां है? क्या किया उसका?''

''क्या किया!''–उसके स्वर में उलझन का पुट आया–''कुछ नहीं किया।''

''तो कहां गया वो?''

''कहां गया क्या मतलब! कहीं नहीं गया। मेरे फ्लैट पर है।''

''नहीं है।''

''बैडरूम में मेरी वार्डरोब में टंगा है।''

''नहीं है। कहीं नहीं है। वो कोट तुम्हारे फ्लैट पर मौजूद नहीं है।''

''ओ माई गॉड! जरूर वो पीछे छूट...''

तत्काल उसने होंठ काटे।

''कहां! कहां पीछे छूट गया?''

''पता नहीं। याद नहीं।''

''तुम झूठ बोल रही हो। तुम्हें सब याद है।''

''ऐसा है तो ऐसा ही सही। कल रात मैं उसे कहीं रख के भूल गयी–मैंने कोट को उतारा था, कहीं रखा था, फिर वापिस पहनना भूल गयी थी–कहां रख के भूल गयी थी, इससे तुम्हें कोई मतलब नहीं होना चाहिये। वो मेरा कोट था, मेरा नुकसान हुआ, तुम लोगों को क्या!''



Scanned by CamScanner

आगाशे ने उस नयी बात पर विचार किया।

लड़की की बातों से साफ जाहिर हो रहा था कि पार्क से कोट की बरामदी की उसे कोई ख़बर नहीं थी। पार्क वाला कोट उसका होता तो वो कभी न कहती कि वो 'पीछे छूट गया था'। तो उसने उसकी अपने फ्लैट में गैरमौजूदगी की या तो कोई और ही कहानी कही होती या अपनी ढिठाई के तहत उस बाबत खामोश रही होती।

तभी बहल की बजाई कालबैल के जवाब में एक हवलदार वहां पहुंचा।

"ले के जाओ इसे।"–बहल ने आदेश दिया–"मीना साहब लौट आयें तो बोलना। अब वो ही इसकी खबर लेंगे।"

हवलदार लड़की को लेकर वहां से चला गया।

"स्साली!"–पीछे बहल भुनभुनाया–"भौंकती ही नहीं, काटती भी है।"

"माई डियर"–आगाशे बोला–"माईंड युअर लैंग्वेज!"

"मजाल देखी उसकी! पुलिस को हूल देती है! भड़काती है! मेरी वर्दी उतरवायेगी! देखो तो!"

"ईजी! ईजी डज इट, माई डियर।"

वो खामोश रहा।

"अब अगर तुम निश्चय ही किये बैठे हो कि ये ही परमीत मेहरा की कातिल है तो बात दूसरी है।"

"निश्चय तो नहीं किये बैठे। मीना साहब क़ा खयाल भी इस मामले में डांवाडोल ही है।"

"वजह?"

"तहकीकात से सामने आया है कि मरने वाले का इस लड़की से कभी कोई वास्ता नहीं रहा था। आज दिन में मिसेज सीरोज गैस्ट हाउस की, उसकी रिहायशी जगह की, पड़ताल करवाई गयी थी। वहां से ऐसा कोई मामूली सा क्लू भी नहीं मिला है जो जाहिर करता हो कि परमीत मेहरा इस लड़की से वाकिफ था। कोई चिट्ठी पत्री, कोई फोन नम्बर की नोटिंग, कहीं लड़की का कोई नाम पता दर्ज, लड़की की जाती मिल्कियत कोई शै, कुछ भी तो नहीं! वहां की पड़ताल और पूछताछ से ये बात निर्विवाद रूप से स्थापित हुई है कि लड़कियों को अपने फ्लैट में लाना उस शख्स का आम, पसन्दीदा शगल था लेकिन इस लड़की की–एकता शुक्ला की–वहां कभी हाजिरी लगी हो, ऐसा कोई क्लू वहां से हाथ नहीं लगा है। उसकी एक



Scanned by CamScanner

फोन डायरी वहां से बरामद हुई थी जिसमें कितनी ही लड़कियों के नाम, पते और टेलीफोन नम्बर दर्ज थे लेकिन एकता शुक्ला की ऐसी कोई हाजिरी उसमें दर्ज नहीं थी।''

''इससे क्या नतीजा निकाला?''

''किसने?''

''भई, तुमने। एस.एच.ओ. साहब ने! पुलिस ने! यही न कि ये लड़की सच कहती है कि वो मकतूल से वाकिफ नहीं थी और उसका कत्ल से कोई लेना देना नहीं!''

''बात तो ऐसी ही है कुछ कुछ।''

''लेकिन कुबूल करने को जी नहीं चाहता, क्योंकि लड़की मिट्टी झाड़ गयी! पहले से ही उसके खिलाफ तुम्हें और अपने खिलाफ कर गयी!''

''मूर्ख है। पुलिस से बैर मोल लेने का नतीजा नहीं जानती।''

''वो तो खैर हुआ, अब ये बताओ अगर ये लड़की कातिल नहीं तो कौन हो सकता है कातिल?''

''है तो सही इस बाबत मेरी एक राय लेकिन मीना साहब को उससे कतई इत्तफाक नहीं।''

''क्या है तुम्हारी राय? मुझे बताओ, शायद मुझे इत्तफाक हो।''

''मेरे खयाल से ये काम किसी होमीसिडल मैनियाक का है।''

''किसी दीवाने का? जिसे किसी से कोई जाती दुश्मनी नहीं? जो अपनी मौज के लिये नाहक़ किसी का, किसी का भी, कत्ल करता है? जो किसी को भी–जो सामने पड़ जाये–अपना शिकार चुन लेता है?''

''हां।''

''कोई मर्द?''

''जरूरी नहीं। औरत भी हो सकती है। दीवानगी पर कापीराइट मर्दों का ही तो नहीं! वैसे भी चॉकलेट और लिपस्टिक तो जनाना हाजिरी ही लगाते हैं।''

''दूर की कौड़ी है। क्योंकि ये कत्ल तो पूरी प्लानिंग के साथ, पूरी तैयारी के साथ किया गया जान पड़ता है। परमीत मेहरा तो नहीं लगता कि बतौर शिकार खामखाह चुन लिया गया। बतौर विक्टिम रैन्डम सलैक्शन तो वो नहीं जान पड़ता। उसका कत्ल तो किसी ऐसी लड़की ने किया जान पड़ता है जो उसके मिजाज से, उसकी तरबियत से, उसकी हर आदत से पूरी तरह से वाकिफ थी। जो जहर के



Scanned by CamScanner

कैप्सूल वाली चॉकलेट पहले से तैयार किये जोरबाग रोड पर खास उसी की ताक में थी, खास उसका इन्तजार कर रही थी। नहीं?''

''बात तो आपकी ठीक है, जनाब।''

''मेरी बात ठीक है तो बताओ बतौर मर्डर सस्पैक्ट, बतौर आल्टरनेट कैंडीडेट फार दि आनर, श्रेया साहनी इस सीनेरियो में कैसे फिट होती है?''

उसने उस बात पर विचार किया।

''आरसेनिक जैसा जहर उसे क्योंकर उपलब्ध था, ये बात सोच के जवाब देना।''

''ये जहर भी तो साला खास घुंडी है। खास जहर खासतौर से किसे मुहैया होगा! कितने लोगों की पहुंच आरसेनिक से भरे कैप्सूल तक हो सकती है! जब तक ये घुंडी नहीं खुलती तब तक एकता शुक्ला के खिलाफ ही नहीं, श्रेया साहनी के खिलाफ ही नहीं, किसी के भी खिलाफ कोई केस खड़ा करना आसान काम न होगा।''

''सड़क पर खड़े होकर ओपीनियन पोल कन्डक्ट की जाये तो तीन चौथाई लोग ऐसे निकलेंगे जिन्हें आरसेनिक की कोई वाकफियत नहीं, जिन्होंने कभी इसका नाम तक नहीं सुना।''

''वही तो!''

''फिर ऐसे तो बिलकुल ही दुर्लभ होंगे जो जानते हों आरसेनिक कहां से हासिल किया जा सकता था!''

''यू सैड इट, सर। आप बड़े क्रिमिनालोजिस्ट हैं, इस केस में दिलचस्पी रखते हैं, इस पर बाकायदा अपना टाइम सर्फ कर रहे हैं, बताइये आरसेनिक की ये घुंडी खुले तो कैसे खुले?''

''मैं सोचूंगा इस बाबत।''

❑❑❑

आधी रात होने को थी।

इलाके की सड़कें सूनी पड़ी थीं।

मेन लोधी रोड से गाहेबगाहे इक्का दुक्का वाहन गुजरता दिखाई देता था लेकिन भीतरी सड़कें सुनसान थीं, रात की उस घड़ी उन पर पैदल आवाजाही बिलकुल नहीं थी। उस सन्नाटे की वजह कड़ाके की ठण्ड का मौसम तो था ही, ये भी थी कि थोड़ी देर पहले बारिश होकर हटी थी और हल्की बून्दाबन्दी अभी तक जारी थी।



Scanned by CamScanner

ऐसे माहौल में सड़क पर एक नौजवान लड़की मौजूद थी जिसके फैशनेबल ढंग से कटे बाल भूरे थे और जो घुटनों तक आने वाला सफेद रंग का मैकिंटोश के नाम से जाना जाने वाला वो कोट पहने थी जो बरसाती और ओवरकोट दोनों का काम देता था—जो बाहर से बरसाती जैसा होता था लेकिन जिसके भीतर ऊनी कपड़े की लाइनिंग होती थी। उसका निशाना लोधी कालोनी के बी ब्लॉक के ऐन बीच में मौजूद एक पार्क था जो कि उस पार्क से थोड़ी ही दूर था जिसमें लुकाछिपी खेलते बच्चों ने सूखी पत्तियों के नीचे छुपा चमड़े का कोट बरामद किया था। उस पार्क के एक कोने में खण्डहर हो चुका एक मकबरा था जिसका एक हिस्सा इत्तफाक से ही सलामत था और जिस पर जॉन पाब्लो नाम का एक उम्रदराज गोवानी नाजायज कब्जा जमाये था। वो सारे इलाके का जनरल हैण्डीमैन था और जॉन अंकल के नाम से इलाके का बच्चा बच्चा उसे जानता था। किसी का छोटा मोटा कैसा भी रखरखाव से ताल्लुक रखता काम हो, जॉन अंकल बहुत मामूली फीस की एवज में खुशी खुशी कर देता था। 'जॉन अंकल, दो टूटियां टपक रही हैं जरा वाशर बदल जाना', 'जॉन अंकल, एक ट्यूब नहीं जल रही, जरा देख जाना', 'जॉन अंकल, एक चिटखनी उखड़ गयी है, जरा जोड़ जाना', 'जॉन अंकल, पौधों को पानी दे जाना, पिछले कम्पाउन्ड की घास काट जाना', 'जॉन अंकल एक जंगला पेन्ट कर जाना' वगैरह और जॉन अंकल हाजिर। काम वो भले ही उजरत की उम्मीद में करता था, लेकिन उजरत के नाम पर हासिल पर कभी हुज्जत नहीं करता था। वैसे कभी कोई विरला ही शख्स होता था जो जॉन अंकल का हक मारता था क्योंकि किसे नहीं मालूम था कि जो काम जॉन अंकल से करवाया जाता था, वो अगर इलाके की किसी शॉप से रेगुलर टैक्नीशियन आकर करता तो तीन गुना चार्ज करता।

जॉन अंकल इलाके का मकबूल किरदार था जिसे वहां हर कोई पसन्द करता था क्योंकि उसमें हर किसी के काम आने वाली खूबियां थीं, कोई खामी थी तो बस ये कि ड्रिंक करता था। वो गोवा खुद जाता था, या उधर से उसका कोई मिलने जुलने वाला आता था, तो फेनी जरूर लाता था। कभी उसका फेनी का स्टाक खत्म हो जाता था तो वोदका पीता था। बहरहाल उसकी उस लत से कभी किसी को कोई शिकायत नहीं हुई थी क्योंकि वो कभी दिन में नहीं पीता था, कभी अपने काम के दौरान नहीं पीता था—यानी की पी कर काम नहीं



Scanned by CamScanner

करता था–हमेशा रात को पीता था, खाना खाता था और सो जाता था। घर से बाहर घूंट लगाने का मूड हो तो उसने कोटला मुबारकपुर में एक बेवड़े का गैरकानूनी अड्डा तलाश किया हुआ था जहां फेनी तो नहीं मिलती थी लेकिन वोदका या रम आम मिलती थी। वहां उसने अपनी उम्र के–जो कि साठ साल थी–अपनी किस्म के दो चार यार भी बना लिये हुए थे जिनके साथ जाम टकराते उसका खूब टाइम पास होता था। वहां से जब वो रवाना होता था तो ठीक ठाक होता था और पूरी जिम्मेदारी से सबको गुडनाइट बोल कर घर का रुख करता था लेकिन रास्ते में नशा उस पर हावी होने लगता था, उसकी चाल में लड़खड़ाहट आने लगती थी और घर पहुंचने तक वो पूरी तरह से टुन्न होता था। कोई उसको उस हालत में देखता था तो बस, इतना कहता था कि 'जॉन अंकल घोड़े पर सवार था' लेकिन इलाके में कुछ लोग ऐसे भी थे जो उससे कभी कोई काम नहीं कराते थे, इसलिये उस बेवड़े का किसी तरह का कोई लिहाज करना जरूरी नहीं समझते थे, 'साले की पुलिस में रपट करूंगा', जॉन अंकल को खास सुनाने के लिये उच्च स्वर में कहते थे लेकिन गनीमत थी कि असल में ऐसा कुछ करते नहीं थे।

लिहाजा इस फ्रंट पर अमन शान्ति थी।

जॉन अंकल गुणी आदमी था, मेहनती आदमी था, सबके काम आनेवाला आदमी था इसलिये फिलहाल उसकी ये खता, वाहिद खता, माफ थी।

सफेद मैकिंटोश वाली लड़की खामोशी से खंडहर मकबरे तक पहुंची जिसके साबुत बचे कमरे में रोशनी थी। वो रोशनी उस बल्ब की थी जो कि जॉन अंकल ने पार्क की पोल लाइट से तार वहां तक खींच कर जलाई हुई थी। करीब पहुंचकर लड़की ने एक झरोखे से भीतर झांका तो भीतर जलते बल्ब की रोशनी उसकी सूरत पर भी पड़ी। उस वक्त कोई उस लड़की की सूरत पर निगाह डालता तो उसे उसकी आंखों में हैरान कर देने वाली शैतानी चमक दिखाई देती। उसके चेहरे का भारी मेकअप दिखाई देता और होंठों की गहरी सुर्खी दिखाई देती। आंखों की शैतानी चमक के बावजूद वो शान्त थी और उसकी हर हरकत में इतमीनान की झलक थी।

उसने उस सलामत कमरे के भारी लकड़ी के दरवाजे को धक्का दिया। वो जानती थी वो दरवाजा हमेशा खुला होता था क्योंकि बन्द हो पाता ही नहीं था। दरवाजा चरमराता सा खुला तो उसने सावधानी



Scanned by CamScanner

से भीतर झांका। अपनी अपेक्षा के अनुरूप उसने जॉन अंकल को तख्तपोश पर बेसुध, खर्राटे भरता लुढ़का पड़ा पाया। साफ जाहिर होता था कि वहां पहुंचते ही वो तख्तपोश पर ढेर हो गया था और नशे में डूबी नींद के हवाले हो गया था। उस घड़ी उसकी हालत साफ ऐसी जान पड़ती थी कि कोई उसे टांग पकड़कर वहां से घसीटकर कहीं ले जाता तो उसके कान पर जूं न रेंगती।

'गुड!'–वो होंठों में बुदबुदाई।

स्किन फिट रबड़ के दस्तानों से लैस हाथों से उसने अपना हैण्डबैग खोला और उसमें से एक छोटा सा पैकेट बरामद किया। पैकेट को खोलकर उसने भीतर से एक चॉकलेट निकालकर अपने दायें हाथ के अंगूठे और पहली उंगली के बीच थामी और फिर बेसुध जॉन अंकल पर झुकी। जॉन अंकल के अधखुले मुंह को उसने ठोढ़ी थाम कर उतना और खोला कि चॉकलेट भीतर दाखिल हो पाती, चॉकलेट को मुंह में धकेला और ठोढ़ी को नीचे से यूं धक्का दिया कि जबड़ा बंद हो गया।

जॉन अंकल के मुंह में कुछ चटकने जैसी आवाज हुई, उसके जिस्म में तीखी हरकत हुई और उस पर तारी बेहोशी टूटने के आसार जागे। उसके गले से अजीब सी घर्र घर्र की आवाज निकली, जिस्म जोर से तड़पा।

लड़की मजबूती से उसे यथास्थान थामे रही।

जॉन अंकल के जिस्म ने तड़पन के दो तीन झटके और खाये फिर सब शान्त हो गया। उसके हाथ पांव ढीले पड़ गये और वो तख्तपोश पर निश्चेष्ट पड़ गया।

'ईजी!'–लड़की सन्तुष्टिपूर्ण भाव से होंठों में बुदबुदाई–'डैम ईजी!'

जॉन अंकल को तख्तपोश पर यथास्थान दबाये रखने की कोशिश में वो खुद हांफ गयी थी लेकिन वो अपने नापाक कारनामे के नतीजे से सन्तुष्ट थी।

अलबत्ता उसका काम अभी मुकम्मल नहीं हुआ था।

अपने लम्बे भूरे बालों की एक लट में से उसने कुछ बाल खींच कर उखाड़े और उन्हें जॉन अंकल के मोटी ऊन के मटमैले पुलोवर पर सामने छाती पर ऊन में उलझा दिया। फिर उसने झुक कर अपने सुर्ख होंठों की एक स्पष्ट छाप जॉन अंकल के बायें गाल पर बनाई।

अब उसका काम मुकम्मल था।

खामोशी से वो वहां से रुखसत हुई।



Scanned by CamScanner

अनुराग जोशी नोएडा से वापिस लौट रहा था।

वहां एक टेलीविजन स्टूडियो था जिसके एक लेट नाइट लाइव डिसकशन प्रोग्राम में वो पांच जनों की पैनल का हिस्सा था। उस प्रोग्राम में उसकी शिरकत की साहनी परिवार को खबर थी और वो जानता था सब ने उसे टीवी पर उसकी खातिर देखना था। इसी वजह से वापिसी में उसने लोधी कालोनी को अपना लक्ष्य बनाया था जहां कि पहुंचते ही एक प्याली गर्मागर्म कॉफी उसे हासिल होना निश्चित था।

वो अपनी मंजिल से अभी थोड़ा दूर था कि उसे महसूस हुआ कि उसके आगे आगे कोई ओवरकोट या बरसाती पहने एक नौजवान लड़की जा रही थी। वो एक स्ट्रीट लाइट के नीचे से गुजरी तो उसने नोट किया कि उसके बाल वैसे हल्के भूरे थे जैसे विलायत में किसी नौजवान लड़की के हों तो वो ब्लोंड कहलाती थी।

फिर उसने उस लड़की को पहचाना।

सफेद मैकिंटोश को पहचाना जो वो पहने थी और जिसे उसने ओवरकोट या बरसाती समझा था।

'रोमिला जौली!'–उसके मुंह से निकला।

वो जानता था उसकी घर वापिसी का वही वक्त होता था। वो साउथ एक्सटेंशन पार्ट वन के एक रेस्टोरेंट में होस्टेस थी जहां से उसकी छुट्टी का वो ही वक्त था। अनुराग उससे वाकिफ था, क्योंकि वो भी लोधी कालोनी में ही रहती थी, और दोनों में छोटी मोटी दुआ सलाम भी थी।

लम्बे डग भरता वो उसके पीछे उसके करीब पहुंचा और उसके कूल्हे पर शरारतन चिकोटी काटता बोला–"हल्लो, रोमिला! जौली ऐज यूजुअल?"

लड़की पर तुरन्त हुई प्रतिक्रिया चौंकाने वाली थी। उसके मुंह से एक घुटी हुई चीख निकली, वो तड़प कर उससे परे छिटकी और फिर बिना कुछ बोले, बिना घूमकर उसकी तरफ देखे, आगे फुटपाथ पर सरपट भागी। पीछे डाकू पड़ गये होते तो भी शायद वो उतना तेज न भाग पायी होती जितना कि वो तब भागी।

हड़बड़ाया सा अनुराग यूं पीछे जड़ खड़ा रहा जैसे लकवा मार गया हो। उसके कूल्हे पर चिकोटी काटना उसके साथ चुहलबाजी की उसकी स्थापित रूटीन थी जिसमें उसकी बदनीयती का कोई



Scanned by CamScanner

दखल नहीं था और जिसका लड़की ने भी कभी बुरा नहीं माना था, वो इस बात को हंस कर टाल देती थी या 'बाज आ जाओ' या 'खबरदार' कहकर आंखें तरेर देती थी। लेकिन तब तो उसने यूं रियेक्ट किया था जैसे उसने चिकोटी न काटी हो, बिजली का करंट छुआया हो।

शर्म से पानी पानी होता, मुंह बाये वो उसे अन्धेरे में गायब होते देखता रहा।

क्या माजरा था! ऐसा क्या कर दिया था उसने जो लड़की इतनी आपे से बाहर हो गयी थी?

कोई जवाब उसे न सूझा।

'कल साउथ एक्स जाऊंगा'–उसने मन ही मन निश्चय किया–'और सॉरी बोलकर आऊंगा।'

भारी कदमों से वो आगे बढ़ा।

सॉरी बोलने का निश्चय कर लेने के बावजूद वो वाकया उसके जेहन से नहीं निकल रहा था। वो बालिग लड़की थी, दुनियादार लड़की थी, रेस्टोरेंट की होस्टेस जैसी 'इन' जॉब करती थी, कैसे वो एक मामूली, निर्दोष, शरारतभरी हरकत से इतनी आन्दोलित हो सकती थी! आखिर वो कोई अजनबी तो नहीं था उसके लिये! आखिर कोई नयी हरकत तो नहीं की थी उसने! उसकी कोई गलती थी तो सिर्फ ये कि वो एकाएक उसके पीछे पहुंचा था और बिना किसी वार्निंग के उसके साथ वैसे पेश आया था। जवाब में वो चौंक कर दिखा सकती थी, हैरान होकर दिखा सकती थी, खफा हो सकती थी लेकिन वो तो घूम कर पीछे देखे बिना यूं वहां से काफूर हुई थी जैसी पीछे भूत की मौजूदगी का अहसास हुआ हो।

वो जानता था लोधी कालोनी में वो कहां रहती थी। क्या उसे उसके पीछे उसके घर जाकर उसे सॉरी बोल कर आना चाहिये था?

उसका घर स्कूल के सामने मिल्क बूथ के बाजू में था।

वो वहां पहुंचा तो उसने उसे अन्धकार के गर्त्त में डूबा पाया।

ऐसे में घर की कालबैल बजाने पर दरवाजा उसकी जगह उसके माता पिता में से कोई खोल सकता था जिसको रात की उस घड़ी अपनी आमद की जवाबदेही देना उसके लिये मुश्किल होता।

'कोई बात नहीं'–उसने खुद को तसल्ली दी–'कल सुबह सही।'

वो अपनी मंगेतर के घर पहुंचा।

कालबैल के जवाब में दरवाजा शेखर ने खोला।



Scanned by CamScanner

सामने उड़ती निगाह डालकर उसने आगन्तुक की शिनाख्त की।

"बन्द करते आना।"–वो बोला, तत्काल दरवाजे पर से हटा और उलटे पांव वापिस लौट गया।

अनुराग भीतर दाखिल हुआ।

शेखर को उसने ड्राईंगरूम में टीवी के सामने बैठा पाया। वो ऐसी तन्मयता से टीवी पर निगाह गड़ाये था कि यही हैरानी थी कि अनुराग को दरवाजा खोलने के लिये वो टीवी के आगे से उठा था।

टीवी पर कोई गम्भीर ड्रामेटिक सीन चल रहा था जिसमें एक भयभीत युवती एक युवक के कन्धे से लिपटी खड़ी थी और उन दोनों के सामने हाथ में गन लिये एक बावर्दी पुलिस इन्स्पेक्टर खड़ा था।

"श्रेया कहां है?"–उसने पूछा।

शेखर की तन्मयता में कोई फर्क न आया।

"हेमा जी भी दिखाई नहीं दे रहीं!"

"श श!"–शेखर आंखे तरेरता बोला।

अनुराग खामोश हो गया।

शेखर ने बिना टीवी पर से निगाह हटाये उसे बैठ जाने का इशारा किया लेकिन अनुराग ने वैसी कोई कोशिश न की, वो यथास्थान ठिठका खड़ा रहा।

और दो मिनट में टीवी के उस सीन का समापन हो गया और उसके साथ उस सीरियल का–जिसका कि वो सीन था–वो एपीसोड भी खत्म हो गया।

तब कहीं जाकर शेखर का मिजाज बदला और उसने मेहमान की तरफ तवज्जो दी।

"बहुत टेंस सीन था।"–वो बोला–"भूषण खरे कमाल करता है।"

"भूषण खरे!"–अनुराग बोला–"वो कौन हुआ?"

"जो पुलिस इन्स्पेक्टर का रोल कर रहा था। कमाल का एक्टर है। जो भी रोल करता है, उसमें जान डाल देता है।"

"श्रेया कहां है?"

"मेरे खयाल से चाय बना रही है।"

"हेमा जी?"

"अपने कमरे में होगी। पहले यहीं थी। टीवी देख रही थी। मेरा सीरियल शुरू होते ही उठ के बैडरूम में चली गयी थी।"



Scanned by CamScanner

तभी हेमा वहां पहुंची।

"खत्म हो गया वो सड़ा सा सीरियल?"–नाक चढ़ाती वो बोली।

"टॉप टी.आर.पी. वाला सीरियल है वो।"–शेखर बोला।

"माउन्ट एवरेस्ट पर रखा है। खत्म हो गया?"

"हां"

"शुक्र है।"

तभी चाय की ट्रे उठाये श्रेया वहां पहुंची।

"हल्लो!"–वो बोली–"कैसा रहा पैनल डिसकशन का एक्सपीरियेंस?"

"क्या फायदा पूछने का!"–अनुराग बोला–"या मेरे जवाब देने का! यहां तो किसी ने देखा ही नहीं! यहां तो हर कोई भूषण खरे का फैन है!"

"कौन कहता है नहीं देखा?"–हेमा बोली।

"सब ने देखा।"–शेखर बोला–"तुम्हारा प्रोग्राम खत्म होने पर वो–मेरे वाला, भूषण खरे वाला–सीरियल लगाया।"

"ओह!"

"बढ़िया था प्रोग्राम। तुम बहुत अच्छा बोले।"

"थैंक्यू।"

"तुम्हारे होश क्यों उड़े हुए हैं?"–ट्रे सेंटर टेबल पर रखती श्रेया बोली।

"ऐसी तो कोई बात नहीं।"–अनुराग नर्वस भाव से बोला।

"ऐसी ही बात है। लगता है टीवी वालों ने हाथ के हाथ पेमेंट का चैक नहीं दिया।"

"वाट नानसेंस!"

"बताओ, भई।"–हेमा ने भी इसरार किया।

"कोई खास बात नहीं। यूं ही रास्ते में कुछ..."

"क्या कुछ?"

"वो...वो क्या है कि..."

"पहले चाय दे इसे। लगता है ठण्ड में जुबान नहीं चल रही।"

"ऐसी कोई बात नहीं।"

"फिर भी..."

श्रेया ने सब को चाय सर्व की।

"अब बोलो।"–फिर वो बोली।



Scanned by CamScanner

"वो क्या है कि"–अनुराग दबे स्वर में बोला–"मैं जब वापिस आ रहा था तो रास्ते में..."

"क्या रास्ते में?"

"तुम...रोमिला जौली को जानती हो?"

"रोमिला! जौली!"

"जानती ही होगी। यहीं तो रहती है। करीब ही स्कूल के सामने मिल्क बूथ के बाजू में। जो साउथ एक्स पार्ट वन के एक रेस्टोरेंट में होस्...काम करती है।"

"उसकी क्या बात है?"

"मैं अभी जब यहां लौट रहा था तो फुटपाथ पर मेरे आगे आगे चलती वो मुझे दिखाई दी थी। मैंने करीब जाकर शरारतन उसे पिंच किया था, उसकी...बांह पर चिकोटी काटी थी और हल्लो बोला था।"

"चिकोटी काटी थी?"

"दोस्ताना अन्दाज से। मजाक में।"

"आई सी! फिर?"

"जवाब में वो तो यूं तड़पी, यूं भड़की, जैसे मैंने उसे नश्तर चुभो दिया हो और सड़क पर यूं भागी जैसे ओलम्पिक के फाइनल में दौड़ रही हो। पलक झपकते ही ये जा वो जा।"

"डर गयी होगी।"–शेखर बोला–"जरूर जोरबाग रोड वाले उस कत्ल का असर होगा..."

"और रात के सन्नाटे का।"–श्रेया बोली।

"उसने तुम्हें पहचाना नहीं होगा!"–हेमा बोली।

"फिर चिकोटी!"–शेखर बोला–"नौजवान लड़की को! ऊपर से रोशनी की कमी! उसे नहीं पता लगा होगा कि पीछे तुम थे या जोरबाग रोड की वारदात वाला कातिल था!"

"उस वारदात को तो मैं भूल ही गया था! फिर भी मैंने उसे बाई नेम बुलाया था, विश किया था, घूम कर तो देखा होता! वो तो हवा से बातें करती वहां से भागी।"

"चिकोटी ही काटी ही थी न!"–हेमा बोली–"बांह पर! कुछ और तो नहीं किया था?"

"कुछ और क्या?"

"रात और तनहाई का कोई फायदा उठाने की कोशिश तो नहीं की थी?"



Scanned by CamScanner

"वाट नानसेंस! आप मेरे से ऐसी उम्मीद करती हैं?"
"नटखट तो, भई, हो तुम!"
"नटखट होने का मतलब क्या सैक्सुअल असाल्ट होता है?"
"अरे नहीं, भई..."
"मैं आपको ऐसा बेगैरत शख्स लगता हूं? मैं सैक्स मैनियाक हूं?"
"तुम तो बुरा मान गये!"
अनुराग खामोश रहा।
"तुम चुपचाप, दबे पांव उस लड़की के पीछे पहुंचे और वो हरकत... उसे विश किया या जो भी किया...उसका डर जाना क्या बड़ी बात थी, उसका भाग..."
"चुपचाप न पहुंचा।"–अनुराग के स्वर में फिर विरोध का पुट आया–"दबे पांव न पहुंचा।"
"अब छोड़ो, यार।"–शेखर बोला–"चाय की तरफ तवज्जो दो। इस बात की तो कद्र करो कि श्रेया ने बनाई है..."
"खास मेरे लिये नहीं।"
"सबसे पहले तुम्हें दी।"
"क्योंकि मैं ऐन वक्त पर पहुंचा। थोड़ा लेट आया होता तो आप लोग चाय पी रहे होते या पी चुके होते।"
"बड़े नाशुक्रे हो, यार। श्रेया, इससे चाय वापिस ले ले और इसके लिये नयी, एक्सक्लूसिव, स्पैशल चाय बनाकर ला।"
"नो! नैवर!"
"तो फिर छोड़ो ये किस्सा। बोलो, होने वाली बीवी के हाथ की बनी चाय कुबूल।"
"कुबूल।"
"शुक्रिया!"
"शुक्रिया।"
"देट्स लाइक ए गुड ब्यॉय। अब बोलो, कत्ल की क्या खबर है?"
"मुझे कोई खबर नहीं।"
"एकता शुक्ला की क्या खबर है?"
"मुझे कोई खबर नहीं।"
"मेरे खयाल से"–हेमा बोली–"वो अभी भी पुलिस के कब्जे में है।"
"अभी भी?"–शेखर बोला।



Scanned by CamScanner

"मेरे खयाल से।"

"क्यों भला?"

"सोचो।"

शेखर ने अनुराग की तरफ देखा।

"गुनहगार होगी।"–अनुराग धीरे से बोला–"खामखाह तो पुलिस की ऐसी नजरेइनायत किसी पर होती नहीं! खामखाह तो पुलिस किसी के पीछे पड़ती नहीं!"

"खामखाह भी पड़ती है, हमारी पुलिस खामखाह भी पड़ती है।"

"हमेशा नहीं।"

"अब क्या कहूं?"

"कहने लायक बात ये है"–हेमा बोली–"कि वो लड़की अभी भी गिरफ्तार है। सारे इलाके में उसकी गिरफ्तारी की चर्चा है, घर आ गयी होती तो रिहाई का भी चर्चा होता।"

"जैसी करनी वैसी भरनी।"–श्रेया बोली।

वो वार्तालाप उससे आगे न चला।

❑❑❑

सुबह सवेरे इलाके में दूध की बोतलें बांटने वाले छोकरे ने आकर जॉन अंकल के दरवाजे पर दस्तक दी।

दूध की बोतल वो बन्द दरवाजे पर भी छोड़कर जा सकता था लेकिन उस रोज उसने उसे एक खास मैसेज डिलीवर करना था।

बी–6/702 के पराशर साहब का, जिनकी कि गाड़ी स्टार्ट नहीं हो रही थी और जिन्होंने अपने दामाद को रिसीव करने एयरपोर्ट जाना था।

इतनी सुबह सवेरे उस बाबत कुछ कर सकता था तो जॉन अंकल ही कर सकता था जिसको वो मैसेज पहुंचाने का काम पराशर साहब ने तब उसे सौंपा था जबकि वो उनके यहां दूध डिलीवर करने पहुंचा था।

कोई जवाब न मिला।

छोकरे ने पहले से ज्यादा जोर से दस्तक दी।

जवाब नदारद।

क्या माजरा था?

सर्दियों के मौसम में इतनी सुबह सवेरे क्या इलाके में कहीं और भी



Scanned by CamScanner

कोई इमरजेन्सी आ गयी थी और जॉन [illegible]
लिया गया था?

होने को तो वो हो सकता था लेकिन फिर भी उसने तसदीक [illegible]
का फैसला किया।

मैसेज डिलीवर करने की उसे दस रुपये टिप भी तो मिली थी
जिसका उसने हक अदा करना था।

उसने दरवाजे को धक्का दिया, वो खुल गया तो उसने चौखट पर
से भीतर झांका।

भीतर बल्ब जल रहा था जिसकी रोशनी में जॉन अंकल उसे
तख्तपोश पर लुढ़का पड़ा दिखाई दिया।

पूरे कपड़े पहने।

कोट पतलून पुलोवर, मफलर सब पहने।

जूते तक पहने।

दीन दुनिया से बेखबर वो तख्तपोश पर पड़ा था।

'पता नहीं कितनी पी गया बुढ़ऊ रात को'–वो बड़बड़ाया–'जो
वहां आते ही ढेर हो गया और तब भी ढेर पड़ा था।'

''जॉन अंकल!''–उसने आवाज लगाई–''क्या पूरी बोतल चढ़ा
ली थी?''

जॉन अंकल पर कोई प्रतिक्रिया न हुई।

फिर छोकरे को ये बात खटकी कि वो कुछ ओढ़े हुए नहीं था।
इतनी ठण्ड के मौसम में कुछ ओढ़े हुए नहीं था।

झिझकते हुए उसने भीतर कदम डाला।

आधे रास्ते में वो थमक कर खड़ा हो गया। उसके नेत्र फैले।

फिर तख्तपोश का बाकी का फासला उसने एक ही छलांग में
पार किया और झुककर जॉन अंकल के निश्चेष्ट शरीर का मुआयना
किया।

''हे भगवान!''–उसके मुंह से निकला–''हे भगवान!''

जॉन अंकल की पथराई आंखें शून्य में कहीं टिकी हुई थीं और
अपनी कहानी खुद कह रही थीं। वो यकीनी तौर पर उसके सामने
तख्तपोश पर मरा पड़ा था। उसका मुंह खुला था और उसका चेहरा
वेदना से विकृत हुआ जान पड़ता था। उसके एक गाल पर दो होंठों
के आकार में लगी लिपस्टिक उसे बहुत डरावनी जान पड़ रही थी।
उसके होंठों की कोरों पर भूरा भूरा सा, गाढ़ा गाढ़ा सा कुछ लगा हुआ
था, बहुत हिम्मत करके झुककर जिसका उसने मुआयना किया।



Scanned by CamScanner

चॉकलेट!

हे भगवान! क्या माजरा था!

फिर एकाएक वो घूमा और बाहर को लपका।

माजरा अब कुछ कुछ उसकी समझ में आ रहा था। जोरबाग रोड वाले कत्ल की वारदात से वो नावाकिफ नहीं था और वो उसे भूल भी नहीं गयी हुई थी। उसका दिल गवाही दे रहा था कि भीतर मकबरे में उसने उसी वारदात की पुनरावृत्ति देखी थी।

वो अपनी साइकिल के करीब पहुंचा जिसके कैरियर पर दूध के क्रेट लदे थे और अपने सप्लाई के राउन्ड को छोड़ कर जिस पर अब उसने थाने पहुंचना था।

इत्तफाकन उस जहमत से वो बच गया।

तभी सड़क पर से एक पीली मोटरसाइकल गुजरी जिस पर दो बावर्दी पुलिसिये–एक हवलदार और एक सिपाही–सवार थे।

दोनों छोकरे को पहचानते थे।

मोटरसाइकल उसके पहलू में रुकी।

"क्या बात है, राजबीर?"–हवलदार बोला–"भूत देख लिया सवेरे सवेरे?"

"अरे, हवलदार साहब"–छोकरा कांपता सा बोला–"भूत ने न डराया होता इतना।"

हवलदार सकपकाया।

"क्या हुआ?"–वो छोकरे को घूरता हुआ बोला।

"वो अपना जॉन अंकल..."

"जो मकबरे में रहता है?"

"वही।"

"क्या हुआ उसे?"

"खत्तम।"

"क्या!"

"भीतर मरा पड़ा है।"

"क्या बकता है?"

"खुद देख लो जाकर।"

"अरे, टुन्न होगा! रात की अभी उतरी नहीं होगी।"

"मरा पड़ा है।"

"ससुरा पीता ही घनी था।"–सिपाही बोला–"वा जैसे हेंकड़ सराबी का सोते में टें बोल जाना का बड़ी बात है!"



Scanned by CamScanner

"वो ऐसे नहीं मरा।"

"तो और कैसे मरा?"–हवलदार बोला–"ताप चढ़ा?"

"कत्ल...कत्ल हुआ।"

"क्या बकता है?"

"ऐन वैसे ही जैसे वो दूसरा जना परसों जोरबाग रोड पर खड़ी अपनी कार में मरा पाया गया था।"

"अबे, क्या लम्बी लम्बी छोड़ रहा है?"

"साहब जी, लिपस्टिक, चॉकलेट, सब की हाजिरी है।"

"बावला हो गया ये।"–सिपाही अपने जोड़ीदार हवलदार से बोला–"वो जॉन अंकल...साला साठ साल का है। कौन जवान छोरी भला वा को चुम्मा देगी!"

"साहब जी, हाथ कंगन को आरसी क्या! चल के देखो न!"

"चलते हैं।"–हवलदार बोला–"लेकिन फट्टा निकला तो साले, दुम ठोक दूंगा।"

मोटरसाइकल वहीं छोड़कर पुलिसिये छोकरे के साथ पार्क में दाखिल हुए और आगे मकबरे में पहुंचे।

जहां फौरन उनके मिजाज में तब्दीली आयी।

"कमाल है!"–हवलदार के मुंह से निकला–"इस मैले कुचैले बुढ़ऊ पर कौन लड़की मेहरबान हो गयी!"

"वैसे"–सिपाही धीरे से बोला–"पिछले वाले केस की ऐन कार्बन कापी दीख रही है या तो। सिवाय दोनों सिकारों की उम्र के, हैसियत के, रखरखाव के।"

"लेकिन जॉन पाब्लो! सारे इलाके का अंकल!"

"जगत अंकल!"

"वही। और जहां तक कार्बन कापी का सवाल है, एक फर्क है।"

"के?"

"ये कारनामा एकता शुक्ला का नहीं हो सकता।"

"वा तो थाने में बन्द है!"

"हां। रात भर वहीं थी। अभी भी वहीं है।"

"ठीक। वा का कारनामा तो ये न हो सके है।"

हवलदार ने कुछ क्षण और मौकायवारदात की निगाहबीनी की, फिर बाहर निकलकर दरवाजा बन्द किया और छोकरे से बोला–"राजबीर, मैं थाने जा रहा हूं। तूने सुलतान सिंह के साथ"–उसने सिपाही की तरफ इशारा किया–"यहीं रुकना है।"



Scanned by CamScanner

"अरे, साहब जी"–छोकरा हड़बड़ाकर बोला–"मैंने दूध बांटना है।"

"इधर ही रुकना है।"

"साहब जी, मेरे ग्राहक नाराज हो जायेंगे।"

"सुना नहीं!"

"ये तो धान्धली है।"

"है तो है।"

"लेकिन..."

"अबे, साले! नहीं बरामद करनी थी लाश!"

"अब मुझे क्या पता था कि..."

"अब चुप करता है या दूं एक कनपटी पर!"

छोकरा सहम का चुप हुआ।

नये कत्ल की खबर जंगल की आग की तरह इलाके में फैली।

सुबह की उस घड़ी हर कोई घर पर था इसलिये हर किसी तक वो खबर पहुंची। तकरीबन लोगों के दिन की तो शुरूआत ही उस खबर के साथ हुई।

ऐसे लोगों में विवेक आगाशे का भी शुमार था।

जॉन अंकल उर्फ जॉन पाब्लो से आगाशे भी नावाकिफ नहीं था–आखिर इलाके का पुराना बाशिन्दा था–वो भी हर किसी की तरह जॉन अंकल के कत्ल की खबर से हैरान हुआ लेकिन ज्यादा हैरान कत्ल के हालात की बाबत सुन कर हुआ।

वो मार्निंग वॉक से लौटा था जबकि पड़ोसी से वो खबर उसे सुनने को मिली थी।

"गाल पर लिपस्टिक!"–आगाशे ने मन्त्रमुग्ध भाव से दोहराया–"मुंह पर चॉकलेट! यू श्योर, मिस्टर शिवारामन?"

"डैम श्योर, सर।"–पड़ोसी बोला–"अपना न्यूजपेपर वाला न्यूज लाया। विल ही लाई टु मी?"

"नो, ही विल नॉट।"

"सो देयर।"

"ये भी डेफिनिट कि मकतूल..."

"वाट?"

"मर्डर्ड मैन। मरने वाला।"

"ओह, दैट। मक...मक..."



Scanned by CamScanner

"मकतूल। ये भी श्योर कि मरने वाला जॉन अंकल?"

"बट आफकोर्स। एग्जैक्टली लाइक दैट अनफार्चूनेट मैन हू वाज फाउन्ड डैड इन हिज कार..."

"परमीत मेहरा।"

"यस। ऐग्जैक्टली सिमिलर केस।"

"आई सी।"

"सो किलर स्ट्राइक्स अगेन।"

"खबर कैसे लगी?"

"मिल्कमैन फाउन्ड हिम। अपना डिलीवरी रूट पर था, उधर भी डिलीवर करता था। ही डिस्कवर्ड दि बाडी। सेम सीन, मिस्टर आगाशे, सेम सीनेरियो..."

"बट रांग विक्टिम।"

"वाट्स दैट?"

"विक्टिम के तौर पर जॉन अंकल और परमीत मेहरा में कोई मेल नहीं। परमीत मेहरा पढ़ा लिखा था, मॉर्डन था, उसका रखरखाव फैंसी था, उसका कोई सोशल स्टेटस था। दिस चैप–जॉन अंकल–ही वाज नोबॉडी। वो बेऔकात, बेहैसियत आदमी था, जिसको तरीके से सिर पर छत तक मुहैया नहीं थी, जिसे कोई उम्दा रोजगार तक हासिल नहीं था। कुछ भी तो नहीं मिलता दोनों में, सिवाय इसके कि आप जॉन अंकल का कत्ल भी ऐन परमीत मेहरा की तरह हुआ बताते हैं।"

"नाट मी, नाट मी, मिस्टर आगाशे। अपना पेपरवाला ऐसा बोला।"

"परमीत मेहरा के कत्ल की फिर कोई वजह थी, इस शख्स के–जो न तीन में न तेरह में..."

"टोटल सिक्सटीन यू मीन!"

"वाट!"

"तीन बोला न, मिस्टर आगाशे! तेरह बोला! दैट मेक्स सिक्सटीन इन आल।"

"अरे नहीं मिस्टर शिवारामन, वो मुहावरा है।"

"क्या है?"

"फ्रेज! ईडियम!"

"आई सी। न तीन में न तेरह में। गुड!"

"मैं कह रहा था कि इस शख्स के–जॉन अंकल के, जो न



Scanned by CamScanner

तीन में है न तेरह में–कत्ल की तो कोई वजह भी दिखाई नहीं देती।''

''यू आर राइट।''

''आपने कभी देखा उसे?''

''यस। सैवरल टाइम्स। ऑड जॉब्स के लिये आता था न!''

''फिर तो आपको मालूम ही होगा कि वो एक मैला कुचैला उम्रदराज गोवानी था।''

''यस। पुअर मैन। हम्बल मैन।''

''ऐसे शख्स का कत्ल हुआ, आप उसे अपने उस खण्डहर मकबरे में मरा पड़ा पाया गया बताते हैं...''

''नॉट मी। दैट पेपरवाला...''

''परमीत मेहरा की तरह उसके गाल पर लिपस्टिक पुते होंठों की छाप बनी बताते हैं। क्या मतलब हुआ इसका?''

''क्या मतलब हुआ? वॉट डज़ इट मीन, मिस्टर आगाशे? यू टैल मी।''

''पुलिस बोलती है कि परमीत मेहरा के साथ कार में कोई नौजवान लड़की थी। कोई नौजवान, विलिंग, लड़की थी जिसके साथ परमीत मेहरा कोई मौजमस्ती कर रहा था, या करने की कोशिश कर रहा था। उसी लड़की ने परमीत मेहरा के गाल पर अपने होंठों की छाप छोड़ी। उसी ने मनुहार से परमीत मेहरा को वो चॉकलेट खिलाई जिसके भीतर जहरभरा कैप्सूल था।''

''यस, दैट्स पोलीस वर्शन।''

''सेम ट्रीटमेंट किसी नौजवान लड़की ने जॉन अंकल को दिया, ये कोई यकीन में आने की बात है! परमीत मेहरा की ही तरह किसी लड़की ने उस उम्रदराज, बेहैसियत शख्स के साथ लिपट कर उसे चुम्बन से नवाजा और फिर वैसे ही मनुहार से उसे जहरभरी चॉकलेट खिलाई, ये कोई मानने की बात है!''

''यू हैव ऐ प्वायन्ट देयर, मिस्टर आगाशे। नो यंग गर्ल वुड एम्ब्रेस एण्ड किस ए पुअर डर्टी ओल्ड मैन लाइक जॉन अंकल। दिस प्रूव्ज ओनली वन थिंग?''

''वाट्स दैट।''

''ये किसी मेनियाक का काम। किसी के इधर''–पड़ोसी ने एक उंगली से अपनी कनपटी ठकठकाई–''प्राब्लम! समथिंग टेरीबली रांग। कोई छोकरी मेंटल जो बिना सोचे समझे मर्डर करता है, जो ईर्ज



Scanned by CamScanner

टार्गेट दिखाई दे उसको हिट करता है, डजंट पे टू हूदस हू गैदस किल्ड! अपनी कनवीनियंस से स्ट्राइक करता है।''

''जिसने जॉन अंकल को अपने शिकार के तौर पर इसलिये चुना क्योंकि वो अकेला रहता था, खण्डहर मकबरे के जिस कमरे में वो रहता था उसको ठीक से कुंडी तक नहीं लगती थी, जिस तक खुफिया तरीके से पहुंच बनाना निहायत आसान था।''

''बट आफकोर्स।''

''लेकिन मिस्टर शिवारामन, दोनों का–परमीत मेहरा का और जॉन अंकल का–कातिल एक जना तो नहीं हो सकता! आई मीन एक जनी तो नहीं हो सकती!''

''वाई सो?''

''पहले केस में एकता शुक्ला नाम की जो लड़की मर्डर सस्पैक्ट है, वो पुलिस की हिरासत में है और अभी भी थाने में हाजिरी भर रही है।''

''आर यू श्योर?''

''यस, आई एम।''

''मैं बोले तो पुलिस उस लड़की को लास्ट नाइट किसी टेम रिलीज किया।''

''ऐसा?''

''दिस इज ए पासिबलिटी।''

''मैं मालूम करूंगा।''

आगाशे थाने पहुंचा।

मालूम हुआ सब–इन्स्पेक्टर पुनीत बहल मौकायवारदात पर था।

लेकिन एस.एच.ओ. हरिशंकर मीना थाने में अपने ऑफिस में मौजूद था।

उसने अनमने भाव से आगाशे को रिसीव किया और कुर्सी पेश की।

''एक और कत्ल?''–आगाशे बोला।

''हां।''–एस.एच.ओ. बोला–''अच्छा थाना मिला। ताबड़तोड़ एक नहीं, दो कत्ल की वारदात हो गयीं।''

''सारी दिल्ली का ही क्राइम ग्राफ राइज पर है।''–आगाशे सहानुभूतिपूर्ण स्वर में बोला।

''मैं तो अपने थाने के लिये जवाबदेय हूं न! मेरी ये सफाई कौन



Scanned by CamScanner

सुनेगा कि सारी दिल्ली में ही क्राइम का बोलबाला है! कौन सुनेगा इन वारदातों ने तब भी होना था जबकि मेरी यहां ट्रांसफर न हुई होती!''

''ठीक। सुना है ये कत्ल पिछले कत्ल की कार्बन कापी है!''

''ठीक सुना है आपने।''

''एकता शुकला की क्या पोजीशन है?''

''अभी यहीं है।''

''ओह!''

लिहाजा जॉन अंकल की कातिल वो नहीं हो सकती थी।

''लेकिन अब तो छोड़ना पड़ेगा।''–एस.एच.ओ. बोला।

''क्योंकि नया कत्ल पिछले की कार्बन कापी होते हुए भी उसने किया नहीं हो सकता?''

''हां।''

''क्योंकि पिछले कत्ल में भी उसके खिलाफ मजबूत कुछ नहीं है आपके पास?''

''ये बात भी है ही काफी हद तक। अलबत्ता मैं शर्त बद कर कह सकता हूं कि वो लड़की कुछ छुपा रही है। ऐसा कुछ छुपा रही है जो कि तफ्तीश के लिये अहमतरीन साबित हो सकता है।''

आगाशे ने कहना चाहा कि पुलिस का उसे गिरफ्तार करना ही गलत था लेकिन खामोश रहा। वो पुलिस को अपने खिलाफ करने वाली बात होती और ऐसा वो नहीं चाहता था।

एस.एच.ओ. ने कालबैल बजाई।

एक हवलदार पेश हुआ।

''उस लड़की को लाओ।''–एस.एच.ओ. ने हुक्म दिया।

''कौन सी लड़की को, साहब जी?''–हवलदार ने अदब से पूछा।

''तेरे को नहीं मालूम?''–एस.एच.ओ. गुस्से से बोला।

''साहब जी, कोई नाम तो लिया नहीं आपने!''

''लॉकअप में दस बीस लड़कियां बंद हैं?''

हवलदार हड़बड़ाया, उसने थूक निगली।

''एकता शुक्ला?''–फिर बोला।

''साले! पुलिस की ही नौकरी के काबिल है।''

हवलदार भुनभुनाता हुआ वहां से रुखसत हुआ।

एस.एच.ओ. से झाड़ पड़ना कोई बड़ा वाकया नहीं था लेकिन उसे एक गैर की मौजूदगी में झाड़ पड़ी थी।



Scanned by CamScanner

एकता शुक्ला वहां पहुंची।

उसकी सूरत पर थकान स्पष्ट रूप से अंकित थी लेकिन आंखों में जीत की चमक थी। शायद उसे अहसास हो गया था–या हवलदार ने कुछ बोला था–कि उसे रिहा किया जा रहा था।

"बैठो।"–एस.एच.ओ. बोला।

"क्यों?"–वो भुनभुनाई।

"ठीक है, खड़ी रहो।"

वो धम्म से एक कुर्सी पर ढेर हुई, एक उड़ती निगाह उसने आगाशे पर डाली और फिर एस.एच.ओ. की तरफ तवज्जो दी।

"तुम्हें रिहा किया जा रहा है।"–एस.एच.ओ. बोला।

"बधाई।"–वो व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली।

"खुद को बधाई दे रही हो?"

"आपको बधाई दे रही हूं।"

"मुझे! मुझे किसलिये?"

"अक्ल आ गयी आपको आखिरकार।"

"वाट नानसेंस!"

"सूझ गया कि आप मुझे थामे नहीं रह सकते। सूझ गया कि आप पर फाल्स अरैस्ट का, आप कहेंगे मैं गिरफ्तार नहीं हूं तो इललीगल कनफाइनमेंट का, मुकद्दमा दायर हो सकता है।"

"क्या!"

"सो देयर।"–वो शान से बोली।

"इतना बढ़ बढ़ के नहीं बोलना चाहिये।"–एस.एच.ओ. बड़े सब्र से बोला।

"अच्छा!"

"और दान की बछिया के दान्त नहीं गिनने चाहियें।"

"क्या मतलब हुआ इसका?"

"समझो। बड़ी बड़ी बातों के मतलब समझती हो, इसका नहीं समझती?"

"मैं सब समझती हूं।"

"कुछ नहीं समझती हो। नहीं समझती हो कि पुलिस से बैर मोल लोगी तो कुछ साबुत नहीं बचेगा। मुझे हड़काओगी तो नतीजा झेला नहीं जायेगा। कहीं बन्द करके चाबी खो दूंगा। हफ्तों ढूंढ़े नहीं मिलोगी किसी को। फिर बोलना सारे हिमायतियों को आकर हथेली लगा लें।"



Scanned by CamScanner

वो खामोश रही।

"अब इससे पहले कि तुम्हारी बाबत मेरा खयाल बदल जाये, निकल लो।"

"मेरा पैसा वापिस करो।"–वो हिम्मत करके बोली।

"पैसा!"

"जो कूरियर से मेरे घर पर आया। जो आपके एस.आई. ने नाजायज तरीके से रिसीव किया।"

एस.एच.ओ. ने सहमति में सिर हिलाया। उसने हवलदार को बुलाकर उस बाबत निर्देश दिया।

"अब ऐसा क्या हो गया है"–वो बोली–"जो आप एकाएक कभी नर्म कभी गर्म रुख अख्तियार करने लगे है?"

"नर्म गर्म रुख?"–एस.एच.ओ. बोला।

"और क्या? कभी रिहाई की बात करके अपनी गलती कुबूल करते जान पड़ते हैं, कभी फिर कड़क बोलने लगते हैं। कभी पुचकारते जान पड़ते हैं, कभी धमकाने लगते हैं। अगर ये सब इसलिये कर रहे हैं कि आपके खिलाफ कोई कार्यवाही न हो तो ऐसा नहीं होने वाला।"

"कार्यवाही?"

"पुलिस कमिश्नर तक तो मैं पहुंचूंगी ही, होम मिनिस्ट्री को भी अप्रोच करूंगी..."

"फिर शुरू हो गयी!"

"हद होती है किसी बात की। मुझे यहां बिठा कर रखा सो रखा, मेरे फ्लैट का ताला खोल लिया, भीतर घुस कर तलाशी ली। क्या पता कुछ बरामद करने के लिये ली या कुछ खुद प्लांट कर देने के लिये ली। मेरी डाक रिसीव कर ली। मेरा दो लाख रुपया कब्जा लिया..."

तभी हवलदार नोटों से भरे पीले लिफाफे के साथ वहां लौटा। एस.एच.ओ. के निर्देश पर उसने लिफाफा लड़की के सामने रख दिया।

लड़की ने व्यग्रता से लिफाफा उठाया और उसका मुंह खोल कर भीतर झांका।

"राजी!"–एस.एच.ओ. बोला।

"पता नहीं पूरे भी है कि नहीं!"–वो बोली।

आगाशे को साफ लगा कि एस.एच.ओ. फट पड़ने लगा था लेकिन बड़े यत्न से उसने खुद पर काबू किया।



Scanned by CamScanner

लापरवाही का पुट आ गया–"ये थोथा चना बाजे घना वाली बात है, असल में तो वो खुश हो रही होगी कि सस्ते में छूटी। बढ़ बढ़ के बोलना और सच में पुलिस से पंगा लेना एक ही बात नहीं होती, ये क्या वो जानती नहीं होगी!"

"नहीं जानती होगी तो जान जायेगी।"

"बिलकुल! तफ्तीश के सिलसिले में, खासतौर से कत्ल के केस में, पुलिस के पास बेशुमार अख्तियारात होते हैं। बतौर सस्पैक्ट किसी को भी–एक या एक से ज्यादा लोगों को भी–हिरासत में लिया जा सकता है, हिरासत में रखा जा सकता है। लड़की ने मीडिया का रुख भी किया तो फिर गिरफ्तार होगी और मीडिया को भी पुलिस का यही जवाब होगा कि वो मर्डर सस्पैक्ट है। फिर उलटे हम मीडिया के सामने लड़की की ढिठाई को हाईलाइट कर रहे होंगे कि वो परमीत मेहरा के कत्ल की बाबत अहमतरीन कुछ जानती है जिसे वो जुबान पर लाने को तैयार नहीं। फिर बाल लड़की के पाले में होगी। वो मीडिया से भी अपनी जानकारी शेयर करने से इनकार करेगी, तो मीडिया उसका नहीं, पुलिस का तरफदार होगा।"

"नाइस स्ट्रेटेजी। बहरहाल"–आगाशे उठ खड़ा हुआ–"मेरे यहां आने के पीछे जो मकसद था वो यही तसदीक करना था कि इस दूसरे कत्ल के वक्त लड़की–एकता शुक्ला–अन्दर थी या बाहर थी जो कि हल हुआ। अब इजाजत दीजिये।"

एस.एच.ओ. ने सहमति में सिर हिलाया।

आगाशे मौकायवारदात पर पहुंचा।

सब–इन्स्पेक्टर पुनीत बहल अपने मातहतों के साथ तब भी वहां मौजूद था।

लाश तब तक उठवाई नहीं गयी थी इसलिये आगाशे को भी उस पर निगाह डालने का मौका हासिल हो गया।

वो कत्ल बिलाशक पहले कत्ल की कार्बन कापी था।

"क्या पता लगा?"–उसने सब–इन्स्पेक्टर से सवाल किया।

"अभी कुछ खास नहीं।"–बहल बोला–"सिवाय इसके कि सोते में ही काम हो गया। पूछताछ से मालूम पड़ा है कि कल रात ये बाहर से पी के आया था और काफी लेट यहां लौटा था। आते ही बिना कपड़े उतारे तख्तपोश पर पड़ गया था, ये इस बात की तरफ इशारा



Scanned by CamScanner

है कि फुल टुन्न था। जान भी उसकी नींद में ही गयी जान पड़ती है।''

''अच्छा!''

''हां। कातिल–मर्द या औरत, जो कोई भी था–चुपचाप यहां पहुंचा था, भीतर दाखिल हुआ था और तख्तपोश पर बेसुध पड़े इस शख्स के सिर पर आन खड़ा हुआ था और जहरभरी चॉकलेट सोते में ही इसके मुंह में धकेल दी गयी थी।''

''सोते में इसने चॉकलेट चबाई कैसे होगी?''

''कहां चबाई! मुंह चॉकलेट से भरा हुआ है, वो बाहर बह रही है। कातिल ने चॉकलेट मुंह में धकेल कर जबड़ा बस इतना, और इतनी देर, कस दिया होगा कि जहरभरा कैप्सूल टूट जाता, जहर बाहर निकल आता और उसके हलक में बह जाता। ये थोड़ा बहुत ही तड़पा होगा, थोड़े बहुत ही हाथ पांव इसने झटके होंगे जिनको काबू में रखना कातिल के लिये मामूली काम रहा होगा। फिर सब खत्म!''

''गाल पर लिपस्टिक लगे होंठों की छाप?''

''बाद में बनाई गयी। क्या मुश्किल काम था! मुर्दा क्या एतराज करता?''

''फिर ये प्यार मनुहार वाला सिलसिला तो न हुआ?''

''मैं इस शख्स की किसी नौजवान माशूक के साथ सोहबत की कल्पना नहीं कर सकता।''

''केस को जानबूझ कर पहले वाले केस जैसी शक्ल देने की कोशिश की गयी?''

''जाहिर है।''

''ताकि ये कत्ल भी उसी शख्स का कारनामा लगता जिसने पहले परमीत मेहरा का कत्ल किया था?''

''हां।''

''एकता शुक्ला का? जिस पर पुलिस की नजरेइनायत थी?''

''हां।''

''लेकिन वो तुम्हारे थाने में बंद थी!''

''कातिल को इस बात की खबर नहीं होगी।''

''होती तो वो क्या करता?''

''तो यकीनन अपनी स्ट्रेटेजी में कोई तब्दीली लाता। और नहीं तो एकता शुक्ला के रिहा होने का इन्तजार करता। पी कर टुन्न होना तो मकतूल का रोज का शगल था इसलिये ये तो कहा नहीं जा सकता कि



Scanned by CamScanner

लापरवाही का पुट आ गया–"ये थोथा चना बाजे घना वाली बात है, असल में तो वो खुश हो रही होगी कि सस्ते में छूटी। बढ़ बढ़ के बोलना और सच में पुलिस से पंगा लेना एक ही बात नहीं होती, ये क्या वो जानती नहीं होगी!"

"नहीं जानती होगी तो जान जायेगी।"

"बिलकुल! तफ्तीश के सिलसिले में, खासतौर से कत्ल के केस में, पुलिस के पास बेशुमार अख्तियारात होते हैं। बतौर सस्पैक्ट किसी को भी–एक या एक से ज्यादा लोगों को भी–हिरासत में लिया जा सकता है, हिरासत में रखा जा सकता है। लड़की ने मीडिया का रुख भी किया तो फिर गिरफ्तार होगी और मीडिया को भी पुलिस का यही जवाब होगा कि वो मर्डर सस्पैक्ट है। फिर उलटे हम मीडिया के सामने लड़की की ढिठाई को हाईलाइट कर रहे होंगे कि वो परमीत मेहरा के कत्ल की बाबत अहमतरीन कुछ जानती है जिसे वो जुबान पर लाने को तैयार नहीं। फिर बाल लड़की के पाले में होगी। वो मीडिया से भी अपनी जानकारी शेयर करने से इनकार करेगी, तो मीडिया उसका नहीं, पुलिस का तरफदार होगा।"

"नाइस स्ट्रेटेजी। बहरहाल"–आगाशे उठ खड़ा हुआ–"मेरे यहां आने के पीछे जो मकसद था वो यही तसदीक करना था कि इस दूसरे कत्ल के वक्त लड़की–एकता शुक्ला–अन्दर थी या बाहर थी जो कि हल हुआ। अब इजाजत दीजिये।"

एस.एच.ओ. ने सहमति में सिर हिलाया।

आगाशे मौकायवारदात पर पहुंचा।

सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल अपने मातहतों के साथ तब भी वहां मौजूद था।

लाश तब तक उठवाई नहीं गयी थी इसलिये आगाशे को भी उस पर निगाह डालने का मौका हासिल हो गया।

वो कत्ल बिलाशक पहले कत्ल की कार्बन कापी था।

"क्या पता लगा?"–उसने सब-इन्स्पेक्टर से सवाल किया।

"अभी कुछ खास नहीं।"–बहल बोला–"सिवाय इसके कि सोते में ही काम हो गया। पूछताछ से मालूम पड़ा है कि कल रात ये बाहर से पी के आया था और काफी लेट यहां लौटा था। आते ही बिना कपड़े उतारे तख्तपोश पर पड़ गया था, ये इस बात की तरफ इशारा



Scanned by CamScanner

है कि फुल टुन्न था। जान भी उसकी नींद में ही गयी जान पड़ती है।''

''अच्छा!''

''हां। कातिल–मर्द या औरत, जो कोई भी था–चुपचाप यहां पहुंचा था, भीतर दाखिल हुआ था और तख्तपोश पर बेसुध पड़े इस शख्स के सिर पर आन खड़ा हुआ था और जहरभरी चॉकलेट सोते में ही इसके मुंह में धकेल दी गयी थी।''

''सोते में इसने चॉकलेट चबाई कैसे होगी?''

''कहां चबाई! मुंह चॉकलेट से भरा हुआ है, वो बाहर बह रही है। कातिल ने चॉकलेट मुंह में धकेल कर जबड़ा बस इतना, और इतनी देर, कस दिया होगा कि जहरभरा कैप्सूल टूट जाता, जहर बाहर निकल आता और उसके हलक में बह जाता। ये थोड़ा बहुत ही तड़पा होगा, थोड़े बहुत ही हाथ पांव इसने झटके होंगे जिनको काबू में रखना कातिल के लिये मामूली काम रहा होगा। फिर सब खत्म!''

''गाल पर लिपस्टिक लगे होंठों की छाप?''

''बाद में बनाई गयी। क्या मुश्किल काम था! मुर्दा क्या एतराज करता?''

''फिर ये प्यार मनुहार वाला सिलसिला तो न हुआ?''

''मैं इस शख्स की किसी नौजवान माशूक के साथ सोहबत की कल्पना नहीं कर सकता।''

''केस को जानबूझ कर पहले वाले केस जैसी शक्ल देने की कोशिश की गयी?''

''जाहिर है।''

''ताकि ये कत्ल भी उसी शख्स का कारनामा लगता जिसने पहले परमीत मेहरा का कत्ल किया था?''

''हां।''

''एकता शुक्ला का? जिस पर पुलिस की नजरेइनायत थी?''

''हां।''

''लेकिन वो तुम्हारे थाने में बंद थी!''

''कातिल को इस बात की खबर नहीं होगी।''

''होती तो वो क्या करता?''

''तो यकीनन अपनी स्ट्रेटेजी में कोई तब्दीली लाता। और नहीं तो एकता शुक्ला के रिहा होने का इन्तजार करता। पी कर टुन्न होना तो मकतूल का रोज का शगल था इसलिये ये तो कहा नहीं जा सकता कि



Scanned by CamScanner

कातिल को जो मौका आज हासिल था, वो दोबारा हासिल नहीं होने वाला था।''

''ठीक। इसके कत्ल के पीछे वजह क्या रही होगी?''

''सीरियल किलिंग तो वजह नहीं जान पड़ती। क्योंकि दोनों कत्लों के शिकारों में कैसी भी कोई समानता स्थापित नहीं है।''

''तो?''

''मेरे खयाल से इसका कत्ल इसका मुंह बंद करने के लिये किया गया।''

''क्या मतलब?''

''इत्तफाक से ये परमीत मेहरा के कत्ल की बाबत कुछ जान गया था। जॉन अंकल इस इलाके का खूब जाना पहचाना शख्स था और ये भी हर किसी से वाकिफ था। हो सकता है इसने कुछ देखा हो या कुछ सुना हो जिससे इसे उस लड़की की बाबत कोई अन्दाजा हो गया हो जिसने कि परमीत मेहरा का कत्ल किया था। इससे पहले कि इसे अपनी उस जानकारी की अहमियत का अहसास होता या ये उस पर कोई अमल कर पाता, उस लड़की ने–कातिला ने–इसका भी कत्ल कर दिया। सिवाय इसके इस दूसरे कत्ल की मुझे और कोई वजह नहीं दिखाई देती।''

''यानी की हत्यारी इस इलाके की ही रहने वाली है!''

''और जॉन अंकल उसे कैसे जानता हो सकता था? और जॉन अंकल को वो कैसे जानती हो सकती थी?''

''लिहाजा परमीत मेहरा के कत्ल की वजह कोई भी रही हो, जॉन अंकल के कत्ल की वजह स्पष्ट है?''

''हां।''

''जॉन अंकल हत्यारी के एक्सपोजर का जरिया बन सकता था?''

''हां।''

''हत्यारी कौन?''

''क्या पता?''

''कोई अन्दाजा?''

''क्या अन्दाजा हो सकता है! सिवाय इसके कि वो कोई नौजवान लड़की है जिस पर परमीत मेहरा ने निगाह मैली की थी।''

''ऐसी लड़कियों का यहां क्या घाटा होगा!''

''हां। इतना बड़ा इलाका है। इतनी बड़ी आबादी है, उनमें से एक



Scanned by CamScanner

तिहाई भी, एक चौथाई थी, नौजवान लड़कियां हो तो क्या एक एक को चैक करना मुमकिन होगा?''

''कहां!''

''मुमकिन होगा तो क्या कुछ हाथ आयेगा? किसी की फितरत, किसी की खसलत, उसके माथे पड़ तो लिखी नहीं होती!''

''यू आर राइट देयर।''

''पहले मैं तिलक नगर थाने में था। वहां दो महीने में एक के बाद एक तीन नौजवान नाबालिग लड़कियों का कत्ल हो गया था। पोस्टमार्टम में तीनों के साथ बलात्कार की पुष्टि हुई थी जिससे स्थापित होता था कि वो किसी सैक्स मैनियाक का कारनामा था जो कि उन लड़कियों से बाकायदा वाकिफ था इसलिये उसका उस इलाके का ही, लड़कियों के पास पड़ोस का ही, होना लाजमी थी। एक लम्बी तलाश के बाद अखिरकार जब वो पकड़ा गया था तो वो एक चूहे जैसा, मरघिल्ला सा आदमी निकला था जो कि इलाके में मनियारी की दुकान चलाता था, जो शादीशुदा था, तीन बच्चों का बाप था, दो टाइम गुरुद्वारे जाता था और सूरत से मक्खी भी मारने के नाकाबिल लगता था। कहने का मतलब ये है, जनाब, कि सूरत से क्या पता लगता है! जब मर्द ऐसा भोला गणेश हो सकता है, ऐसा छुपा रुस्तम हो सकता है तो औरत क्यों नहीं हो सकती?''

''यू आर एब्सोल्यूटली राइट देयर।''

''भोली भाली सूरत वाले होते हैं जल्लाद भी।''

''यू सैड इट, माई डियर। कहने का मतलब ये हुआ कि कातिला मुश्किल से ही पकड़ाई में आयेगी।''

''कोई करतब हो गया तो आसानी से भी आ सकती है।''

''लिहाजा करतब का, उसके होने का, इन्तजार करोगे।''

''ऐसा कहीं होता है!''

''वही तो। यहां की तलाशी हुई?''

''हां। रूटीन के तौर पर होनी ही थी।''

''कुछ हाथ लगा?''

वो मुस्कराया।

''लगता है लगा!''

''लगा तो सही।''

''क्या?''

''वही, कल शाम जिसकी एकता शुक्ला के फ्लैट में हमें तलाश



Scanned by CamScanner

थी। जिसके लिये उसकी इजाजत के बिना उसके फ्लैट में घुसने का खतरा मोल लिया था।''

''कोट!''–आगाशे के मुंह से स्वयंमेव निकला।

''सिर्फ कोट नहीं''–बहल विजेता के से स्वर में बोला–''महरून कलर का, चमड़े का, लेडीज कोट जिसकी मिल्कियत एकता शुक्ला ने अपनी जुबानी कुबूल की थी, जो उसके फ्लैट से बरामद होना चाहिये था लेकिन नहीं हुआ था।''

आगाशे मुंह बाये सब-इन्स्पेक्टर का मुंह देखने लगा।

''वैसा कोट''–फिर बोला–''यहां से बरामद हुआ!''

''वैसा नहीं, जनाब, वो...वो कोट यहां से बरामद हुआ।''

''कैसे कह सकते हो?''

''क्या कैसे कह सकता हूं?''

''यही कि जो कोट यहां से बरामद हुआ है, वो एकता शुक्ला का है!''

वो मुस्कराया।

फिर उसने कोट पेश किया।

''कहां से मिला?''–आगाशे ने पूछा।

''तख्तपोश के नीचे से।''

''हूं। लेकिन मेरा पहला सवाल अभी भी बरकरार है। कैसे मालूम कि ये कोट...यही कोट एकता शुक्ला का है?''

''ये रुमाल देखिये।''–उसने कोट की जेब से लेस के बार्डर वाला एक रेशमी रुमाल बरामद किया–''इस पर एक कोने में 'ई.एस.' कढ़ा हुआ है जो कि एकता शुक्ला के नाम के पहले अक्षर हैं, इनीशियल्स हैं।''

''ओह!''

''और ये देखिये!''–उसने वैसे ही एक लिपस्टिक बरामद की और पेश की–''लोरियल ब्रांड की चेरी रैड लिपस्टिक। जो मकतूल के गाल पर थुपी लिपस्टिक से ऐन मैच करती है।''

''हूं।''

''और ये देखिये क्या है!''–एक अन्य जेब से उसने चमड़े की टोपी बरामद की।

''कैप! मैंचिंग कैप!''

''ऐग्जैक्टली।''

''हूं।''



Scanned by CamScanner

"जमा, ये कोट पार्क से बरामद कोट जैसा नया भी नहीं है। ये साफ पुराना जान पड़ता है। लड़की के दावे की तसदीक करता कि उसका कोट पांच छः साल पुराना था। ये पुराना ही नहीं, खूब पहना हुआ है, इतना कि घिसा हुआ जान पड़ता है। कोहनियों से, पीठ पीछे से बदरंग जान पड़ता है। जब ये कोट एकता शुक्ला का ट्रेडमार्क बताया जाता है, उसकी शिनाख्त बताई जाती है, तो जाहिर है कि वो इसे खूब पहनती होगी।"

"ठीक।"

"अब बताइये, क्या कसर रह गयी ये स्थापित होने में कि ये कोट एकता शुक्ला का है?"

आगाशे ने उत्तर न दिया, उसने संजीदगी से रुमाल और लिपस्टिक का मुआयना किया।

"रुमाल पुराना है"–वो बड़बड़ाया–"वियर एण्ड टियर के निशानात साफ नुमायां हैं। अलबत्ता लिपस्टिक नयी है, बहुत कम इस्तेमाल हुई है। तो बमय कोट और कैप इन दोनों चीजों की यहां से बरामदी एकता शुक्ला के खिलाफ सबूत है?"

"मजबूत। अब मीना साहब को चार्ज लगा कर उसे बुक करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। अब नहीं छूटने की पट्ठी।"

"छूट चुकी।"

"क्या! क्या बोला?"

"मैं पहले थाने गया था। एस.एच.ओ. साहब ने मेरे सामने उस लड़की को रिहा किया था।"

"ओह! खैर, कोई बात नहीं। जायेगी कहां! फिर पकड़ लेंगे।"

"क्योंकि वो कातिल है?"

"और क्या है? इसी वजह से तो उसका अपनी एलीबाई पर जोर नहीं था, बताती नहीं थीं कि परमीत मेहरा के कत्ल के वक्त के आसपास वो कहां थी, किसके साथ थी? इनकार करने की वजह ये थी कि एलीबाई कोई थी ही नहीं। फर्जी दुहाई थी एलीबाई की। बहुत घुन्नी निकली साली! कैसे भोली बन के दुहाई दे रही थी कि उसके साथ जुल्म हो रहा था! दो दो कत्ल करके जाहिर कर रही थी जैसे कभी मक्खी नहीं मारी थी।"

"दो दो?"

"और क्या! ये कोट किसी तरह से जॉन अंकल के हाथ लग गया था, उसने इसे झट पहचाना था कि ये एकता शुक्ला का था। बरामद



Scanned by CamScanner

ये जरूर किसी ऐसी जगह से हुआ जो कि एकता शुक्ला के कातिल होने की तरफ इशारा था। उसको कोट के साथ–कातिल के खिलाफ इतने अहम सबूत के साथ–थाने पहुंचना चाहिये था लेकिन उसने इस बाबत एकता शुक्ला से बात करने की हिमाकत की। नतीजतन उसका मुंह बन्द करने के लिये लड़की ने उसका भी खून कर दिया।''

''कोट पीछे छोड़ दिया?''

''मिला नहीं होगा!''

''तख्तपोश के नीचे ही पड़ा बताते हो तो क्यों न मिला होगा?''

''ढूंढ़ने का मौका नहीं मिला होगा!''

''क्यों भला?''

''कोई आ गया होगा!''

''उसकी करतूत का चश्मदीद गवाह बनने के लिये?''

''अरे, जनाब यहां नहीं आ गया होगा, उसको किसी के इधर आते होने की आहट मिली होगी!''

''आधी रात को?''

''हो सकता है। इस पार्क को लोग इधर से उधर जाने के लिये शार्टकट के तौर पर भी तो इस्तेमाल करते हैं!''

''ऐसा शार्टकट मारने वाले का इस खंडडर से क्या मतलब, इसके भीतरी हालात से क्या मतलब?''

''आप तो, जनाब, बाल की खाल निकाल रहे हैं। बाहर से कोई आहट मिले तो कातिल का चौकन्ना होना, फौरन वहां से निकल लेने के बारे में सोचना, क्या बड़ी बात है!''

''अपना मिशन अधूरा छोड़कर? अपना कोट कब्जाये बिना?''

''मजबूरन।''

''आई सी।''

''क्यों कातिला को कोट की रिकवरी का खयाल छोड़ कर यहां से कूच कर जाना जरूरी लगा, ये तो वो ही बता सकती है। पकड़ाई में आयेगी तो पूछेंगे।''

''गुड! अब लगे हाथों ये भी बता दो कि थाने की हिरासत से निकल कर कत्ल करने के लिये वो यहां क्योंकर पहुंची?''

वो हड़बड़ाया।

''बस, यही एक घुंडी है''–फिर पूरी ढिठाई के साथ बोला–''जो निकल जाये तो मैं कहीं भी खड़ा होकर खम ठोक कर कह सकता हूं कि वो ही कातिल है।''



Scanned by CamScanner

"ये घुंडी नहीं कि कोर में जहरभरे कैप्सूल वाली चॉकलेट खड़े पैर उसके पास कहां से आयी?"

"वो गिरफ्तार नहीं थी, खाली पूछताछ के लिये उसे हिरासत में लिया गया था, इसलिये थाने में उसकी कोई तलाशी नहीं हुई थी। जहरभरी वो दूसरी चॉकलेट शुरू से उसके पास होगी।"

"जो तलाशी होती तो बरामद हो जाती?"

"अरे, जनाब, मैंने बोला न, वो गिरफ्तार नहीं थी। फिर तलाशी काहे को होती!"

"गिरफ्तार हो तो सकती थी! पुलिस का इरादा बदलते देर लगती है! गिरफ्तार होती तो उसके तमाम फिजीकल पोजेशन–जहरभरी चॉकलेट समेत–पुलिस के कब्जे में होते। चॉकलेट पर एक निगाह पड़ते ही तुम लोग क्या नतीजा निकालते, ये क्या किसी को आकर पुलिस को बताना पड़ता?"

बहल खामोश रहा।

"जिस 'साली' को अभी तुम 'घुन्नी' बता कर हटे हो, उससे तुम इतनी भी अक्ल की उम्मीद नहीं रखते कि चॉकलेट की सूरत में जो फौजदारी उसके पास थी, वो उससे पीछा छुड़ा लेती? जहां से जहर उसने एक बार हासिल किया था, वहां से बाद में, बावक्तेजरूरत, उसे दोबारा वो हासिल न कर पाती?"

बहल को जवाब न सूझा।

"घुंडियां और भी है, माई डियर। किसने दो लाख रुपये की मोटी रकम उस लड़की को भेजी और डिलीवर करने के लिये आम कूरियर सर्विस पर भरोसा किया? इतनी बड़ी रकम कोई किसी गैर को तो नहीं देता! भेजने वाला लड़की से वाकिफ था तो क्यों खुद आकर रकम उसे नहीं सौंप सकता था, या कलैक्ट करने के लिये लड़की को अपने पास नहीं बुला सकता था?"

बहल ने उन सवालों पर विचार किया।

"आप क्या कहते हैं?"–फिर मरे स्वर में बोला।

"रकम की औकात ही बताती है कि भेजनेवाला कोई रईस आदमी था। जिसका दो लाख रुपया कूरियर खा जाता तो उसके माथे पर शिकन न आती। नम्बर दो, वो उस लड़की से कोई वास्ता नहीं रखना चाहता था–न उसे पास बुलाना चाहता था, न खुद उसके पास जाना चाहता था–ऐसी लड़की उसकी मिस्ट्रेस ही हो सकती है।"

"मिस्ट्रेस!"



Scanned by CamScanner

"कीप! दास्ता! रखैल!"

"ओह!"

"जिससे, हालात ऐसे बन गये थे, वो अपना कोई लिंक बरकरार नहीं रखना चाहता था। वो उसकी परछाई से भी बचना चाहता था। एस.आई. साहब, लड़की अब आजाद है, इससे पहले कि पुलिस फिर उसे थाम ले, इस बारे में मैं उससे बात करूंगा। कोई एतराज?"

बहल का सिर स्वयंमेव इनकार में हिला।

अनुराग जोशी सिगरेट का पैकेट खरीदने के लिये घर से निकला था।

एक सिगरेट तत्काल सुलगा लेने का उसका दिल कर आया था। उसने सिगरेट सुलगाया था और उसके कश लगाता सड़क पर चहलकदमी करने लगा था।

सिगरेट खत्म होने तक थोड़ी हिलडुल, थोड़ी वॉक हो जाती तो क्या हर्ज था!

एकाएक उसे सड़क के पार फुटपाथ पर चलती एकता शुक्ला दिखाई दी। प्रत्यक्षत: वो अपने घर वापिस लौट रही थी। उसकी चाल में फुर्ती थी लेकिन उस घड़ी चेहरे पर वो रौनक दिखाई नहीं दे रही थी जो हमेशा दिखाई देती थी।

उसको उसकी गिरफ्तारी की खबर थी इसलिये ये देखकर वो खुश ही हुआ था कि आखिर वो पुलिस से निजात पा गयी थी और अब आजाद थी।

जरूर असली कातिल को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था।

टहलता हुआ वो फोर्थ एवेन्यू पहुंचा जहां कि सड़क पर आगे उसे एक पुलिस की जीप खड़ी दिखाई दी। जीप पार्क के उस तरफ के प्रवेश के ऐन सामने खड़ी थी। वो और करीब पहुंचा तो उसे अहसास हुआ कि पुलिस वालों की मौजूदगी का मरकज पार्क का खंडहर मकबरा था जिसके एक सलामत कमरे में, वो जानता था कि, जॉन अंकल रहता था।

सड़क के पार तमाशाईयों का जमघट लगा हुआ था जो जाहिर कर रहा था कि फिलहाल किसी को पार्क में कदम रखने की या खंडडर मकबरे के करीब फटकने की इजाजत नहीं थी।

वो करीब पहुंचा तो जीप और पार्क के बीच उसे सिपाही सुलतान



Scanned by CamScanner

सिंह खड़ा दिखाई दिया जो अपने बायें हाथ की कटोरी सी बना कर उसके भीतर छुपी बीड़ी के कश लगा रहा था।

"क्या हो गया है?"–अनुराग से उत्सुक भाव से पूछा।

सुलतान सिंह ने सिर उठाया, बीड़ी का आखिरी कश लगा कर उसे परे फेंका और खामोशी से प्रश्नकर्त्ता का मुआयना किया। सूरत उसे पहचानी हुई लगी लेकिन याद न आया कि वो कौन था।

"पार्क के आगे भीड़ है।"–अनुराग बोला–"सबकी निगाहों का मरकज खंडहर मकबरा जान पड़ता है। अपना जॉन अंकल तो खैरियत से है न?"

"न है खैरियत से।"–सिपाही सुलतान सिंह रुक्ष स्वर में बोला।

"क्यों? क्या हुआ?"

"मर गया।"

"क्या!"

"अरे, भई, मर गया।"

"कल तो सही सलामत था!"

"मारने वाले को न भाया वा का सही सलामत होना।"

"मारने वाला! क्या कह रहे हो?"

"मार के गेर दिया वा को किसी ने। खून कर दिया।"

"खून?"

"उस दूसरे बाबू साहेब की तरियों जो जोरबाग रोड पर खड़ी अपनी कार में मरा धरा मिला था।"

"कमाल है! जॉन अंकल जैसे भलेमानस का ऐसा कौन दुश्मन निकल आया?"

"वही जो कार वाले बाबू साहेब का–के नाम था? हां, परमीत मेहरा–था। ऐन उसी की तरियों तो मरा जान अंकल।"

"जहर से? चॉकलेट में मौजूद जहर के कैप्सूल से?"

"हां।"

"क्या कह रहे हो!"

"गाल पर लिपस्टिक का ठप्पा भी। जनाना होंठों की लाल सुर्ख छाप गाल पर–जैसे अंकल को जवानी आ गयी हो। ऐन परमीत मेहरा की तरियों। वैसे ही मुंह पर लगी चॉकलेट।"

"फिर एकता शुक्ला पर तोहमत..."

"नहीं, नहीं। वा छोरी ने कुछ न किया इस बेर। वा तो तब थाने में बंद थी।"



Scanned by CamScanner

"कब हुआ ये...ये वाकया?"
"पिछली रात को। आधी रात के आसपास।"
"अभी भीतर कौन है?"
"सब-इन्स्पेक्टर बहल है। थाने के और भी पुलिसिये हैं। फोटू वाला है, उंगलियों का छापा लेने वाला है, और वो पिराइवेट करके डिटेक्टिव है।"
"आगाशे! विवेक आगाशे!"
"वही।"
"यहां भी है?"
"भी का के मतलब?"
"वो यहां क्यों है?"
"पुलिस वालों के काम आता है न! एस.एच.ओ. साहब ने छूट दे रखी है। और के कहूं! वैसे काम तो कोनो न है वा का इधर।"
"हूं।"
"तुम बहुत सवाल पूछो हो, बाबू साहेब। के नाम है? किधर रहते हो?"
"अनुराग जोशी नाम है। पास ही रहता हूं।"
फिर वो वहां से हट गया और वापिस लौट पड़ा।
रास्ते में उसने नया सिगरेट सुलगाया और उसके कश लगाता सोचने लगा।
एक और कत्ल!
इस बार बेचारे जॉन अंकल का!
एक निरीह प्राणी का!
जो चाह कर भी किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता था।
जिसने हमेशा हर किसी के काम आना ही सीखा था।
जो हर किसी की दया का पात्र था।
और हर किसी में से ही किसी ने उसका खून कर दिया था।
तौबा!
लेकिन कातिला एकता शुक्ला नहीं थी। न हो सकती थी। क्योंकि कत्ल के वक्त, आधी रात को, वो थाने में बन्द थी।
तो फिर कौन?
क्यों?
कत्ल परमीत मेहरा की तरह ही क्यों? वो तो लफंगा था, लम्पट था, औरतों का रसिया था, इसलिये उसके गाल पर लिपस्टिक समझ



Scanned by CamScanner

में आती थी लेकिन जॉन अंकल तो ऐसा नहीं था–नहीं था क्या, चाहता तो ऐसा हो भी नहीं सकता था–फिर उसके गाल पर, जैसे किसी ने उसे किस किया हो, लिपस्टिक का क्या मतलब?

किसी ने कत्ल किया सो किया, खास यूं क्यों किया कि वो ऐन पहले वाले कत्ल जैसा लगता? किसी ने क्यों ये भ्रम बनाने की कोशिश की कि दोनों कत्ल किसी एक ही शख्स का कारनामा थे?

बेवजह तो ऐसा न किया होगा!

तो वजह क्या थी?

कौन...कौन...

एकाएक वो थमक कर खड़ा हुआ। होंठों में लगे सिगरेट का कश खींचना भूल गया।

रोमिला जौली!

उसे पहले उसका खयाल क्यों न आया?

रात इसी रास्ते पर तो वो उसे मिली थी!

पार्क की इस राहदारी के बिलकुल करीब, जिसके सामने पुलिस की जीप खड़ी थी, वो सिपाही खड़ा था।

वो टाइम भी तो कत्ल के टाइम से ऐन मैच करता था!

क्या वो कातिल थी?

क्या वो तभी कत्ल करके हटी थी? तभी मकबरे से निकलकर, पार्क से निकलकर, उस सड़क पर पहुंची थी?

क्या यही वजह थी उसके आंतकित होकर, बिना घूमकर पीछे देखे, भाग खड़ा होने की?

वो जॉन अंकल से वाकिफ थी–हो ही नहीं सकता था कि न वाकिफ होती, उस इलाके का बच्चा बच्चा जॉन अंकल से वाकिफ था–नौजवान थी, खूबसूरत थी इसलिये परमीत मेहरा से वाकिफ हो सकती थी, वास्ता तो उस रोड रोमियो से उसका यकीनन पड़ा हो सकता था। आदतन हर नौजवान लड़की पर निगाह मैली करने वाला वो शख्स उसे भला क्योंकर बख्श सकता था!

रोमिला को किसी तरीके से पिछली रात जॉन अंकल की कोटला वाले बेवड़े के अड्डे पर मौजूदगी की खबर थी और रोमिला की अपने रेस्टोरेंट से छुट्टी का और जॉन अंकल के वहां से लौटने का इत्तफाक से कल रात एक ही वक्त था। रोमिला पूरी तरह से टुन्न लौट रहे जॉन अंकल के पीछे पीछे ही मकबरे में पहुंच गयी हो सकती थी और फिर...



Scanned by CamScanner

उसके शरीर ने झुरझुरी ली।

रोमिला का कल रात का अनोखा, अजीब व्यवहार उसे इसी सोच के तहत न्यायोचित लग रहा था कि वो तभी जॉन अंकल का खून करके हटी थी, उसने दबे पांव उसके पीछे पहुंच कर उसे चिकोटी काट कर उसके प्राण कंपा दिये थे और आंतक के आधिक्य में वो वहां से भाग खड़ी हुई थी। वो पहला मौका नहीं था जबकि उसने रोमिला को यूं शरारतन चिकोटी काटी थी लेकिन वो उसकी साफ नीयत से वाकिफ थी इसलिये हमेशा बात को हंसी में उड़ा देती थी। सिर्फ कल ऐसा नहीं हुआ था। क्योंकि कल वो नार्मल नहीं थी। कल उसके दिलोदिमाग पर गुनाह का बोझ था और पकड़े जाने की दहशत थी।

क्या करूं?

कल के वाकये की पुलिस को खबर करूं?

यही ठीक था। यही करना उसका फर्ज बनता था।

उसने सिगरेट फेंक दिया और तेज कदमों से चलता वापिस लौटा।

सिपाही सुलतान सिंह उसे लौटा देखकर हैरान हुए बिना न रह सका।

संकरी राहदारी से अनुराग भीतर पार्क में दाखिल होने लगा तो उसने उसे टोका।

"कित जा रहे हो?"–वो बोला।

"तुम्हारे सब–इन्स्पेक्टर के पास।"

"के करने?"

"उसके काम की बात उसे बताने।"

"कौन सी काम की बात?"

"एस.आई. को बोलूंगा।"

"अभी वो बिजी है। अभी उधर जाने की मनाही है।"

"मेरा जाना जरूरी है।"

"खामखाह ! तुम इधर ही रुको, मैं..."

"अरे, मैं कातिल को जानता हूं।"

"क्या ! क्या बोला?"

"मुझे मालूम है जॉन अंकल का कत्ल किसने किया है। मुझे रोकोगे तो अपने अफसरान से जूते खाओगे।"

"खा लूंगा। सिपाही जो ठहरा। सब से छोटी औकातवाला। सब के जूते ही तो खाता हूं। इधर ही ठहर, भाई मेरे। जिद न कर। मेरे को



Scanned by CamScanner

हुक्म है किसी को भीतर न जाने देने का। मैंने हुक्म बजाना है कि नहीं बजाना!''

अनुराग खामोश रहा।

''मेरी मानो तो अभी इधर से निकल लो। यूं जो कहना है वा को ठण्डे दिमाग से सोच लेने का टेम मिल जायेगा। खामखाह पुलिस के सामने मुंह फाड़ने से लेने के देने भी पड़ जाते हैं। फिर भी मन कुछ कहने को माने तो थाने आना। थाना सदा खुला है। ठीक?''

बिना जवाब दिये अनुराग वहां से टला।

अपने घर लौटने का इरादा तब उसने छोड़ दिया। अपनी टेंशन को वो किसी से शेयर करना चाहता था इसलिये उसने साहनीज के घर का रुख किया।

हेमा हाथ में दाल की–कालबैल बजने के वक्त जिसे वो बीन रही थी–थाली लिये दरवाजे पर पहुंची। अनुराग की उत्तेजित सूरत पर निगाह पड़ते ही उसके चेहरे पर आशंका के भाव आये।

''क्या बात है?''–वो बोली–''खैरियत तो है?''

''भीतर आने दीजिये।''–अनुराग उखड़े स्वर में बोला।

''ओह, सॉरी।''

वो दरवाजे पर से हटी, उसने अनुराग के पीछे दरवाजा बंद किया। फिर उसने थाली को तिलांजलि दी और अनुराग को ड्राईंगरूम में बिठाया।

''क्या बात है?''–उसने पूछा–''बदहवास क्यों लग रहे हो?''

''घर में कोई नहीं जान पड़ता!''

''मैं हूं न! अब तुम भी हो।''

''अंकल? श्रेया?''

''पुन्य कमाने गये हैं।''

''कहां?''

''छतरपुर।''

''आप नहीं गयीं?''

''मेरे पाप उनकी तरह जल्दी जल्दी नहीं कांपते।''

''मजाक कर रहीं है।''

''तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।''

''आपको खबर नहीं लगी?''

''किस बात की?''



Scanned by CamScanner

"जिसकी सबको खबर है!"
"अरे, किस बात की?"
"एक और कत्ल हो गया है।"
"ओ, माई गॉड! कहां?"
"पार्क में।"
"हमारी कॉलोनी के पार्क में?"
"हां।"
"किसका?"
"जॉन अंकल का।"
"क्या बात करते हो! उस अधमरे आदमी को कौन मारेगा?"
"और जॉन अंकल का कत्ल ऐन वैसे ही हुआ है जैसे कि पहले परमीत मेहरा नाम के उस आदमी का हुआ था जो जोरबाग रोड पर खड़ी कार में मरा पड़ा पाया गया था।"
"यू मीन आरसेनिक से?"
"हां। गाल पर लिपस्टिक। मुंह पर चॉकलेट। हलक में जहर। सब ऐन वैसे ही।"
"तुम्हे जरूर कोई गलतफहमी हुई है। उस बेचारे को कौन मारेगा? उसकी किसी से क्या दुश्मनी?"
"मुझे कोई गलतफहमी नहीं हुई। मैं अभी सीधा पार्क से ही आ रहा हूं। वहां वो खंडहर मकबरा पुलिस के कब्जे में है जिसके एक सलामत कमरे में वो रहता था और जिसमें वो मरा पड़ा पाया गया था।"
"कमाल है! कैसी सोसायटी है हमारी! जहां कोई सेफ नहीं। जहां आदमी मारना, मच्छर मारना एक ही जैसे काम हो गये। अभी पिछले इतवार को गीजर का एलीमेंट बदलने आया था। जिन्दगी का तो कोई भरोसा ही नहीं रहा। कितना मिस करेंगे जॉन अंकल को कॉलोनी वाले! बेचारा छोटे, बड़े, और बड़े, हर किसी का अंकल था।"–वो एक क्षण ठिठकी और फिर बोली–"लेकिन तुम इतने बद्हवास क्यों लग रहे हो? तुम इतने एक्साइटिड क्यों हो?"
"क्योंकि मुझे मालूम है कत्ल किसने किया है!"
"क्या!"
"रोमिला जौली ने किया है।"
"क्या बक रहे हो?"
"रोमिला जौली है जॉन अंकल की कातिल।"



Scanned by CamScanner

"लेकिन वो है कौन?"

"इसी कॉलोनी में रहती है। नौजवान लड़की है। साउथ एक्स के एक रेस्टोरेंट में होस्टेस की नौकरी करती है।"

"लेकिन ये...ये कैसे हो सकता है?"

"हो सकता है। हुआ है।"

"लेकिन वो होस्टेस...वो कातिल कैसे हो सकती है! कत्ल करना कोई हंसी खेल है! कोई भी उठे और कत्ल कर दे, ऐसा कहीं होता है! ऐसे तो तुम कहोगे कि उस कार वाले आदमी का भी...क्या नाम था उसका?"

"परमीत मेहरा।"

"हां, मेहरा। तुम कहोगे कि उसका कत्ल भी उसने किया है।"

"कहूंगा न!"

"तुम्हारा दिमाग खराब है। लगता है पोलिटिकल आर्टीकल लिखना छोड़ कर जासूसी कहानियां लिखने लग गये हो।"–फिर एकाएक हेमा के नेत्र फैले–"ये वही लड़की तो नहीं जिसका तुम पिछली रात को भी ज़िक्र कर रहे थे?"

"वही है।"

"जिसे तुमने 'हल्लो' बोला था, शरारतन चिकोटी काटी थी तो जो खौफजदा होकर भाग खड़ी हुई थी?"

"यू सैड इट, हेमा जी। क्यों खौफजदा थी? क्यों भाग खड़ी हुई थी? क्योंकि वो तभी कत्ल करके हटी थी। तभी मकबरे से, फिर पार्क से निकलकर सड़क पर पहुंची थी। मुझे एकाएक अपने पीछे पाकर उसने यूं बिहेव किया था जैसे रंगे हाथों पकड़ी गयी हो। इसी वजह से पीछे घूमकर भी न देखा और हवा हो गयी। हर बात उसकी तरफ इशारा करती है। वही उम्र वही कदकाठ, वैसे ही भूरे बाल..."

"फिर भी नानसेंस! सब बकवास! मुझे तुम्हारी एक भी बात एतबार में आने लायक नहीं जान पड़ती।"

"हेमाजी, दैट्स वाई इट्स सैड दि ट्रुथ इज़ स्ट्रेंजर दैन फिक्शन।"

"तुमने रात को उस लड़की को–रोमिला जौली को–ठीक से पहचाना था?"

"बिलकुल!"

"भई, रात का टाइम था। सर्दियों वाली थोड़ी बहुत धुंध कल भी थी। आजकल के मौसम में स्ट्रीट लाइट्स भी कोई जगमग तो कर नहीं रही होतीं! मुगालता लग सकता है।"



Scanned by CamScanner

"कोई काम हो सकने में और हुआ होने में फर्क होता है। मुझे कोई भुगालता नहीं लगा था। मेरा काम क्या नौजवान लड़कियों को चिकोटियां काटना है? मैंने उसे पहचाना न होता, मेरी उससे ऐसी चुहलबाजी पहले से स्थापित न होती तो क्या वो हरकत मैंने उसके साथ की होती! वो रोमिला जौली ही थी और वो उसके अपनी ड्यूटी से लौटने का ही वक्त था। मैंने उसकी तरफ कोई तवज्जो न दी होती अगरचे कि मैंने उसे पहचाना न होता।"

"अच्छा!"

"हां।"

"फिर भी इस बाबत तुम्हें खामोश रहना चाहिये।"

"क्यों?"

"क्योंकि मुंह फाड़ना भारी पड़ सकता है। तुम्हारे लिये कोई पंगा, कोई बखेड़ा खड़ा हो सकता है।"

"खामखाह!"

"नहीं खामखाह! कत्ल गम्भीर अपराध है। किसी पर कत्ल का इलजाम लगाना गम्भीर मसला है। कुछ साबित न कर सकने पर लेने के देने पड़ सकते हैं। कैसे साबित कर सकते हो कि वो लड़की कातिल है?"

"मैंने उसे देखा..."

"कत्ल करते देखा?"

"वो ऐन वक्त पर मौकायवारदात के करीब थी।"

"ये बात तुम पर भी लागू होती है।"

"क्या!"

"तुम भी ऐन वक्त पर मौकायवारदात के करीब थे। जैसी इलजाम लगाती उंगली उसकी तरफ उठा रहे हो, वैसी तुम्हारी तरफ भी उठ सकती है।"

"मैं दहशत खा के भाग नहीं खड़ा हुआ था।"

"क्योंकि मर्द हो। क्योंकि तुम में बर्दाश्त ज्यादा है।"

"आप तो तख्ता ही पलटें दे रही हैं।"

"मैं तुम्हें तसवीर के दोनों रुख दिखा रही हूं। इस बात पर जोर देने की कोशिश कर रही हूं कि तुम चश्मदीद गवाह नहीं हो, तुमने कत्ल होते नहीं देखा था। जैसी उम्र, कदकाठ और बालों की रंगत को तुम सबूत की तरह पेश कर रहे हो, वैसी की दिल्ली में हजारों लड़कियां हो सकती हैं। तुम खुद कहते हो कि जब वो तुम्हारे आगे



Scanned by CamScanner

आगे चल रही थी, तब वो वापिस नहीं घूमी थी, तुम्हारे उसके सिर पर पहुंच कर 'हल्लो' बोलने पर, चिकोटी काटने पर भी वो वापिस नहीं घूमी थी, लिहाजा तुमने उसकी सूरत नहीं देखी थी। या देखी थी?"

अनुराग का सिर स्वयंमेव इनकार में हिला।

"तुमने लड़की की सूरत न पहचानी, उसका मैकिंटोश पहचाना, उसके भूरे बाल पहचाने। कैसे दावे से कह सकते हो कि वो रोमिला जौली थी?"

"थी।"–अनुराग ने जिद की–"वाकिफ शख्स की पहचान सूरत से ही नहीं होती, शिनाख्त के और भी जरिये होते हैं। मसलन मैं आपको परछाईं से पहचान सकता हूं।"

"मुझे न!"

"उसे भी। कल रात मैंने अपने आगे फुटपाथ चलती जिस लड़की को देखा था, वो यकीनन रोमिला जौली थी। और अगर वो कत्ल के बाद मकबरे से निकलकर उस फुटपाथ पर नहीं पहुंची थी तो क्यों वो पीछे मेरी मौजूदगी का अहसास होते ही यूं भाग खड़ी हुई थी जैसे भूत देख लिया हो?"

"फिर भी मैं तुम्हें खामोश रहने की राय दूंगी।"

"नहीं, मैं खामोश नहीं रह सकता।"

"अरे, तुम्हें क्या!"

"मुझे है। मैं एक जिम्मेदार शहरी हूं और बतौर शहरी अपनी जिम्मेदारी निभाना मेरा फर्ज है।"

"पहले भी तो निभाई थी एक बार! भूल गये क्या अंजाम हुआ था?"

"पन्द्रह दिन की जेल काटी थी। जो कि मामूली बात थी। सच की, फर्ज की राह पर चलते लोग गर्दन कटा देते हैं। मेरे खामोश रहने से कातिल की बन आये, वो छुट्टा घूमे, वो अपने किये की सजा न पाये, ये मुझे बर्दाश्त नहीं।"

"अरे, तुम्हें मुगालता..."

"मुझे मुगालता लगा है तो भी ये बात साफ होनी चाहिये। मैं महज इसलिये बुराई की जीत होते नहीं देख सकता क्योंकि भलाई को अपनी जुबान खोलना गवारा न हुआ। सोसायटी में हर कोई 'मुझे क्या' वाला रवैया अख्तियार कर लेगा तो अपनी तालीम पर, तरक्की पर लानत भेजते हम फिर पत्थरकाल में होंगे।"



Scanned by CamScanner

"हे भगवान! इतना भी आदर्शवादी न हो कोई।"

अनुराग खामोश रहा।

"क्या करोगे?"

"वापिस जाऊंगा अपना बयान दर्ज कराऊंगा कि मुझे मालूम है कातिल कौन है! जाता हूं।"

"अरे, कोई चाय वाय तो पी के जाओ!"

वो न रुका।

अखिरकार विवेक आगाशे की एकता शुक्ला से उसके फ्लैट पर मुलाकात हुई।

अखिरकार इसलिये क्योंकि ऐसा तीसरे फेरे में हो पाया था। दो बार उसे फ्लैट को ताला लगा मिला था।

"मुझे पहचाना?"–आगाशे मीठे स्वर में बोला।

"हां।"–वो भुनभुनाती सी बोली–"तुम...आप पुलिस के साथ थे।"

"साथ था लेकिन पुलिस नहीं हूं।"

"सोहबत का असर बराबर था। वही भाषा बोलते थे।"

"था तो नहीं ऐसा लेकिन...खैर।"

"अब क्या है? वो लोग थाने में चैन नहीं लेने दे रहे थे, आप घर में चैन नहीं लेने देंगे?"

"ऐसी बात नहीं है। अगर इस वक्त तुम्हें मेरे से बात करने में कोई प्राब्लम है तो मैं फिर आ जाऊंगा।"

"नहीं, नहीं, अब जब आ ही गये हैं तो...क्या चाहते हैं?"

"एकाध सवाल पूछना चाहता हूं। मामूली।"

"किस सिलसिले में?"

"उसी सिलसिले में जिसमें...आई एम सॉरी टू से, रात थाने में कटी।"

"मुझे भी यही शक था। लेकिन जब आप पुलिस नहीं हैं तो आप क्यों सवाल पूछना चाहते हैं?"

"मैं क्रिमिनालोजिस्ट हूं। क्राइम मुझे मुग्ध करता है। जिसमें रहस्य कर पुट हो, उसकी तह तक पहुंचने को मेरा मन मचलता है।"

"अजीब बात है!"

"सुनने में लगती है।"

"मैं इनकार करूं तो?"



Scanned by CamScanner

"तो वही सवाल पुलिस करेगी। पुलिस कैसे करेगी, इसका तजुर्बा तुम्हें हो ही चुका है।"

"मेरा इनकार सुनकर आप पुलिस के पास जायेंगे, उनको बोलेंगे कि एकता शुक्ला की आपके सवालों का जवाब देने से इनकार करने की मजाल हुई है इसलिये वो आकर पहाड़ बन कर मेरे पर टूटें?"

"नहीं।"

"नहीं?"

"नहीं।"

"तो क्या करेंगे?'

"रूटीन में पुलिस की नजरेइनायत फिर तुम पर होने का इन्तजार करूंगा, फिर उनसे मालूम करूंगा कि तुमने क्या जवाब दिये!"

"वो बतायेंगे?"

"हां।"

"क्यों भला?"

"क्योंकि मेरा उनसे ऐसा भाईचारा स्थापित है।"

"कमाल है! उनको आपके सवालों की खबर होगी? कैसे मालूम होगा उन्हें कि आपके और उनके सवाल एक ही हैं?"

"जब मंजिल एक ही हो तो रास्ते कोई ज्यादा मुख्तलिफ नहीं होते।"

"आपकी बात तो मेरी समझ में नहीं आयी लेकिन खैर, पूछिये क्या पूछना चाहते हैं?"

"थैंक्यू। अपने महरून रंग के चमड़े के कोट की बाबत क्या कहती हो?"

"ये सवाल है?"

"हां।"

"क्या कहूं?"

"कल जब तुमसे इस बाबत सवाल हुआ था तो तुम पर तीखी प्रतिक्रिया हुई थी, तुमने चौंक कर कहा था कि जरूर वो पीछे छूट गया था। लेकिन ये नहीं बताया था कि कहां पीछे छूट गया था! ये कह के सवाल को टाल दिया था कि कहीं रख के भूल गयी थीं, कहीं उतारा था, कहीं रखा था, फिर वापिस पहनना भूल गयी थीं। बरायमेहरबानी अब बताओ कहां उतारा था? कहां रखा था? कहां भूल गयी थीं?"

"मुझे याद नहीं।"—वो झुंझलाकर बोली।



Scanned by CamScanner

"याद करो।"

"अरे, कहीं भी भूल गयी। मेरा नुकसान हुआ। क्यों हर कोई मेरे कोट के पीछे पड़ा है?"

"ये मामूली सवाल है। मामूली मसला है।"

"इसीलिये जवाब दिया है कि मुझे याद नहीं।"

"ठण्ड के मौसम में कोट एक इम्पॉर्टेंट आइटम होता है। पहले तो उसे भूल जाना ही बड़ा वाकया है, फिर याद न आना कि कहां भूला, कहां छूटा, और भी बड़ा वाकया है। ऐसी बात याद करने से याद आ जाती है।"

"मुझे नहीं आ रही।"

"मैं मदद करता हूं। मेरे खयाल मे कोट किसी मेल फ्रेंड के घर में छूटा।"

"मेल फ्रेंड?"

"शूगर डैडी।"

"क्या!"

"जिसके सदके तुम इस वैलफर्निश्ड फ्लैट में स्थापित हो। जिसने तुम्हें कूरियर से दो लाख रुपये भेजे। बतौर हश मनी।"

"वाट मनी?"

"हश मनी। मुंह पर पट्टी। खामोशी की उजरत। रिश्वत।"

"क्या!"

"वादा। कौल करार। गारन्टी कि तुम उसका नाम अपनी जुबान पर नहीं लाओगी।"

"नानसेंस!"

"अब बोलो, कहां छूटा कोट?"

"मुझे याद नहीं।"

"अगर मैं कहूं कि वो कोट बरामद हो चुका है तो क्या तुम्हारे मिजाज में तब्दीली आयेगी? तो क्या तुम्हारा जवाब जुदा होगा?"

"बरामद हो चुका है?"

"हां।"

"मेरा कोट?"

"हां।"

"कैसे मालूम?"

"क्या?"

"कि जो कोट बरामद हुआ, वो मेरा है।"



Scanned by CamScanner

"शिनाख्त का जरिया कोट में ही मौजूद था।"

"क्या?"

"तुम्हारा रुमाल। लेस के बार्डर वाला रेशमी रुमाल। एक कोने में कढ़े तुम्हारे इनीशियल्स 'ई.एस.' से लैस रुमाल।"

वो खामोश रही। उसने बैचेनी से पहलू बदला।

"जमा, लोरियल ब्रांड की चेरी रैड शेड की लिपस्टिक, जो कि तुम्हारी खास पसन्द है। और जमा, उसकी एक जेब में मैचिंग कैप।"

"वो...वो कोट मेरा नहीं हो सकता।"

"जेब से बरामद हुआ तुम्हारे इनीशियल्स वाला रुमाल वो कोट तुम्हारा ही होने की चुगली करता है।"

"'ई.एस.' से और भी नाम बनते होंगे।"

"कोई नाम बना कर बताओ।"

उससे जवाब देते न बना।

"तुमने ये नहीं पूछा कोट कहां से बरामद हुआ?"

"क...कहां से बरामद हुआ?"

"किसने बरामद किया?"

"किसने किया?"

"पुलिस ने किया। एक नये कत्ल के मौकायवारदात से किया।"

"क...क्या?"

"कल रात इलाके में एक और कत्ल वाकया हुआ है। ऐन पिछले–परमीत मेहरा के–कत्ल की तरह।"

"औ...और कत्ल! कल रात!"

"जॉन अंकल का–जिससे कि इलाके में हर कोई वाकिफ है, इसलिये तुम भी नावाकिफ न होगी–आधी रात के करीब। पार्क के मकबरे के खंडहर में जिसको वो अपना घर बनाये था। अब क्या कहती हो?"

"अगर कत्ल कल आधी रात को हुआ है तो किसी की–न पुलिस की, न आपकी–मुझे कातिल ठहराने की मजाल नहीं हो सकती क्योंकि तब मैं थाने में बन्द थी।"

"ठीक। तो फिर क्योंकर तुम्हारा कोट मौकायवारदात से बरामद हुआ?"

"अभी ये स्थापित नहीं है कि वो मेरा कोट है।"

"स्थापित है। जेब से बरामद तुम्हारे रुमाल की वजह से, तुम्हारी लिपस्टिक की वजह से स्थापित है।"



Scanned by CamScanner

"वो मेरा कोट नहीं है। नहीं हो सकता।"

"हैरानी है कि कोट को देखे बिना तुम ऐसा दावा कर रही हो।"

"ठीक कर रही हूं। जब मैं मौकायवारदात पर मौजूद नहीं हो सकती तो क्या मेरा कोट खुद चल कर वहां पहुंच गया! यही बात ये साबित करने के लिये काफी है कि वो मेरा नहीं, मेरे कोट जैसा कोई कोट है।"

"देखे बिना फिर भी ये दावा नहीं किया जा सकता।"

"आप तो पीछे ही पड़ गये कोट को लेकर।"

"वो तुम्हारा हो सकता है, तुम्हारा है, बहस सिर्फ इस बात पर है कि वो वहां पहुंचा कैसे?"

"कैसे पहुंचा?"

"जहां छोड़ा, जिसके पास छोड़ा, उसने पहुंचाया।"

"झूठ! बकवास! आप तो यूं कह रहे है कि उसने कोट वहां प्लांट किया!"

"क्या नहीं हो सकता?"

"मुझे फंसाने के लिए प्लांट किया!"

"नहीं हो सकता?"

"नहीं। नहीं हो सकता।"

"हो सकता है या नहीं हो सकता, इस बात का फैसला तभी तो होगा जब पता लगेगा कि वो शख्स कौन है! अगर वो तुम्हारा हितचिन्तक है तो क्यों वो कोट की बाबत–या किसी भी बाबत–झूठ बोलेगा? उसका नाम सामने आना हर हाल में तुम्हारे ही फायदे की बात है। अब बोलो, कौन है वो शख्स? नाम लो उसका?"

वो भयभीत दिखाई देने लगी।

"जवाब दो।"–आगाशे सख्ती से बोला।

"क्या जवाब दूं?"–वो चीखती सी बोली–"कोई जवाब देने लायक बात हो तो जवाब दूं! आप जबरदस्ती मेरे से कुछ कहलवाने की कोशिश न करें। चोर बहकाने की कोशिश न करें। मेरा कोट कत्ल की जगह पर पाया गया हो, ये नहीं हो सकता। मेरे कोट की बाबत जो कुछ आप कह रहे हैं, गलत कह रहे हैं, नाजायज कह रहे हैं। आप झूठ बोल कर मुझे उल्लू बनाने की कोशिश कर रहे हैं। शर्म आनी चाहिये आपको। अपनी उम्र देखिये और अपनी वाहियात, जलील, घटिया, नामाकूल हरकत देखिये। आप कहते हैं आप पुलिस नहीं हैं लेकिन आप तो पुलिस से भी गये बीते हैं।"



Scanned by CamScanner

वो हांफती सी खामोश हुई।

"चुप क्यों हो गयीं?"–आगाशे धीरे से बोला–"अब वो भी कह दो।"

"वो क्या?"

"फूंकों से ये चिराग बुझाया न जायेगा।"

"आप मेरा मजाक उड़ा रहे हैं!"

"बिलकुल नहीं। मैं ऐसा करने का खयाल भी नहीं कर सकता।"

वो खामोश रही।

"पुलिस समझती है मैं तुम्हारी तरफ हूं, तुम्हारे लिये काम कर रहा हूं। काश ये बात सच होती। काश तुम भी ऐसा समझतीं। तुम बहुत नादान हो और पुलिस की ताकत को बहुत कम करके आंक रही हो। ओवरनाइट थाने में रखी जाकर ही छोड़ दी गयी हो, इसलिये दिलेर हो गयी हो। नहीं जानती हो कि थाने वाले खूनी, डकैतों से ज्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं। ऐसे ही पुलिस वालों को वर्दी वाले गुंडे नहीं कहा जाता। जो बात मैं तुमसे प्यार से, मनुहार से पूछ रहा हूं, मेरे यहां से बाहर कदम रखते ही वो तुमसे डंडे से पूछी जायेगी। खामोश रहने पर तुम्हारी जो दुर्गति होगी, उसकी तुम कल्पना नहीं कर सकती हो। रात तुम यूं थाने में रहीं जैसे कि पुलिस की मेहमान थीं, इस बार तुम्हारी वहां हाजिरी–लम्बी हाजिरी–बतौर डबल मर्डर सस्पैक्ट होगी। एक बार वो चार्ज लगने पर आगे जो होगा, आगे जो तुम्हारे पर बीतेगी, उसका खयाल करके मेरी रूह कांपती है। तुम्हारी उम्मीद के, दिलेरी के चिराग की तो बिसात ही क्या होगी, पुलिसिया जुल्म का अंधड़ तुम्हें ही उड़ा के ले जायेगा। अव्वल तो छूट पाओगी ही नहीं, किसी करिश्मासाज तरीके से छूट गयीं तो याद करोगी हसरत से उन दिनों को जबकि पसीना गुलाब था।"

अपने शब्दों की कोई प्रतिक्रिया उस पर देखने के लिये आगाशे ठिठका।

"मैं दो मिनट और यहां रुकूंगा।"–फिर बोला–"इतने में अपना भला बुरा विचार लो। कोई कुर्बानी करना चाहती हो, करती रहना चाहती हो, तो खुशी से करो। मैं कुर्बानी के जज्बे की कद्र करता हूं। लेकिन मुझे लगता नहीं कि सिलसिला कुर्बानी का है। गुमनाम तरीके से यहां पहुंची दो लाख की रकम मुझे ये सोचने पर मजबूर करती है कि किसी खास शख्स की बाबत तुम्हारी खामोशी का कुर्बानी से कुछ लेना देना नहीं। यूं तुमने एक व्यावहारिक, दुनियादारी का कदम उठाया



Scanned by CamScanner

था तो मेरी राय यही है कि अपनी व्यावहारिक और दुनियादार सूझबूझ को फिर आवाज दो और कोई माकूल, दानिशमन्दीभरा फैसला करो। आइन्दा दो मिनट में। युअर टाइम स्टार्ट्स नाओ।''

वो सच में सोचने लगी।

क्यों उसे शशांक की बाबत खामोश रहना चाहिये था जबकि मौजूदा हालात पुकार पुकार कर कह रहे थे कि खामोशी उसको बर्बाद कर देने वाली थी? जिस शख्स ने खड़े पैर दूध में से मक्खी की तरह उसे अपनी जिन्दगी से निकाल बाहर किया था, उसकी वफादारी पर उसका क्या दावा बनता था? दो लाख रुपये की रकम उसके मुंह पर मार कर वो तो उसे उसकी जात दिखा भी चुका था। आइन्दा उससे कोई माली नवाजिश हासिल होने का तो अब कोई मतलब ही बाकी नहीं बचा था।

उसने नि:संकोच फैसला किया।

''शशांक साहनी। साहनी बिल्डर्स, नाइन्थ फ्लोर, नेहरू प्लेस। रेजीडेंस, मार्बल आर्क, गोल्फ लिंक्स।''–वो अप्रत्याशित रूप से सुसंयत स्वर में बोली–''परसों रात मेरा कोट शशांक साहनी की कार में छूटा था।''

''शशांक साहनी!''

आगाशे जब थाने पहुंचा, तब एस.एच.ओ. हरिशंकर मीना और सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल दोनों वहां मौजूद थे। आगाशे ने एस.एच.ओ. के ऑफिस में दोनों की मौजूदगी में अपनी चमत्कारी रिपोर्ट पेश की थी।

''मेरा वादा था''–वो बोला–''आप लोगों से हर हासिल जानकारी शेयर करने का, इसलिये सीधा यहीं आया हूं।''

''आपने तो कमाल कर दिया!''–एस.एच.ओ. बोला–''यूं लड़की की इतनी बड़ी बात की बाबत जुबान खुलवा ली जैसे जादू किया हो!''

''मेरी उम्र का असर हुआ। नौजवान लड़कियों को मैं पिता समान लगता हूं।''

''रात भर थाने में रह कर हिली नहीं''–बहल बोला–''आपने दस मिनट बात की, आपके हाथ से चुग्गा चुगने लगी!''

''इत्तफाक की बात है।''

''तो''–एस.एच.ओ. बोला–''वो बड़ा आदमी, बड़ा बिल्डर, इस



Scanned by CamScanner

कॉलोनी के हम्बल लायब्रेरियन का साहबेजायदाद छोटा भाई उस लड़की का कस्टमर था!''

''फ्रेंड था।''–आगाशे ने जल्दी से संशोधन किया–''बकौल एकता शुक्ला, हाल ही में, बस एक महीना पहले, उसकी काटनकिंग कहलाने वाले धन्ना सेठ स्वराज पुंज की इकलौती बेटी शिवांगी पुंज से शादी तय हुई है जिसकी रू में वो एकता शुक्ला जैसी मामूली हैसियत वाली लड़की से ताल्लुकात बनाये रखना अफोर्ड नहीं कर सकता था। बाजरिया मर्डर केस उसका नाम एकता शुक्ला से जुड़ता, इसे तो वो कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता था। इसलिये उसने–मैं फिर लड़की को कोट कर रहा हूं–दूध से मक्खी की तरह उसे अपनी जिन्दगी से निकाल बाहर किया था और उसे सख्त हिदायत जारी की थी कि कत्ल की तफ्तीश के दौरान किसी भी सूरत में वो उसका नाम अपनी जुबान पर न लाये। हरगिज, हरगिज न लाये।''

''दो लाख रुपया''–बहल बोला–''उस खामोशी की उजरत थी?''

''हां।''

''इसलिये गुमनाम तरीके से कूरियर से भेजा ताकि न लड़की से उसका नाम जुड़ता, न रकम से!''

''जाहिर है।''

''बड़े आदमी को''–एस.एच.ओ. बोला–''अपने बड़े नाम की आन बान शान की इतनी फिक्र है!''

''इससे ज्यादा।''–आगाशे बोला–''जब बाजरिया सगाई, उसका नाम काटनकिंग के नाम से जुड़ा है तो जो छींटा उसके नाम पर उछलता, वो काटनकिंग के नाम पर भी तो असर डालता, जो कि उसके नाम से कहीं बड़ा है, कहीं ऊंचा है!''

''बात तो ठीक है। इतने बड़े आदमी का दामाद बनने जा रहा ये शख्स–शशांक साहनी–ये एक्सपोजर कैसे अफोर्ड कर सकता था कि वो एक कालगर्ल का शूगर डैडी था!''

''इसलिये''–बहल बोला–''कालगर्ल की खामोशी खरीदी! पहले सैक्सुअल फेवर्स की कीमत अदा करता रहा होगा, अब खामोशी की कीमत अदा की!''

''कीमत ही अदा की''–एस.एच.ओ. बोला–''डील तो बैकफायर कर गया! लड़की तो बक पड़ी!''

''लेकिन सर, उसका दावा ही तो है परसों रात, परमीत मेहरा के



Scanned by CamScanner

कल के वक्त के आसपास, जो इस शशांक साहनी की सोहबत में थी, उससे पहले उसकी कार में थी–जिसमें कि उसका कोट छूट गया था–और फिर एयरपोर्ट के होटल के बार में थी, क्या वो इस बात को साबित भी कर सकती है?''

''सबूत कोट है न''–आगाशे बोला–''जो शशांक साहनी की कार में छूट गया था। अब कोट का अगला एपीसोड शशांक साहनी बयान करेगा न।''

''करेगा?''

''क्यों नहीं करेगा? जब लड़की ने इतना बड़ा दावा खड़ा किया है तो उसकी कोई हां न तो वो करेगा न! हां करेगा तो बात ही क्या है, न करेगा तो लड़की का बयान क्योंकर उसे ऐसा करने देगा? जब लड़की की अपनी जान पर बनी है तो क्योंकर वो उसे मुकरने देगी?''

''कोट उतारा क्यों?''–एस.एच.ओ. बोला।

''एयरकंडीशंड कार थी, हीटर चालू था, कहती है गर्मी लगने लगी थी।''

''ओह!''

''आगे फाइव स्टार होटल का बार एयरकंडीशंड था।''

''ठीक। शशांक साहनी को खबर न लगी कि उसका कोट पीछे छूट गया था?''

''आप भूल रहे हैं कि दोनों की कहां हाजिरी थी!''

''बार में!''

''जहां ड्रिंक्स के लिये ही जाया जाता है।''

''नशे ने बेध्यानी को जन्म दिया! बेध्यानी में कोट की खबर न लगी!''

''जमा, कोट डिकी में था।''

''वहां क्यों?''

''कहती है सीट पर पड़ा रहता तो पार्किंग में खड़ी कार में से चोरी हो जाने का अन्देशा था।''

''हूं। आपने इस बात की तरफ इशारा न किया कि जो दावा वो पेश कर रही थीं, उससे शशांक साहनी मुकर सकता था?''

''किया। जवाब सुनने लायक था''

''क्या?''

''तमक कर बोली, मुकर कर दिखाये। कहती है होटल में और



Scanned by CamScanner

बार में–खासतौर से बार में, जहां एक नौजवान स्टीवार्ड उस पर लार टपकाने लगा था–कितने ही आदमी थे जो उन दोनों की वहां लंबी हाजिरी की तसदीक कर सकते थे।''

''बढ़िया। लेकिन आगाशे साहब, इस नये रहस्योद्घाटन से हमारे केस की तो बुनियाद खिसकी जा रही है। अनुराग जोशी–जो कहता था उसने जोरबाग रोड़ पर एकता शुक्ला को देखा था–के बयान की वजह से हमारी तवज्जो एकता शुक्ला की तरफ गयी थी और हम उसी को कातिल तसलीम करके आगे बढ़े थे लेकिन अब जो करामाती जानकारी आप निकालकर लाये हैं, अगर उस पर एतबार लायें तो एकता शुक्ला तो कातिल नहीं हो सकती! तो हमें मानना पड़ेगा कि अनुराग जोशी की शिनाख्त गलत थी। यानी कि असल कातिला ने जानबूझकर मोटे तौर पर अपना हुलिया एकता शुक्ला जैसा बनाने की कोशिश की थी, इरादतन शक की सुई एकता शुक्ला की तरफ घुमाने की कोशिश की थी। अब शक की सुई का रुख इस नये किरदार शशांक साहनी की तरफ हो रहा है जो कि अनुराग जोशी की होने वाली बीवी का अंकल है। जमा, इस घुंडी का कोई हल नुमायां नहीं कि एकता शुक्ला अपना जो कोट शशांक साहनी की कार की डिकी में छूट गया बताती है, वो कातिल के नये शिकार बेचारे जॉन अंकल के घर में कैसे पहुंच गया?''

''खुद तो न पहुंचा, सर।''–बहल बोला–''जाहिर है किसी ने पहुंचाया।''

''किसने?''

''खुद शशांक साहनी के बारे में क्या खयाल है?''

''न भई, इतनी दून की मैं कुबूल नहीं कर सकता। कालगर्ल से आशनाई और कत्ल–डेलीब्रेट, कोल्डब्लडिड मर्डर–एक ही कैटेगरी के कारोबार नहीं हैं।''

''तो फिर?''

''फिर दर्देसर। हमारे लिये।''

''शशांक साहनी के सिलसिले में''–आगाशे ने पूछा–''क्या कदम उठायेंगे?''

''आप बताइये क्या कदम उठायें? कातिल तो वो हो नहीं सकता।''

''नहीं हो सकता?''

''मैं आपसे पूछ रहा हूं। हो सकता है तो बताइये कैसे हो सकता



Scanned by CamScanner

है। वो बड़ा आदमी है, हाई सोसायटी का हिस्सा है, गोल्फलिंक्स जैसी पॉश जगह पर रहता है, वो परमीत मेहरा जैसे रोड रोमियो को जानता नहीं हो सकता था, जॉन पाब्लो जैसे बेहैसियत, बेऔकात शख्स को कहां से जानता! औरत किसी भी कामयाब शख्स की कमजोरी हो सकती है। शशांक साहनी से ज्यादा बड़ी हैसियत और आन बान शान वाले लोग गैर औरतों से खुफिया ताल्लुकात रखते देखे सुने गये हैं लेकिन कत्ल! नो, आई कैन नॉट बाई दैट। जिस शख्स के पास हर मर्ज की दवा पैसा हो, वो क्यों भला खून से अपने हाथ रंगेगा!''

''सर,''–बहल बोला–''मजबूरी बहुत कुछ करा देती है।''

''कैसी मजबूरी! कौन सी मजबूरी! परमीत मेहरा जैसे लम्पट के वजूद से उसकी कौन सी टोपी उतर रही थी! जॉन पाब्लो तो उस सीढ़ी के पहले डंडे पर नहीं ठहरता जिसके शिखर पर शशांक साहनी है। जमा, क्या करा देती है मजबूरी! मर्द को औरत बना देती है! दोनों कत्लों में बतौर उनके आर्कीटैक्ट औरत की हाजिरी है। या नहीं है?''

''है।''

''ये भी नहीं कहा जा सकता''–आगाशे बोला–''कि अपने नापाक इरादों के एग्जीक्यूशन एण्ड को हैंडल करने के लिये उसने किसी औरत का सहारा लिया। जो शख्स अभी एक औरत से हलकान है, उसकी अपनी बाबत खामोशी खरीदने के लिये उसे दो लाख रुपया अदा करता है, वो क्यों अपनी दाढ़ी किसी दूसरी औरत के हाथ में देगा?''

''वो बात तो है ही''–एस.एच.ओ. बोला–''जमा, कोई वजह तो समझ में आये उसके परमीत मेहरा का कातिल होने की! जॉन पाब्लो का कातिल होने की! किसी तरीके से तो उसका कोई लिंक उन दोनों से जुड़े!''

''सर,''–बहल बोला–''एक तरीके से जॉन अंकल से जुड़ सकता है।''

''कैसे?''

''वो इलाके का जनरल हैण्डीमैन था। गोल्फ लिंक्स करीब ही तो है। लोधी रोड के पार ही तो है! मार्बल आर्क, मुझे मालूम है, गोल्फ लिंक्स के इधर के सिरे पर लोधी रोड और महर्षि रमन मार्ग के जंक्शन पर है।''

''क्या कहना चाहते हो?''



Scanned by CamScanner

"क्या पता जॉन अंकल बतौर जनरल हैण्डीमैन कभी शशांक साहनी के हाउसहोल्ड के भी काम आया हो! और यूं शशांक साहनी उससे वाकिफ हो!"

"दिस इज टू फारफैच्ड।"–आगाशे धीरे से बोला।

एस.एच.ओ. ने सहमति में सिर हिलाया।

बहल खामोश हो गया।

"आल थिंग्स सैड एण्ड डन, अगर आप एकता शुक्ला के बयान पर एतबार लायें तो शशांक साहनी को–अपने ऊंचे रुतबे के बावजूद–इस बात की तो जवाबदेही करनी ही होगी कि परसों शाम एकता शुक्ला का जो कोट उसकी कार की डिकी में मौजूद था, वो जॉन अंकल के ठीये पर उसके तख्तपोश के नीचे कैसे पहुंच गया!"

"आपका मतलब है"–एस.एच.ओ. संदिग्ध भाव से बोला–"हमें शशांक साहनी से बात करनी चाहिये?"

"क्या नहीं करेंगे?"

"भड़क गया तो खाट खड़ी कर देगा। सीधा कमिश्नर से बात करेगा।"

"क्यों भड़केगा? ये एक रूटीन पुलिस इंक्वायरी है जिसकी मजबूत बुनियाद आपको मुहैया है। आप अपनी ड्यूटी ही तो कर रहे होंगे! क्यों भड़केगा?"

"हूं।"

"जो शख्स इतनी सी बात न समझे, वो काहे का बड़ा आदमी हुआ?"

"ठीक।"

तभी एक हवलदार भीतर दाखिल हुआ, उसने एस.एच.ओ. को सैल्यूट मारा और बोला–"अनुराग जोशी।"

"क्या हुआ उसे?"–एस.एच.ओ. तनिक अप्रसन्न भाव से बोला।

"आपसे अर्जेंट करके मिलना चाहता है।"

"यहां आया हुआ है?"

"बाहर खड़ा है। इतना उतावला है कि सीधा यहां घुस आना चाहता था।"

"ऐसा!"

"हां, साहब जी। मैंने बोला साहब मीटिंग में हैं, फिर भी नहीं टला। बोला, मिले बिना नहीं जाने का।"

"ऐसी क्या बात है?"



Scanned by CamScanner

"खाली आपको बोलेगा। जिद है उसकी।"

"कमाल है! बुलाओ।"

हवलदार सहमति में सिर हिलाता रुखसत हो गया।

तुरन्त बाद अत्यन्त उत्तेजित अनुराग जोशी ने भीतर कदम रखा।

"एस.एच.ओ. साहब"–वो बोला–"मैं एक बहुत अहम बात आपकी जानकारी में लाना चाहता हूं।"

"किस बारे में?"–एस.एच.ओ. बोला।

"उस...उस दूसरे कत्ल के बारे में जो कल रात हुआ।"

"अच्छा! क्या कहना चाहते हो उस बारे में?"

"मैं कातिल को जानता हूं।"

"क्या!"

"कातिला को...कातिला को जानता हूं।"

एस.एच.ओ. सकपकाया, उसने अपलक अनुराग की तरफ देखा।

अनुराग विचलित न हुआ।

"बैठो।"–एस.एच.ओ. बोला।

"आप मेरी बात सुनिये..."

"बैठ जाओ। बैठ के सुनाओ। कोई प्राब्लम है?"

अनुराग धम्म से एक विजिटर्स चेयर पर बैठा।

"तुम वही नौजवान हो"–एस.एच.ओ. उसे घूरता बोला–"जिसने पहले कत्ल के लिये जिम्मेदार लड़की की शिनाख्त का भी दावा किया था?"

"जी हां।"

"तुम्हारा दावा है कि दूसरे कत्ल के लिये जिम्मेदार भी कोई लड़की है?"

"जी हां।"

"वही लड़की। पहले वाली?"

"नहीं।"

"कोई जुदा लड़की?"

"जी हां।"

"जिसे तुम जानते हो! बतौर कातिला जिसकी तुम शिनाख्त कर सकते हो?"

"जी हां।"

"कौन है वो? नाम लो उसका?"



Scanned by CamScanner

"वही करने आया हूं। रोमिला जौली।"

"वे कौन हुई?"

"इसी कॉलोनी में रहती है। साउथ एक्सटेंशन पार्ट वन के एक रेस्टोरेंट में होस्टेस है।"

"वो कातिला है?"

"जी हां।"

"जैसे एकता शुक्ला कातिला थी जिसकी कि तुमने कल कथा की थी!"

"मैं कथा नहीं करता, हकीकत बयान करता हूं।"

"जेल जाने का शौक पूरा करने के लिये! तजुर्बा हासिल करने के लिये!"

"आप मेरी बात सुनना चाहते हैं या नहीं?"

"क्या सुनाना चाहते हो? तुम्हारे मुताबिक पहले एकता शुक्ला कातिला थी जो कि साबित हो चुका है कि नहीं थी, नहीं हो सकती थी। और अब..."

"मुगालता एक बार किसी को भी लग सकता है, बार बार नहीं।"

"बार बार न सही, दो बार तो लग सकता है?"

"इस बार नहीं लगा।"

"तुम्हें क्या मालूम!"

"एस.एच.ओ. साहब"–आगाशे दबे स्वर में बोला–"सुन तो लो लड़का क्या कहना चाहता है!"

"अच्छी बात है। बोलो, भई।"

अनुराग ने अपना बयान दोहराया।

"हूं।"–वो खामोश हुआ तो एस.एच.ओ. बोला–"तो ये लच्छन हैं!"

"क्या बोला?"

"रात के सन्नाटे में, तनहाई का फायदा उठाकर अकेली जाती नौजवान लड़की को चिकोटी काटते हो!"

"आप बरायमेहरबानी मेरे कन्डक्ट की सर्जरी न कीजिये, बात के मर्म को समझिये। वो मुझे जानती थी और मेरी इस हरकत से वैसे खौफजदा होने वाली कोई बात नहीं थी जैसे कि वो हुई। गौरतलब बात ये है कि वो ऐन नयी वारदात के वक्त वहां थी, ऐन मौकायवारदात के करीब थी, करीब क्या थी तभी वहां से निकलकर फुटपाथ पर



Scanned by CamScanner

पहुंची जान पड़ती थी। और मेरे उसके पीछे पहुंचते ही वो यूं वहां से भागी थी जैसे भूत देख लिया हो।''

''जबकि तुम्हें जानती पहचानती थी?''

''जी हां।''

''बाखूबी?''

''जी हां।''

''तुमने उसे साफ पहचाना था कि वो रोमिला जौली थी, जो कि साउथ एक्स में होस्टेस है?''

''जी हां।''

''कैसे पहचाना था? सूरत देखी थी?''

''नहीं, सूरत तो नहीं देखी थी।''

''सूरत की झलक देखी थी?''

''न-हीं। वापिस तो वो घूमी ही नहीं थी।''

''यानी की पीठ से पहचाना! सूरत देखे बिना पहचाना!''

''लेकिन पहचाना। बराबर पहचाना। बालों से पहचाना, ड्रैस से पहचाना, चाल ढाल से पहचाना, कदकाठ से पहचाना। दर्जनों बार मैंने उसे देखा है। उसकी हर बात मेरी जानी पहचानी थी। इस बात में मुझे रत्ती भर भी शक नहीं है कि वो रोमिला जौली थी। आप यकीन कीजिये मेरी बात पर।''

''कैसे करूं? तुम्हारे से ऐसी शिनाख्त में एक बार गलती हुई या नहीं हुई?''

''वो...वो...''

''जो शख्स एक बार गलती कर सकता है, वो दोबारा क्यों नहीं कर सकता? जिसे एक बार मुगालता लग सकता है, उसे दोबारा मुगालता क्यों नहीं लग सकता?''

''ये बहस की बातें हैं। बहस-मुबाहसों में मुखालफत के प्वायन्ट स्ट्रांग ही होते हैं। लेकिन उनसे हकीकत को नहीं झुठलाया जा सकता; धुंधलाया जा सकता है, दबाया जा सकता है, झुठलाया नहीं जा सकता। एक मुद्दत से मैं रोमिला जौली से वाकिफ हूं। जो सफेद मैकिंटोश वो पहने थी, वो उसका ट्रेडमार्क है। वैसा मैकिंटोश इधर कॉलोनी की कोई लड़की नहीं पहनती। आजकल जैसे मौसम में बेशुमार बार मैंने उसे उस मैकिंटोश में देखा है।''

''जैसा एकता शुक्ला को बेशुमार बार देखा था!''

''नहीं, उसे बेशुमार बार नहीं देखा था। आप बरायमेहरबानी मुझे



Scanned by CamScanner

ध्यान देने की कोशिश न कीजिये। मैं उससे वाकिफ नहीं था, मेरी कभी उससे बात नहीं हुई थी। साहनी हाउसहोल्ड में मैंने जब उसका हुलिया बयान किया था तो मेरी मंगेतर की मौसी हेमा साहनी ने कहा था कि वो हुलिया एकता शुक्ला का था जो कि कॉलोनी में मन्दिर के पास के एक फ्लैट में रहती थी। दोनों बार की शिनाख्त में फर्क है, इन्स्पेक्टर साहब। पहली बार की शिनाख्त में मुझे प्राम्पट किया गया था लेकिन दूसरी बार की शिनाख्त मैंने जाती तौर पर की थी। रोमिला जौली के बारे में मुझे किसी से नोट्स एक्सचेंज करने की जरूरत नहीं थी कि वो रोमिला जौली थी या नहीं थी!''

''हर कत्ल के मौके पर ऐन स्ट्रेटेजिकल वक्त पर तुम्हीं दोनों जगहों पर क्यों मौजूद थे?''

''ये बेजा सवाल है।''

''क्यों बेजा सवाल है?''

''क्योंकि वो इत्तफाक था—दोहरा इत्तफाक था—जिस पर मेरा कोई जोर नहीं था। मैं इत्तफाक को वाकया होने से नहीं रोक सकता। कोई नहीं रोक सकता। मुझे क्या इलहाम होना था कि जहां से मैंने गुजरना था वहां कत्ल होकर हटा होना था और कातिल ने मेरे रूबरू होना था?''

''बहस अच्छी कर लेते हो!''

''बहस तो आप कर रहे हैं।''

''बहस के मुकाबले में बहस अच्छी कर लेते हो। वकील होना चाहिये था तुम्हें।''

''लगता है मैंने यहां आकर गलती की।''

''क्या!''

''आप ही वो लोग हैं जो हर शहरी को जिम्मेदारी का सबक सिखाते हैं। जो हर शहरी से सहयोग की अपील करते हैं। जो हर शहरी को 'ए पुलिस आफिसर विदाउट यूनीफार्म' बताते हैं। अब पता लगा कि सब फरेबी बातें हैं। आप किसी के सहयोग के तलबगार नहीं। अपनी ही हांकेगे, दूसरे की नहीं सुनेंगे, क्योंकि उससे आपकी हेठी होती है, आप लोगों की इस खुशफहमी की पालिश उतरती है कि आप सर्वशक्तिमान हैं, 'नो आल' हैं। मैं जाता हूं।''

''बैठे रहो।''

''क्या फायदा! जब आप मेरी किसी बात को खातिर में ही नहीं लाना चाहते...''

''फिर भी बैठो।''



Scanned by CamScanner

"क्या फायदा!"

"चाय पियोगे?"

"चाय पीने के लिये बैठूं?"

"या कॉफी! ठण्डा!"

"नो, थैंक्स।"

"तो तुमने ऐन जॉन पाब्लो के कत्ल के वक्त पार्क के बाहर फुटपाथ पर सफेद मैकिंटोश पहने भूरे बालों वाली एक लड़की को देखा था और तुम्हारा कहना है–पुरजोर दावा है–कि वो लड़की रोमिला जौली थी जो कि इसी कॉलोनी में रहती है और साउथ एक्स में जॉब करती है?"

"हां।"

"क्या टाइम था उस वक्त?"

"ग्यारह बत्तीस।"

"टाइम की इतनी गारन्टी कैसे है?"

"मैंने घड़ी देखी थी।"

"वो लड़की दिखाई देने से पहले या बाद में?"

"पहले। दो मिनट पहले।"

"वजह?"

"कोई वजह नहीं। खामखाह देखी। इत्तफाकन घड़ी पर निगाह पड़ी। मैं अपनी फियांसी के घर जा रहा था, शायद इसलिये देखी कि वो वक्त वहां जाने के लिये मुनासिब था या नहीं!"

"ठीक।"

"रोमिला जौली की अपने बार से ग्यारह बजे छुट्टी होती है। पांच मिनट वहां से बाहर निकलने में और बड़ी हद पन्द्रह मिनट आगे लोधी कॉलोनी पहुंचने में। बड़ी हद पांच मिनट आगे मकबरे में जाकर उस...उस कारनामे को अंजाम देने में। समझ लीजिये कि पांच मिनट कहीं टाइम की घट बढ़ के लिये।"

लिहाजा टाइम फैक्टर एन फिट!"

"जी हां।"

"वो लड़की–रोमिला जौली–जॉन पाब्लो की कातिल!"

"दिल तो नहीं मानता। लेकिन जो हकीकत है, वो सामने है।"

"जिसे तुम हकीकत समझते हो, वो सामने है।"

"चलिये, ऐसे ही सही। बहरहाल जो मैंने समझा, जो मेरी अक्ल में आया वो मैंने बोल दिया।"



Scanned by CamScanner

"क्यों किया होगा उस लड़की ने जॉन पाब्लो का कत्ल? कोई वजह सुझा सकते हो?"

"नहीं।"

"या उस दूसरे शख्स के–परमीत मेहरा के–कत्ल की?"

"मैं उसकी भी कोई वजह नहीं सुझा सकता।"

"लेकिन एतबार तुम्हें पूरा है कि अगर उस लड़की ने एक कत्ल किया है तो दूसरा भी किया होगा! नहीं?"

"ऐसा ही जान पड़ता है।"

"नहीं जान पड़ता। परमीत मेहरा का कत्ल शाम सात और आठ बजे के बीच हुआ था। ये वक्त रोमिला जौली के अपने रेस्टोरेंट में ड्यूटी करते होने का है। और मैं समझता हूं कि ये स्थापित कर दिखाना उसके लिये कोई मुश्किल काम नहीं होगा कि पहले कत्ल के वक्त वो साउथ एक्स में अपने रेस्टोरेंट में अपनी होस्टेस की ड्यूटी कर रही थी। या होगा?"

अनुराग ने हिचकिचाते हुए इनकार में सिर हिलाया।

"लिहाजा अब हम बात को दूसरे सिरे से पकड़ें तो हमें कुबूल करना पड़ेगा कि अगर एक कत्ल उस लड़की ने नहीं किया तो दूसरा भी नहीं किया होगा!"

"आप उसकी हिमायत कर रहे हैं। उसके हक में बोल रहे हैं।"

"अरे, नहीं भई, महज दो जमा दो चार जैसा नतीजा निकाल रहा हूं। हक में बोलने का क्या मतलब? मेरी वो कोई सगेवाली है?"

अनुराग खामोश रहा।

"तुम उसके खिलाफ बोले तो क्या इसलिये कि तुम्हारी उससे कोई दुश्मनी है?"

"मैंने अपना फर्ज निभाया।"

"मैंने भी तो यही किया। जो बात सच है उसको तसलीम करना, जो झूठ है उस पर उंगली उठाना ही तो मेरा फर्ज है!"

"मुजरिम को गिरफ्तार करना भी आपका फर्ज है।"

"है न! करेंगे न! पड़ताल करेंगे न जो तुमने कहा, उसकी! फिर आगे जो कदम मुनासिब होगा वो उठायेंगे।"

"अब मेरे लिये क्या हुक्म है?"

"अरे भई, तुम आजाद पंछी हो, मेरा हुक्म तुम्हारे पर कहां लागू होता है!"

"मतलब?"



Scanned by CamScanner

"आमद का शुक्रिया। जहमत का शुक्रिया। मेरा थाना तुम्हारा मशकूर है।"

अनुराग वहां से विदा हो गया।

पीछे कुछ क्षण खामोशी रही।

"क्या कहते हैं?"–फिर एस.एच.ओ. आगाशे से सम्बोधित हुआ।

"जो मैं कहता हूं"–आगाशे बोला–"वो आपको कुबूल होगा?"

"कहके देखिये। आजमा के देखिये।"

"मेरी राय में वो लड़की–जिसका जिक्र अब, बाजरिया उस नौजवान, उठा–कातिल नहीं हो सकती।"

"क्यों?"

"क्योंकि हर बात उसकी रूटीन को स्टडी करके उसमें फिट की जान पड़ती है। ऐन वैसे ही जैसे एकता शुक्ला के किरदार को स्टडी करके हर बात उसमें फिट की गयी थी। वहां मेन विलेन उसका चमड़े का महरून कोट था जिसको कातिल ने शक की सुई उसकी तरफ मोड़ने के लिये कैश किया था, यहां मेन विलेन इस नयी लड़की रोमिला जौली का सफेद मैकिंटोश है जिसको कातिल ने ऐन उसी स्टाइल में कैश किया। दोनों को उसने पुलिस को गुमराह करने का जरिया बनाया।"

"लिहाजा कातिल कोई और है।"

"मेरी अक्ल तो ये ही कहती है। पहले उसने ऐन एकता शुक्ला जैसा चमड़े का कोट मुहैया करके और उसके जरिये मोटे तौर पर अपना हुलिया एकता शुक्ला जैसा बना के परमीत मेहरा के कत्ल को अंजाम दिया और यूं शक की सुई का रुख एकता शुक्ला की तरफ मोड़ा, फिर अपनी वही मॉडस अपरांडी उसने दूसरे कत्ल में अप्लाई की।"

"रोमिला जौली जैसा मैकिंटोश मुहैया किया?"

"जो कि कोई बड़ी बात नहीं। दोनों ही लड़कियां इसी कॉलोनी की हैं और उनका रखरखाव यहां खूब मकबूल है, खूब जाना पहचाना है। चमड़े के महरून कोट का तसव्वुर करते ही ध्यान एकता शुक्ला की तरफ जाता है और सफेद मैकिंटोश का तसव्वुर करते ही ध्यान रोमिला जौली की तरफ जाता है। इन बातों को दोनों बार कातिल ने अपने नापाक इरादों को अंजाम देते वक्त कैश किया। यूं उसने एक तीर से दो शिकार किये; अपनी खुद की आइडेन्टिटी को छुपाकर रखा और पुलिस को गलत राह पर लगाया।"



Scanned by CamScanner

[illegible] इस [illegible] को टटोलने का कोई फायदा नहीं हो सकता?"

"मुझे तो ऐसा ही जान पड़ता है।"

"फिर भी कान्टैक्ट तो उससे करना पड़ेगा, वर्ना वो इंकलाबी नौजवान अपनी जहरीली कलम के जरिये हमारी खाट खड़ी कर देगा।"

"इंटीन के तौर पर कान्टैक्ट तो आपको करना पड़ेगा लेकिन...हाथ कुछ नहीं आयेगा।"

"देखेंगे।"

मार्बल आर्क एक आलीशान मैंशन था जो शशांक और शेखर के पिता दीनानाथ साहनी की जिन्दगी में महज एक एकमंजिला कोठी होती थी। पिता के विरसे का मालिक बनने के बाद शशांक साहनी ने उसका आधुनिकीकरण करवाया था और उसे तीनमंजिला भव्य मैंशन की सूरत में पहुंचाया था।

जबकि–नौकरों को न गिना जाता तो फिलहाल–वो उसका अकेला बाशिन्दा था।

विवेक आगाशे ने कालबैल बजाई तो दरवाजा एक सफेद वर्दीधारी सर्वेंट ने खोला। उसने असहिष्णुतापूर्ण भाव से आगाशे पर निगाह डाली।

"साहनी साहब से मिलना है।"–आगाशे बोला।

"आपको वॉचमैन ने रोका नहीं?"

"तुम्हारा क्या खयाल है?"

"आप यूं भीतर नहीं आ सकते। वॉचमैन ने आपको रोका..."

"था। रोका था।"

"तो?"

"शूट कर दिया।"

"क्या!"

"गोली मार दी। लाश आयरनगेट पर उसके केबिन के सामने पड़ी है। जाके देख।"

सर्वेंट भौंचक्का सा उसका मुंह देखने लगा।

"मैं अपने सवाल के जवाब का इन्तजार कर रहा हूं।"

"साहब इस वक्त घर नहीं होते। ऑफिस में होंगे। वहां पता कीजिये।"



Scanned by CamScanner

"इस वक्त घर नहीं होते! आज इतवार है! छुट्टी का दिन है!"

"साहब का ऑफिस सातों दिन खुलता है, साहब सातों दिन ऑफिस जाते हैं।"

"बड़े कर्मठ साहब हैं तुम्हारे!"

"क्या!"

"उनकी गैरहाजिरी में यहां का इंचार्ज कौन होता है?"

"कारमला मैडम।"

"वो कौन हुई?"

"हाउसकीपर।"

"मेरा काम हाउसकीपर से मुलाकात से भी हो जायेगा। खबर कर।"

"आप..."

"कर्नल आगाशे।"

उस परिचय का सर्वेंट पर पर्याप्त असर दिखाई दिया, वो इस बार बोला तो उसके लहजे से अदब झलक रहा था–"यस, सर। मैं मैडम को बोलता हूं लेकिन वो...वो...वॉचमैन..."

"जा के देख। शायद कोई कोई सांस अभी बाकी हो।"

"आप...मजाक कर रहे हैं!"

"हां। हायर्ड हैल्प से मजाक करना मेरा पसन्दीदा शगल है। नाओ, कम ऑन। स्टैप ऑन इट।"

अब आगाशे के लहजे में मिलिट्रीमैन जैसी फटकार थी जिसका फौरन असर सर्वेंट पर हुआ।

"नाम बोलेगा।"

"दिलीप सिंह, सर!"

"दिलीप सिंह! आन दि डबल।"

दिलीप सिंह घूमा और सरपट भागा।

आगाशे की हाउसकीपर से मुलाकात हुई।

जो कि एक अधेड़ावस्था की गोवानी महिला निकली जिसके चेहरे पर बुद्धिमत्ता की छाप थी और जो पढ़ी लिखी जान पड़ती थी।

"साहब"–वो बोली–"डे टाइम पर घर नहीं होता।"

"डजंट मैटर, मैडम।"–आगाशे मीठे स्वर में बोला–"मैं दरअसल एक प्राइवेट डिटेक्टिव हूं और मैं पुलिस की एसोसियेशन में एक केस पर काम कर रहा हूं। मेरे पास पुलिस आथोराइजेशन है, अगर आप देखना चाहें तो..."



Scanned by CamScanner

"जरूरत नहीं। अभी इधर विजिट का रीजन बोलने का।"

"मैं दरअसल जॉन पाब्लो के बारे में कुछ जानकारी हासिल करना चाहता था।"

"जॉन अंकल!"

"वही। गरीब आदमी। आसपास का जनरल हैण्डीमैन। यूं ही अपनी रोजी रोटी चलाने वाला, गुजर बसर करने वाला।"

"यस। आई नो। ऐवरीबाडी नोज।"

"कभी किसी ऑड जॉब के लिये इधर बुलाया जाता था? जैसे बागवानी से, गार्डनिंग से ताल्लुक रखता कोई काम..."

"नो। नो गार्डनिंग। इधर फुलटाइम गार्डनर है न!"

"आई सी। कोई और काम?"

"कार वाश! साहब की चार कारें वाश करने आता है।"

"रोज?"

"यस। अर्ली मार्निंग।"

"कल भी आया होगा?"

"बट आफकोर्स। डेली आता है। आज मार्निंग में नहीं आया। एक कार दिलीप सिंह वाश किया। वैरी इररिस्पांसिबल आफ हिम। मेरे को नापसन्द। बट साहब फील्स सॉरी फार हिम।"

"आपको नापसन्द किसलिये?"

"ड्रिंक करता है न!"

"अर्ली मार्निंग तो नहीं करता होगा!"

"रात को ज्यास्ती करता है, लेट आवर्स में करता है, तो अर्ली मार्निंग में मुंह बास मारता है।"

"इसलिये काम ठीक नहीं करता?"

"नो, नथिंग लाइक दैट। काम पूरा करता है।"

"फिर भी आपको नापसन्द?"

"ऐवरी ड्रिंकिंग पर्सन मेरे को नापसन्द। माई हसबैंड डाइड यंग। फिश का माफिक ड्रिंक करता था। लिवर गया। सिरोसिज, यू नो!"

"यस। नापसन्दगी की कोई और वजह?"

उसने उत्तर न दिया, लेकिन उसकी सूरत से जान पड़ता था कि और वजह थी।

"बहरहाल, मैडम, आप अब अपनी नापसन्दगी खत्म समझिये।"

"बोले तो?"

"क्योंकि उसकी वजह खत्म है।"



Scanned by CamScanner

"अभी भी बोले तो?"

"जॉन अंकल अब इस दुनिया में नहीं है।"

"गॉड ब्लैस हिज सोल। क्या हुआ?"

"कत्ल! कत्ल हुआ।"

"क्या? ओ, माई गॉड! ओ, माई गुड गॉड! कोई बोला तो था इधर कि मार्निंग में लोधी कालोनी के पार्क से डैड बॉडी मिला। यू मीन वो...वो जॉन अंकल?"

"यस, मैडम?"

"बट मर्डर!"

"ऐन वैसे ही जैसे पहले परमीत मेहरा नाम के नौजवान का हुआ, जो जोरबाग रोड पर खड़ी अपनी कार में मरा पड़ा पाया गया था।"

"मेरे को मालूम। उस मर्डर का स्टोरी सब को मालूम। ओ, माई गॉड, वाट हैज दिस सोसायटी कम टु! नोबॉडी इज सेफ दीज डेज।"

"यू सैड इट, मैडम। बाई दि वे, जॉन अंकल की आपकी नापसन्दगी की कोई और भी वजह थी? सिवाय इसके कि वो ड्रिंक करता था?"

"बोलेगा। पहले मेरे को एक क्वेश्चन पूछना मांगता है।"

"पूछिये।"

"आप इधर किस वास्ते आया? समझता है इधर किसी को मालूम ओल्डमैन का कौन मर्डर किया?"

"नहीं।"

"तो?"

"रूटीन के तौर पर इधर आया। कत्ल के केस में मकतूल का जहां भी कोई वास्ता हो, वहां जाया जाता है।"

"ये पुलिस का काम। यू आर नॉट पोलीस!"

"मैंने आते ही बोला न, मैडम, कि मैं पुलिस की एसोसियेशन में काम कर रहा हूं।"

"वाई?"

"दैट्स अनदर स्टोरी। मैंने आपके सवाल का जवाब दे दिया, अब आप बरायमेहरबानी मेरे सवाल का जवाब दीजिये।"

"बराबर तो नहीं दिया, सैटिस्फैक्ट्री तो नहीं दिया बट...वाट वाज युअर क्वेश्चन?"

"आपने बोला जॉन अंकल आपको नापसन्द था। एक वजह आपने बताई कि वो ड्रिंक करता था। क्या कोई और भी वजह थी?"

"थी न?"



Scanned by CamScanner

[illegible] था।"

"ओ!"

"इधर से कई छोटी मोटी चीजें गायब होती रहती थीं। मेरे को उस पर शक।"

"कभी देखा कोई चीज खिसकाते?"

"नहीं, देखा नहीं। बट आई आलवेज हैड माई डाउट्स कि वो ही ये काम करता था।"

"शक की बिना पर किसी को चोर ठहराना..."

"चोर नहीं। चोर नहीं।"

"तो और क्या?"

"छोटी मोटी चीजें खिसकाता था। वो चीजें, जिनको समझता था इधर फालतू था।"

"मसलन नाम लीजिये ऐसी किसी चीज का?"

"कोई डस्टर! कोई हैंडटावल! कोई स्क्रूड्राइवर! कोई बाक्स! कोई कार्टन! यू आडरस्टैण्ड माई प्वायन्ट?"

"आई थिंक आई डू।"

"मैं डैड मैन का बारे में कुछ खराब नहीं बोलना मांगता बट... खिसकाता था।"

"ऐसी चीजें, जो दरअसल इधर कबाड़ का दर्जा रखती थीं?"

"मैन, उसको डिफेंड करता है?"

"नो, मैडम। सवाल करता है।"

"मैं इधर हाउसकीपर। मेरे को डिसाइड करने का क्या कबाड़ है, क्या कबाड़ नहीं है। नो?"

"यस, मैडम। तो आपका डिसीजन ये था कि वो थीफ नहीं, पैटी थीफ था! चोर नहीं था लेकिन उठाईगीरा था!"

"बट आफकोर्स।"

"लेकिन अपनी आंखों से कुछ उठाते, कुछ खिसकाते आपने उसे कभी न देखा!"

"फिर भी जो होता था, वही करता था। मैं आंखों से वैसा कुछ नहीं देखा तो और तो कुछ देखा?"

"और क्या देखा?"

"काहे ऐसा काम करता था जो डाउटफुल।"

"क्या करता था?"



Scanned by CamScanner

"कार वाश में कार का डिकी खोलना नाट नेसेसिरी। काहे खोलता था?
डे बिफोर यस्टरडे मैं खुद उसको बीएमडब्ल्यू का डिकी खोलते देखा।"
"डिकी खुली होगी। ठीक से बंद कर रहा होगा!"
"अभी तुम फिर उसको डिफेंड करता है।"
"नो, मैडम। एण्ड थैंक्यू, मैडम. फार दि कोओपरेशन।"
आगाशे वहां से रुखसत हुआ।

बकौल एकता शुक्ला परमीत मेहरा के कत्ल की रात को शशांक साहनी उसके साथ अपनी जिस कार पर सवार एयरपोर्ट के होटल के बार में गया था और जिसकी डिकी में वो अपना कोट छूट गया बताती थी, वो बीएमडब्ल्यू थी। अगली सुबह उसे धोते वक्त जॉन अंकल को डिकी खुली मिलना और उसमें कोट पड़ा मिलना कोई बड़ी बात नहीं थी। उस जनाना कोट को यूं डिकी में गुच्छा मुच्छा पड़ा देखकर जरूर उसने उसे कोई अबंडंड आइटम समझ लिया था जिसे कि साहब ने शायद फेंकने के लिये ही डिकी में डाला था क्योंकि साहब के हाउसहोल्ड में तो उस आइटम को पहनने वाला कोई था नहीं। अगर हाउसकीपर कारमला के इलजाम में थोड़ा बहुत भी दम था तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि उस कोट को वो वहां से उठा लाया था और लाकर अपने मकबरे के कमरे में तख्तपोश के नीचे डाल दिया था। वैसी आइटम नौजवान लड़की पहने हो तो तभी किसी काबिल लगती थी वर्ना कबाड़ ही जान पड़ती थी। उसे कबाड़ ही उसने समझा था और उसे कबाड़ी को बेच कर चार पैसे खड़े करने के खयाल से ही वो उसे वहां से उठा लाया था।

लिहाजा एकता शुक्ला के कोट की जॉन अंकल के कमरे से बरामदी से शशांक साहनी नाम के साहबेजायदाद का कोई लेना देना नहीं था। कम से कम उस कोट की वजह से कत्ल से उसका कोई रिश्ता स्थापित हो पाने की कोई सम्भावना नहीं थी।

बहरहाल उसकी दो लाख रुपया देकर एकता शुक्ला को अपना मुंह बन्द करने को बोलने वाली हरकत फिर भी शक उपजाने वाली थी। वो शक कहां मार करता था, ये तफ्तीश का मुद्दा था।

लिहाजा शशांक साहनी से भी एक मीटिंग करने की कोशिश को अंजाम देने में कोई हर्ज नहीं था।

लेकिन उसका फौरी निशाना रोमिला जौली थी जो कि करीब ही उपलब्ध थी।

नेहरू प्लेस दूर था, लोधी कॉलोनी बाजू में थी।



Scanned by CamScanner

रोमिला जौली छब्बीस सत्ताइस साल की, खूबसूरत, खुशमिजाज लड़की निकली। निःसंकोच उसने आगाशे से बात करना कुबूल किया।

"जॉन अंकल की खबर लगी?"–आगाशे ने पूछा।

"हां।"–वो बोली।

"कब?"

"कोई दो घन्टे पहले।"

"कैसे?"

"कैसे क्या? सारी कॉलोनी में चर्चा है। बच्चे बच्चे की जुबान पर है कि जॉन अंकल का मर्डर हो गया है।"

"सुन कर दुख हुआ होगा?"

"होना ही था। ही वाज सच ए नाइस मैन। कीड़े पड़ें कमीने को जिसने ऐसे सज्जन पुरुष को मारा।"

"उससे वाकिफ थीं?"

"हां। इस इलाके के तो पेड़ पौधे जॉन अंकल से वाकिफ थे, ईंट पत्थर जॉन अंकल से वाकिफ थे, मैं न होती!"

"यही वजह थी कि हर कोई वाकिफ था, और कोई वजह नहीं थी वाकफियत की?"

"और क्या वजह होती?"

"सवाल मैंने किया है।"

"और कोई वजह नहीं।"

"उससे कोई रंजिश! कोई अदावत!"

"क्या बात करते हैं!"

"जवाब दीजिये।"

"ये बेमानी सवाल है। नानसेंस का जवाब मैं नहीं दे सकती।"

"इलाके के एक शख्स का कहना है कि कल रात ऐन कत्ल के वक्त के करीब आप जॉन अंकल की रिहायश खंडहर के बाहर फुटपाथ पर देखी गयी थीं।"

"दूसरी बात ठीक हो सकती है क्योंकि मैं रोज रात वहां से गुजरती हूं, वो रास्ता है मेरा घर वापिसी का, लेकिन इस बात को खंडडर से जोड़ना, वहां हुए कत्ल से जोड़ना एक निहायत बेजा हरकत है। और इसका मतलब है कोई इरादतन मेरा रिश्ता कत्ल से जोड़ने की कोशिश कर रहा है। कौन है वो शख्स? आप उससे



Scanned by CamScanner

वाकिफ जान पड़ते हैं। नाम लीजिये उसका। मुझे नेक लड़की
का।''

''आप इस बात से तो इनकार नहीं कर रहीं हैं कि ऐन कत्ल के वक्त आप खंडहर मकबरे वाले पार्क के सामने के फुटपाथ पर थीं!''

''वहां थी, क्योंकि पहले ही बोला कि वो मेरा रोज का रास्ता है, लेकिन ऐन कत्ल के वक्त थी, इसकी मुझे क्या खबर? मुझे क्या पता कत्ल कब हुआ?''

''समझ लीजिये कि साढ़े ग्यारह के करीब हुआ।''

''समझ लूं?''

''कत्ल के वक्त की बाबत अभी अन्दाजा ही लगाया जा सकता है। समझ लीजिये कि ये पुलिस का इंजेलीजेंट गैस है कि कत्ल साढ़े ग्यारह के करीब हुआ।''

''फिर मेरा कत्ल से क्या वास्ता? तब तो मैं अभी अपनी वर्क प्लेस पर ही थी।''

''साउथ एक्स के रेस्टोरेंट में?''

''हां।''

''छुट्टी तो आपकी वहां से, सुना है, ग्यारह बजे होती है!''

''ठीक सुना है। कल शाम वहां एक स्पैशल पार्टी थी जिसकी वजह से मुझे, सबको, एक्स्ट्रा ड्यूटी करनी पड़ी थी। कल मैं बारह बज कर पैंतीस मिनट पर वहां से निकली थी। वहां दर्जनों लोग होंगे जो मेरी रात साढ़े बारह बजे तक वहां मौजूदगी की तसदीक कर सकते हैं। इसलिये अगर कोई कहता है कि उसने साढ़े ग्यारह बजे मुझे मकबरे वाले पार्क के बाहर फुटपाथ पर देखा था तो गलत कहता है, झूठ बोलता है।''

''आई सी।''

''एक बजे के करीब मुझे मिस्टर माथुर मिले थे जो कि इस ब्लॉक के सिरे पर रहते हैं। वो तभी अपनी कार पर कहीं से लौटे थे और मेरी उनसे हल्लो हल्लो हुई थी। बुजुर्गवार हैं इसलिये उन्होंने खासतौर से पूछा था कि मैं इतनी लेट कैसे हो गयी थी और मैंने उन्हें वजह बताई थी। वो घर पर ही होंगे। अभी जा के तसदीक कीजिये।''

''जरूरत नहीं। तो कल रात आप एक बजे घर लौटी थीं?''

''एक दस पर। घर में कदम रखते ही ड्राईंगरूम की वाल क्लॉक



Scanned by CamScanner

पर मेरी निगाह पड़ी थी जो कि उस वक्त ठीक एक बजकर दस मिनट बजा रही थी।''

''हूं। मिस्टर माथुर बोला आपने!''

''शिव नारायण माथुर।''

''ब्लॉक के सिरे पर रहते हैं?''

''हां। बिलकुल कोने वाले मकान में। ग्राउन्ड फ्लोर पर।''

''सहयोग का शुक्रिया, मैडम।''

''उसकी तो कोई बात नहीं लेकिन आप उस नालायक, नामाकूल शख्स का नाम तो लीजिये जो मुझे जॉन अंकल का कातिल करार देने पर तुला है! मैं खबर तो लूं उसकी!''

''आप खातिर जमा रखिये, अगर उसने झूठ बोला है या इरादतन गलतबयानी की है तो यकीन जानिये, पुलिस ही उसकी अच्छी खबर लेगी।''

''है वो ऐसा शख्स?''

''कैसा?''

''झूठ बोलने वाला? इरादतन गलतबयानी करने वाला?''

''है तो नहीं लेकिन...क्या पता चलता है!''

''हां, क्या पता चलता है!''

''मेरा जाती खयाल ये है कि कल रात उसे किसी पर आपका मुगालता लगा।''

''किस पर?''

''कोई बड़ी बात नहीं कि कातिला पर। उसने कातिला को देखा और किसी वजह से उसे आप समझ बैठा।''

''क्यों समझ बैठा? जब गारन्टी नहीं थी तो क्यों मुंह फाड़ा? अभी तो मेरी खुशकिस्मती जानिये कि मैं अपनी कल की मूवमेंट्स का हिसाब दे सकती हूं, ऐसा कर पाने की मेरी हालत न होती तो फिर मेरा क्या बनता! उसकी खोटी समझ ने मेरे लिये तो मुसीबत खड़ी कर दी होती!''

''आप ठीक कह रही हैं। बहरहाल गनीमत जानिये कि अब हालात आपके काबू में हैं। नमस्ते।''

आगाशे नेहरू प्लेस और आगे साहनी बिल्डर्स के भव्य ऑफिस में पहुंचा।

''मिस्टर शशांक साहनी से मिलना है।''–वो बोला।



Scanned by CamScanner

अलीशा ने एक सरसरी निगाह आगाशे पर डाली।
"आपकी अप्वायन्टमेंट है?"–उसने पूछा।
"नहीं।"
"फिर तो मुलाकात नहीं हो सकती। मिस्टर साहनी अप्वायन्टमेंट बिना नहीं मिलते।"
"मैडम, देयर इज एक्सैप्शन टु ऐवरी रूल।"
"नाट हेयर। नाट टु दिस रूल।"
"तब भी नहीं जबकि मुलाकात में मिस्टर साहनी का फायदा हो?"
उसने इस बात पर विचार किया।
"आपकी तारीफ?"–फिर पूछा।
"मेरा नाम आगाशे है। विवेक आगाशे। ये मेरा विजिटिंग कार्ड।"
आगाशे ने एक कार्ड निकालकर उसके सामने रखा।
अलीशा ने कार्ड का मुआयना किया।
"कर्नल?"
"रिटायर्ड।"–आगाशे बोला।
"क्रिमिनालोजिस्ट!"
"हॉबी के तौर पर।"
"प्राइवेट डिटेक्टिव!"
"प्रोफेशन के तौर पर।"
"उधर बैठिये।"
"थैंक्यू।"
आगाशे रिसैप्शन डैस्क पर से हट कर परे एक सोफे पर बैठ गया।
अलीशा ने फोन पर कुछ क्षण खुसरपुसर की।
"सॉरी, सर"–फिर वो रिसीवर वापिस क्रेडल पर रखती बोली–"साहब बहुत बिजी हैं। आपके लिये टाइम नहीं निकाल सकते।"
आगाशे ने कोई प्रतिक्रिया जाहिर न की।
"मिस्टर आगाशे, आप जा सकते है।"
"आई विल वेट।"
"कोई फायदा नहीं होगा। ही कैन नाट अकामोडेट यू।"
"मैं इन्तजार करूंगा।"
"कोई फायदा नहीं होगा।"



Scanned by CamScanner

"कब तक इन्तजार करेंगे?"
"क्लोजिंग टाइम तक।"
"मिस्टर आगाशे, क्लोजिंग टाइम में अभी सवा पांच घन्टे बाकी हैं।"
"आई डोंट माईन्ड।"
"तब तक यहीं बैठे रहेंगे?"
"हां।"
"धरना देंगे?"
"वेट करूंगा।"
"क्लोजिंग टाइम पर क्या करेंगे?"
"अप्वायटमेंट हासिल करूंगा और कल फिर आऊंगा।"
"कमाल है!"
"यहां सिगरेट पीना मुनासिब होगा?"
"उसकी तो कोई बात नहीं लेकिन...कल की अप्वायटमेंट मैं आपको अभी दे सकती हूं।"
"नो, थैंक्स। अभी मुझे उम्मीद है।"
"किस बात की?"
"आज ही मुलाकात होने की।"
"सर, दैट्स आउट ऑफ क्वेश्चन।"
"वुई विल सी।"
"कमाल है! आजकल हर कोई गांधीगिरी पर आमादा है।"
आगाशे मुस्कराया।
"आप मिलना क्यों चाहते है?"
आगाशे फिर मुस्कराया।
"बताना नहीं चाहते?"
"मुझे कोई एतराज नहीं, तुम्हारे साहब को एतराज होगा।"
"किस बात पर?"
"इसी बात पर कि मैंने तुम्हें बताया कि मैं उनसे क्यों मिलना चाहता हूं।"
"ऐसी क्या बात है?"
"जब मैं तुम्हारे साहब को बताऊंगा कि मैं तो बात बताना नहीं चाहता था, तुमने जिद करके पूछी तो तुम खुद को उनकी कितनी भी लाडली क्यों न समझो..."
"सर, प्लीज माईंड युअर लैंग्वेज।"



Scanned by CamScanner

"...उनका गुस्सा बुरी तरह से तुम पर नाजिल होगा।"
"कमाल है! मैं...एक बार फिर कोशिश करती हूं।"
"थैंक्यू।"
इस बार कोशिश उसने इन्टरकाम पर न की, उसने आगाशे का विजिटिंग कार्ड उठाया और उठकर विचित्र निगाहों से उसे देखती भीतरी ऑफिस में गयी।
दो मिनट बाद वो वापिस लौटी।
"मिस्टर आगाशे"–वो करीब आकर बोली–"मिस्टर साहनी विल सी यू नाओ।"
"आई एम ग्लैड टु नो। थैंक्यू।"
"दिस वे, प्लीज।"
आगाशे ने सिगरेट को, जिसके उसने अभी दो तीन कश ही लगाये थे, करीब पड़ी ऐशट्रे में झोंका और उठकर युवती के पीछे हो लिया। अलीशा ने उसे जिस सजे हुए ऑफिस में पहुंचाया वो किसी फिल्दी रिच बिजनेसमैन का ही हो सकता था।
आगाशे ने महसूस किया शशांक साहनी की उससे हाथ मिलाने की औपचारिकता दिखाने की कोई मर्जी नहीं जान पड़ती थी। उसने सिर नवा कर उसका अभिवादन किया।
"कर्नल आगाशे!"–साहनी ने सामने पड़े उसके विजिटिंग कार्ड पर से दोहराया।
"रिटायर्ड।"–आगाशे बोला–"ऐट युअर सर्विस, सर।"
"बिराजिये।"
"थैंक्यू।"
"क्या चाहते हैं?"
"आपसे एकाध सवाल पूछना चाहता हूं।"
"किस बारे में?"
"परमीत मेहरा नाम के आदमी के कत्ल के बारे में, जो कि जोरबाग रोड पर, जो कि आपके दौलतखाने से कोई ज्यादा दूर नहीं हैं, खड़ी अपनी कार में मरा पड़ा पाया गया था।"
"उससे आपका क्या मतलब?"
"मतलब मेरे विजिटिंग कार्ड पर दर्ज है।"
"आप उस मर्डर केस की प्राइवेट इनवैस्टिगेशन कर रहे हैं?"
"जी हां।"
"किसी क्लायन्ट के लिये?"



Scanned by CamScanner

"अपने लिये। अपने शौक के लिये।"
"पुलिस को ऐतराज नहीं होगा?"
"नहीं होगा।"
"वजह?"
"जो मैं कर रहा हूं, वो पुलिस की जानकारी में है।"
"कमाल है!"
"पुलिस को मेरे एफर्ट्स की कद्र है।"
"कभी कामयाब भी होते हैं?"
"अक्सर होता हूं।"
"पुलिस से पहले?"
"वो भी।"
"एक मिस्टर आगाशे का कभी कभी प्रिंट मीडिया में चर्चा होता है जो कि क्राइम क्लब नाम की एक संस्था का संचालन करते हैं..."
"मैं वही 'एक मिस्टर आगाशे' हूं।"
"आई सी। आई सी। उस कत्ल के सिलसिले में यहां आने का क्या मतलब? मेरा उससे क्या वास्ता?"
"आप बताइये।"
"कोई वास्ता नहीं। मैं मकतूल से वाकिफ नहीं था, अखबार में छपने से पहले मैंने कभी उसका नाम भी नहीं सुना था। उसके बारे में मेरे से सवाल करने से क्या हासिल होगा आपको?"
"शायद कुछ हो।"
"क्या? कैसे?"
"उस सिलसिले में एकता शुक्ला ने पुलिस को एक बयान दिया है जिसकी आप तसदीक कर सकते हैं।"
"एकता शुक्ला! वो कौन है?"
"एक खूबसूरत, नौजवान लड़की है जो आपके करीब ही, गोल्फलिंक्स से सड़क के पार लोधी कालोनी में रहती है।"
"रहती होगी।"
"आप उसे नहीं जानते?"
"नहीं, मैं नहीं जानता।"
"कभी नाम भी नही सुना?"
"नहीं सुना।"
"अच्छा!"



Scanned by CamScanner

"उसका–जो कोई भी वो है–जिक्र किसलिये?"

"उसका परमीत मेहरा के कत्ल में रिश्ता दिखाई देता था, बल्कि लगता था कि वो ही कातिल थी। इस सिलसिले में वो पुलिस की हिरासत में भी थी। कत्ल के बाद की उसकी रात इलाके के थाने में गुजरी थी।"

"एक रात गुजरी थी! इसका क्या मतलब हुआ? बाद में रिहा कर दी गयी थी?"

"जी हां।"

"वजह?"

"पुलिस को हिन्ट लगा था कि कत्ल के वक्त वो मौकायवारदात से बहुत दूर कहीं और किसी और के साथ थी।"

"उसके पास एलीबाई थी?"

"ऐसा ही जान पड़ता था लेकिन वो उस शख्स का नाम लेने को तैयार नहीं थी जिसके साथ कि वो थी।"

"क्यों?"

"डरती थी। किसी का–किसी रसूख वाले शख्स का–नाम अपने बयान के जरिये कत्ल के केस में नहीं लपेटना चाहती थी।"

"फिर क्या एलीबाई हुई! एलीबाई तो न हुई!"

"पुलिस को उसकी मजबूरी से, उसकी दुश्वारी से हमदर्दी थी लिहाजा वक्ती तौर पर उन्होंने उसके साथ रियायत बरती थी, उसे अगली सुबह रिहा कर दिया था।"

"दैट्स नानसेंस। पुलिस सस्पैक्ट्स के साथ ऐसी रियायतें कब से बरतने लगी!"

"पुलिस ने वक्ती तौर पर वो कदम उठाया था, यूं समझिये कि ढील दी थी, इस उम्मीद में ढील दी थी कि अगर बिलकुल ही लड़की की जान पर आ बनेगी तो वो अपनी एलीबाई का राज खोल देगी।"

"वो ऐसा नहीं कर सकती।"

"आपको क्या मालूम?"

"मेरा मतलब है वो ऐसा नहीं करेगी, समझदार होगी तो ऐसा नहीं करेगी।"

"मिस्टर साहनी, समझदारी का अपना रोल होता है, दिलेरी का अपना रोल होता है। मुमकिन है देर सवेरे उसकी समझ उसे ये सबक दे कि अधिक साहस विडम्बना होता है और वो आपके राज को राज



Scanned by CamScanner

रखने के अपने मंसूबे को तर्क कर दे। अपनी एलीबाई के तौर पर आपका नाम न लेने की अपनी जिद को दरकिनार कर दे।"

"ये क्या बक रहे हैं आप?"–वो भड़का–"क्या सोचकर ये सब कह रहे हैं आप? जब मैंने कहा कि मैं उस लड़की को नहीं जानता तो ये चण्डूखाने की गप्प जैसी कथा करने का क्या मतलब है कि मैं...मैं उसकी एलीबाई हूं?"

"गप्पें मारने की मेरी उम्र नहीं, जनाब, कथा करने का मुझे शौक नहीं, स्थापित तथ्यों के अलावा किसी बात का जिक्र करके आपका–कीमती–टाइम जाया करने की मेरी कोई मंशा नहीं।"

"स्थापित तथ्य?"

"एक तो ये ही कि आपने आपकी बाबत अपना मुंह बन्द रखने की फीस के तौर पर बाजरिया कूरियर हजार हजार रुपयों के नोटों में एकता शुक्ला को दो लाख रुपये अरसाल किये। अब ये बात जुदा है कि वो अपना मुंह बन्द न रख सकी।"

"नानसेंस! अटर नानसेंस! मैंने बोला न, मैं इस नाम की किसी लड़की को नहीं जानता।"

"महज बोलने से कोई बात सच हो जाती तो बात ही क्या थी! आपकी जानकारी के लिये एकता शुक्ला अपनी जुबानी आपका नाम ले चुकी है क्योंकि वो 'वो मरता क्या न करता' वाली स्थिति में पहुंच चुकी थी। आपका नाम जुबान पर न लाती तो गिरफ्तार होती–कत्ल के इलजाम में–इसलिये खौफ खा कर उसने आपका नाम लिया।"

"स्टोरी है। और यकीनन आप बड़े कनविंसिंग स्टोरीटैलर हैं।"

"मैं हकीकत बयान कर रहा हूं।"

"हकीकत बयान कर रहे हैं तो जरूर उस लड़की को–जो कोई भी वो है–किसी जाल में ऐसा फंसाया गया कि मजबूर होकर उसे वो गलतबयानी करनी पड़ी जिसे हकीकत तसलीम कर लिया गया।"

"ऐसी कोई बात नहीं है, मिस्टर साहनी, ऐसा कह कर आप मुझे नहीं, खुद को भरमा रहे हैं। एकता शुक्ला ने साफ, दो टूक कहा है, बिना किसी दबाव में आये, बिना किसी जाल में फंसे, बिना किसी चाल या घात के हवाले हुए अपनी राजी से कहा है कि परमीत मेहरा के कत्ल के वक्त के आसपास वो आपकी सोहबत में थी, पहले वो आपकी बीएमडब्ल्यू कार में–जिसे उस रात आप खुद चला रहे थे–आपके साथ थी, फिर एयरपोर्ट के होटल के बार में वो आपके साथ थी जहां कई लोग–खासतौर से एक नौजवान स्टीवार्ड–आप दोनों की



Scanned by CamScanner

यहां मौजूदगी के गवाह हैं। यहां आप मालिक हैं, अपने एम्पायर के बादशाह हैं, यहां बैठ कर किसी बात से इनकार करना आसान है लेकिन जब आपको कई गवाहों के रूबरू होने पर मजबूर किया जायेगा तो आप हकीकत को झुठला नहीं पायेंगे, आप इस हकीकत से–जिसकी एकता शुक्ला जामिन है, जिसे वो बाकायदा मोहरबन्द कर चुकी है–इनकार करते नहीं रह पायेंगे कि एक खास रोज एक खास वक्त आप उसकी सोहबत में थे। अब कहिये, क्या कहते हैं?''

शशांक साहनी के कसबल निकले गये, चमड़ा मंढी अपनी एग्जीक्यूटिव चेयर में वो पिचककर रह गया।

''कमीनी! नाशुक्री! दगाबाज!''–फिर उसके मुंह से निकला।

''तो आप कुबूल करते हैं आप उसके साथ थे? कि वो जो कह रही है, सच कह रही है?''

''कैसे मुकरूं? इतना कुछ सुन चुकने के बाद कैसे मुकरूं? हां, वो मेरे साथ थी। इसलिये परमीत मेहरा नाम के शख्स के कत्ल से उसका कोई रिश्ता नहीं हो सकता। कम्बख्त ने वादा किया था मेरा नाम जुबान पर न लाने का...''

''वो मजबूर थी। हालात ने उसे ऐसा कार्नर किया था कि चुप नहीं रह सकती थी। फिर भी चुप रहती तो उसका अंजाम गम्भीर होगा। गिरफ्तार तो होती ही, और भी सौ तरह की उसकी फजीहत होती। हकीकत बयान करने में ही उसकी गति थी। इसलिये वो आपकी हमदर्दी की, माफी की हकदार है।''

''हमदर्दी माफी तो हुई लेकिन उसके इस बयान की रू में अब होगा क्या? क्या मेरा नाम मीडिया में उछाला जायेगा? उसके और मेरे ताल्लुकात का किस्सा आम हो जायेगा? मैं यूं कोई स्कैण्डल अपने नाम के साथ जुड़ना अफोर्ड नहीं कर सकता।''

''वजह?''

''पर्सनल है। न भी हो तो बद्नामी कौन मोल लेना चाहता है!''

''कोई नहीं।''

''खासतौर से तब जबकि उस लड़की से मेरे कोई गलत ताल्लुकात नहीं थे।''

''ऐसा?''

''हां, ऐसा। बिलकुल सात्विक रिश्ता था हमारा। प्लैटोनिक!''

''कहना आसान है। मैं कहना नहीं चाहता लेकिन ऐसा सामने



Scanned by CamScanner

आया है–और ठीक सामने आया है–कि इलाके में उस लड़की की रेपुटेशन खराब है। शी इज कनसिडर्ड ऐ लेडी आफ ईजी वर्च्यू। और स्थूल रूप से कहूं तो कालगर्ल बताई जाती है। कौन मानेगा कि ऐसी लड़की से आपके ताल्लुकात सात्विक थे? आपके रिलेशंस प्लैटोनिक थे? भली लड़की की निष्ठा कहीं खरीदनी पड़ती है! दो लाख रुपये की रकम की अदायगी भी तो आप का वाटरलू है!''

उसने खामोशी से असहाय भाव से गर्दन हिलाई।

''एक बात बताइये।''–फिर एकाएक बोला।

''पूछिये।''

''लड़की के मेरी बाबत बयान से पुलिस भी वाकिफ है?''

''बिलकुल वाकिफ है।''

''उन्हें बयान पर एतबार है?''

''है। और अब और हो जायेगा जब मैं उनको खबर करूंगा कि आप कुबूल करते है कि परमीत मेहरा के कत्ल के वक्त के आसपास वो आपके साथ थी। बड़ी हद आ के तसदीक कर लेंगे।''

''यानी की उन्हें तसल्ली है कि एकता कातिल नहीं है?''

''हां।''

''तो फिर मेरा नाम उछाला जाने का क्या मतलब?''

''कोई मतलब नहीं।''

''मेरा नाम कत्ल से जोड़ने के क्या मतलब?''

''कोई मतलब नहीं।''

''दैट्स वैरी गुड न्यूज। तो क्या मैं उम्मीद करूं कि एकता की एलीबाई मैं हूं, पुलिस इस बात को राज रखेगी?''

''क्यों न करें? उम्मीद पर तो दुनिया कायम है!''

''आप...आप कोई हौसलाअफजाह बात नहीं कह रहे हैं।''

''मैं आपका क्या हौसला बढ़ा सकता हूं, जनाब! आप मेरे से ज्यादा साधनसम्पन्न हैं, मेरे से ज्यादा दुनियादार हैं, क्या आपको सिखाने समझाने की जरूरत है कि पुलिस कालगर्ल से ज्यादा बिकाऊ होती है! पैसे वाले के पास हर मर्ज की दवा पैसा होता है। जिस ताकत को आपने एकता शुक्ला की खामोशी खरीदने में आजामाया, उसको एक जुदा जगह वैसी ही शापिंग करने में आजमाने से क्या आपको परहेज होगा!''

''आपका...आपका मतलब है...''

''ए वर्ड टु दि वाइज, सर।''



Scanned by CamScanner

"हूं। हूं। लेकिन अगर वो कमीनी बद्जात थोड़ी मजबूती दिखाती..."

"आप नाहक उसे कोस रहे हैं। मैंने पहले भी अर्ज किया, वो मजबूर थी और मजबूती दिखाने की स्टेज गुजर चुकी थी।"

"क्यों?"

"क्योंकि उसका महरून कलर का चमड़े का कोट दूसरे कत्ल के मौकायवारदात से बरामद हुआ था।"

"दू...दूसरा कत्ल!"

"आपको दूसरे कत्ल की खबर नहीं लगी?"

"कौन सा दूसरा कत्ल? और कौन...कौन..."

"जॉन पाब्लो नाम का एक उम्रदराज शख्स जो इलाके में जॉन अंकल के नाम से बेहतर जाना जाता था, जो लोधी कॉलोनी के पार्क के खंडहर के एक सलामत कमरे में रहता था, जो आज सुबह वहां मरा पड़ा पाया गया था और जिसका कत्ल आरसेनिक जहर से ऐन वैसे ही हुआ था जैसे कि पहले परमीत मेहरा का हुआ था।"

"जॉन अंकल!"–वो भौंचक्का सा बोला–"जो मेरी कारें धोने आया करता था!"

"वही।"

"उसका कत्ल हो गया?"

"जी हां।"

"उसका किसलिये?"

"अभी तो यह एक राज ही है।"

"उसकी किसी से क्या रंजिश! क्या अदावत!"

"कोई नहीं। इसीलिये तो राज है।"

"कोट की क्या बात है? आप कहते हैं कोट दूसरे कत्ल के मौकायवारदात से बरामद हुआ? क्या मतलब हुआ इसका? जॉन अंकल के घर से बरामद हुआ?"

"जी हां। महरून कलर का चमड़े का जो कोट एकता शुक्ला आपके साथ अपनी आखिरी डेट के दौरान पहने थी, कत्ल के बाद जॉन अंकल के घर से उस तख्तपोश के नीचे से बरामद हुआ जिस पर उसकी लाश पड़ी पायी गयी थी।"

"वहां कैसे पहुंच गया?"

"यही तो लड़की की परेशानी की वजह है। यही तो उसके छक्के



Scanned by CamScanner

सुनने वाली बात है। क्योंकि बकौल उसके वो कोट तो उससे आपकी कार की डिकी में छूटा था।''

''म...मेरी क...कार में...हे भगवान!''

''आपको याद ही होगा कि लड़की उस शाम को कोट पहने थी!''

''वो तो हुआ लेकिन जब वो कहती है, जब आप मानते हैं, कि वो मेरी कार की डिकी में था तो कत्ल के मौकायवारदात पर कैसे पहुंच गया?''

''इस बाबत मेरा एक अन्दाजा है।''

''क्या?''

''कल जॉन अंकल आपकी कार धोने की ड्यूटी बजाने आपकी कोठी पर आया तो कार की डिकी में उसे वो कोट दिखाई दिया जिसे उसने डोरमेंट आइटम–फेंके जाने के काबिल आइटम–समझने की हिमाकत की और उसे वहां से उठा लाया। ये सोचकर उठा लाया कि आप लोगों ने तो उसे फेंकना ही था। वो नादान शख्स नहीं जानता था कि चमड़े का घिसा हुआ कोट पहनना भी लड़कियों में फैशनेबल माना जाता था। जैसे कि घिसी हुई, घुटनों से, जांघों से फटी हुई जींस पहनना फैशनेबल माना जाता है।''

''ओह!''

''कहना न होगा कि इस बार पुलिस का एक निहायत शातिर कातिला से पाला पड़ा है...''

''कातिला! औरत!''

''जी हां। मॉडर्न! नौजवान! भूरे बालों वाली!''

''भूरे बालों वाली! इस बात की भी कोई अहमियत है?''

''जी हां। कातिला की स्ट्रेटेजी शुरू से ही अपनी करतूत दूसरे के सर थोपने की दिखाई देती है। आप जानते हैं एकता शुक्ला के बाल भूरे हैं। उस जैसी रोमिला जौली नाम की जिस दूसरी लड़की पर दूसरे कत्ल का–जॉन अंकल के कत्ल का–इलजाम थोपने की कोशिश की जा रही है, उसके भी बाल भूरे हैं। पहला कत्ल कातिला ने अपने भूरे बालों के साथ महरून कलर का चमड़े का कोट पहन कर किया और यूं बतौर कातिल एकता शुक्ला को प्रोजेक्ट करने की कोशिश की। दूसरा कत्ल उसने रोमिला जौली जैसा मैकिंटोश पहनकर किया ताकि वो कारनामा रोमिला जौली का जान पड़ता।''

''लेकिन इन हौलनाक वारदातों से मेरा क्या रिश्ता! सिवाय इसके



Scanned by CamScanner

कि जिस एक लड़की पर कत्ल का शक है वो एक–पहले–कत्ल के वक्त के आसपास मेरे साथ थी! मेरे से शुरूआत में इस बाबत झूठ बोलने की हिमाकत हुई तो इसलिये हुई कि मैं बात की गम्भीरता से नावाकिफ था। मैं फिर कहता हूं कि उस शाम एकता शुक्ला का मेरे साथ होना महज इत्तफाक था। और मेरा उसके साथ बिलकुल निर्दोष सम्बन्ध था। इट वाज प्योरली ए प्लैटोनिक रिलेशनशिप।''

''जी हां, आपने पहले भी कहा। बहरहाल मेरी यहां आमद का मकसद महज एकता शुक्ला की उस एलीबाई की तसदीक करना था जो एकता शुक्ला ने अपने बचाव में पेश की थी।''

''तसदीक हुई?''

''जी हां, हुई। आपने की तो हुई।''

''शुक्र है।''

''कोई गिला हुआ तो इस बात का हुआ कि अपनी...कम्पैनियन, सखी एकता शुक्ला के मुकाबले में आपने खुद को कुछ ज्यादा ही उजला रंगने की कोशिश की। गुनाह की लज्जत के दावेदार तो आप हैं लेकिन उसका कोई बदनुमा दाग अपने दामन पर देखना आपको गवारा नहीं। आप अंडा तोड़े बिना आमलेट खाने के तमन्नाई हैं। आपकी फितरत उस बेवड़े जैसी है जो रात को पीता है, सुबह को तौबा कर लेता है और फिर कहता है, 'रिन्द के रिन्द रहे, हाथ से जन्नत न गयी'। कैसी विडम्बना है कि जो औरत आपको हमबिस्तर होने के काबिल लगी, वो हमसफर होने के काबिल न लगी।''

''हमबिस्तर! ये क्या कह रहे हैं आप? मैंने बोला न मेरा उसका रिश्ता प्लैटोनिक था।''

''जी हां, जी हां। प्ले भी था और टॉनिक भी था।''–आगाशे उठ खड़ा हुआ–''इजाजत चाहता हूं। वक्त देने का शुक्रिया। नमस्ते।''

पीछे अपने ऑफिस में बैठा शशांक साहनी निहायत फिक्रमन्द था।

एकता शुक्ला से अपने ताल्लुकात आम हो जाने का अन्देशा उसे फिर सताने लगा था।

कैसे वो उस सम्भावित पब्लिसिटी पर और आगे उससे होने वाली बदनामी पर अंकुश लगा सकता था!

वो शख्स–आगाशे–साफ हिंट देकर गया था कि उसे उस बाबत थाने जाकर बात करनी चाहिये थी। लेकिन क्या थाने वाले चढ़ावा चढ़ाया जाने पर उसकी बाबत कुछ कहने से बाज आ जाते? क्या



Scanned by CamScanner

[illegible]-अगर कोई भी बी-बाज आ गयी थी? मुंह मांगी [illegible] करके भी उसका नाम लेने से कहां बाज आयी थी! [illegible] पुलिस वाले भी तो दोहरा सकते थे! उससे मोटी रकम [illegible] लेते और उसकी बाबत खबर को मीडिया को लीक कर देने से भी बाज न आते। रिश्वत की कोई रसीद तो हासिल होती नहीं जो ऐसा होने पर बाद में वो उसकी वापिसी का क्लेम लगा देता।

सबसे बड़ा अन्देशा उसे अभी भी एकता शुक्ला की तरफ से ही था। मौजूदा हालात में मीडिया को उसकी भनक लग जाना महज वक्त की बात थी। उसे पुलिस ने हिरासत में लिया था, वो एक रात थाने में रही थी, मीडिया के लिये ये अपने आप में न्यूज थी। एक खबर की सूंघ लगने पर वो शिकारी कुत्तों की तरह एकता शुक्ला की फिराक में निकलते तो आगे एक की आठ लगाते।

फिर क्या होता, उसके तसव्वुर से ही उसका दिल घबराने लगा।

उसके एकता शुक्ला से नाजायज ताल्लुकात की खबर अखबारों में छप जाना उसे बरबाद कर सकता था, उसकी आगामी महत्वाकांक्षाओं की अकाल मृत्यु की वजह बन सकता था। स्वराज पुंज पुराने खयालात का आदमी था, उस एक्सपोजर के बाद उसे अपनी बेटी की उससे शादी से गम्भीर एतराज हो सकता था। नतीजतन उसकी सगाई टूट सकती थी। भारत का सबसे बड़ा बिल्डर और टाऊन प्लानर बनने का उसका सपना ताश के घर की तरह ढेर हो सकता था। ऐसी भव्य शादी, हर नामचीन आदमी जिसमें शिरकत करना अपना परम सौभाग्य समझता, जो डिस्कवरी चैनल के माध्यम से सारी दुनिया में दिखाई जाती, एक सपना बन कर रह जाती।

और इस गम्भीर बरबादी की वाहिद वजह ये होती कि वो एकता की एक और मुलाकात की दरख्वास्त को नजरअन्दाज न कर सका, वो एक बार और उसकी सोहबत का आनन्द उठाने का लोभ संवरण न कर सका।

अब!

अब क्या वो हालात के आगे हथियार डाल देता और अपने चकनाचूर होते सपनों का खामोश तमाशाई बनना कुबूल कर लेता?

नहीं।

अभी हालात पूरी तरह से बेकाबू नहीं हुए थे।

बिगड़ी बात संवारने का एक रास्ता अभी खुला था।

वो उस दगाबाज लड़की को मीडिया और दिल्ली पुलिस की



Scanned by CamScanner

पहुंच से दूर कर सकता था जो पुलिस की एक ही पुकार से हिल गयी थी, जो अपनी खामोशी की मुंहमांगी फीस वसूल कर चुकने के बाद उसकी बाबत अपनी जुबान बन्द रखने के वादे पर टिकी नहीं रह सकी थी।

अब इसी में उसकी गति थी कि उसकी बाबत बयान देने के लिये एकता शुक्ला किसी को ढूंढे न मिलती।

गुड!

अपनी भावी विपत्ति से बेखबर एकता शुक्ला उस घड़ी प्रैस रिपोर्टरों की तवज्जो का मरकज बनी अपने फ्लैट पर मौजूद थी।

कालबैल के जवाब में उसने दरवाजा खोला था कि कितने ही रिपोर्टर और फोटोग्राफर यूं भीतर घुस आये थे जैसे कि वो उसका आवास नहीं, रेलवे स्टेशन था।

तत्काल उस पर सवालों की बौछार होने लगी थी।

"मैडम, वुई वांट ए पिक्चर!"

"मैम, वी वांट ए स्टोरी!"

"लॉक अप में आपकी रात कैसी गुजरी?"

"पुलिस आपके साथ कैसे पेश आई?"

"आपको मर्डर सस्पैक्ट समझा जाना कैसा लगा?"

"आप भयभीत थीं?"

"आपने कोई वकील किया?"

"आगे क्या करेंगी?"

"आप बहुत फोटोजेनिक हैं। माई पेपर वांट्स एन एक्सक्लूसिव पिक्चर शूट विद यू।"

वगैरह।

"हे भगवान!"–परेशानहाल एकता बोली–"इतने सवाल! इतने लोग! क्यों आप लोग यहां घुसे चले आये! मैंने कुछ नहीं कहना है। मेरे पास कहने के लिये कुछ नहीं है। आप लोग, प्लीज, जाइये यहां से।"

"आप मर्डर सस्पैक्ट हैं।"–एक रिपोर्टर बोला–"पब्लिक जानना चाहती है कि क्यों हैं?"

"आपका वर्शन क्या है?"–दूसरा बोला–"पुलिस का वर्शन क्या है?"



Scanned by CamScanner

"लॉक अप में बन्द किये जाने की"-तीसरा बोला-"आप पर क्या प्रतिक्रिया हुई?"

"हम आपका बयान चाहते हैं।"-कोई और बोला।

"मेरे पास कहने के लिये कुछ नहीं है।"

"कत्ल की बाबत न सही, अपनी लॉक अप की आपबीती की बाबत ही बताइये।"

"आप लोगों की जानकारी गलत है। मैं लॉक अप में नहीं थी?"

"आप ये कहना चाहती हैं कि आप थाने में नहीं थीं?"

"थाने में थी लेकिन लॉक अप में नही थी।"

"तो क्यों आप थाने में थीं?"

"मैं पुलिस की मेहमान के तौर पर वहां थी।"

"मेहमान के तौर पर किसलिये? ये दर्जा आपको क्योंकर हासिल हुआ?"

"मैं पुलिस की मदद कर रही थी।"

"आप मर्डर सस्पैक्ट नहीं थीं?"

"हरगिज भी नहीं थी। और खबरदार जो फिर ऐसा कहा।"

"आप पुलिस की क्या मदद कर रहीं थीं? क्या मदद कर सकती थीं? परमीत मेहरा के कत्ल की बाबत क्या आप खास ऐसा कुछ जानती थीं जो कि पुलिस नहीं जानती थी?"

"नहीं।"

"नहीं?"

"नहीं, नहीं, नहीं।"

एकता शुक्ला की हालत रोने जैसी हो गयी।

रिपोर्टरों पर उस बात का कोई असर न पड़ा। उनके सवालों की बौछार बरकरार रही।

"इतने नादान हम नहीं हैं, मैडम।"-एक रिपोर्टर बोला-"हम जानते हैं कि जहां धुंआ होता है, वहां आग भी होती है। हम ये भी जानते हैं कि पुलिस को आप पर परमीत मेहरा का कातिल होने का शक था और इसी बिना पर आपको हिरासत में लिया गया था। और हम ये भी जानते हैं कि अपने बचाव के लिये आपके पास मजबूत एलीबाई है..."

"है तो क्या? जब इतना कुछ जानते हो तो और जानने को क्या बचा! जब मेरी मजबूत एलीबाई की बात कुबूल करते हो तो पीछा क्यों नहीं छोड़ते हो? इसी बिना पर पुलिस ने भी छोड़ा कि नहीं छोड़ा?"



Scanned by CamScanner

"हमें पता लगा है कि आप कत्ल की रात को किसी मेल कम्पैनियन के साथ मौकायवारदात से मीलों दूर थीं। हम उस मेल कम्पैनियन का नाम जानना चाहते हैं ताकि स्थापित हो सके आपकी एलीबाई फैक्ट है, फिक्शन नहीं।"

"मैं वो नाम नहीं बता सकती। आप लोग जितना मर्जी जोर लगा लीजिये, मेरे से आप मेरे उस शाम के कम्पैनियन की बाबत नहीं जान सकते।"

"वो कोई बड़ा आदमी है?"

"कोई रुतबे और रसूखवाला आदमी है?"

"जिसकी ऊंची आन बान शान को आपके साथ नाम जुड़ने से बट्टा लगता है?"

"इज ही कीपिंग यू?"

"ये क्या बकवास है!"–एकता भड़क कर बोली।

"इस फ्लैट में उसने आपको सैट किया हुआ है? क्या ये उस बाहैसियत, बारसूख शख्स का प्रेम घरोंदा है? लव नैस्ट है?"

"आई से शट अप! स्टाप आल दिस नानसेंस! आप लोगों को मेरे कैरेक्टर पर छींटाकशी करने का, मेरी इज्जत उछालने का कोई अख्तियार नहीं। ये मेरा घर है। खबरदार जो इसे लव नैस्ट कहा। मैं कोई ऐसी वैसी लड़की नहीं हूं। आप लोगों की सोच भ्रष्ट है, आप लोग खुद भ्रष्ट हैं जो न्यूज की खातिर कैसी भी तोहमत किसी पर भी मंढ़ने लगते हैं।"

"वाट इज युअर लाइन आफ बिजनेस, मैडम।"

"मैं एक्ट्रेस हूं।"

"किसी फिल्म में काम किया?"

"हां। लेकिन रिलीज में अभी टाइम है। अभी शूटिंग चल रही है।"

"फिल्म का नाम क्या है?"

"अभी निर्धारित नहीं।"

"किसी टीवी सीरियल में काम किया?"

"वो भी अन्डर प्रोडक्शन है।"

"आजकल क्या कर रही हैं?"

"आजकल बिटविन असाइमेंट्स हूं।"

"क्या ये सच नहीं है कि हर आउट आफ वर्क एक्ट्रेस, हर लुकिंग फार वर्क एक्ट्रेस, यही कहती है?"



Scanned by CamScanner

"वाट नानसेंस! मैं स्ट्रगल के दौर से गुजर रही हूं..."

"जिसका मतलब है..."

"जो मतलब निकालना है, बाहर जा के निकालिये। प्लीज गैट आउट आफ माई हाउस। आल आफ यू। दिस मिनट।"

"लेकिन..."

"आप नहीं जाते तो मैं जाती हूं। रखिये आप मेरे घर को अपने कब्जे में। जब दफा हो जायेंगे तो लौट आऊंगी।"

उस धमकी का असर हुआ।

एक एक करके वो वहां से निकलने लगे।

आखिरी रिपोर्टर बाहर निकल गया तो एकता ने भड़ाक से उसके पीछे दरवाजा बन्द किया और सोफाचेयर पर ढेर हुई।

क्या मुसीबत थी!

क्यों वो खामखाह हर किसी की निगाह का मरकज बन गयी थी!

लोगों के डर से वो घर में ही तो बैठी रह नहीं सकती थी। उसका लाइफ स्टाइल ऐसा था कि घर तो उसके लिये 'लॉजिंग फार नाइट' का दर्जा रखता था। उसका मरना जीना तो रौनक में था, मौजमेले में था, आनन्द में था, 'ईट ड्रिंक एण्ड बी मैरी' उसकी लाइफ का फलसफा था। खड़े पैर कैसे वो घरघुसरी बन के रह सकती थी?

कैसी बीतेगी?

दिन ढल गया।

शाम हो गयी।

अनसाल्व्ड डबल मर्डर के सस्पैंस के साथ रात के साये इलाके पर घने होने लगे।

बाज खुराफाती लोग तो बेसाख्ता ये तक सोचने लगे कि अब तीसरा नम्बर किसका था!

ये बात स्थापित थी कि डबल मर्डर के लिये जिम्मेदार कोई भूरे बालों वाली खूबसूरत औरत थी जो सम्भवत: उसी इलाके की रहने वाली थी और जिसका अभी तक पुलिस कोई सुराग नहीं पा सकी थी।

उसकी बाबत आम धारण यही थी कि वो कोई सिरफिरी थी, मैनियाक थी, जिसकी डाक्टर जैकिल और मिस्टर हाइड जैसी दोहरी



Scanned by CamScanner

पर्सनैलिटी थी, जो बाहर से शान्त, सभ्य, सम्भ्रान्त लगती थी लेकिन भीतर से हत्यारी प्रवृत्ति वाली कोई खतरनाक औरत थी।

कौन थी?

कोई नहीं जानता था।

हर कोई अपने अड़ोस पड़ोस पर शकभरी खुर्दबीनी निगाह फिराता था और फिर इसी नतीजे पर पहुंचता था कि वो उसके पड़ोस में रहती नहीं हो सकती थी।

बहरहाल कॉलोनी में एक खामोश खौफ व्याप्त था जो सर्दियों का अन्धेरा होते ही और प्रबल होने लगता था। घर से बाहर लोग नर्वस होने लगते थे। सन्नाटे में घर लौटते अपनी परछाईं से चौंकते थे और जब ये पाते थे कि पीछे कोई नहीं था, तो चैन की लम्बी सांस लेते थे।

लेकिन असल चैन घर की सुरक्षा में पहुंच कर ही पाते थे।

ऐसे ही माहौल में और ऐसे ही मिजाज के साथ लाजपत नगर में शापिंग के बाद श्रेया घर लौटी।

हेमा ने चिन्तित भाव से उसका खामोश मुआयना किया।

थोड़ी देर बाद वो जरा सैटल हुई तो हेमा उससे रूबरू हुई।

"क्या बात है?"–वो बोली–"तबीयत तो ठीक है?"

"ठीक है।"–श्रेया अनमने भाव से बोली।

"रंग क्यों उड़ा हुआ है? परेशान क्यों जान पड़ रही हो?"

"ऐसी कोई बात नहीं है, आंटी। है भी तो अभी सब ठीक हो जायेगा।"

हेमा ने अपलक उसकी तरफ देखा।

"पता नहीं स्ट्रीट लाइट्स सर्दियों की अन्धेरी रातों में ही क्यों बिगड़ती हैं! हमारे घर के रास्ते की तो आधी से ज्यादा बन्द हैं।"

"अन्धेरे से डर लगा?"

"डर तो नहीं लगा लेकिन है अन्धेरा। एक बत्ती जल रही होती है तो दो बन्द होती हैं। बीच बीच के लम्बे लम्बे फासले अन्धेरे में डूबे मिलते हैं।"

"तुम डर गयी हो। लेकिन अन्धेरे से ही या रास्ते में कुछ और हुआ?"

"नहीं और कुछ नहीं हुआ।"

"कांप क्यों रही हो?"

"मैं तो नहीं कांप रही!"



Scanned by CamScanner

"पहले नहीं लगा था लेकिन अब लगा। पहले चेहरे का रंग उड़ा ही लगा था। लेकिन अब लगा कि कांप रही हो।"

"ऐसी कोई बात नहीं। है भी तो अभी सब ठीक हो जायेगा।"

"पहले भी बोला तूने ऐसा। जॉन अंकल के मर्डर का तो तेरे जेहन पर कोई असर नहीं हो गया?"

"नहीं, नहीं। बाहर के अन्धेरे से ही एकाएक दहशत हुई।"

"वो अन्धेरा तो रोज होता है! मर्डर तो रोज नहीं होता!"

"छोड़ो, आंटी। आई एम आल राइट नाओ।"

"कहीं वही दौरा तेरे को फिर तो नहीं पड़ रहा जो पहले पड़ा करता था?"

वो सकपकाई।

"एक अरसे से तो ऐसा कुछ हुआ नहीं। इसलिये मुझे कभी कुछ याद भी नहीं आया। क्या अब एकाएक फिर..."

"नहीं। नहीं।"

"दस साल हो गये तेरे मां बाप को मरे और तुझे मेरे साथ रहते। नौवीं क्लास में थी तू शायद जब वो...वो दौरा...हे भगवान! कैसे सिर से पांव तक पत्ते की तरह कांपती तू स्कूल से लौटी थी!"

"आंटी, प्लीज!"

"कई बार तो दौरे का असर दो दो, तीन तीन घंटे चलता था। फिर हफ्तों, कभी महीनों, तू ठीक रहती थी और एकाएक फिर...डॉक्टर कहता था कोई दिमागी बीमारी थी जो उम्र के साथ अपने आप ठीक हो जाती थी।"

"हो ही गयी।"

"हां। अब तो सालों हो गये। लेकिन आज...आज फिर तुझे वही... वही..."

"ऐसा कुछ नहीं है। आपका अन्देशा गलत है। यकीन जानिये मुझे कोई दौरा वौरा नहीं पड़ रहा। आप, प्लीज, पुराने दिनों को याद न कीजिये। और मुझे याद न कराइये। सड़क के अन्धेरे ने आज पता नहीं क्यों मुझे दहशत में डाला! लेकिन आप, प्लीज, इस बात का जिक्र न करना। न अंकल से, न अुनराग से। खासतौर से अनुराग से। उसने शाम को यहां आना था। आने वाला ही होगा। आंटी, उससे इस बाबत कुछ न कहना।"

"ठीक है, तू कहती है तो..."

"मैं कहती हूं।"



Scanned by CamScanner

"ठीक है। मैं...चाय बनाती हूं।"

श्रेया ने सहमति में सिर हिलाया।

चेहरे पर तब भी चिन्ता के भाव लिये हेमा किचन में चली गयी जहां उसने पानी उबलने को रखा।

तभी कालबैल बजी।

हेमा ने किचन से पार झांका तो पाया कि श्रेया अपनी जगह पर नहीं थी।

उसने जाकर दरवाजा खोला।

आगन्तुक अनुराग था।

"हल्लो।"–भीतर दाखिल होता वो बोला–"श्रेया आ गयी?"

"हां। अभी यहीं थी। अपने कमरे में गयी होगी।"

"गुड।"

"मैं उसके लिये चाय बना रही हूं। तुम पियोगे।"

"हां। थैंक्यू।"

हेमा किचन में गयी तो अनुराग उसके पीछे पीछे वहां चला आया।

"आपने रोमिला जौली की बाबत सुना?"–वो बोला।

"हां, सुना। सारे इलाके में चर्चा है। वो तो बेचारी रात एक बजे के बाद घर पहुंची थी। साढ़े बारह बजे तक तो साउथ एक्स में ही थी। साबित कर सकती है। अब तो तुम्हें शर्म आ रही होगी कि उस पर इतना बड़ा इलजाम लगाया।"

"हां, आंटी। लेकिन क्या करूं! आजकल तो इस इलाके पर और इसके बाशिन्दों पर कोई प्रेत का साया जान पड़ता है। अभी मैं यहां आ रहा था तो सारी सड़क यूं सुनसान पड़ी थी जैसे कर्फ्यू लगा हो।"

हेमा खामोश रही।

तभी कालबैल फिर बजी।

"वो भी आ गये शायद।"–हेमा बोली–"जा के दरवाजा खोलो, मैं ड्राईंगरूम में सब के लिये चाय लाती हूं।"

"ओके। वैसे गये कहां थे?"

"वॉक करने गये थे। और कहां जाते छुट्टी के दिन! एक बार पुन्य कमाने निकले थे सवेरे!"

अनुराग ने जाकर दरवाजा खोला।

चारों जने ड्राईंगरूम में इकट्ठे हुए। हेमा ने सब को चाय सर्व की।

"रोमिला जौली के बारे में सुना?"–शेखर साहनी बोला।

"हां, सुना।"–अनुराग वितृष्णापूर्ण भाव से बोला–"अब आप भी



Scanned by CamScanner

वही कहेंगे कि मैंने उस लड़की पर इलजाम लगाकर उसके साथ जुल्म किया।''

''नहीं कहूंगा, यार। बल्कि ये कहूंगा कि गलती किसी से भी हो सकती है। अलबत्ता वो लड़की अपनी बेगुनाही साबित कर दिखाने की पोजीशन में न होती तो उसके साथ भारी ज्यादती होती।''

''और मैं उसके लिये जिम्मेदार होता।''

''मैंने ये कब कहा?''

''हर बात कहने की जरूरत नहीं होती। मैंने जो देखा, जो समझा, वो दोहराया। मेरी नीयत में कोई खोट नहीं थी। कह कर मैंने कोई खुन्दक न निकाली थी। मैं कसम खाने को तैयार था कि कल रात मैंने अपने आगे फुटपाथ पर चलते रोमिला जौली को ही देखा था...''

''जैसे पहले''–हेमा बोली–''एकता शुक्ला को ही देखा था।''

''आंटी, प्लीज डोंट रब इट इन।''

''सॉरी।''

''कल मुझे इस बात में रत्तीभर शक की गुंजाइश नहीं दिखाई देती थी कि वो रोमिला जौली थी। वही कदकाठ, वही चाल, वही बालों की रंगत, वही उसके ट्रेडमार्क जैसा मैकिंटोश, हर चीज तो उसके रोमिला होने की चुगली कर रही थी। पता नहीं सारे फिल्मी इत्तफाक मेरे साथ ही क्यों होते हैं! एस.एच.ओ. ने थाने बुलाकर जो लताड़ लगाई, वो साल छः महीने तो नहीं भूलने वाली मुझे। वैसे ही मेरे खिलाफ है, गनीमत हुई–या शायद विवेक आगाशे की उसके साथ मौजूदगी वजह बनी–कि उसने मुझे कोई चार्ज लगाकर बन्द न कर दिया।''

''ओह, नो।''–शेखर बोला।

''ऐसा ही मूड था उसका।''

''आई सी।''

''मैं...साउथ एक्स उस रेस्टोरेंट में भी गया था जहां रोमिला जौली होस्टेस है।''

''वहां किसलिये?''

''उसको सॉरी बोलने के लिये।''

''सॉरी बोला?''

''बोला और बोलकर पहले से बड़ी गलती की।''

''वो कैसे?''

''उसे नहीं मालूम था कि उसकी मुखाबिरी करने वाला मैं था।



Scanned by CamScanner

कत्ल रात की बाबत जब उससे जवाबतलबी हुई थी और उसे बोला गया था कि ऐन कत्ल के वक्त वो मकबरे के बाहर के फुटपाथ पर देखी गयी थी तो उसे ये नहीं बताया गया था कि उनकी उस जानकारी का सोर्स क्या था! कि वो दावा करने वाला मैं था। उसे ये बात तब भी नहीं मालूम थी जबकि मैं मूर्खों की तरह उसे सॉरी बोलने पहुंच गया था। मेरे मुंह फाड़ने पर ही उसे ये बात मालूम हुई।''

''फिर क्या हुआ?''

''बुरा ही हुआ। उसे न मेरा सॉरी बोलना कुबूल हुआ, न मेरी शक्ल देखना गवारा हुआ। यही गनीमत हुई कि कोई कानूनी कार्यवाही की धमकी जारी न की। मेरी बात सुनते ही आपे से बाहर हो गयी, फौरन मेरे सामने से हट कर चल दी और तब तक हॉल में वापिस न लौटी जब तक कि मैं वहां मौजूद रहा।''

''च च च।''–हेमा ने नकली हमदर्दी दिखाई–''आजकल चौतरफा फजीहत हो रही है बांकेलाल की।''

''हां, आंटी। लेकिन एक बात बोलूं?''

''क्या?''

''मुझे इस बात की दिली खुशी हुई कि वो लड़की कातिल न निकली। उसे चाहे इस बात पर यकीन न आये लेकिन आप लोग यकीन जरूर करना।''

''मुझे यकीन है।''

''मुझे भी।''–शेखर बोला।

''मुझे भी।''–श्रेया बोली।

''उसका गुस्सा ठण्डा हो जायेगा''–अनुराग बोला–''तो मैं उसे फिर सॉरी बोलूंगा और फिर समझाने की कोशिश करूंगा कि मेरी जगह कोई दूसरा भी होता तो उसे भी वो मुगालता यकीनन लगा होता जो कि मुझे लगा।''

''एक फर्क के साथ।''–हेमा बोली।

''क्या?''

''मुगालता खाकर वो चुप बैठा होता, तुम्हारी तरह पुकारता दौड़ा न फिरा होता कि लोगो, सुनो, मैंने क्या देखा! सुनो, मैंने क्या समझा?''

''आप मेरा मजाक उड़ा रही हैं?''

''नो। नैवर। सिर्फ एक सबक देने की कोशिश कर रही हूं।''

''कैसा सबक?''



Scanned by CamScanner

"जो अंग्रेजों की कहावत में छुपा है।"

"कौन सी कहावत?"

"फिर बताऊंगी।"

"नहीं, अभी बताइये।"

"ओ, ये मुनासिब वक्त नहीं है।"

"तो उसका जिक्र नहीं करना था। अब किया तो बोलिये क्या कहना चाहती हैं!"

"तुम्हारी जिद पर कह रही हूं।"

"ठीक है।"

"इट इज बैटर टु कीप क्वाइट एण्ड कनसिडर्ड ए फूल दैन टु स्पीक एण्ड रिमूव आल डाउट्स।"

"ये कहावत मेरे पर लागू नहीं होती। जुल्म होता देखकर, जालिम को आंखों के सामने देखकर उसकी बाबत खामोश रहना बुजदिली है।"

"चलो, ऐसे ही सही।"

"बहरहाल"–शेखर बात का रुख बदलने की गरज से बोला–"तुम कह रहे थे कि जो भूल तुमसे हुई, वो किसी से भी हो सकती थी।"

"हां। वो कातिल की–कातिला की–मॉडस अप्रांडी थी जिसे कि उसने रिपीट किया था। पहले केस में उसने जानबूझकर महरून कलर का चमड़े का कोट पहना था जो एकता शुक्ला पहनती थी ताकि कातिला एकता शुक्ला जान पड़ती और दूसरे केस में उसने जानबूझकर वाइट कलर का मैकिंटोश पहना था जो रोमिला जौली के ट्रेडमार्क का दर्जा रखता था ताकि जॉन अंकल की कातिला रोमिला जौली जान पड़ती। अब आगे पता नहीं वो किसका बहूरूप धारण करने की कोशिश करेगी!"

"हे भगवान!"–श्रेया बोली–"अभी और कत्ल करेगी?"

"अगर करेगी तो?"

"और फिर तुम्हें गवाह बनने का मौका देगी ताकि फिर तुम्हें मुगालता लगे, फिर तुम्हारी खाट खड़ी हो?"

"ये खाट पर सोता है!"–शेखर बोला।

"मुहावरा इस्तेमाल किया, अंकल।"

"ओह! मुहावरा इस्तेमाल किया। बाई दि वे, पुलिस इस बात की मर्दमशुमारी क्यों नहीं कराती कि इस इलाके में कितनी भूरे बालों वाली



Scanned by CamScanner

लड़कियां रहती हैं! और फिर उन्हीं पर तवज्जो रख कर कातिल्ला की तलाश क्यों नहीं करती?''

''और''-हेमा व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली-''उनको खबरदार क्यों नहीं करती कि एकता शुक्ला और रोमिला जौली की तरह अगली बार कातिला उनमें से किसी को समझा जा सकता है?''

''है कौन ये शैतान की खाला!''-शेखर बोला।

''क्या पता कौन है!''-अनुराग ने असहाय भाव से कन्धे उचकाये-''एस.एच.ओ. की बातों से तो यही जान पड़ता था कि अभी केस का कोई ओर छोर पुलिस की पकड़ में नहीं आ रहा। वो विवेक आगाशे, जो बतौर क्रिमिनालोजिस्ट बहुत बड़ी तोप के तौर पर जाना जाता है और एस.एच.ओ. पर भी जिसका खूब रौब गालिब जान पड़ता था, भी अभी तक तो कोई करतब करके दिखा नहीं पाया है, कोई तीर मार के दिखा नहीं पाया है।''

''तफ्तीश में बिलकुल ही कोई प्रॉग्रेस नहीं?''

''बस, यही प्रॉग्रेस है कि उन्हें एतबार है कि कातिल न एकता शुक्ला है और न रोमिला जौली है। या कोई प्रॉग्रेस मानें तो इसे मान लीजिये कि वो-विवेक आगाशे-भी ये मान के चल रहा है कि कातिला इस इलाके की ही रेजीडेंट है, वैसे ही सम्भ्रान्त तरीके से यहां बसी हुई है जैसे कि हम बसे हुए हैं और जिसकी फैमिली को भी नहीं मालूम कि उनके बीच ऊपर से ऐन नार्मल लगने वाला एक ऐसा अदद मौजूद है जो मैनियाक है, होमीसिडल कम्पलैक्स का शिकार है।''

''ये सिलसिला कैसे खत्म होगा?''-श्रेया गहरी सांस लेती बोली-''कब खत्म होगा?''

किसी के पास जवाब नहीं था।

उस रात आसमान में घनी कालख पुती हुई थी, सुर्मई बादल छाये जान पड़ते थे, जबकि काले साये की तरह शशांक साहनी मंदिर के बाहर उगे एक घने पेड़ के नीचे खड़ा था और वहां से थोड़ा परे सड़क के परली तरफ स्थित एकता शुक्ला के फ्लैट पर निगाह जमाये था। जब भी वो उधर कदम बढ़ाने की तैयारी करता था, किसी राहगीर की सूरत में, किसी मोटरसाइकिल, स्कूटर सवार की सूरत में विघ्न आ जाता था।

ऐसा तीन चार बार हो चुका था।



Scanned by CamScanner

अखिरकार जब उसे दूर तक रास्ता सुनसान दिखाई दिया तो वो पेड़ की ओट छोड़कर आगे बढ़ा और खामोशी से चलता एकता के फ्लैट के सामने पहुंचा। उसने एक बार फिर सावधानी से दायें बायें झांका और फिर कालबैल बजाई।

ऊपर से वो दिलेरी और दृढ़ता दिख रहा था लेकिन भीतर से हिला हुआ था और आतंकित था। इस बात के खयाल से ही उसका खून खौलता था कि कमीनी ने उसकी बाबत सब बक दिया था। और पता नहीं पुलिस के सामने ही बका था या किसी और को भी–किसी सहेली को, किसी राजदां को–सब कह सुनाया था। एक बार मुंह फाड़ चुकने के बाद उसे फाड़ते ही रहने में उसका क्या जाना था! वादाखिलाफी से पहली बार दिल न लरजा तो आगे क्या फर्क पड़ता था!

साली दरवाजा क्यों नहीं खोल रही थी! साली...

दरवाजा खुला।

चौखट पर एकता प्रकट हुई। शशांक पर निगाह पड़ते ही उसके चेहरे पर हैरानी के भाव आये।

"आप!"–उसके मुंह से निकला।

शशांक उसे परे धकेलकर भीतर दाखिल हुआ। उसने ड्राईंगरूम में कदम रखा और फिर उसकी तरफ घूमा।

"दरवाजा बन्द कर"–वो गुस्से से बोला–"और इधर आ।"

एकता ने बेचैनी से पहलू बदला। उसके मिजाज से भी पता लग रहा था कि उसके मन में क्या था और वो वहां क्यों आया था?

"मैं मजबूर थी।"–बड़ी मुश्किल से वो बोल पायी–"मेरे पर भारी दबाव था। मेरी जान पर बनी थी।"

"सुना नहीं!"–शशांक सांप की तरह फुंफकारा–"हट वहां से।"

एकता के शरीर में सिरहन दौड़ गयी। उसने दरवाजा बन्द किया और फिर शशांक की तरफ दो कदम आगे बढ़ी।

"पुलिस को मेरा नाम बक दिया!"

"पु...पुलिस को नहीं।"

"विवेक आगाशे को! एक ही बात है। बात पुलिस तक पहुंची न!"

"क...कैसे मालूम?"

"खुद आगाशे ने बताया।"

"वो...वो आपके पास पहुंच गया?"



Scanned by CamScanner

"हां। साली! कमीनी! धोखेबाज! जब मैंने तेरी बात मानी–गोली की तरह तुझे दो लाख रुपये पहुंचाये–तो तेरे से मेरी बात क्यों न रखी गयी?"

"मैंने बोला न, मैं मजबूर थी। मेरी जान पर बनी थी। पुलिस ने मुझे पकड़ लिया था। रात भर हवालात में रखा था। फिर गिरफ्तार करने की धमकी दे रहे थे। मुझ पर कत्ल का मुकद्मा चलाने की धमकी दे रहे थे। मैं क्या करती? मुझे सब बताना पड़ा। गिरफ्तारी से बचने के लिये, फजीहत से बचने के लिये बतौर अपनी एलीबाई आपका नाम लेना पड़ा।"

"और किसी को बताया?"

"विवेक आगाशे के अलावा किसी को नहीं।"

"उसे क्यों बताया? वो तो पुलिस नहीं?"

"इस केस में पुलिस के साथ काम कर रहा है। पहली बार यहां पुलिस के साथ ही आया था।"

"उसके अलावा किसे बताया?"

"किसी को नहीं।"

"प्रैस वालों ने न घेरा?"

"घेरा। कितने ही पहुंच गये थे यहां। जमघट लग गया था।"

"वो क्यों आये यहां?"

"उन्हें कहीं से भनक लग गयी थी–जरूर पुलिस से कोई टिप मिली थी–कि अपने बचाव के लिये मेरे पास मजबूत एलीबाई थी। वो उस एलीबाई की स्टोरी जानना चाहते थे। जानना चाहते थे कि परमीत मेहरा के कत्ल के वक्त मैं कहां थी, किसके साथ थी!"

"क्या! उन्हें भी सब बोल दिया!"

"नहीं।"

"क्या नहीं?"

"उन्हें मैंने कुछ भी बताने से साफ इनकार कर दिया था। पुलिस को बताना मेरी मजबूरी थी। आगाशे को इसीलिये बताया। न बताती तो वही सब कुछ पूछने पुलिस पहुंच जाती। लेकिन प्रैस वाले मेरे से कुछ नहीं कहलवा सके थे, कुछ नहीं कुबुलवा सके थे।"

"हूं।"

"कुछ तो कमीने फटकारने पर गये और फिर आ गये।"

"फिर आ गये?"



Scanned by CamScanner

"हां। तीन चार जने। अभी आपके आगे आगे ही तो गये। हैरानी है कि आपको दिखाई न दिये।"

"उन्हें क्या बताया?"

"कुछ नहीं। कुछ भी नहीं। जब पहली बार कुछ न बताया तो अब कैसे बता देती! पुलिस को बुलाने की धमकी दी तो आखिर टले।"

"बहरहाल अहम बात ये है कि तुमने उन्हें कुछ न बताया?"

"हां। कसम उठवा लो।"

"जो बताया, उस आगाशे को बताया जिसने आगे पुलिस को खबर की?"

"हां।"

"गलती की। अहमकाना, गैरजिम्मेदाराना हरकत की।"

"बस, हो गयी गलती। वो बोलता ही ऐसा मीठा था, उसका पूछने का अन्दाज ही ऐसा ऐतबार जगाने वाला था कि...कि...अब क्या कहूं!"

"अब मेरी सुनो। जो हुआ सो हुआ, आगे जो मैं कहता हूं वो करो।"

"क्या? क्या करूं?"

"जरूरत का जो छोटा मोटा सामान पैक करना है, करो।"

"सामान पैक करूं?"

"हां।"

"वो किसलिये?"

"तफरीह के लिये। सैर पर निकलने के लिये।"

"मैं समझी नहीं।"

"तुम मेरे साथ एयरपोर्ट चल रही हो। मैं एक ट्रैवल एजेन्ट से बात करके आया हूं। मुझे पूरी उम्मीद है कि वो तुम्हारी काठमाण्डू की टिकट के साथ हमें वहां मिलेगा। न मिला तो ओवरनाइट तुम एयरपोर्ट के होटल पर ही रहोगी। कल की किसी फ्लाइट से यकीनन तुम्हारी बुकिंग हो जायेगी।"

"काठमाण्डू की?"

"हां।"

"आप मुझे काठमाण्डू जाने को बोल रहे हैं?"

"हां।"

"खड़े पैर!"



Scanned by CamScanner

"हां।"

"इस मौसम में?"

"हां। अब बहस न करो। जो कहा है वो..."

"क्यों कहा है?"–उसका लहजा, जिसमें अब तक अदब का पुट था, एकाएक बदला–"क्या समझते हो मुझे? मैं तुम्हारा गैरजरूरी सामान हूं? या तुम्हारे हुक्म की गुलाम हूं?"

"तुम पागल हो।"

"अच्छा!"

"नादान हो जो वक्त की नजाकत को नहीं समझती हो। तुम समझती हो अखबारवाले–या पुलिस वाले, खासतौर से पुलिस वाले–इतनी आसानी से तुम्हारा पीछा छोड़ देंगे?"

"न छोड़ें। पुलिस पर मेरा जोर नहीं लेकिन अखबारवाले मेरे पीछे पड़ कर अपना वक्त ही जाया करेंगे।"

"तुम समझती नहीं हो।"

"मैं सब समझती हूं। तुम्हारा जलावतन का हुक्म मुझे कुबूल नहीं। तुम्हारी खातिर मैं परदेस में धक्के खाने नहीं जा सकती।"

"मूर्ख मत बनो। मैं तुम्हें दो लाख रुपये और दूंगा।"

"क्या!"

"यहां से निकलो। दस मिनट में यहां से एयरपोर्ट के लिये कूच कर चलो। मैं काठमाण्डू का प्लेन टिकट और चार हजार डालर नकद तुम्हारी हथेली पर रखूंगा।"

एकता की आंखों में लालच की चमक आयी।

"ऐसा?"

"हां, ऐसा।"

"वहां जा के मुकर जाओगे!"

"पागल हुई है?"

"बोलोगे पैसा पीछे भेज दोगे!"

"अरे, क्या वाहियात बातें कर रही है? तू क्या समझती है मुझे? अभी कल तक तेरा सब कुछ मेरे हवाले था और आज तुझे मेरी इतनी सी बात पर विश्वास नहीं?"

उसने उत्तर न दिया।

"तेरी जुबान से निकलते ही दो लाख रुपये तुझे पहुंचे कि नहीं पहुंचे?"

"पहुंचे।"



Scanned by CamScanner

"तो अब क्या खुदाई की पेशकश है जो मेरे से पूरी नहीं की जायेगी? जिससे मैं मुकर जाऊंगा?"

"नहीं, ऐसा तो शायद तुम नहीं करोगे।"

"शायद! शायद!"

"तुम नहीं करोगे।"

"तो फिर? अब जो फैसला करना है, जल्दी कर।"

'ठीक है।"

"तो पैकिंग शुरू कर। सिर्फ एक सूटकेस ले के चलना है।"

"मुझे...कब तक वहां रहना होगा?"

"पन्द्रह बीस दिन। बड़ी हद एक महीना।"

"यूं आननफानन निकल पड़ना जरूरी है?"

"हां, जरूरी है।"

"हम कल नहीं निकल सकते?"

"जब मैंने बोला अभी निकल चलना जरूरी है तो कल का क्या मतलब? आज ही चलना है। अभी चलना है। यहां आकर तू नहीं जानती मैंने कितना बड़ा खतरा मोल लिया है। किसी न्यूज हाइन्ड ने मुझे यहां देख लिया तो जो बात वो तुमसे जानना चाहता है, वो वैसे ही जान जायेगा। इसलिये जो करना है अभी करना है।"

"अच्छा!"

"हां। अब अपनी तैयारी करके चल।"

"मैं कोई चाय वाय..."

"नहीं, नहीं चाहिये। अब हिल के दे।"

वो बैडरूम में चली गयी।

पीछे शशांक ने एक सिगरेट सुलगा लिया और बेचैनी से उस छोटी सी जगह में चहलकदमी करता—करने की कोशिश करता—वो उसके छोटे छोटे कश लगाने लगा।

मन ही मन वो बहुत चैन महसूस कर रहा था कि अपनी योजना के मुताबिक आखिरकार वो एकता को दफा होने के लिये राजी करने में कामयाब हो गया था। एक बार वो काठमाण्डू पहुंच जाती तो वो उसकी जुबान को ताला लगने जैसा ही होता।

अब उसका अगला कदम अपनी शादी को करीब सरकाने के लिये स्वराज पुंज से बात करना था।

सिगरेट खत्म हुआ तो उसने उसी से एक नया सिगरेट सुलगा लिया।



Scanned by CamScanner

उसके खत्म होने तक सफर के लिये तैयार एक सूटकेस हाथ में लटकाये वो बैडरूम से बाहर निकल आयी।

"तैयार?"

"हां।"-वो बोली।

"गुड। अब मेरे जाने के पांच मिनट बाद तुम यहां से निकलना और ताले वाले लगा के अगली सड़क के सिरे पर पहुंचना। मेरी कार वहां खड़ी है। मै तुम्हें कार में-बीएमडब्ल्यू में-बैठा मिलूंगा। ठीक!"

"तुम चाहते हो कोई हमें साथ न देखे?"

"यही चाहता हूं मैं।"

"कार में..."

"कुछ दिखाई नहीं देगा।"

"हूं?"

"क्या हूं?"

"पांच मिनट बाद। अगली सड़क पर।"

"करैक्ट। अब बत्तियां बन्द करो।"

उसने बत्तियां बन्द कीं तो वो एक खिड़की पर पहुंचा। पर्दे को तनिक सरका कर उसने सावधानी से बाहर झांका तो बाहर सड़क को सुनसान पाया और हर तरफ सन्नाटा व्याप्त पाया।

"गुड! अब अपने निकलने का वक्त आने तक के लिये एक दो बत्तियां जला लो।"

उसने आदेश का पालन किया।

शशांक प्रवेश द्वार पर पहुंचा, उसने उसे सावधानी से खोलकर बाहर कदम रखा और आगे की दो सीढ़ियां उतरकर सड़क पर पहुंचा।

तभी एकाएक किसी पेड़ के पीछे से, किसी झाड़ी के पीछे से, वहां उपलब्ध किसी ओर ओट के पीछे से साये नमूदार होने लगे और प्रेतों की तरह उसकी तरफ बढ़ने लगे।

उसकी रूह कांप गयी।

रिपोर्टर!

कमीने-जैसा कि एकता समझती थी-वहां से टले नहीं थे, जगह जगह पर छुपे एकता के फ्लैट को वाच कर रहे थे।

उस घड़ी वो एक स्ट्रीट लाइट के ऐन नीचे था इसलिये उसके उन लोगों की पहचान में आने में भी कोई अड़चन नहीं थी।



Scanned by CamScanner

"अरे!"–कोई बोला–"ये तो साहनी बिल्डर्स के बिग बॉस शशांक साहनी साहब हैं?"

"केस का इनग्रेडियेंट एक्स हैं।"–कोई दूसरा बोला।

"इसे कहते हैं"–कोई और बोला–"बगल में छोरा शहर ढिंढोरा।"

"मिलियनेयर बिल्डर विजिट्स हिज लव नैस्ट।"–किसी ने जैसे अपने पेपर की अगले रोज की हैडलाइन उचारी।

"ये क्या बकवास है!"–शशांक भड़का–"मेरी एकता शुक्ला से बिजनेस अप्वायटमेंट थी।"

कोई जोर से हंसा।

"कैसी बिजनेस अप्वायटमेंट! कैसा बिजनेस! दि ओल्डेस्ट, सर?"

"शट युअर फिल्दी माउथ, डैम यू।"

"सर, आप भी तो मजाक कर रहे हैं। रात की इस घड़ी हमारा हंसने का मूड नहीं है। हमें मजाक नहीं चाहिये, स्टेटमेंट चाहिये।"

"मिस्टर साहनी"–कोई और बोला–"आप कुबूल करते हैं कि आप ही वो शख्स हैं जो कि परमीत मेहरा के कत्ल की रात को एकता शुक्ला के साथ थे?"

"इनकार करने का कोई फायदा नहीं होगा।"–कोई और बोला–"रात की इस घड़ी आपकी यहां मौजूदगी..."

"चोरों की तरह आमद।"–किसी ने तरह दी।

"...अपनी कहानी खुद कह रही है।"

"इनकार बेमानी होगा, जनाब। हकीकत आपके चेहरे पर लिखी है।"

तब तक शशांक पूरी तरह से हिल चुका था और उन लोगों से मुकाबला करते रहने की कूवत अपने आप में नहीं पा रहा था।

"आई हैव नथिंग टु से।"–बड़ी मुश्किल से वो बोल पाया–"आप लोग मेरी यहां मौजूदगी की बाबत कोई भी नतीजा निकालने के लिये पूरी तरह से आजाद हैं। इससे ज्यादा एक लफ्ज भी आप लोगों को मेरी जुबान से सुनने को नहीं मिल सकता। अब अपने अपने अखबार के दफ्तर में पहुंचिये, अपनी अपनी रपट लिखिये और उसमें एक की आठ लगाइये। खुली छूट है आपको। नाओ प्लीज गो अवे, लाइक जन्टलमैन, विच आई नो यु आर नाट। आई विश यू आल ए वैरी गुड नाइट।"



Scanned by CamScanner

एक एक करके वो वहां से विदा होने लगे।
शशांक घूमा और वापिस फ्लैट में दाखिल हो गया।
एकता की उसकी सूरत पर निगाह पड़ी तो वो हकबकाकर एक कदम पीछे हट गयी।
फ्लैट से निकलने और वापिस लौटने के बीच के वक्फे में वो दस साल बूढ़ा लगने लगा था।
"क...क..."-उसके मुंह से निकला-"क्या...क्या हुआ?"
उसका सवाल ही बता रहा था कि बाहर जो ड्रामा वाकया हुआ था, उसकी उसे खबर नहीं लगी थी।
"सूटकेस रख दो।"-वो भर्राये कण्ठ से बोला-"ट्रिप कैंसल है।"
"क्या!"
"काठमाण्डू जाने की जरूरत नहीं।"
"क...क्यों?"
"क्योंकि जिस वजह से जाना था, वो वजह नहीं रही। ढेर हो गयी।"
"कैसे! क्या हुआ?"
"जिन रिपोर्टरों के यहां दूसरे फेरे का तुम जिक्र कर रही थीं, वो यहां से टले नहीं थे।"
"क्या!"
"सिर्फ ड्रामा किया था, जाहिर किया था कि टल गये थे। सब आजू बाजू छुपे हुए थे और तुम्हारे फ्लैट को वाच करने में लगे हुए थे।"
"हे भगवान! आपका मतलब है..."
"यही मतलब है मेरा। अब तुम्हारे मुंह खोले बिना भी वो सब जानते हैं और सब उनके कल के अखबारों की सुर्खियों में होगा।"
"हे भगवान! ल...लेकिन म...मेरी क्या...मेरी क्या गलती है?"
"तुम्हारी कोई गलती नहीं। सब मेरी गलती है।"
"म...मेरा ये मतलब नहीं था।"
"मेरा यही मतलब था। मेरा ही दिमाग चल गया था जो मैं उठा और यहां चला आया।"
"अब, आपको क्या मालूम था..."
"ठीक। ठीक। मालूम था या नहीं मालूम था, मुझे यहां नहीं आना चाहिये था। तुम्हें फोन करना चाहिये था और तुम्हें कहीं बुलाना



Scanned by CamScanner

चाहिये था। एक नादानी मेरे से हुई, हाथ के हाथ उसकी सजा मुझे मिल गयी।''

''उन कमीनों ने भी तो हद कर दी! जाहिर किया कि यहां से चले गये और घात लगा के बैठ गये। लेकिन...''

''क्या लेकिन?''

''आपका रुतबा है, हैसियत है, सारी दिल्ली का टॉप ब्रास आपको जानता है, आप उनको कुछ छापने से रोक नहीं सकते?''

''नहीं, नहीं रोक सकता। रुतबा, हैसियत दिखाकर नहीं रोक सकता। दिल्ली में ऐसी बातों का कौन रौब खाता है! यहां तो हर तीसरा आदमी रुतबे वाला है, हैसियत वाला है। खुद नहीं है तो ऐसे किसी का करीबी है।''

''कोई प्रैक्टीकल काम करके!''

''वो कौन सा हुआ?''

एकता ने हिचकिचाते हुए अंगूठे और तर्जनी उंगली से सिक्का उछालने का एक्शन किया।

''तुम''–उसे घूरता वो बोला–''रिश्वत का आइडिया सरका रही हो?''

''क्या गलत कर रही हूं?''

''समझती हो कि तुम्हें और उन्हें एक ही तराजू में तोला जा सकता है?''

''क्या गलत समझती हूं?''

शशांक ने हैरानी से उसकी तरफ देखा।

''शायद ठीक समझती हो''–फिर आह भरकर बोला–''लेकिन वो तो कितने ही थे!''

''तो क्या हुआ! आप कईयों को भी हैंडल कर सकते हैं। आप कितने ताकतवर हैं, मैं क्या जानती नहीं?''

''जिस ताकत का तसव्वुर इस वक्त तुम्हारे जेहन में हैं, वो हर जगह कारगर नहीं होती। बहरहाल उस बाबत कोई कारआमद कदम उठाने की स्टेज अब गुजर गयी। अब तो जो होना है, वो तो होना ही है, खाली इस बात का इन्तजार है कि जो होना है–हो के रहना है–वो क्योंकर होगा?''

फिर इससे पहले कि वो कुछ कह पाती, शशांक घूमा और लम्बे डग भरता वहां से बाहर निकल गया।



Scanned by CamScanner

❑❑❑

अगली सुबह शेखर साहनी लेट सोकर उठा।

लायब्रेरी जाने के लिये तैयार होकर वो ब्रेकफास्ट टेबल पर पहुंचा तो उसने पाया कि श्रेया अपने ब्रेकफास्ट से लगभग फारिग हो चुकी थी।

"रात को ठीक से नींद नहीं आयी।"–उसने खुद ही सफाई दी–"पुलिस की हाय तौबा के ही सपने आते रहे। पता नहीं ये सिलसिला कब खत्म होगा?"

हेमा ने उसे टोस्ट, आमलेट और चाय सर्व की।

मेज पर उस रोज का अखबार पड़ा था जिसे तब तक किसी ने नहीं छुआ था। उसने अखबार को उठाकर खोला, मुखपृष्ठ पर निगाह डाली तो तत्काल उसके नेत्र फैले।

"हे भगवान!"–उसके मुंह से निकला–"ये क्या है?"

"क्या है?"–श्रेया सशंक भाव से बोली।

हेमा ने उसके कन्धे पर से अखबार पर निगाह डाली।

"क्या है?"–वो बोली–"आसाम में फिर बम फूटा है, और क्या है!"

"अरे, ये...इधर...दायें कालम में। ये देखो। पढ़ो।"

"धनकुबेर के प्रेम घरौंदे का पर्दाफाश!"–हेमा ने सुर्खी पढ़ी।

"क्या मतलब हुआ इसका?"–श्रेया उलझनपूर्ण स्वर में बोली।

"सुर्खी के नीचे"–हेमा बोली–"जॉन अंकल के मर्डर के बारे में कुछ छपा है।"

"क्या! जॉन अंकल का प्रेम घरौंदा! बट दैट्स नानसेंस!"

"अरे"–शेखर झल्लाया–"धनकुबेर भी तो लिखा है! जॉन अंकल धनकुबेर हैं? ये खबर शशांक के बारे में है।"

"क्या!"

"खुद पढ़ो।"

हेमा ने अपने पति के हाथ से अखबार झपट लिया और जल्दी जल्दी उस खबर पर निगाह दौड़ाई।

"दूसरे कत्ल के बारे में छपा है।"–वो बोली–"उस रहस्यमयी रमणी के बारे में सवाल उठाया गया है जो जहर के कैप्सूल को चॉकलेट में छुपा कर मौत बांटती है। हैरानी जाहिर की गयी है कि



Scanned by CamScanner

जॉन पाब्लो जैसे निरीह प्राणी की जान लेने के पीछे उस रहस्यमयी रमणी का क्या मकसद हो सकता है..."

"आगे!"–शेखर उतावले स्वर में बोला–"आगे!"

"आगे लिखा है कि अब ये स्थापित हो गया है कि नवोदित अभिनेत्री एकता शुक्ला–जो बतौर मर्डर सस्पैक्ट पुलिस की निगाहों में थी–का कत्ल की दोनों वारदातों में से किसी से कोई रिश्ता नहीं। पहले–परमीत मेहरा के–कत्ल के वक्त वो मौकायवारदात से बहुत दूर अपने मित्र और शाम के साथी मकबूल लोकल बिल्डर शशांक साहनी की सोहबत में थी और दूसरे कत्ल के वक्त वो ऐन पुलिस की नाक के नीचे इलाके के थाने के लाक अप में बन्द थी..."

"और आगे।"

"एकता शुक्ला के हक में ये बहुत बड़ा संयोग हुआ है कि शशांक साहनी जैसी प्रसिद्ध हस्ती उसकी एलीबाई है। उसके शशांक साहनी से खुफिया ताल्लुकात का राज खुलने के बाद ही बतौर मर्डर सस्पैक्ट उसके नाम को पुलिस ने खारिज किया है। ज्ञातव्य है कि निकट भविष्य में शशांक साहनी नगर के बड़े उद्योगपति काटनकिंग कहलाने वाले स्वराज पुंज के दामाद बनने वाले हैं। शशांक साहनी जो कि नेहरू प्लेस स्थित साहनी बिल्डर्स के..."

"और आगे।"

"आगे शशांक का संक्षिप्त जीवन परिचय है"–हेमा बोली–"और तसवीर है। क्या मतलब हुआ इसका? ये कि तुम्हारे भाई के उस एकता शुक्ला से–जिसके बारे में हर किसी को मालूम है कि कालगर्ल है–नाजायज ताल्लुकात थे?"

"सब झूठ है। बकवास है"–शेखर भड़का–"ये साले अखबार आजकल निहायत गैरजिम्मेदार हो गये हैं। सनसनी फैलाने के लिये अनाप शनाप कुछ भी छाप देते हैं। शशांक का ऐसी बदनाम लड़की से कुछ लेना देना हो, ये कोई मानने की बात है! पढ़ेगा तो क्या सोचेगा! कितना अपसैट होगा..."

"पढ़ ही चुका होगा।"–हेमा लापरवाही से बोली–"तुम आज लेट उठे हो। अखबार आये तो दो घंटे हो गये हुए हैं।"

"ये कोई मानने की बात है कि शशांक बीट पर गिरेगा! उसकी हैसियत है, रुतबा है, ऊंची सोसायटी में उसका नाम है, क्यों वो एकता शुक्ला जैसी लड़की से..."

"अब लैक्चर तो तुम रहने ही दो। भाई की हिमायत भाई के सामने



Scanned by CamScanner

करना, तभी राजा राम चन्दर जी महाराज की भरत सम भाई से निष्ठा और प्रेम की हाजिरी लगेगी। मुझे क्या घूरते हो? मैं तो खुश हूं कि तुम्हारे अकड़े हुए भाई का थोड़ा कलफ झड़ने की नौबत आयी है। नाक पर मक्खी नहीं बैठने देता था। अब नहीं बैठेगी मक्खी। नाक बाकी बचेगी तो मक्खी बैठेगी न!''

''हेमा!''

''क्या हेमा! तभी तड़पता फिरता था! तभी फसाद खड़ा करने के लिये यहां चला आया! शुरू से जानता था, सबसे पहले जानता था, कि उसका ये नापाक राज फाश हो के रहना था। प्रेम घरौंदा! क्या बढ़िया हिन्दी निकाली है लव नैस्ट की। मजा आ गया। मैं भी तो कहूं वो मामूली लड़की इतने फैंसी फ्लैट में रहती थी तो कैसे रहती थी! ऐसे रहती थी, राम चन्दर जी महाराज! पेपर में साफ छपा है कि तुम्हारे भाई की कीप थी। उसी ने लड़की को उस फ्लैट में सैट किया हुआ था। अब आया ऊंट पहाड़ के नीचे।''

''अरे, बाज आओ।''–शेखर झल्लाया।

''क्या बाज आऊं?''

''तुम समझती नहीं हो।''

''क्या नहीं समझती मैं?''

''अरे, शशांक का दामन दागदार होगा तो क्या हमारा उजला रह पायेगा? उस पर छींटाकशी होगी तो छींटे उड़ कर हमारे तक नहीं पहुंचेंगे? अभी देख लेना, जो लोग मुझे शेखर साहनी कह कर बुलाते हैं, अब शशांक का भाई कह कर बुलायेंगे, 'वो देखो, लव नैस्ट वाले शशांक साहनी का भाई जा रहा है' कहेंगे।''

''माथा फिरा है तुम्हारा। खामखाह बधाईयां ले रहे हो...''

''बधाईयां! बधाईयां बोला?''

''और क्या! 'बद्नाम भी होंगे तो क्या नाम न होगा' की तर्ज पर। वैसे कौन जानता है तुम्हें! अब सोच के खुश हो रहे होगे कि बच्चा बच्चा जान जायेगा।''

''तुम...पागल हो।''

''मैं नहीं, तुम पागल हो। ये पढ़े लिखे लोगों की कॉलोनी है। कैसे कोई तुम्हारे छोटे भाई की करतूत के लिये तुम्हें जिम्मेदार ठहरायेगा?''

''करतूत क्या?''–श्रेया बोली–''ऐसी बातें आज की मॉडर्न सोसायटी में आम होती हैं।''



Scanned by CamScanner

"लो! और सुन लो! माशूक पालने को आम बात बता रही है बिटिया रानी।"

"मेरा वो मतलब नहीं था।"

"तो और क्या मतलब था?"

"मेरा मतलब था कि ये पासिंग फैंसी है। एक कैजुअल अफेयर से-जो कैसे भी वाकया हुआ-शशांक अंकल के किरदार को इतना काला तो नहीं रंगा जाना चाहिये!"

"इससे ज्यादा काला रंगा जाना चाहिये। और किसी का नहीं तो मिस्टर 'सर्फ से धुला' का तो जरूर ही रंगा जाना चाहिये। सुबह दोपहर शाम रात जो मैं 'मैं उजला तू काला' भजता हो, ऐसी पोल खुलने पर उसको काला नहीं, स्याह काला रंगा जाना चाहिये।"

"तुम ऐसा इसलिये कह रही हो"-शेखर बोला-"क्योंकि तुम शशांक के खिलाफ हो।"

"हूं न! मैं क्या मुकर रही हूं? जो जब चाहे हमारे घर आकर हमारी इज्जत उतार जाये, उसके खिलाफ न होऊं तो और क्या करूं?"

तभी अनुराग जोशी वहां पहुंचा तो वो बद्मजा तकरार खत्म हुई।

"अखबार देखा आपने!"-आते ही वो उत्तेजित भाव से बोला-"ओहो! अखबार ही देख रहें हैं! शशांक की खबर पढ़ ली न?"

शेखर ने अनमने भाव से सहमति में सिर हिलाया।

"अच्छा भांडा फूटा!"-अनुराग बोला-"कितनी पोल निकली मिस्टर बिगविग शशांक साहनी के ढोल में! नाक का रुख हमेशा आसमान की तरफ रहता था। गर्दन से खम निकलता ही नहीं था।"

"अनुराग!"-शेखर गुस्से से बोला।

"च च च।"-हेमा बोली-"कुछ गलत कह दिया लड़के ने!"

"गलती किसी से भी हो सकती है। शशांक से हो गयी तो क्या तुम लोग उसकी गलती को लाठी के गज से नापोगे? उस पर फबतियां कसने से पहले तुम लोगों को खयाल करना चाहिये कि हम सब एक ही फैमिली हैं।"

"हमें खयाल है। उसे भी तो हो! हुआ कभी? अब सच बोल के दिखाना। हुआ कभी? जवाब दो! हुआ कभी?"

शेखर ने जवाब न दिया, वो परे देखने लगा।

"बड़े भाई के लिये, बड़ी भाभी के लिये, जो इज्जत, जो अदब उसे दिखाना चाहिये, उसने दिखाया कभी! कैसे आता है यहां! जैसे राजकुंवर को भंगी बस्ती में जाना पड़ गया हो। जैसे यहां कोई उसके



Scanned by CamScanner

साथ छू गया तो उसे जा के नहाना पड़ेगा। यहां आकर एक प्याली चाय तक भी तुम्हारे साथ शेयर करने की कोशिश कभी की उसने! वो तो आता है हमें हमारी जात औकात दिखाने। अपनी अजीमोश्शान हस्ती के सामने हमें बौना साबित कर दिखाने। अहंकार से ऐंठा हुआ, खुशफहमी से बौराया हुआ, एक हादसे की तरह झोली में आकर गिरी ऊंची औकात से इतराया हुआ, तहजीब से कोरा, निहायत खुशफहम शख्स है तुम्हारा भाई जो जबसे तुम्हारे पिता मरे हैं तुमसे जलील, शर्मनाक, सख्त काबिलेएतराज तरीके से पेश आ रहा है और तुम हो कि उसे यूं पेश आने देते हो। नहीं जानते हो, नहीं समझते हो कि जुल्म सहने से भी जालिम की मदद होती है।''

''मेरे पर कोई जुल्म नहीं हो रहा।''

''बराबर हो रहा है। ये कहो कि ढीठ हो गये हो। जुल्म सहने के आदी हो गये हो। जिसे जुल्म होता दिखाई न दे, जो जुल्म को नजरअंदाज करे, वो जुल्म करने वाले से ज्यादा बड़ा गुनाहगार है और किसी हमदर्दी का हकदार नहीं।''

''मुझे नहीं चाहिये हमदर्दी।''

''हमदर्दी क्या, तुम्हें तो कुछ भी नहीं चाहिये। सुदामा जो ठहरे! तुम्हारे लिये तो चार रोटियां एक लंगोटी बाकी सब बकवास है।''

''तुम...तुम शशांक को नापसंद करती हो इसलिये...''

''कौन सी खूबी है उस ढीठ, पाखण्डी, नामाकूल नालायक में जिसके लिये मैं उसे पसन्द करूं? अब तो उसकी क्वालीफिकेशन में और इजाफा हो गया। इतना कुछ होने के साथ साथ अब पता चला कि वूमेनाइजर भी है।''

''हेमा, फार गॉड सेक शट युअर माउथ।''

''मेरे चुप रहने से हकीकत तो नहीं बदलने वाली! हकीकत तो तुम्हारे सामने अखबार के फ्रंट पेज पर बिखरी पड़ी है।''

''मैं...मैं जाता हूं।''

''जरूर जाओ। और जाकर अपनी लायब्रेरी में पनाह पाओ। शुतरमुर्ग की तरह। जो रेत में चेहरा छुपाता है। जो...''

बाकी बात सुनने के लिये शेखर वहां न रुका।

ऐन उस घड़ी शशांक साहनी भी अपने गोल्फ लिंक्स के आलीशान मैंशन में अपनी आलीशान ब्रेकफास्ट टेबल पर मौजूद था। लेकिन ब्रेकफास्ट में उसकी कोई रुचि नहीं थी। उसने अपने लिये चाय



Scanned by CamScanner

बनाती थी लेकिन पिछले पांच मिनटों में उसने उसका मुश्किल से एक घूंट भरा था। उसके सामने उस रोज का अखबार पड़ा था और उसमें उसकी बाबत छपी सुर्खी ने उसकी भूख प्यास उड़ा दी थी।

और वे हाल तब था जबकि कुछ अप्रत्याशित नहीं हुआ था। उस खबर के प्रकाशन की उसे पूरी अपेक्षा थी और वो काफी हद तक उसके लिये तैयार था। लेकिन खबर पढ़ने के बाद ही उसे अहसास हुआ था कि उसकी खामखयाली थी कि तैयार था।

मीडिया ने उसकी प्रतिष्ठा और मान सम्मान की धज्जियां तो उड़ाई ही थीं, ऐसी चतुराई से उड़ाई थीं कि उन पर केस किया जाता तो उसका भी वैसा ही अंजाम होता।

केस की धज्जियां उड़ जातीं।

उसको दुनिया की उतनी परवाह नहीं थी कि वो खबर पढ़कर वो उसके बारे में क्या सोचेगी–कुत्ते तो भौंकते ही है, उनका मुंह थोड़े ही पकड़ा जाता है–उसे तो चिन्ता थी कि उसकी मंगेतर क्या सोचेगी? वो खबर पढ़ कर उसका होने वाला ससुर स्वराज पुंज क्या सोचेगा?

खासतौर से स्वराज पुंज क्या सोचेगा?

जो शशांक को उच्चकोटि के चरित्रवाला, उच्चतम कोटि की सामाजिक प्रतिष्ठा वाला एक आदर्श युवक मानता था। अखबार पढ़कर अब वो क्या सोचता उसके बारे में? उसका विश्वास तो चकनाचूर होता ही लेकिन ऐसा हो चुकने के बाद वो क्या कदम उठाता?

खयाल से उसके शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी।

उसने चाय का एक घूंट भरा तो पाया वो बिलकुल ठण्डी हो चुकी थी। उसने कप को परे सरका दिया और नैपकिन से मुंह पोंछने लगा।

तभी वाल कैबिनेट पर रखे फोन की घंटी बजने लगी।

ऐसा होने पर कारमला ही आकर फोन उठाती थी लेकिन उस रोज सस्पेंस के मारे उसने झपट कर खुद फोन उठाया।

जिस अन्देशे के तहत उसने फोन उठाया था, वो सच निकला।

लाइन पर स्वराज पुंज था।

"शशांक!"–बर्फ सी ठण्डी आवाज उसके कान में पड़ी।

"गुड मार्निंग, सर।"–भरपूर हिम्मत जुटा कर अपने स्वर को सन्तुलित रखने की कोशिश करता शशांक बोला–"हाउ आर यू, सर।"



Scanned by CamScanner

"फाइन! एण्ड हाउ आर यू?"

"सेम हेयर, सर। मैं...मैं आपको फोन करने ही वाला था।"

"अच्छा!"

"जी हां।"

"किसलिये?"

उसके लहजे कि खुश्की साफ इस बात की चुगली कर रही थी कि उसने अखबार पढ़ चुकने के बाद ही फोन किया था।

"सर, वो क्या है कि.."

"क्या है?"

"सर, आई कैन एक्सप्लेन।"

"अब क्या रखा है एक्सप्लेन करने को?"

"सर, मैं ये कहना चाहता हूं कि..."

"अब क्या बाकी बचा है कहने को?"

"सर...सर..."

"जो तुमने कहना है वो मुझे मालूम है। कुछ कहने का तुम्हारा मुंह तो बनता नहीं, फिर भी तुम क्या कह सकते हो, उसकी कल्पना शिवांगी कर सकती है। उसे तो तुमसे बात भी करना गवारा नहीं हैं इसलिये उसने जो कहना है, उसकी तरफ से मैं कहता हूं।"

"क...क्या? क्या?"

"ये शादी नहीं हो सकती।"

"जी!"

"हम ये मंगनी तोड़ रहे हैं। मंगनी की अंगूठी कूरियर से वापिस भिजवा रहे हैं, शाम तक तुम्हें मिल जायेगी।"

"लेकिन सर, मुझे कुछ कहने का मौका तो दीजिये। मुझे कुछ एक्सप्लेन करने का..."

"किसी एक्सप्लेनेशन की जरूरत नहीं। सब कुछ सैल्फएक्सप्लेंड है।"

"फिर भी, सर..."

"और शिवांगी से कान्टैक्ट करने की कोशिश करना वक्त की बरबादी होगा। मैं आज ही उसे योरोप भेज रहा हूं।"

"आ...आज ही?"

"ताकि तुम्हारे पैडेस्ट्रियन बिहेवियर से जो सदमा उसे पहुंचा है, उससे उबरने का उसे मौका मिल सके। गुड नाइट।"

"सर! सर! मुझे कुछ तो कहने का मौका दीजिये।"



Scanned by CamScanner

"क्या कहना चाहते हो?"

"आप ये मान के चल रहे है कि जो कुछ अखबार में छपा है, वो सच है।"

"क्या गलती कर रहा हूं?"

"सर, गुस्ताखी माफ, गलती ही कर रहे हैं। अखबारवालों का तो काम है तिल का ताड़ बनाना। उनका तो कारोबार हो गया है हर बात को सैंसेशनलाइज करना, हर बात को स्कैंडेलाइज करना।"

"बेबुनियाद कुछ नहीं होता, मिस्टर शशांक साहनी।"

"बेबुनियाद भी होता है, सर। सैंसेशन सीकर मीडिया आजकल वो करतब भी करके दिखा सकता है। आम करता है। आप मुझे रूबरू मुलाकात का एक मौका दीजिये, फिर मैं..."

"नो!"

"सर, मैं शिवांगी को समझा सकता हूं कि..."

"नो।"

"सर, मैं सिर्फ पांच मिनट की मुलाकात की इल्तजा कर रहा हूं। मैं सिर्फ पांच मिनट आपसे और शिवांगी से बात करना चाहता हूं।"

"मैं तुमसे कोई बात नहीं करना चाहता। शिवांगी तुमसे कोई बात नहीं करना चाहती। वो तुम्हारी शक्ल नहीं देखना चाहती। वो तुम्हारा तसव्वुर एक कालगर्ल के पहलू में करती है तो आठ आठ आंसू रोती है। तुमने मेरी बेटी को रुलाया। मैं तुम्हें कभी माफ नहीं कर सकता। एण्ड दैट्स फाइनल, डैम यू।"

लाइन कट गयी।

शशांक रिसीवर फिर भी कान से लगाये बुत बना वाल कैबिनेट के करीब खड़ा रहा।

आखिरकार कांपते हाथ से उसने रिसीवर वापिस क्रेडल पर रखा और धम्म से वहीं, करीब पड़ी एक कुर्सी पर ढेर हुआ।

मीडिया में छपी खबर ने अपना कुछ तो असर दिखाना ही था, लेकिन वो असर इतना ढेर होगा और इतने हाहाकारी तरीके से यूं पटाक्षेप करता एकाएक सामने आयेगा, इसकी कल्पना उसने नहीं की थी।

कैसे ताश के ढेर की तरह उसके सपनों का महल धराशायी हुआ था।

घबराकर वो उठा और बेचैनी से चहलकदमी करने लगा।

एक महीना–सिर्फ एक महीना–और चैन से गुजर जाता तो शादी



Scanned by CamScanner

हो चुकी होती, शिवांगी मार्बल आर्क में स्थापित हो चुकी होती और फिर बाप बेटी वो मिजाज दिखाने की स्थिति में न रहते जो कि स्वराज पुंज ने फोन पर दिखाया था।

वो कोठी के दायें गलियारे में और फिर आगे एक ड्योढ़ी में पहुंचा जहां से एक सीढ़ियां सीधी पहली मंजिल पर उसके बैडरूम तक जाती थीं और अमूमन उसके इस्तेमाल में आती थी। सीढ़ियों से परे एक दरवाजा था जो कोठी के उधर के पहलू में बने विशाल गैराज से सम्बद्ध था। गैराज का मुख्य प्रवेशद्वार उसके फ्रंट में फ्रंट यार्ड की तरफ आयरन गेट के सामने था लेकिन एक आटोमैटिक डोर बाजू में भी था जो बाजू की उस सड़क पर खुलता था, रात के वक्त जिस पर न के बराबर आवाजाही होती थी, और जो रिमोट से संचालित होता था।

उस रूट को कुछ मर्तबा वो एकता को चुपचाप अपने बैडरूम में ले जाने के लिये इस्तेमाल कर चुका था लेकिन फिर उस सिलसिले से वो खुद ही डर गया था और उसने उससे किनारा कर लिया था। एकता को वहां बुलाने के मुकाबले में उससे कहीं और मीटिंग अरेंज करना फिर भी सेफ था जहां उसे इतनी एहतियात बरतनी होती थी कि कार को कहीं दूर खड़ी करना पड़ता था और दिन में उधर का रुख करने से परहेज करना पड़ता था।

गैराज में वो होंडा पर सवार हुआ और बाजू के आटोमैटिक डोर वाले रास्ते से वहां से निकला तो फ्रंट यार्ड में धूप में एक बैंच पर बैठे ड्राइवर को इंजन की आवाज से ही पता चला कि उसकी खिदमात को नकारता साहब खुद गाड़ी लेकर निकल पड़ा था।

जो कि कोई नयी बात नहीं थी।

लोधी कालोनी पहुंचकर शशांक ने कार को जोरबाग रोड से थर्ड एवेन्यू पर मोड़ा ही था कि उसे सामने से अविका नागपाल आती दिखाई दी जिसके पिता रामनाथ नागपाल से वो बाखूबी वाकिफ था क्योंकि यतीमखाने के लिये चन्दा कलैक्ट करने के लिये वो अक्सर उसके पास आता था।

उसने कार उसके पहलू में रोकी और उसकी तरफ का शीशा नीचे गिराया।

"हल्लो, अविका! कैसी हो?"–वो बोला–"महाशय जी कैसे हैं? क्या बात है, आये नहीं काफी दिनों से! सेहत तो ठीक है न..."

"उंह!"



Scanned by CamScanner

अनिरुद्ध के मुंह से निकली उस उपेक्षाभरी आवाज ने शशांक को पानी पानी कर दिया।

लड़की लम्बे डग भरती आगे बढ़ गयी।

तो ये था वो ट्रीटमेंट जो आइन्दा उसे जाने अनजाने लोगों से हासिल होने वाला था।

उस टके की लड़की की ये मजाल हुई थी, जिनकी कोई हस्ती थी, कोई हैसियत थी वो तो उसकी बिलकुल ही मिट्टी पलीत करके छोड़ते।

उसने कार को भाई के घर के सामने ले जाकर रोका।

हेमा ने उसके लिये दरवाजा खोला तो उसने पाया कि शेखर और श्रेया अभी घर पर ही थे, अपनी अपनी नौकरी पर निकल नहीं गये हुए थे।

और अनुराग भी वहीं था।

उसकी वहां आमद पर हमेशा वहीं होता था। पता नहीं इत्तफाक था या वो वहीं रहने लगा था।

हेमा ये देखकर विचलित हुए बिना न रह सकी कि उसके देवर के होश फाख्ता थे और रंगत पीली थी जिसकी वजह से वो बीमार लग रहा था।

"आओ, शशांक।"–शेखर स्वागतपूर्ण स्वर में बोला–"कैसे आये?"

शशांक डायनिंग टेबल पर उसके सामने पहुंचा।

"बैठो।"

शशांक ने बैठने का उपक्रम न किया।

"कैसे आये?"

शशांक ने उस सवाल की तरफ तवज्जो न दी, वो बोला–"अखबार तो पढ़ ही लिया होगा!"

"अरे, बैठो तो सही! इतना हलकान होने की क्या बात है?"

"सबने?"

"हां। पढ़ा तो है लेकिन..."

"सब बहुत बढ़ा चढ़ा कर छापा गया है। आजकल अखबारवाले जिसके भी पीछे पड़ जाते हैं, उसकी बुरी से बुरी गत बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। मेरी बदकिस्मती कि एक छोटी सी, निहायत मामूली बात को लेकर वो मेरे पीछे पड़े। लेकिन मेरा इलाके में हुए दो कत्लों से कोई वास्ता नहीं। सब जानते हैं कि कत्ल किसी ऐसी



Scanned by CamScanner

लड़की ने किये हैं जिसका दिमागी तवाजन उसके काबू में नहीं, जो होमीसिडल मैनियाक है। लेकिन कोई जाती खुन्दक निकालने के लिये मीडिया मेरा सम्बन्ध उन कत्लों से जोड़ने की कोशिश कर रहा है। और मेरी बाबत हर बात बढ़ा चढ़ाकर कह रहा है। ये मेरे साथ भारी ज्यादती हो रही है, बल्कि जुल्म हो रहा है। अब क्या कहने की जरूरत है कि इसके लिये कौन जिम्मेदार है?''

''कौन जिम्मेदार है?''–हेमा तीखे स्वर में बोली–''आप खुद जिम्मेदार हैं, और कौन जिम्मेदार है!''

''सच्ची बात तो यही है।''–शेखर दबे स्वर में बोला–''नादानी तो तुमसे हुई जो तुमने एक सन्दिग्ध चरित्र की लड़की से ताल्लु...को मुंह लगाया। ऊपर से कोढ़ में खाज वाली बात ये हुई कि उस लड़की का रिश्ता एक कत्ल से जुड़ गया। एकता शुक्ला पुलिस की निगाहों में मर्डर सस्पैक्ट न बन गयी होती तो मीडिया में बात इतना तूल न पकड़ती, तो इतनी...इतनी पब्लिसिटी न हुई होती। अब जो आग से खेलेगा, उसे झुलसने का खतरा तो मोल लेना ही होगा न!''

''लैक्चर न दीजिये।''–शशांक चिड़े स्वर में बोला–''उपदेश न झाड़िये। मैं यहां आपको अपने बखिये उधेड़ने का मौका देने नहीं आया।''

''मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।''

''नहीं किया तो आगे कोशिश न कीजियेगा। और''–वो गुस्से से अनुराग की तरफ घूमा और आग्नेय नेत्रों से उसे घूरता बोला–''सब तुम्हारी वजह से हुआ।''

''खामखाह!''–अनुराग अपने स्वर को भरसक सन्तुलित रखता बोला।

''सारे बखेड़े के लिये, सारी फजीहत के लिये तुम जिम्मेदार हो।''

''निगाहों से मुझ पर भाले बर्छियां बरसाने भर से मेरा गुनाह साबित नहीं होने वाला, मिस्टर शशांक साहनी। सिर्फ हवाईयां छोड़ने से...''

''हवाईयां! ये हवाईयां है कि तुम जेल बर्ड हो! बतौर मुजरिम सजा काट चुके हो! ऐसा न होता तो क्या पुलिस को तुम्हारी भनक लगी होती? तो क्या वो कत्ल से तुम्हारा रिश्ता जोड़ पायी होती?''



Scanned by CamScanner

"शेखर जी"–हेमा तीखे स्वर में बोली–"आप परसों वाली कथा फिर शुरू कर रहे हैं!"

"आई डोंट माईंड, हेमा जी"–अनुराग बोला–"एण्ड आई डोंट केयर। आप मुझे जवाब देने दीजिये।"

हेमा ने होंठ भींच लिये।

"वो सब इत्तफाक था, जनाब। मैंने इत्तफाकन मकतूल परमीत मेहरा की कार के डोर हैंडल को थामा था। इत्तेफाकन कार पर मेरे फिंगरप्रिंट्स की छाप बन गयी थी जिसकी वजह से बात आगे बड़ी थी और पुलिस की तवज्जो मेरी तरफ गयी थी लेकिन, जनाब, क्या एकता शुक्ला से आपका अफेयर भी इत्तफाक था? आप अपने मुखारविन्द से ये उचर सकते हैं कि उस कालगर्ल से आपके ताल्लुकात इत्तफाकन थे?"

शशांक से जवाब न दिया गया। धीरे से वो एक कुर्सी पर बैठ गया, उसने दोनों कोहनियां मेज पर टिकाईं और अपना चेहरा अपने हाथों में छुपा लिया।

सन्नाटा छा गया।

किसी को उससे वैसे व्यवहार की उपेक्षा जो नहीं थी!

उससे तो फट पड़ने की अपेक्षा की जाती थी लेकिन वो तो गीला पटाखा बन के रह गया था। अपने कहर से दूसरों की हालत दयनीय कर देने वाला वो तो खुद दया का पात्र बना बैठा था और अपनी दशा से सबको विचलित किये दे रहा था।

आखिर शशांक ने हथेलियों पर से अपना सिर उठाया, बड़े यत्न से वो उठ कर अपने पैरों पर खड़ा हुआ।

"मैं बर्बाद हो गया।"–भारी कदमों से दरवाजे की ओर बढ़ता वो कातर भाव से बोला–"इतने सालों की कमाई मेरी इज्जत खाक में मिल गयी। मेरा रुतबा, मान सम्मान सब मिट्टी हो गया। मेरे पूरे वजूद को ग्रहण लग गया। मेरी मंगनी टूट गयी।"

"क्या!"–शेखर के मुंह से निकला।

"शिवांगी पुंज से अब मेरी शादी नहीं होने वाली। स्वराज पुंज ने रिश्ता तोड़ दिया है। अब तो आप लोग खुश हैं न!"

वो बाहर निकल गया।

कुछ क्षण बाद बाहर से कार के स्टार्ट होने की और उसके वहां से रवाना होने की आवाज आयी।

पीछे कई क्षण सन्नाटा बरकरार रहा।



Scanned by CamScanner

"तौबा!"-फिर हेमा के मुंह से निकला।

"तुमने भी तो हद कर दी!"-शेखर गिला करती आवाज से अनुराग से मुखातिब हुआ-"इतना कुछ कह दिया।"

"आई एम सॉरी।"-अनुराग बोला-"लेकिन क्या करता! भड़काया तो उन्होंने ही था! फिर मुझे क्या मालूम था कि वार करना ही सीखे थे, वार झेलना नहीं सीखे थे।"

"हुं।"-शेखर के मुंह से अवसादपूर्ण हुंकार निकली।

"मैंने अपनी आंखों के सामने कभी किसी को यूं छिन्न भिन्न होते नहीं देखा।"

कोई कुछ न बोला।

"आप लोगों को"-फिर बात बदलने की गरज से अनुराग बोला-"ऑफिस के लिये देर नहीं हो रही?"

"कभी कभार"-श्रेया बोली-"थोड़ी देर हो जाने से कोई आफत नहीं आ जाती। चले जायेंगे।"

शेखर ने सहमति में सिर हिलाया।

"मुझे शशांक अंकल की हालत पर अफसोस है।"

"अखबार पढ़ते के बाद"-शेखर धीरे से बोला-"दिख रहा था कि कुछ तो होना ही था लेकिन इतना कुछ हो जायेगा, एक साथ हो जायेगा, दिन चढ़ते ही हो जायेगा, इसकी कल्पना मैंने नहीं की थी। देखो तो, मंगनी टूट गयी! सबसे बड़ी चोट तो उस पर यही हुई है।"

"बुरे काम के बुरे नतीजे।"-हेमा बोली।

"अब फिर मौका हाथ आ गया अनाप शनाप बोलने का!"

"मैंने कोई अनाप शनाप नहीं बोला। एक आम, व्यवहारिक बात कही है। अपना बोया ही तो काटा तुम्हारे भाई ने! जो काटा उसकी कथा करने यहां क्यों चला आया? अब तो अनुराग उसे यहां दिख गया, ये यहां न होता तो किस पर अपनी भड़ास निकालता? यकीनन तुम पर! जब से तुम्हारे पिता के विरसे का मालिक बना है, तब से क्या किया है उसने? भड़ास ही तो निकाली है तुम पर जैसे तैसे कोई न कोई मौका तलाश करके!"

"छोटा है..."

"इसलिये उत्पात! छोटन को उत्पात! और तुम बड़े! क्षमा बड़न को चाहिये। ठीक!"

शेखर खामोश रहा।

"छोटा है, इसलिये खोटा है। दौलत के अम्बार पर बैठा है, कभी



Scanned by CamScanner

कोई कमला पैसा सरकाया तुम्हारी तरफ। कभी होली दीवाली भी मार्फत आर्क से सुदामा की झोली में आकर गिरा कुछ?''

''क्यों है ऐसा?''–एकाएक श्रेया बोल पड़ी–''बड़े तो ये हैं। फिर छोटा भाई क्योंकर पिता दीनानाथ साहनी साहब की सारी सम्पत्ति का वारिस बन गया? एक अरसे से ये सवाल मेरे जेहन में था, आज पूछती हूं, ये क्यों और कैसे हुआ कि...''

''श्रेया!''–शेखर तीखे स्वर में बोला–''चुप कर।''

''नहीं, आज मैं जान के रहूंगी कि ऐसी नाइंसाफी आपके साथ क्यों हुई? आज आपको बताना पड़ेगा कि क्यों बड़े साहनी साहब ने आपके साथ सौतेले जैसा व्यवहार किया? आप बड़े हैं, बड़ा पुत्र ही पिता का उत्तराधिकारी होता है। फिर शशांक अंकल पर तमाम नियामतों की बौछार किसलिये और आप उनसे महरूम किसलिये? क्या आपके पुस्तक प्रेम को आपका गुनाह करार दिया गया और उसकी आपको सजा मिली? या शशांक अंकल ने आपके खिलाफ पिता के मन में जहर भरा जो...''

''चुप कर! दोबारा न कहना पड़े।''

''कहने वाले कहते हैं कि शशांक अंकल में व्यापारिक बुद्धि थी, आपमें नहीं थी। वो शुरू से ही बिजनेस में बड़े साहनी साहब का हाथ बंटाते थे जबकि आप अपनी किताबों की दुनिया में गर्क रहते थे। जरूर यही वजह थी कि शशांक अंकल को लगाई बुझाई का मौका मिल गया, मिलता रहा, और उन्होंने बड़े साहनी साहब पर अपना कोई जादू चला कर वसीयत अपने हक में लिखवा ली, उनकी तमाम चल और अचल सम्पति अपने नाम करवा ली। आपके साथ धोखा हुआ है अंकल, जुल्म हुआ है।''

''तू नादान है, मूर्ख है''–शेखर गुस्से से बोला–''नहीं समझती कि बिल्डर बनना, कंस्ट्रक्शन बिजनेस को सम्भालना मेरे बस का काम नहीं था, होता तो पिता की जिन्दगी में ही उनका साथ दे रहा होता, उनके हाथ मजबूत कर रहा होता, जैसे कि शशांक ने किये। जैसे शशांक कम उम्र से ही पिता का बिजनेस में हैल्पिंग हैंड बना रहा, वैसे न मैं बना, न बन सकता था। इसलिये पिता का अपना बिजनेस शशांक के हवाले करके जाना स्वाभाविक था।''

''दिस इज शियर नानसेंस! और आप इस बात से वाकिफ हैं। बिग बिजनेस में कमाल काम करने में नहीं, काम कराने में होता है। कोई माई का लाल हर काम खुद नहीं कर सकता। इसीलिये मैनेजर



Scanned by CamScanner

रखे जाते हैं, एकाउन्टेंट रखे जाते हैं, साइट इंजीनियर रखे जाते हैं। मौका मिलता तो ये सब करने में आपको क्या प्राब्लम थी? बड़े पुत्र होने के नाते अपने पिता की सम्पत्ति और व्यापार के स्वाभाविक उत्तराधिकारी आप थे। आपको विरसे का मालिक बनने का मौका मिलता तो कोई बड़ी बात नहीं कि आपने शशांक अंकल को ही अपना मैनेजर अप्वायन्ट किया होता। फिर आपके व्यापार सम्भालने में, उसे सुचारू रूप से चलाने में क्या प्राब्लम होती?''

''अब क्या फायदा इन बातों का?''–हेमा वितृष्णापूर्ण भाव से बोली–''सांप निकल जाने के बाद लकीर पीटने जैसी इन बातों का? जो हुआ सो हुआ, अब उस पर तबसरा करने का कोई फायदा नहीं। कोई किसी की तकदीर नहीं बदल सकता। नियति अटल है, इनकी नियति में दर्ज है इन्होंने लायब्रेरियन बनना है तो लायब्रेरियन ही बनना है। ये जो कुछ हैं वो भी कोई कम नहीं, वो भी कोई हर किसी को नहीं नसीब हो जाता। इसलिये नाशुक्रा बन के दिखाने का क्या फायदा! मैं इनके साथ खुश हूं। इनके प्रोवाइडर के रोल से मुझे कोई शिकायत नहीं। मेरा अपना सुन्दर, बसा हुआ घर संसार है, औलाद नहीं है तो ईश्वर की कृपा से वो कमी पूरी करने लिये तू है। और क्या चाहिये! सोने का निवाला कोई नहीं खाता, बाकी सब हासिल है। क्यों जी, गलत कहा मैंने?''

''नहीं।''–शेखर जज्बाती हो उठा–''एण्ड थैंक्यू, माई डियर।''

''देवर जी को सब मुबारक हो! वो सोने का निवाला खा सकते हैं तो खुशी से खायें। अब तुम दोनों या तो घोषणा करो कि छुट्टी कर रहे हो, या टलो।''

''नहीं, नहीं।''–शेखर तत्काल उठकर खड़ा हुआ–''हम जा रहे हैं। चल, श्रेया।''

विवेक आगाशे थाने पहुंचा तो मालूम हुआ एस.एच.ओ. थाने में नहीं थे लेकिन सब-इन्स्पेक्टर बहल अपने कमरे में मौजूद था।

आगाशे वहां पहुंचा।

''नमस्ते, जनाब।''–बहल बोला–''आईये, बिराजिये।''

''थैंक्यू।''

''कैसे आये?''

''यूं ही चला आया। सोचा, शायद मेरे जानने लायक यहां कुछ हो!''



Scanned by CamScanner

"कुछ भी? या कोई खास बात है जेहन में?"

"दोनों ही बातें हैं। मसलन परमीत मेहरा के पोस्टमार्टम की बाबत क्या कहते हो? अब तो हो गया होगा!"

"कल हुआ न! शिड्यूल के मुताबिक। दोपहर तक रिपोर्ट भी जारी हो गयी थी।"

"क्या पता चला?"

"वही जो अपेक्षित था। मौत आरसेनिक से हुई होने की तसदीक हुई।"

"आई सी।"

"दूसरी काबिलेजिक्र बात ये हुई कि उसका अन्तिम संस्कार भी हो गया है।"

"ऐसा?"

"जी हां। दोपहरबाद यमुनानगर से उसके कुछ रिश्तेदार यहां पहुंच गये। उन्होंने लाश क्लेम की और शाम को यहीं उसका संस्कार भी कर दिया। यूं पुलिस की एक बड़ी सिरदर्द खत्म हो गयी लेकिन दूसरी सामने खड़ी है।"

"दूसरी?"

"जॉन पाब्लो। यूं उसका कोई रिश्तेदार सामने आये, इसकी उम्मीद नहीं जान पड़ती। मुझे तो लगता है दीन दुनिया में उसका कोई था ही नहीं। तभी गोवा से इतनी दूर दिल्ली में पड़ा था।"

"कितने अफसोस की बात है कि आदमी का बच्चा जान से जाये और उसके चार अपने उसे कन्धा देने के लिये, दुनिया से रुखसत करने के लिये, उपलब्ध न हों।"

"इसी को कहते हैं आये भी अकेला जाये भी अकेला।"

"अकेला तो सभी को जाना होता है। भेजने वाले तो हों कोई चार जने! मरने वाले के लिये चार आंसू बहाने वाला तो हो कोई! कोई तो हो उसकी पीछे छूटी दुनिया में जो उसे मिस करता हो! कोई तो हो जिसे उसकी कमी महसूस होती हो!"

"कमी महसूस करने वालों की कोई कमी नहीं होने वाली, आगाशे साहब। जिसका भी कोई रोजमर्रा का काम अटकेगा, वो जॉन अंकल की कमी महसूस करेगा। ऐसी ही खुदगर्ज है ये दुनिया।"

"हां, भई, ऐसी ही खुदगर्ज है ये दुनिया। अपना हो या पराया, मरने वाले को कोई याद नहीं करता, सब उस सुख सुविधा को याद करते हैं जो उसकी वजह से उन्हें मयस्सर थी।"



Scanned by CamScanner

"लाख रुपये की बात कही, जनाब।"

"और?"

"और कल मीना साहब आपकी और आपके सहयोग की तारीफ कर रहे थे।"

"मैंने ऐसा तो कुछ नहीं किया था, भई, जो पुलिस न कर पाती!"

"सही फरमाया आपने, लेकिन इतनी जल्दी न कर पाती।"

"पुलिस के पास और भी बेशुमार काम होते है, मेरे पास एक ही काम था।"

"ये आपका बड़प्पन है कि अचीवमेंट्स का श्रेय आप नहीं लेना चाहते। वर्ना इस बात में कोई शक नहीं कि बिल्डर शशांक साहनी की बाबत एकता शुक्ला का मुंह खुलवाकर आपने कमाल किया। पुलिस के काबू में तो वो आ नहीं रही थी। हवालात में बन्द होना कुबूल किया पट्ठी ने लेकिन हमारे बकाये शशांक साहनी का नाम बक के न दी।"

"उस नाम के उजागर होने ने तो कोहराम खड़ा कर दिया है, एस.आई. साहब। देखा, आज के अखबारों में प्रिंट मीडिया ने कैसे उस नाम को उछाला है! कैसी बेरहमी से उस शख्स की रिप्यूट का पुर्जा पुर्जा किया है!"

"आजकल मीडिया का और काम क्या है! आपसी कम्पीटीशन में आगे रहने के लिये कोई खबर को स्कैंडेलाइज करता है तो कोई वल्गराइज करता है। इस बार तो सबने एक ही काम किया। स्कैण्डल खड़ा कर दिया। खबर को आपे से बाहर हो जाने दिया।"

"यू सैड इट, माई डियर। शशांक साहनी का हालिया कत्लों से रत्ती भर का रिश्ता उजागर नहीं। एकता शुक्ला के चमड़े के कोट का उसकी कार की डिकी में छूट जाना ही बेचारे के लिये मुसीबत बन गया।"

"सही फरमाया आपने। कैसी अजीब बात है कि इतना कुछ हो जाने के बावजूद केस में हमने कोई तरक्की की हो, ऐसा नहीं है। हल एक छलावे की तरह अब भी पुलिस की निगाहों से दूर, बहुत दूर है। कोई एक भी कारआमद लीड मुहैय्या नहीं है जिसको थाम कर हम आगे बढ़ सकें।"

"दैट्स टू बैड।"

"आपकी खुद की क्या राय है केस के बारे में? बल्कि ये बताइये कि अखबारों में शशांक साहनी के बारे में आज जो नैगेटिव-



Scanned by CamScanner

चरित्रहनन का दर्जा रखने वाली-रिपोर्टिंग हुई है उसका उस पर क्या असर पड़ेगा?''

''भई, इज्जत तो वो खोयेगा, बातें तो बनेंगी उसके बारे में, छींटाकशी तो होगी उसके किरदार पर लेकिन ऐसा नहीं होने वाला कि नाक ही कट कर हाथ में आ जाये। बड़े शहरों में बड़े लोगों की ऐसी हरकतों को आजकल उनके लाइफ स्टाइल का हिस्सा माना जाने लगा है। आम आदमी तो चटकारे लेने के लिये थोड़ी देर उन बातों को याद रखता है, फिर भूल जाता है। आम आदमी किसी बड़े आदमी पर छींटाकशी करता है तो समझो कि सूरज पर थूकता है, और सूरज पर थूका तो अपने ही मुंह पर आकर गिरता है। बाकी रही उसके अपने जैसे बारसूख लोगों की, उसकी अपनी बिरादरी की बात, तो उसमें तो उसे शर्मिन्दगी बराबर झेलनी पड़ेगी, फेस लूज करना पड़ेगा। उसकी दुनिया में ऐसे भी लोग होंगे जो उसको जलील और रुसवा करते वक्त मन ही मन खुश हो रहे होंगे कि उसकी पोल खुली, उनकी न खुली।''

''हे भगवान! सभी रखैल पालते होंगे! कालगर्ल्स से रिश्ता रखते होंगे!''

''क्यों नहीं? इंसान का बच्चा फितरतन पौलीगेमिस्ट है। खुदा ने उसको बनाया ही ऐसा है। एक के साथ होता है, एक को पीछे छोड़ के आया होता है और एक पर आगे निगाह टिकाये होता है। ऐसे ही तो नहीं कहा गया कि सैक्स की तृष्णा वूम् (WOMB) में, गर्भ में, पैदा होती है और टूम् (TOMB) में, कब्र में, जाकर मरती है।''

''तौबा! बहरहाल इस फिलासफी का केस से कोई लेना देना नहीं है। केस के बारे में क्या कहते हैं?''

''भई, ये तो दिन की तरह साफ है कि दोनों कत्ल किसी हसीना का कारनामा हैं और वो इसी इलाके की रहने वाली जान पड़ती है।''

''ऐसा आपने पहले भी कहा था।''

''अच्छा! कहा था! मुझे ये बातें याद क्यों नहीं रहतीं? भूल क्यों हो जाती हैं?''

''आगे बढ़िये।''

''फिर तो मैंने ये भी कहा होगा कि जब वो कत्ल के इरादे के साथ रात के अन्धेरे में निकलती है तो इलाके की किसी दूसरी लड़की जैसा हुलिया बना के निकलती है जो कि अपनी पोशाक की किसी खूबी की वजह से इलाके की जानी पहचानी सूरत होती है।''



Scanned by CamScanner

"इसी वजह से उसने महरून कलर का चमड़े का कोट पहनने वाली एकता शुक्ला को चुना और इसी वजह से सफेद मैकिंटोश पहनने वाली रोमिला जौली को चुना। आप आगे बढ़िये। आपके तसव्वुर में जो कातिला है, वो एकता शुक्ला की तरह अकेली रहती होगी या रोमिला जौली की तरह फैमिली के साथ रहती होगी?"

"मेरे खयाल से फैमिली के साथ रहती होगी, क्योंकि अकेली लड़की को सिंगल आउट करना, उसकी पड़ताल करना आसान होता है, उसकी तरफ तवज्जो भी अनायास जाती है। पुलिस की ऐसी तवज्जो अभी तक किसी की तरफ नहीं गयी, इसी से जाहिर होता है कि वो परिवार के साथ रहने वाली कोई लड़की है।"

"परिवार इलाके का ही कोई?"

"हां। और परिवार के मेम्बरान को उसके गुनाह की कोई भनक तक नहीं, उन्हें उस पर कोई शुबह तक नहीं। ऐसे लोग बाहर से कुछ होते हैं और भीतर से कुछ और ही होते हैं।"

"चाइल्ड मोलेस्टर्स की तरह–जो बाहर से साले रजिस्टर्ड भद्रपुरुष दिखते हैं और भीतर से शैतान की ओरीजिनल औलाद होते हैं।"

"ऐग्जैक्टली!"

"लेकिन इस बार तो मामला मर्द का नहीं, औरत का है, औरत को कैसे ट्रैक करें?"

"वैसे ही। मर्द की तरह ही। भूलकर कि वो औरत है। सिर्फ ये याद रख के कि उसने दो कत्ल किये हैं।"

"ईजीयर सैड दैट डन। उस लड़की के या औरत के–जो कोई भी वो है–दिमाग में यकीनन कोई खलल है जिसके हवाले होकर दो बार उसने खून से अपने हाथ रंगे। उस खलल की शिनाख्त जब उसकी फैमिली को न हुई तो हमें कैसे होगी!"–एकाएक वो ठिठका–"लेकिन ठहरिये, हमें क्या पता कि फैमिली को वो शिनाख्त नहीं हुई है! किसी फैमिली को अपने एक फीमेल मेम्बर के दोहरे–खूनी–किरदार की वाकफियत होती है तो क्या वो थाने आकर हमें उसकी खबर करेंगे? अपनी वाकफियत का ढोल पीटेंगे? क्यों करेंगे भला ऐसा? उनकी तो हरचन्द कोशिश होगी कि उनकी ऐसी वाकफियत की किसी को हवा न लगने पाये।"

"अगर ऐसा होगा तो?"

"लेकिन जब उसके दिमाग में खलल होगा, उसका दिमागी तवाजन बिगड़ा हुआ होगा..."



Scanned by CamScanner

"मुझे उम्मीद नहीं। मुझे यकीन नहीं कि वो लड़की ऐसी है।"

"कमाल है! खुद ही आप एक हिंट ड्राप करते हैं, खुद ही उसका विरोध करने लगते हैं!"

आगाशे मुस्कराया।

"तो और कैसी है?"

"चालाक! काबिल! जहीन! साधनसम्पन्न! सब कुछ, लेकिन दीवानी नहीं। ये भरम खड़ा करना भी उसकी शातिर चाल है कि जो कुछ हो रहा है, किसी दीवानगी के तहत हो रहा है। हकीकतन जो कुछ किया गया है, एक सोची समझी स्कीम के तहत किया गया है और स्कीम की हर नोक पलक बड़ी शिद्दत से संवार कर किया गया है।"

"आप बात को उलझा रहे हैं। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"कोशिश करो।"

"क्या कोशिश करूं? जो समझ में आ रहा है वो ये है कि दोनों कत्लों की पीठ पर उनका कोई उद्देश्य दिखाई नहीं देता। दिखाई देती है तो एक दीवानगी दिखाई देती है जिसे कि आप नकार रहे हैं।"

"तुमने अपने पिछले थाने के एक पिछले केस की बात सुनाई थी!"

"तिलकनगर थाने की! ट्रिपल रेप के केस की!"

"वही। तुमने उस केस में किसी सैक्स मैनियाक का हाथ बताया था जो रेप की शिकार तीनों लड़कियों से बाकायदा वाकिफ था और उस लिहाज से उसका इलाके का ही होना लाजमी था।"

"जी हां। एक लम्बी तलाश के बाद वो पकड़ा गया था क्योंकि मैंने इलाके को छलनी की तरह छाना था।"

"वही बात मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता था। अब छलनी की क्या पोजीशन है? चोरी हो गयी?"

"क्या कहना चाहते हैं?"

"जो करतब एक बार किया, दोबारा नहीं कर सकते?"

"जनाब, इस केस में सैक्स का कोई दखल नहीं। उस पिछले केस का मुजरिम सैक्स मैनियाक था, उसकी सैक्स की भूख एक क्लू था, यहां तो ऐसा कोई क्लू नहीं!"

"ये भी तो क्लू है कि कातिला कोई लोनर नहीं, किसी फैमिली का अंग है।"

"मैं आपकी बात समझ रहा हूं लेकिन स्टाइलिश ढंग से कटे हुए



Scanned by CamScanner

पूरे बालों वाली किसी लड़की को ट्रेस करने के लिये इलाके की हर फैमिली की पड़ताल करना वक्तखाऊ काम है, बहुत वक्तखाऊ काम है।''

''पहला भी तो ऐसा ही था!''

''तब टाइम था मेरे पास। तब अभी मैं महकमे में नया नया भरती हुआ था और ट्रेनिंग खत्म होने के बाद वो मेरी पहली पोस्टिंग थी। तब मेरा तब का एस.एच.ओ. मुझे अभी किसी काबिल नहीं समझता था और कोई जिम्मेदारी का काम मुझे सौंपने से कतराता था। उसने मुझे इलाके को छलनी की तरह छानने का वो काम करने की इजाजत ये सोच के दी थी कि निकम्मे आदमी को निकम्मा काम दिया।''

''नतीजा निकलने की उसे कोई उम्मीद नहीं थी?''

''न, जरा भी नहीं।''

''जब निकला तो?''

''खुन्दक खायी।''

''थाने की कामयाबी से खुश न हुआ?''

''हुआ। मेरी कामयाबी से खुश न हुआ। मेरी मेहनत और जांमारी को उसने 'बिगिनर्स लक' का दर्जा दिया।''

''तौबा! बहरहाल बात कोई और हो रही थी।''

''जनाब, इस थाने में ऐसा वक्तखाऊ काम हाथ में लेने की गुंजायश नहीं। यहां का आधा स्टाफ तो दूतावासों की और यहां रहते वीआईपीज की खिदमत में लगा रहता है।''

''हूं। इस बाबत में कुछ करूं तो?''

''आप आजाद पंछी हैं, जो मर्जी कीजिये।''

''वो तो ठीक है लेकिन इस सिलसिले में जो सहयोग पुलिस को हासिल हो सकता है, या जो तुम लोग डण्डे से हासिल कर सकते हो, वो मुझे तो हासिल नहीं हो सकता! कोई नौजवान लड़की घरवालों से छुप कर अपने ब्वाय फ्रेंड की सोहबत एनजाय करती रही हो तो क्या वो मेरे इस सवाल का जवाब देगी कि दोनों कत्लों के वाकया होने के वक्त वो कहां थी!''

''ये प्राब्लम तो है बराबर।''

''लेकिन मैं कोशिश फिर भी करूंगा। हील हुज्जत करने वाली लड़की को समझाऊंगा कि जवाब देने में उसी की भलाई थी।''

''ऐसा समझाने में तो, जनाब, आप माहिर हैं।''



Scanned by CamScanner

"और ये भी गारन्टी करूंगा कि जो जवाब वो देगी, उसे खुफिया रखा जायेगा। मेरे खयाल से तो लड़कियां खुद उतावली होंगी साबित करने को कि वो कातिल नहीं हो सकतीं।"

"ठीक।"

"पहले बतौर कातिल इलाके में एकता शुक्ला का चर्चा गर्म था, दूसरा कत्ल हुआ तो शक की सुई उस नेकबख्त रोमिला जौली की तरफ घूम गयी। दोनों के बेगुनाह साबित हो चुकने के बाद भी इलाके की खुसर पुसर बन्द तो हो नहीं गयी होगी! जहां भी कोई भूरे बालों वाली नौजवान लड़की आबाद होगी, वहां उसके अड़ोसी पड़ोसी उसकी बाबत अटकलें तो लगा ही रहे होंगे!"

"अफवाहों को कौन रोक सकता है! हर किसी का मुंह कौन पकड़ सकता है!"

"ऐग्जैक्टली। मेरे खयाल से ये माहौल भी मेरे काम आयेगा।"

"जनाब, आपका किसी पर शक उपजे और वो असहयोग करे तो मुझे खबर कीजियेगा, मैं उसे थाने तलब करके ग्रिल करूंगा तो सब कसबल निकल जायेंगे।"

"देखतें हैं क्या होता है! मैंने ये मान के आगे चलना है कि इलाके की हर भूरे बालों वाली नौजवान लड़की–या ऐसी लड़की जो पहले भूरे बालों वाली थी लेकिन हाल ही में, पिछले एकाध दिन में ही बाल डाई कर लिये, उनकी रंगत बदल ली–जो कि अकेली नहीं रहती, मर्डर सस्पैक्ट है।"

"ऐसा सोचना तो ज्यादती है।"

"जरूरी भी है। क्या तुम इस बात को नजरअंदाज कर सकते हो कि अगर इस भूरे बालों वाली कातिल हसीना का राज फाश न हुआ तो वो फिर वार कर सकती है।"

"नहीं।"

"कैन शी बी परमिटिड टु स्ट्राइक अगेन?"

"नो!"

"सो देयर।"

शेखर साहनी लायब्रेरी के अपने ऑफिस में मौजूद था।

उसके चेहरे पर गहन चिन्ता और सोच के भाव थे।

वो एक काफी बड़ी लायब्रेरी थी जहां कई असिस्टेंट, क्लर्क और चपरासी काम करते थे।



Scanned by CamScanner

उसकी पर्सनल असिस्टेंट सुरभि परमार, जो उसके लेट आने से ही कम हैरानी नहीं थी, अब उसके मिजाज को भांप कर और भी हैरान हो रही थी। कई बार वो बहानों से–कभी चाय सर्व करने, कभी खाली कप उठाने, कभी कहीं साइन करवाने–उसके ऑफिस में जा चुकी थी लेकिन अपने बॉस की बाबत उसका सस्पेंस दूर होने की नौबत नहीं आयी थी।

उस बार उसने वहां कदम रखा तो शेखर ने अपलक उसे देखा।

सुरभि तनिक विचलित हुई।

"मुझे मालूम है तुम क्या सोच रही हो।"–शेखर धीरे से बोला।

"क्या सोच रही हूं?"–वो हड़बड़ाई।

"आज का अखबार पढ़ा होगा! पढ़ना ही था। फ्रंट पेज पर हैडलाइन थी। खामखाह नजर पड़ती है। नहीं?"

"वो तो है।"–वो नर्वस भाव से बोली।

"अखबारवालों ने मेरे भाई का नाम खूब उछाला है। बड़ा स्कैण्डल खड़ा कर दिया है।"

"शर्मनाक बात है, सर। उन लोगों को इतना गैरजिम्मेदार नहीं होना चाहिये था। सारे इलाके में हर किसी की जुबान पर एक ही चर्चा है। जिसके जो जी में आता है, कहता है, साथ में आपका नाम जोड़ के कहता है!"

"क्या किया जा सकता है! किसी का मुंह तो नहीं पकड़ा जा सकता।"

"वो तो ठीक है, सर, लेकिन..."

"क्या?"

"लेकिन..."

"क्या कहना चाहती हो?"

"कोई आपके बारे में बुरा भला कहे, मुझे...मुझे अच्छा नहीं लगता।"–फिर उसने जल्दी से जोड़ा–"मेरा मतलब है आपने तो कुछ नहीं किया न! आपके ब्रदर की कर...हरकतों का लांछन आप पर लगाया जाये, ये तो ठीक बात नहीं न! आपके ब्रदर के लाइफ स्टाइल की तरफ इशारा करती उंगली के दायरे में आपको भी शामिल कर लिया जाये, ये तो अच्छी बात नहीं है न! वो लड़की एकता शुक्ला..."

"छोड़ो।"–शेखर रुखाई से बोला–"मेरे भाई का किस्सा भी छोड़ो"

शेखर को अपनी असिस्टेंट के अपने लिये अतिरिक्त सहानुभूति



Scanned by CamScanner

प्रदर्शन से असुविधा महसूस होने लगी थी इसलिये जबरन उसने अपने स्वर में रूखापन उंढ़ेला था।

उसे इस बात का पूरा पूरा अहसास था कि कुछ अरसे से सुरभि उस पर कुछ ज्यादा ही मेहरबान होकर दिखाने लगी थी। वो जुबानी तो कुछ नहीं कहती थी लेकिन जब भी उसकी तरफ देखती थी, आंखों में दिल रख कर देखती थी।

और उसको आन्दोलित करने वाली बात ये थी कि उसको सुरभि का ऐसा देखना अच्छा लगता था।

उस घड़ी सुरभि के उसकी हिमायत में बोलने ने तो जैसे उन दोनों के बीच आत्मीयता का प्रबल बोध पैदा कर दिया था, एक नयी ट्यूनिंग पैदा कर दी थी।

"सरकारी वक्त को"–शेखर सप्रयास बोला–"हमें अपनी पर्सनल बातों में जाया नहीं करना चाहिये। मेरे खयाल से मेन लायब्रेरी में बहुत काम है।"

"जी हां।"–वो तनिक हड़बड़ाये स्वर में बोली–"जी हां।"

वो चली गयी।

पीछे शेखर को ये सोचता सा छोड़कर कि उसके दिल की धड़कन एकाएक–खास आज ही–तेज क्यों हो गयी थी।

उसने अपने हाथ अपनी गर्दन के पीछे बांध लिये, दोनों पांव मेज के निचले खुले दराज पर टिका लिये, वो आंखें मूंद कर कुर्सी पर पसर गया और सोचने लगा।

क्या हो रहा था?

हालात किस रुख जा रहे थे?

कैसे उन्हें काबू में किया जा सकता था?

अनायास उसकी तवज्जो हेमा की तरफ गयी और उसके भीतर कहीं अपराधबोध कुनमुनाने लगा।

क्यों भला?

वो भद्रपुरुष था और सुरभि से उसका व्यवहार सदा भद्रता का रहा था। उसके और सुरभि के बीच कोई आत्मीयता–भले ही अतिरिक्त आत्मीयता–स्थापित थी तो वो आम इंसानी ताल्लुकात की ही तर्जुमानी करती थी और कुछ नहीं। फिर भी और कुछ था तो भविष्य में उस बाबत वो सावधानी बरत सकता था। भविष्य में वो इस बात पर खास जोर दे सकता था कि सुरभि को ये गलत सिग्नल न पहुंचे कि उसका संसर्ग उसे सुखकारक लगता था।



Scanned by CamScanner

उसको उस खयाल से तनिक राहत महसूस हुई।

फिर उसकी सोच स्वयंमेव ही हालिया कत्लों की तरफ भटक गयी।

क्या राज था उनके पीछे?

प्रतिशोध की प्यासी किसी नौजवान लड़की ने परमीत मेहरा जैसे मोरी के कीड़े की हस्ती मिटा दी, ये बात समझ में फिर भी आती थी लेकिन किसी ने जॉन पाब्लो जैसे निरीह, निर्दोष प्राणी का कत्ल किया, ये बात तर्क की किसी कसौटी पर खरी नहीं उतरती थी।

क्या वजह हो सकती थी जॉन पाब्लो के कत्ल की?

क्या वो किसी अनोखे इत्तफाक के तहत परमीत मेहरा की कातिला की बाबत कुछ जान गया था और वो ही जानकारी उसके खुद के कत्ल की वजह बनी थी ताकि उसकी जुबान हमेशा हमेशा के लिये बन्द हो जाती, वो कातिला का राज फाश न कर पाता?

वो तर्क शेखर को आश्वस्त न कर सका।

अगर जॉन पाब्लो के कत्ल के पीछे कातिला की मंशा सिर्फ उसका मुंह बन्द करना था तो कत्ल ऐन पिछले कत्ल की तर्ज पर किसलिये? खास जहर आरसेनिक से भरे कैप्सूल से लैस चॉकलेट का इस्तेमाल किसलिये? गाल पर लिपस्टिक से पुते होंठों की छाप किसलिये? जॉन पाब्लो की जुबान तो किसी भी तरीके से कत्ल किया जाता बन्द होती। खासतौर से कोई ऐसा तरीका क्यों न आजमाया गया कि कत्ल हादसा जान पड़ता? उसका कत्ल ऐन परमीत मेहरा की तरह करके नयी सनसनी खड़ी करने का क्या मतलब था?

कोई मतलब नहीं था।

और पुलिस!

पुलिस क्या कर रही थी?

अभी तक कुछ भी तो नहीं कर पायी थी!

पुलिस से उसको कोई उम्मीद नहीं थी।

वो लोग गलत ट्रेल पकड़ने में माहिर थे–जैसे अनुराग पर चढ़ दौड़े थे–उसे कोई उम्मीद थी तो विवेक आगाशे नाम के उस शख्स से थी जो खुद को क्रिमिनालोजिस्ट कहता था और जो सूरत से ही जहीन लगता था।

विवेक आगाशे जैसे उसकी उम्मीद पर खरा उतरने के लिये ही उस घड़ी इलाके में सक्रिय था।

खड़े पैर 'क्राइम क्लब' के पांच युवा सदस्यों को वो तलब कर सका था जो कि बड़े व्यवस्थित तरीके से, मर्दमशुमारी करने वालों



Scanned by CamScanner

की तरह, घर घर जाकर सूंघ लगा रहे थे कि वहां कोई भूरे बालों वाली–या अभी कल तक भूरे बालों वाली–लड़की या औरत परिवार की सदस्या थी या नहीं। हर ऐसी नौजवान महिला का पता लगने पर आगाशे खुद उसके रूबरू होता था और तसल्ली करता था कि वो कातिला हो सकती थी या नहीं। जो सवालों का जवाब देने से इनकार करती थी, तत्काल उसकी खबर थाने में सब–इन्स्पेक्टर पुनीत बहल को की जाती थी और फिर उसे पुलिस को बताना पड़ता था कि कत्ल के वक्त के आसपास वो कहां थी, किसके साथ थी।

वो सिलसिला इलाके में खासी खलबली पैदा कर रहा था। कुछ लोगों ने असहयोग की प्रबल भावना का प्रदर्शन किया था तो कुछ ने 'ऊपर' शिकायत करने की धमकी दी थी लेकिन विवेक आगाशे अपने मृदुभाषण से सबको शान्त करने में और वक्त की नजाकत और उस एक्शन की जरूरत ये कह कर समझाने में कामयाब हो जाता था कि कातिला के जल्द–अज–जल्द न पकड़ा जाने की सूरत में उसका अगला शिकार उनके हाउसहोल्ड का कोई सदस्य भी हो सकता था।

शाम तक छः नौजवान लड़कियों को थाने में पेश होना पड़ा था जिनमें से चार सिद्ध करने में कामयाब हो गयी थीं कि उनका दोनों कत्लों में से किसी से कोई रिश्ता नहीं था और उन्होंने निर्विवाद रूप से स्थापित किया था कि हर कत्ल के वक्त वो मौकायवारदात से दूर कहीं और किसी के साथ थीं। बाकी दो लड़कियों के जवाब गोलमोल थे और भरोसे के काबिल नहीं थे लेकिन वजह ये होना जरूरी नहीं था कि उन दोनों में से कोई कातिला थी।

कहने का तात्पर्य ये था कि थाने में कोई आश्वस्त नहीं था कि आगाशे की कोशिशें उसे किसी मुकाम पर पहुंचाने में कामयाब होने वाली थीं। वो लोगों की नाराजगी और असहिष्णुता ही मोल ले रही थीं।

इस अभियान से असहयोग की गम्भीर भावना दर्शाने वाली लड़कियों में एक महाशय जी की लड़की अविका नागपाल भी थी जो नौजवान थी, जिसके बाल फैशनेबल ढंग से कटे हुए थे और अभी कल तक भूरे रंग के थे। आगाशे उसके रूबरू खुद हुआ था और वो उसके पहले सवाल से ही भड़क गयी थी, कहने लगी थी कि उसको उससे कोई जवाबतलबी करने का कोई अख्तियार नहीं था, 'जानते नहीं हो मेरा बाप कौन है' कह कर आपे से बाहर होने लगी थी और थाने की हाजिरी भरने से उसने साफ इनकार कर दिया था।



Scanned by CamScanner

"आपकी मजाल कैसे हुई मुझे कातिला करार देने की?"–वो आगाशे पर बरसी।

"माई डियर..."

"डोंट यू माई डियर मी।"

"...मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।"

"शक तो जाहिर किया!"

"वो भी नहीं किया।"

"तो क्यों पूछ रहे हैं कत्ल के वक्त मैं कहां थी, किसके साथ थी?"

"रूटीन के तौर पर। क्योंकि ये सवाल तुम्हारे जैसी इलाके की हर लड़की से किया जा रहा है।"

"मुझे हर लड़की से कोई मतलब नहीं। हर लड़की का पिता रामनाथ नागपाल नहीं।"

"यही सवाल पुलिस भी पूछ सकती है।"

"पूछे। जवाब मिलेगा तो जानेगी।"

"माई डियर..."

"अगेन!"

"...ये जिद बेमानी है।"

"आपकी इन्क्वायरी बेमानी है। आप खुद बेमानी हैं। हद हो गयी! घर घर जा के पूछ रहे हैं यहां कोई भूरे बालों वाली नौजवान लड़की रहती है, उसने कोई कत्ल किया है! जैसी कमेटी वाले पूछ रहे हों यहां कोई पांच साल से कम का बच्चा रहता है, उसने पोलियो के ड्राप्स लिये हैं!"

"लेकिन..."

"नो, नो लेकिन। यू लुक सच एन इंटेलीजेंट पर्सन एण्ड यू आर परस्यूईंग सच ए स्टूपिड आइडिया..."

"बाल डाई क्यों कराये?"

"क्या!"

"मुझे जाती तौर पर मालूम है तुम्हारे बाल भूरे थे, आज काले दिखाई दे रहे हैं। ऐसा क्यों?"

"बताऊंगी। पहले आप बताइये मेरे बाल डाई कराने से कानून की कौन सी धारा भंग हुई? फिर बताऊंगी।"

"कोई धारा भंग नहीं हुई लेकिन..."

"कल मैंने चिकन खाया था, आज फिश खाऊंगी, उस बाबत भी कोई सवाल पूछना होगा?"



Scanned by CamScanner

"तुम बात को मजाक में ले रही हो।"
"पोपी, आई हैव ए वर्ड आफ एडवाइस फार यू।"
"वाट्स दैट।"
"स्क्रैम! स्क्रैम दिस मिनट, आर आई विल रेज हैल।"

आगाशे थाने पहुंचा।
सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल थाने में मौजूद नहीं था।
वो एस.एच.ओ. के पास पहुंचा और उसे सूरतअहवाल से वाकिफ कराया
"महाशय जी की लड़की!"-एस.एच.ओ. सकपकाया।
आगाशे ने सहमति में सिर हिलाया।
"आप समझते हैं वो कातिला हो सकती है?"
"नहीं समझता। लेकिन उसका जवाब देने से इनकार करना ऐसा समझने की राह खोलता है।"
"हूं।"
"जमा, कल तक उसके बाल भूरे थे, खड़े पैर डाई करा लिये। उस बाबत पूछने पर भड़कती है। वजह नहीं बताती। बाप की हैसियत की हूल देती है।"
"इसलिये उसे थाने तलब किया जाना चाहिये?"
"फार फरदर कवेश्चनिंग। क्या हर्ज है? छः और लड़कियों को भी तो किया!"
"जनाब, पंगे वाला काम है।"
"कत्ल भी कोई मामूली काम नहीं होता। ये लड़की अक्सर-रात-ब-रात भी-इलाके में घूमती फिरती पायी जाती है और कातिला का जो इमेज मैंने प्रोजेक्ट किया है, उससे ये ऐन मैच करती है। अगर वो छः लड़कियां सस्पैक्ट थीं तो ये ज्यादा सस्पैक्ट है।"
"जमा, महाशय जी की लड़की है। महाशय जी के पोलीटिकल कान्टैक्ट्स हैं। खाट खड़ी कर देंगे।"
"इन्स्पेक्टर साहब, आप ये रवैया अख्तियार करेंगे तो सारी ड्रिल का मकसद ही फेल हो जायेगा।"
"अब मैं क्या कहूं! आप तो मुझ धर्मसंकट में डाल रहे हैं।"
"मैं ऐसा कर रहा हूं?"
"आप...आप नहीं समझते कि इन्स्पेक्टर पुलिस तन्त्र का बहुत छोटा पुर्जा होता है।"



Scanned by CamScanner

"अब एस.एच.ओ. हो तो थाने का बादशाह होता है।"

"कहने को। थाने के लिये। बस!"

आगाशे ने असहाय भाव से गर्दन हिलाई।

"एस.आई. बहल नहीं दिखाई दे रहा!"–फिर बोला।

"थाने में नहीं है।"–जवाब मिला–"एक खास काम से बाहर गया हुआ है। थाने में बहुत काम होते हैं। मौजूदा कत्ल ही काम नहीं है थाने को।"

"सर, आई अन्डरस्टैण्ड।"

"लेकिन मिस्टर आगाशे, इस मामले में वो भी कुछ नहीं कर सकेगा।"

"आई अन्डरस्टैण्ड दैट टू। मैं दरअसल किसी और वजह से..."

तभी एक हवलदार वहां पहुंचा जिसकी वजह से आगाशे को खामोश हो जाना पड़ा। हवलदार ने एक सीलबन्द लिफाफा एस.एच.ओ. को सौंपा और वहां से रुखसत हो गया।

एस.एच.ओ. ने लिफाफे में से चिट्ठी बरामद की और उसका अध्ययन किया।

आगाशे ने उत्सुक भाव से उसकी तरफ देखा।

"पुलिस लैब से रिपोर्ट है।"–एस.एच.ओ. ने बताया–"उन जनाना बालों की बाबत जो जॉन पाब्लो की छाती पर उसके पुलोवर से उलझे पाये गये थे।"

"क्या कहती है रिपोर्ट?"

"मुर्दा बाल थे।"

"क्या मतलब?"

"किसी जीवित इंसान के सिर पर से नहीं नुचे थे।"

"तो?"

"विग! विग के बाल थे।"

"ओह!"

"सिर्फ 'ओह' काफी नहीं, मिस्टर आगाशे। ये बताइये कि मतलब समझे आप इस बात का? "

"आप क्या समझाना चाहते हैं?"

"लिहाजा अपनी जुबानी कुबूल नहीं करेंगे, मेरे से ही कहलवायेंगे कि घर घर फेरा लगाने की आपकी ड्रिल बेकार है। इलाके की भूरे बालों वाली लड़कियों की तलाश और पड़ताल बेमानी है। जिस भूरे बालों की वजह से आप उनको शक का मरकज बनाये



Scanned by CamScanner

हुए थे, वही उनका डिफेंस है, उनकी बेगुनाही का सबूत है। ये रिपोर्ट इस बात को झुठलाती है कि कातिला कोई भूरे बालों वाली लड़की है। जिन स्टाइल से कटे भूरे बालों को कातिला की शिनाख्त के तौर पर प्रोजेक्ट किया जा रहा है, वो विग है। कातिला कोई भूरे बालों वाली लड़की होती तो वो भूरे बालों का विग न पहने होती। वो कैसी भी रंगत के–काले, स्याह काले, सलेटी, सुर्मई, लाल, डार्क ब्राउन, यहां तक की सफेद–बालों वाली हो सकती है जिन्हें कि उसने भूरी रंगत के बालों के विग के नीचे छुपाया हुआ था। इसका मतलब है बालों की रंगत कातिला की कोई खास शिनाख्त नहीं, वो कोई भी हो सकती है। इसका मतलब है केस में हमने कोई तरक्की नहीं की। वुई आर बैक टु स्क्वायर वन।''

''ऐसी नाउम्मीदी वाली तो कोई बात नहीं।''–आगाशे धीरे से बोला।

''अच्छा!''

''जी हां।''

''ऐसा क्योंकर कह सकते हैं आप?''

''क्योंकि बालों के बारे में मुझे ऐसी ही रिपोर्ट की उम्मीद थी।''

''जी!''

''जी हां। इजाजत चाहता हूं।''

अन्धेरा होने के बाद उस शाम इलाके में ऐसा माहौल था कि इलाके की भूरे बालों वाली नौजवान लड़कियां इलाके की तनहा सड़कों पर कदम रखने से कतरा रही थीं। हर किसी के डरे हुए दिल में ये अन्देशा पैवस्त था कि मर्द उन्हें शक्की निगाहों से घूरेंगे और उनसे कतरा के निकल जाने की कोशिश करेंगे।

श्रेया घर लौटी तो उसकी आंखों में आंसू तैर रहे थे।

''क्या हुआ?''–हेमा सशंक भाव से बोली।

''दो लड़के''–श्रेया भरे कंठ से बोली–''शोहदे, कमीने मेरे भूरे बालों को देखकर फबतियां कसने लगे, आजू बाजू सुना के कहने लगे 'अरी कक्की, अब किसका खून करेगी! अब किसकी बारी है!' और पता नहीं क्या कुछ कहने लगे। दौड़ के घर पहुंची।''

''कक्की!''

''भूरे बालों वाली लड़की को, ब्लोंड को, कहते हैं।''

''ओह! कुत्ते तुझे कातिल ठहरा रहे थे क्योंकि तेरे बाल भूरे हैं?''



Scanned by CamScanner

"हां।"

"मजाक कर रहे होंगे!"

"ऐसा मजाक कोई करता है! मेरे बाल भूरे न होते तो कैसे चलता ये मजाक! कहते 'कक्की, बाल रंग लिये!'?"

"हां। गोली लगे हरामियों को। आजकल तो इधर रहना ही मुहाल हो गया है। एक पुलिस ही नहीं मान, ऊपर से ये शोहदे तैयार हो गये। लेकिन"–उसने अपलक श्रेया की तरफ देखा–"तू वैसे तो ठीक है न! फिर दौरा तो नहीं तैयार..."

"आंटी, प्लीज, नाम न लो दौरे का। क्यों खामखाह मुझे उसकी याद दिलाती हो! जबकि जानती हो कि अब मैं एक मुद्दत से उस लानत से आजाद हूं। एक भूली बिसरी बात मुझे क्यों याद दिलाने लगती हो!"

"तू तो मुझे..."

तभी कालबैल बजी।

वो खामोश हो गयी, उसने जाकर दरवाजा खोला।

शेखर साहनी ने भीतर कदम रखा।

हेमा ने उसे बताया कि वापिसी में श्रेया के साथ क्या बीती थी।

"ये गुंडागर्दी है।"–शेखर चिन्तित भाव से बोला–"लेकिन तुम अकेली को नहीं भुगतनी पड़ रही। मेरी असिस्टेंट सुरभि परमार के साथ भी ऐन यही बीती। छुट्टी के बाद लायब्रेरी से निकली ही थी कि उलटे पांव दौड़ती वापिस आ गयी और छोकरों ने छेड़ा होने की ऐन ऐसी ही स्टोरी सुनाई। सुबक रही थी और कह रही थी कि कल छुट्टी करके पहला काम यही करेगी कि बाल डाई करवायेगी।"

"सत्यानाश हो कमीनों का।"–हेमा बोली।

"लेकिन ये वक्ती बात है। जल्दी ही सब ठीक हो जायेगा।"

"कातिला पकड़ी जायेगी तभी तो!"

"नहीं पकड़ी जायेगी तो भी। तुम देखना।"

हेमा खामोश हो गयी।

"शशांक की कोई खबर है? उसका कोई फोन वोन आया?"

"नहीं, नहीं आया।"–हेमा बोली–"अपने भाई की इतनी फिक्र क्यों लगी हुई है तुम्हें?"

"क्यों न लगे? भाई है। छोटा है। क्यों न लगे? उसकी फिक्र करना मेरा फर्ज है।"

"बढ़िया। करो फिक्र। निभाओ फर्ज।"



Scanned by CamScanner

"मुझे और भी तो अन्देशा है!"

"क्या?"

"वो कोई उलटी सीधी हरकत न कर बैठे।"

"उलटी सीधी हरकत, क्या मतलब?"

"अब क्या बोलूं? खयाल से दहशत होती है।"

"क्या करेगा? माशूक का खून कर देगा?"

"माशूक?"

"एकता शुक्ला! जिसने उसका नाम बका! या कीप कहना ठीक होगा!"

"अरे, क्या कह रही हो? वो मामूली एसोसिऐशन की बात है जो नैगेटिव पब्लिसिटी से बड़ी बन गयी है।"

"और छोटे भैय्या के फूं फां के गुब्बारे की हवा निकाल गयी है।"

"वो सेंसिटिव आदमी है, उसकी सैल्फरिस्पैक्ट को चोट तो पहुंची ही है। सारा दिन मैं उसी के बारे में सोचता रहा। उसकी सुबह की रुआंसी शक्ल निगाह के आगे से हटती ही नहीं। मेरा खयाल था उसका फोन आया होगा।"

"नहीं आया।"

"मुझे उसकी सुध लेनी चाहिये। जाना चाहिये उससे मिलने।"

"वो अपनी दुश्वारी के लिये हम लोगों को जिम्मेदार ठहराता है। तुम्हें देखकर भड़क गया तो?"

"ऐसा नहीं होगा!"

"पक्की बात?"

"हां। मैं क्या अपने भाई को जानता नहीं!"

"फिर तो जाओ, होकर आओ। जा के ढांढ़स बंधाओ छोटे भाई को। बेचारे की शादी होते होते रह गयी। पता नहीं बदनामी को ज्यादा सहला रहा होगा या टूटे रिश्ते को! या दोनों को! जाओ, जा के खबर लो।"

शेखर साहनी मार्बल आर्क पहुंचा।

दिलीप सिंह ने उसके लिये दरवाजा खोला। आगन्तुक को साहब के भाई के तौर पर पहचानकर उसने उसका अभिवादन किया।

"साहब तो घर नहीं हैं।"–फिर बताया।

"अच्छा! कहां गये?"



Scanned by CamScanner

"पता नहीं।"

"ऑफिस से लौट आये थे?"

"ऑफिस तो साहब आज गये ही नहीं थे।"

"हूं। कारमला को बुला।"

"अभी। आप बिराजिये।"

थोड़ी देर बाद हाउसकीपर कारमला शेखर से रूबरू हुई।

"क्या बात है?"–शेखर व्यग्र भाव से बोला–"क्या हो रहा है? सभी कुछ आउट आफ आर्डर लग रहा है। तुम्हारा भी रंग बदरंग है। बात क्या है?"

"मेरे को साहब का फिकर।"–वो चिन्तित भाव से बोली–"आज सुबह ऑफिस नहीं गया। कोई इधर मिलने आया तो मिलने से नक्की बोला। टेलीफोन काल रिसीव करने को भी टोटल नक्की बोला। सुबह ब्रेकफास्ट टेबल पर बैठा बट हैड नो ब्रेकफास्ट। नो लंच ईदर। अभी दो घन्टा हुआ कार पर किधर को निकला। घोस्ट का माफिक सूरत बना कर।"

"अच्छा!"–शेखर बोला।

"अभी और बोले तो मार्निंग में शेव नहीं बनाया। ऐसा आज तक नहीं हुआ। मैं साहब को इतना डिस्टर्ब कभी नहीं देखा। मेरे को साहब का फिकर। पता नही क्या करेगा!"

"क्या करेगा! किसको?"

"खुद को।"

"हे भगवान! तुम समझती हो कि शशांक..."

"अभी मैं क्या समझेगा? मैं साहब को इतना डेंजर मूड में पहले कभी नहीं देखा। खाली ये टेम देखा। उसका मंगनी टूटा न! बोले तो साहब का दिल टूटा। सब गलाटा उसी वजह से है। वो बात साहब को बहुत हार्ड हिट किया।"

"जाती बार कुछ बोल के न गया? कुछ बोला हो जिससे उसके मिजाज का पता चला हो! कोई अन्दाजा लगा हो कि क्या करना चाहता था! कुछ ऐसा तो नहीं करना चाहता था जिसका उसको खयाल भी नहीं करना चाहिये? कोई...कोई खतरनाक कदम तो नहीं उठाना चाहता था?"

"अब क्या बोलेगा! मेरे को खाली इतना मालूम कि जब इधर से गया तो मूड डेंजरस। बोले तो लास्ट फ्यू डेज में हर टेम उसका माइन्ड पर मैरिज होता था। बैस्ट, मोस्ट लैविश, मोस्ट मेमोरेबल मैरिज अरेंज



Scanned by CamScanner

करना मांगता था। जब कोई बात करता था, मैरिज का बात करता था। बट दैट हैलकैट, दैट एकता शुक्ला, दैट बैग आफ ट्रबल, सब गलाटा किया। साहब का भी मिस्टेक कि उसके साथ मिक्सअप हुआ, बट मेरे को पक्की जो पंगा किया, साहब का वास्ते वो छोकरी किया। कितना कुछ छाप दिया पेपरवाला लोग! साहब का कैसा रिलेशन छाप कर रखा उस छोकरी का साथ! मैं कभी ये तक नहीं सोचा कि साहब उस छोकरी को जानता था।''

''इस हद तक किसी ने भी नहीं सोचा था। अमूमन ऐसी बातें रोशनी में नहीं आतीं लेकिन वो जो दो कत्ल हुए, उनकी वजह से बात का बतंगड़ बन गया।''

''अभी क्या करेगा?''

''वेट करेगा, और क्या करेगा!''

''यस, और क्या करेगा!''

''शशांक लौटे तो बोलना कि मेरे को फोन करे। कितना भी लेट लौटे, फोन करे। मैं उसकी काल का इन्तजार करूंगा।''

उसने सहमति में सिर हिलाया।

शशांक साहनी अपनी होंडा कार यूं ड्राइव कर रहा था जैसे मशीन के साथ मशीन बना हो। उसे कोई अन्दाजा नहीं था कब से वो शहर की किन सड़कों पर भटकता फिर रहा था। जिस खतरनाक मूड में वो घर से निकला था उसमें कोई फर्क आया था तो महज ये कि वो सुधरने की जगह और बिगड़ गया था। अलबत्ता अब जो कुछ घुमड़ रहा था, उसके भीतर घुमड़ रहा था, ऊपर से वो काफी हद तक शान्त था।

दिशाज्ञान के बिना उद्देश्यहीन ढंग से वो कार चला रहा था।

और सोच रहा था।

अखबार में उसकी बाबत जो कुछ छपा था उसके बाद वैसा–या उससे भी बुरा–क्या छपता ही रहना था या वो उस न्यूज का समापन था! उस खबर ने उसे जिस कुयें में धकेल दिया था क्या उससे और गहरा भी उसको, उसकी नेकनामी को, धकेला जा सकता था! कितना गुमान था अभी कल तक उसे अपने रुतबे, इज्जत और मान सम्मान पर! कहीं भी उसका जिक्र आता था तो कितनी इज्जत से आता था! आज वो वासना का पुजारी था, वेश्यागामी था, एक कालगर्ल–जो खुद को अभिनेत्री बताती थी–का शूगर डैडी था।



Scanned by CamScanner

तौबा!

ओवरनाइट तख्त से तख्ता हुआ था।

हकीकत यही थी कि उसने खुद अपनी हालत आ बैल मुझे मार जैसी की थी। एकता शुक्ला की औकात से क्या वो नावाकिफ था! नहीं जानता था कि वो कोई एक्ट्रेस-वेक्ट्रेस नहीं थी, महज एक कालगर्ल थी, अपनी नवाजिशें फरोख्त करती थी और उनका खरीददार अंटी में दम रखने वाला कोई भी हो सकता था!

उस वक्त के अपने मूड में वो खुद ही एक की चार लगा रहा था, अपनी दुश्वारियों का आकलन खुद ही बढ़ा चढ़ा कर कर रहा था। स्वराज पुंज का फोन पर उससे बात करने का लहजा तब भी पिघले सीसे की तरह उसके कान में टपकता जान पड़ रहा था। कैसे बेमुलाहजा, दो टूक शिवांगी से मंगनी टूटने की बात उसने उसे सरकाई थी! कैसे एक ही झटके में उसे हीरो से जीरो किया था! हाई सोसायटी में उस शादी का इतना चर्चा था, वो शादी उसके बुलन्दतरीन रुतबे की इतनी गारन्टी थी कि बड़े बड़े लोग उससे रश्क करने लगे थे। अब वही लोग उस पर हंस रहे होंगे। जो अब जब भी मिलेंगे तो मिलते वक्त हमदर्दी दिखायेंगे और पीठ फेरते ही कहेंगे 'अच्छी हुई साले के साथ'। उसके सहयोगियों और मातहतों की निगाहों में क्या अब उसे अपने लिये वो इज्जत दिखाई देगी जिसे देखने का वो आदी था! खुद वो शान अभिमान से सिर उठा कर उनके रूबरू हो सकेगा!

ऐसे ही न जाने और कितने खयालात के बवंडर को झेलता वो तब तक अन्धेरी हो चुकी सड़कों पर कार दौड़ाता रहा।

वो शिवांगी को समझा सकता था, उसके मन में अपने लिये हमदर्दी जगा सकता था लेकिन उसके बाप ने उसके लिये वो मौका ही नहीं छोड़ा था, पहले ही उसे उसकी पहुंच से दूर कर देने का सामान कर दिया था।

शिवांगी एक मूढ़ लड़की थी जिसे असल में लड़की कहना ही गलत था, क्योंकि उनत्तीस साल अपनी उम्र तो वो अपने मुंह से मानती थी जबकि यकीनन और ज्यादा उम्र की थी। शक्ल सूरत मामूली थी, तख्ते की तरह सपाट थी और मुटिया रही थी। एक ही खूबी उसमें कमाल की थी और तमाम खामियों पर भारी थी कि एक धनकुबेर की–काटन किंग की–इकलौती औलाद थी। खुद वो भी बाजरिया शादी रिश्ता बेटी से नहीं, बाप से, उसकी दौलत से जोड़ने



Scanned by CamScanner

का तमन्नाई था लेकिन उसकी एक गलत मूव ने उसके भविष्य के सारे सपने चकनाचूर कर दिये थे।

तब उसे एक नया खयाल आया।

क्या गारन्टी थी कि अखबार में छपे स्कैण्डल की वजह से जैसे बाप उससे विमुख हुआ था, वैसे बेटी भी हुई थी! जैसे बाप उस शादी के खिलाफ हो गया था वैसे बेटी भी खिलाफ थी! उस जैसा सुन्दर सुदर्शन पति कहीं मिल रहा था उस चुड़ैल को! मिल रहा होता तो बावजूद बाप के दौलत से भरे कोठारों के अब तक कुंआरी बैठी होती! बाप कौन होता था ऐसी उम्रदराज बेटी को हुक्म देने वाला और उसकी भविष्य की राह निर्धारित करने वाला! बाप ने कहा था कि वो बेटी को फौरन योरोप भेज रहा था लेकिन क्या बड़ी बात थी कि झूठ बोल रहा हो! वो ये भी झूठ कह रहा हो कि शिवांगी उससे बात नहीं करना चाहती थी, उसकी शक्ल नहीं देखना चाहती थी। स्वराज पुंज कैसे अपनी सोच, अपना फैसला बालिग औलाद पर थोप सकता था! और फिर यूं खड़े पैर योरोप का प्लेन टिकट भी कहां मिलता था! उसको योरोप भ्रमण के लिये धकेला जा सकता था लेकिन ऐसा फौरन नहीं हो सकता था। कम से कम दो तीन दिन तो इस काम में सर्फ हो के रहने थे। उस दौरान वो शिवांगी से मिलने की कोई जुगत कर सकता था, वो उससे बात कर सकता था, उसे समझा सकता था, उसे यकीन दिला सकता था कि बात उतनी बड़ी नहीं थी जितनी कि समझी जा रही थी, जितनी कि बनाई जा रही थी।

ठीक!

वो आइडिया उसे ऐसा जंचा कि स्वयंमेव ही उसका पांव ब्रेक पर जा पड़ा। उसने कार रोकी और चारों तरफ निगाह दौड़ाई।

कहां था वो?

गुड़गांव में!

उससे भी आगे!

हे भगवान! पटौदी रोड पर।

जिस वक्त उसे दिल्ली में होना चाहिये था, हालात से जूझते होना चाहिये था, शैतान का मुकाबला आतिश से करते होना चाहिये था, वो शहर से कहीं दूर अपना कीमती वक्त जाया करता भटकता फिर रहा था।

वापिस!

उसने वापिस जाना था, जैसे तैसे शिवांगी से मुलाकात का सामान



Scanned by CamScanner

करना था और उसे समझाना था, समझा के रहना था, कि अखबारों में जो कुछ छपा था, झूठ था, बेबुनियाद था और वो सब पर इज्जतहत्तक का मुकदमा दायर करने का इरादा रखता था।

गुड!

उसने कार को यू टर्न दिया और उसे वापिस दिल्ली की तरफ दौड़ाया।

शेखर वापिस लौटा।

तब तक अनुराग भी वहां पहुंच चुका था।

वो, हेमा और श्रेया तीनों शेखर की सूरत से ही भांप गये कि वो किसी गुड न्यूज के साथ वापिस नहीं लौटा था।

उनके इसरार पर शेखर ने अपनी रिपोर्ट पेश की।

"ये तो ठीक नहीं हुआ।"–अनुराग बोला–"आपके ब्रदर तो सुबह यहीं बुरे हाल में पहुंच गये थे, आगे और बुरा हुआ तो...तो..."

"ज्यादा फिक्र की बात ये है"–शेखर बोला– "कि एकाएक उठा, कार पर सवार हुआ और निकल लिया। किसी को कुछ भी बताये बिना घर से चला गया। कहां गया होगा?"

"लौटे क्यों नहीं?"

"तुम खामखाह फिक्र कर रहे हो।"–हेमा बोली–"वो कोई बच्चा नहीं है जो भटक जायेगा। बालिग, जिम्मेदार शख्स है, उससे कोई बेजा कदम उठाने की उम्मीद करना नादानी है। वो मजबूत, दमखम वाला आदमी है, कोई बुजदिलों वाला कदम वो नहीं उठा सकता।"

"बुजदिलों वाला कौन सा कदम?"

"तुम्हें मालूम है। जो अन्देशा तुम्हारे जेहन में है, वो मेरे से क्यों बुलवाना चाहते हो?"

"वो मजबूत और दमखम वाला आम हालात में है। इस वक्त उसके लिये हालात आम कहां है! देखा नहीं था वो किस हालत में यहां से गया था! उसके बड़े नाम पर कालख पुत चुकी है, उसका बड़ा सपना टूट चुका है, यूं छिन्न-भिन्न हुआ शख्स कुछ भी कर सकता है। क्या कर सकता है, इस खयाल में मेरा दिल डूबता है। मुझे मालूम होना चाहिये वो कहां है? क्या कर रहा है?"

कोई कुछ न बोला।



Scanned by CamScanner

[illegible] एक दूसरे का मुंह देखने लगे। [illegible] वक्त गुजरता गया। रात गहराती गयी। अपेक्षित खबर वहां न पहुंची।

तीन चार बार शेखर ने खुद मार्बल आर्क का फोन बजाया। हर बार हाउसकीपर कारमला से एक ही जवाब हासिल हुआ।

साहब नहीं लौटा था। साहब का कोई फोन नहीं आया था।

"मेरे से सस्पेंस बर्दाश्त नहीं होता।"–आखिरकार शेखर फट पड़ा–"जरूर कोई गड़बड़ है। कोई गम्भीर गड़बड़ है। शशांक ऐसी नादानी कैसे कर सकता है! जो उसने किया है, वो बिलकुल उसके मिजाज से मेल नहीं खाता। वो अकेला घर से निकला। कार पर निकला। क्या पता एक्सीडेंट कर बैठा हो!"

"खामखाह!"–हेमा बोली।

"नहीं खामखाह! जैसी दिमागी हालत में वो घर से निकला था, उसमें उसे खुद कार चलाता नहीं होना चाहिये था।"

"हस्पतालों से पता करना चाहिये।"–श्रेया बोली।

"दिल्ली में हस्पताल सैकड़ों की तादाद में है। फिर क्या गारन्टी है वो एक्सीडेंट के वक्त दिल्ली में था!"

"पुलिस!"–अनुराग बोला–"पुलिस को फोन लगाना चाहिये। '100' पर।"

"उससे तो थाने चले जाओ।"–हेमा बोली–"करीब ही तो है!"

"हां।"–अनुराग बोला–"एक्सीडेंट वाली बात हुई तो थाने वाले उसका ज्यादा आसानी से पता लगा लेंगे।"

"ठीक है।"–शेखर बोला।

"अनुराग को साथ ले के जाओ।"

अनुराग ने सहमति में सिर हिलाया।

"मैं साथ चलता हूं।"–तत्काल वो बोला।

"थैंक्यू।"

दोनों घर से रुखसत हो गये।

शशांक के जिस रौशन खयाल ने, उस पर फौरी अमल करने के इरादे ने, उसकी हिम्मत बढ़ाई थी, अब उसके मन में उसकी कामयाबी के प्रति सन्देह जागने लगे थे।

शिवांगी से मुलाकात का इरादा करना आसान था लेकिन क्या मुलाकात भी इतनी आसान हो पाती! कैसे कर पाता वो मुलाकात!



Scanned by CamScanner

जबरन उसके घर में घुस जाता। मालचा मार्ग की जिस कोठी में स्वराज पुंज का आवास था, उसको प्राइवेट गार्डों की फौज घेरे रहती थी। कौन जबरन घुसने देता उसे वहां!

शिवांगी को बाहर बुलाना होगा!

कैसे भी उससे कान्टैक्ट करना होगा और बाहर कहीं उससे मुलाकात फिक्स करनी होगी। वो मुलाकात के लिये हामी भर देगी तो गार्डों से पीछा छुड़ाना उसका काम होगा।

बढ़िया!

अब उसने जल्द-अज-जल्द गोल्फलिंक्स पहुंचना था और शेव वगैरह करके, कपड़े तब्दील करके, शिवांगी के सपनों का राजकुमार बन के उसे करप्ट करने के अपने मिशन पर निकलना था।

उसने कार की रफ्तार तेज की।

अपनी वो योजना उसे इतनी जंच रही थी, उसे इतना उत्तेजित कर रही थी कि एकाएक उसको किसी सलाहकार की किसी हौसलाअफजाह सरपरस्त की जरूरत महसूस होने लगी।

कौन?

कौन उस घड़ी उसका सच्चा राजदां और सिंसियर एडवाइजर बन सकता था?

शेखर!

उसका बड़ा भाई!

वैसे वो कैसा भी था, उसके शान्त और शालीन बड़े भाई में बुद्धिमत्ता की कोई कमी नहीं थी। अपनी आइन्दा स्ट्रेटेजी को वो उससे डिसकस करता तो वो कई कारआमद सुझाव देता।

उस खयाल ने उसे इतना उत्साहित किया कि वो शेखर की कल्पना अपने और शिवांगी के बीच बिचौलिये के तौर तक पर करने लगा।

बिचौलिया! नैगोशियेटर! ऑफिसर आन स्पैशल ड्यूटी! शेखर साहनी! उसका बड़ा भाई! पिता समान बड़ा भाई! खैरख्वाह! सरपरस्त!

कल तक जिसके घर जाकर वो जिसमें कीड़े डाल के आता था, आज वो उसमें इतनी खूबियां गिनने लगा था।

शेखर शिवांगी से मिलने की कोशिश करता तो वो अड़चनें पेश न आतीं जो वही कोशिश वो करता तो आतीं। शेखर बहुत उम्दा तरीके से शिवांगी को सुझा सकता था, ब्रेन वाश कर सकता था, कि शशांक



Scanned by CamScanner

एक सुनियोजित साजिश का शिकार हो रहा था जिसका आखिरी मकसद फाइनांशल ब्लैकमेल था और वो सरासर अपनी होने वाली बीवी की हमदर्दी और अन्डरस्टैंडिंग का हकदार था। अपनी दुश्वारी की घड़ी में अपनी शरीकेहयात को वो शाना-ब-शाना अपने बाजू में देखने का तलबगार था।

वाह!

अपने संजीदा लहजे में शेखर ऐसी बातें बड़े एतबार के साथ कर सकता था। शिवांगी का उनसे प्रभावित होना लाजमी था। फिर आगे अपने पिता के मंगनी तोड़ने के फैसले से नाइत्तफाकी, और उसकी मुखालफत, महज वक्त की बात होती।

ठीक! ठीक!

इस काम के लिये शेखर ऐन फिट आदमी था।

आगे जो शेखर करता–कामयाबी से करता–उसके खयाल से ही उसे भारी राहत महसूस होने लगी।

अब उसे इस बात का रंज होने लगा कि सड़कों पर भटकते खामखाह उसने इतना वक्त जाया कर दिया था। वो खयाल उसे पहले आया होता तो कोई बड़ी बात नहीं थी कि अब तक कोई माकूल नतीजा भी सामने आ चुका होता।

खैर, देर आयद दुरुस्त आयद।

उसने कार की रफ्तार बढ़ाई।

रिंग रोड पर पहुंच चुकने तक उसका इरादा सीधे लोधी कालोनी का रुख करने का था लेकिन अब उसे लगने लगा कि वैसा करना ठीक न होता। वहां हेमा मौजूद होती जो हर बात में अपनी टांग अड़ाती और आदतन उसकी मुखालफत करती। नहीं, उसकी बात शेखर से और सिर्फ शेखर से होनी चाहिये थी।

कैसे!

उसे शेखर को मार्बल आर्क बुलाना चाहिये था।

ठीक!

सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल इलाके की गश्त पर था।

उसके साथ पांच पुलिसिये–दो हवलदार, तीन सिपाही–और थे जो असल में गश्त की उस टीम का हिस्सा थे जिसका इंचार्ज बहल था और जो विभिन्न ब्लाकों में फैले हुए थे।

उस रोज वातावरण में धुंध का आभास था जो कि धीरे धीरे गहराती



Scanned by CamScanner

जा रही थी। रास्तों पर आवाजाही न के बराबर थी। इलाके के बाशिन्दे ठण्ड का रौब खाकर जल्दी सो जाने की तैयारी करते अपने अपने घरों में बन्द थे। अमूमन जो खिड़कियां रात की घड़ी भीतर की रौशनियों से जगमगा रही होती थीं, उन पर भारी पर्दे पड़े हुए थे और फासले से मुश्किल से ही आभास मिलता था कि भीतर रौशनी थी।

उस गश्त की वजह परोक्ष में विवेक आगाशे था जिसने ये आइडिया सरकाया था कि दो बार स्ट्राइक कर चुकी कातिला फिर वार कर सकती थी। आगाशे के उस आइडिया ने एस.एच.ओ. हरिशंकर मीना पर असर छोड़ा था और उस पर उसने यूं अमल करके दिखाया था।

धीरे धीरे बहल पर भी वो आइडिया इस कदर हावी होता चला गया था कि वो जिस सुनसान रास्ते पर भी कदम रखता था, उसमें उसे कोई साया लहराता महसूस होता था, कोई परछाईंयां अपना खेल दिखाती जान पड़ती थीं। कई बार उसे किसी नीमअन्धेरी जगह पर हरकत का अहसास हुआ था, वो लपक कर उस जगह पर पहुंचा था तो कभी वहां कोई बिल्ली विचरती पायी थी या कुछ भी नहीं पाया था। कई बार उसे अपनी गर्दन पर यूं चींटियां सी रेंगती महसूस हुई थीं जैसे कि वो किसी की खुफिया निगाह का मरकज हो। वो जानता था कि सब उसका वहम था लेकिन वो अहसास उसका पीछा नहीं छोड़ता था कि कोई वहां था, कोई उसको वाच कर रहा था, कोई किसी नापाक वारदात को अंजाम देने के लिये बड़े धीरज से उसके वहां से टलने का इन्तजार का रहा था।

दो घंटे से वो गश्त जारी थी जिसमें न कुछ हाथ आया था और न कुछ हाथ आने की अब बहल को उम्मीद थी। अब वो उतावला हो रहा था और उस बोर रूटीन से पीछा छुड़ाने की कोई जुगत सोच रहा था। अपने उस मूड में वो विवेक आगाशे की सोच पर–जिसका वैसे वो कायल था–भी सवालिया निशान लगा रहा था।

क्या गारन्टी थी कि पिछली दो वारदातों जैसी कोई तीसरी वारदात होनी थी! होनी थी तो इतनी जल्दी होनी थी!

आगाशे ने उस बाबत जो लैक्चर उसे पिलाया था, जो वो बात उसे बताई थी जिसकी एस.एच.ओ. को भी खबर नहीं थी और उससे सहयोग की अपील की थी, उसकी रू में उसका यही फर्ज बनता था कि वो उस सिलसिले को जारी रखता, भले ही आगाशे की सोच पर से उसका एतबार घटता जा रहा था।

पुलिस की नौकरी–वो होंठों में बुदबुदाया–कभी मजा कभी सजा।



Scanned by CamScanner

[illegible] अनिश्चित भाव से सहमति में सिर हिलाया।

"खाने की तो जड़ मारी गयी।"

"आंटी, ये कोई खाने की फिक्र करने का वक्त है!"

"क्या हुआ है वक्त को! कुछ हुआ है तो एक गैरजिम्मेदार आदमी की गैरजिम्मेदाराना हरकत से हुआ है। घर के कर्त्ता को शोभा देता है बिना कुछ बताये घर से निकल जाये और पीछे सबके लिये सस्पेंस खड़ा कर जाये!"

"आंटी, बस करो न!"

"मैं किचन में जाती हूं और सब कुछ फ्रिज में रख देती हूं। जिसको खाना हो, निकाल के खा ले।"

भुनभुनाती वो वहां से चली गयी।

पीछे एकाएक फोन की घन्टी बजी।

श्रेया ने जाकर फोन उठाया और अनमने भाव से माउथपीस में बोली–"हल्लो!"

"श्रेया!"–आवाज आयी–"भ्राजी से बात करा।"

श्रेया का दिल जोर से उछला।

"शशांक अंकल!"–उसके मुंह से निकला–"कहां है आप? आपकी फिक्र में यहां सबका दम निकला जा रहा है।"

"तू भ्राजी को बुला। या ऐसा कर, मत बुला, सिर्फ इतना बोल कि मैं बीस मिनट में मार्बल आर्क पहुंच रहा हूं, वो मुझे वहां मिलें।"

"लेकिन अंकल..."

"बाकी बातें फिर। बोलना, मैंने उनसे बहुत जरूरी बात करनी है। बीस मिनट में हार हाल में मार्बल आर्क पहुंच जायें।"

लाइन कट गयी।

श्रेया ने धीरे से रिसीवर वापिस क्रेडल पर रखा।

उसे सपना जान पड़ रहा था कि उसने अभी शशांक अंकल से बात की थी।

कैसी दबंग आवाज में बोल रहे थे! किसी छिन्न भिन्न आदमी की आवाज तो वो किधर से भी नहीं लग रही थी!

वो लपकती हुई किचन में पहुंची।



Scanned by CamScanner

फोन का एक पैरलल कनेक्शन किचन में था जिसका रिसीवर उस घड़ी हेमा के हाथ में था।

"आंटी, आपने सुना।"–उत्तेजित भाव से वो बोली–"शशांक अंकल का फोन था। कह रहे थे बीस मिनट में घर पहुंच जायेंगे। अंकल को वहां पहुंचने के लिये बोला है।"

"आर्डर दिया है।"–हेमा रिसीवर हुक पर टांगती मुंह बिचका कर बोली–"और काम क्या है देवर जी का! अब देख लिया! मैंने कहा था कि नहीं कहा था कि नाहक बात का बतंगड़ बनाया जा रहा था! तिल का ताड़ बनाया जा रहा था!"

"अब क्या होगा? अंकल तो यहां हैं नहीं?"

"उसको बोला होता!"

"बोलना चाहती थी। नौबत ही न आयी। उन्होंने पहले ही लाइन काट दी।"

"उसका स्टाइल है। अपनी बात खत्म हो गयी, बात खत्म।"

"अब करें क्या?"

"करना क्या है! अंकल का मोबाइल बजा।"

उसने बजाया।

वो घर में ही बजा।

मालूम पड़ा कि शेखर अपना मोबाइल ड्राईंगरूम में सेंटर टेबल पर छोड़ गया था।

"अनुराग का बजा।"–हेमा बोली।

"वो तो...वो तो मेरे पास है।"

"क्या?"

"मेरा फोन खराब है, मकैनिक के पास है, मैंने अनुराग का ले लिया।"

"बढ़िया। अब दौड़ के थाने जा और अंकल को गुड न्यूज दे कि प्रिय भ्राता जी का फोन आया है, वो नाहक हलकान हो रहे थे, शशांक को कुछ नहीं हुआ। और बोल कि हुक्का भरने के लिये फौरन तलब किया है इसलिये अच्छा यही होगा कि यहां लौटने की जगह वहीं से मार्बल आर्क का रुख कर लें। निकल ले अब।"

सहमति में सिर हिलाती श्रेया बाहर को लपकी।

फुटपाथ पर पहुंचकर वो एक क्षण वो वहां ठिठकी, उसने एक उड़ती निगाह उस, उस घड़ी सुनसान पड़े, रास्ते पर दौड़ाई जो थाने की ओर जाता था और फिर दृढ़ता से विपरीत दिशा में, मार्बल आर्क के रास्ते पर बढ़ी।



Scanned by CamScanner

[illegible] फोन से फारिग हुआ, फिर उसने [illegible] पर सरसरी निगाह डाली।

"हूं"-फिर बोला-"तो आपको अन्देशा है आपके भाई को कुछ हो गया है?"

"है तो सही।"-शेखर साहनी बोला।

"क्योंकि वो गायब है?"

"कोई खोज खबर तो उसकी नहीं मिल रही!"

"मैंने सैन्ट्रल कन्ट्रोल रूम से पता किया है। किसी एक्सीडेंट में किसी शशांक साहनी की हाजिरी नहीं है।"

"ओह!"

"आपका कहना है कि आज अखबारों में उसके और एकता शुक्ला के बारे में जो कुछ छपा है, उससे वो हलकान था, फिर कार लेकर अकेला घर से निकला था लेकिन वापिस नहीं लौटा है!"

"जी हां।"

"नहीं लौटा तो लौट आयेगा, इसमें फिक्र की क्या बात है! बहुत लोग दिमागी परेशानी का इलाज आउटिंग को बनाते हैं, उसने भी बनाया। जब दिमाग शान्त हुआ पायेगा, तब लौट आयेगा।"

"जनाब, सुबह से शाम हो गयी है, शाम से रात हो गयी है..."

"तो भी क्या हुआ? जो जितना ज्यादा हलकान होता है, उसका माइन्ड सैटल होने में उतना ही ज्यादा टाइम लगता है। हो सकता है घूंट लगा लिया हो, उस हालत में ड्राइव न करना चाहता हो और अब नशा उतरने के इन्तजार में कहीं बैठा रैस्ट कर रहा हो।"

"उसकी हाउसकीपर कहती है वो भारी डिप्रेशन के हवाले घर से निकला था।"

"तो?"

"तो...तो...अब क्या बोलूं?"

"कुछ तो बोलिये!"

"वो...वो...अपने उस मूड के हवाले कोई...कोई गलत कदम उठा सकता है।"

"गलत कदम?"

"समझिये।"

"खुदकुशी कर सकता है?"

"अन्देशा तो है।"



Scanned by CamScanner

"आपका भाई एक बड़ा आदमी है, बड़ा बिजनेसमैन है, कम्पनी का दर्जा रखता है, मैं नहीं समझता वो ऐसा गैरजिम्मेदाराना कदम उठा सकता है।"

"समझता तो मैं भी नहीं लेकिन...क्या कहूं?"

"ये निश्चित है"–अनुराग बोला–"कि मिस्टर साहनी किसी एक्सीडेंट का शिकार नहीं हुए?"

"कन्ट्रोल रूम के रिकार्ड के मुताबिक निश्चित है।"–एस.एच.ओ. बोला–"एक्सीडेंट किसी ऐसी उजाड़ जगह किया हो कि वो किसी के नोटिस में ही न आया हो, किसी ने उस बाबत पुलिस को कोई खबर ही न की हो तो नहीं निश्चित है।"

"ओह!"

"आप लोग तो कोई हिंट दे नहीं पा रहे हैं कि आपका बन्दा किधर गया होगा, कहां ड्राइव कर रहा होगा! दोपहरबाद से घर से निकला बताते हैं। इस वक्त तक तो वो दिल्ली से सैंकड़ो मील दूर भी निकल गया हो सकता है। ऐसा हुआ है तो आप ही सोचिये यहां बैठे हम क्या कर सकते हैं?"

सहमति में सिर हिलाता अनुराग खामोश हो गया।

"वो"–शेखर तनिक संकोचपूर्ण स्वर में बोला–"मिस्टर आगाशे कहां हैं?"

"क्या पता कहां हैं!"–एस.एच.ओ. बोला–"मिस्टर आगाशे पुलिस के मुलाजिम नहीं हैं। पुलिस की हाजिरी नहीं भरते।"

"ओह!"

"क्यों पूछ रहे हैं?"

"वो...वो...यूं ही। कोई...खास वजह नहीं।"

"समझते हैं कि आपके भाई की बाबत वो कुछ जानते होंगे?"

"न..हीं।"

"कैसे जानते होंगे? क्या जरिया है उनके पास कुछ जानने का?"

"आप ठीक कह रहे हैं। आप...हमारी कोई मदद नहीं कर सकते?"

"आप ही बताइये कैसे कर सकते हैं?"

"तो अब हम क्या करें?"

"घर जाइये और भाई के लौटने या उसकी कोई खबर आने का इन्तजार कीजिये। अड़तालीस घन्टे तक कोई अता पता न मिले तो गुमशुदा तलाश केन्द्र में गुमशुदगी की रपट दर्ज कराइयेगा।"

"अड़तालीस घन्टे बाद!"



Scanned by CamScanner

"ऐसा ही नियम है। किसी को मिसिंग पर्सन करार देने के लिये इतना टाइम गुजर गया होना जरूरी है।"

"अच्छा!"

"आप नाहक फिक्र कर रहे हैं। आपके भाई को कुछ नहीं हुआ होगा। हुआ होता तो जैसे तैसे खबर जरूर आप तक पहुंचती। भाई की खैर मनाते घर जाइये, कोई बड़ी बात नहीं अब तक तक वो लौट भी आया हुआ हो।"

अनुराग ने सहमति में सिर हिलाते हुए शेखर की बांह को छुआ और उठ खड़ा हुआ।

शेखर भी उठा, उसने एस.एच.ओ. का धन्यवाद किया।

दोनों थाने से रुखसत हुए।

गोल्फलिंक्स में मार्बल आर्क ब्लॉक की आखिरी इमारत थी इसलिये वो तीन साइड से ओपन थी। कोठी के गैराज का आटोमैटिक डोर लोधी रोड की ओर वाले खुले पहलू में था जिस तक पहुंचती सड़क पर शशांक ने कार को डाला। गैराज के करीब पहुंचकर उसने रिमोट का बटन दबाया तो ओटोमैटिक डोर निशब्द खुलने लगा। उसने कार को भीतर दाखिल किया तो भीतर की एक लाइट भी खुद-ब-खुद आन हुई। वो लाइट गैराज की छत में लगा एक बल्ब था जो वहां मद्धम रोशनी फैलाने में ही सक्षम था।

उसने कार को भीतर खड़ी किया-रिमोट का बटन दबाया जिसकी वजह से दरवाजा निशब्द बन्द होने लगा-और बाहर निकला।

आगे जो उसे दिखाई दिया उसने उसे वही थमक कर खड़ा हो जाने पर मजबूर कर दिया। एक कार की ओट में से एक साया उठकर खड़ा हो रहा था।

"तुम!"-उसके मुंह से निकला।

"हां।"-जवाब मिला-"मैं।"

"यहां!"

"और कहां?"

"भीतर कैसे आयीं?"

"क्या मुश्किल काम था! यहां के रिमोट कन्ट्रोल सिस्टम को ही तो स्टडी करना था! मामूली पड़ताल से पता चल गया था कि इस सिस्टम के रिमोट एक टाइप के एसीज के रिमोट्स की तरह कॉमन होते थे। एक दूसरा रिमोट ही तो मुहैया करना था!"



Scanned by CamScanner

"यहां हो क्यों तुम?"–शशांक भड़का–"मतलब क्या है इस बेहूदा हरकत का?"

"कुछ बेहूदा नहीं मेरी हरकत में। मैंने बात करनी थी, प्राइवेट बात करनी थी, बिना किसी को खबर लगे बात करनी थी, इसलिये यहां हूं।"–उसने होन्डा का पिछला दरवाजा खोला और भीतर दाखिल हुई–"आओ"–उसने पहलू में सीट को थपथपाया–"यहां आ के बैठो ताकि सहूलियत से बात हो सके।"

"मैंने तुमसे कोई बात नहीं करनी है।"

"मैंने करनी है। आओ।"

मन्त्रमुग्ध शशांक आगे बढ़ा, उसने कार का अपनी तरफ का दरवाजा खोला और भीतर उसके पहलू में जा बैठा।

"ये हरकत जो तुमने की है"–वो बोला–"उसने मुझे और यकीन दिला दिया है कि तुम्हारे दिमाग में नुक्स है।"

वो हंसी।

"अब जो कहना है, कहो। जल्दी कहो।"

"क्या जल्दी है?"

"मुझे जल्दी है। क्यों आई हो यहां? कोई बात करनी थी तो किसी और तरीके से नहीं हो सकती थी? गैराज खोल लिया! भीतर छुप के बैठ गयीं! ये वाहियात हरकत किये बिना बात नहीं हो सकती थी?"

"हो सकती थी।"–वो इतना धीरे बोली कि फुसफुसाती जान पड़ी–"लेकिन मुझे ये तरीका पसन्द है।"

शशांक ने गौर से उसकी तरफ देखा। नीमअन्धेरे में भी उसे उसकी आंखों में वहशत की चमक साफ दिखाई दी।

"ये पागलपन है।"–वो कठिन स्वर में बोला–"तुम किसी जुनून, किसी दीवानगी के हवाले हो।"

"ऐसी कोई बात नहीं। मैं बाखूबी जानती हूं मैं क्या कर रही हूं!"

"क्या कर रही हो?"

"नया कुछ नहीं कर रही हूं।"

"क्या! तुम...तुम...हे भगवान! क्या तुम्हीं ने...नहीं, नहीं। ये नहीं हो सकता। कैसे हो सकता है!"

"जो हो चुका है उसका क्या पूछते हो कैसे हो सकता है?"

"तो सच में तुमने...तुम्हीं ने..."

"हां, हां। कहो। बात मुकम्मल करो अपनी।"

वो खामोश रहा।



Scanned by CamScanner

[illegible] करती हूं। ही मैंने परमीत मेहरा का कत्ल किया। उस बदहाल, काबिलेरहम बेवड़े जॉन पाब्लो का भी।"

"तुम...तुम वाकेई पागल हो। तुम तो उन दोनों को जानती तक नहीं थीं। यूं नाहक दो अनजान लोगों की जान लेने का क्या मतलब?"

"बेमतलब कोई काम होता है! था न मतलब!"–उसने अपने एक पहलू की ओट से अपना पर्स निकालकर गोद में रखा और उसे खोल के भीतर टटोलने लगी–"असल में मैं तुमसे कोई बात नहीं करना चाहती। करने लायक कोई बात है ही नहीं। कोई जरूरत ही नहीं है बात करने की। मेरा काम तो बात किये बिना भी हो सकता है।"

शशांक के चेहरे पर असमंजस के भाव आये। फिर एकाएक उसे अहसास हुआ कि असल में वो क्या कह रही थी।

"तुम...तुम पागल हो"–वो बोला–"जो समझती हो कि मेरा भी खून कर सकती हो।"

वो हंसी।

"पर्स में क्या टटोल रही हो?"–वो उत्तेजित स्वर में बोला–"जहर! कैप्सूल! चॉकलेट!"

"हाउ क्लैवर!"

"तुम समझती हो तुम मुझे जबरदस्ती जहर के कैप्सूल वाली चॉकलेट खिला सकती हो?"

"मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं।"

"अपना पर्स दिखाओ मुझे। इधर करो।"

"तुम्हारे लिये मैंने जुदा स्ट्रेटेजी तैयार की है।"–उसने बालपैन जैसी कोई चीज पर्स से निकालकर हाथ में थामी–"तुम जुदा तरीके से मरोगे। देखना, जान जाती महसूस तक नहीं होगी।"

उसने हाथ में थमी चीज शशांक की नाक के करीब की। उसकी रबड़ के दस्ताने से ढंकी एक उंगली ने उसे कहीं से दबाया, एक 'शू' की आवाज हुई और किसी तरल पदार्थ की बौछार शशांक के चेहरे से टकराई। तत्काल अपने दूसरे हाथ में थमे रुमाल से उसने अपना मुंह नाक ढंक लिया।

नतीजा फौरन सामने आया।

शशांक ने बोलने की कोशिश की तो उसका जबड़ा ही हिल के रह गया, मुंह से आवाज न निकल पायी। उसकी आंखें बाहर को उबल पड़ीं और वो कुछ क्षण को छटपटाया। फिर उसका शरीर



Scanned by CamScanner

निश्चेष्ट हो गया। अलबत्ता सांस ऐसी सुव्यवस्थित चलती रही जैसे की सोया पड़ा हो।

"गुड!"–कातिला के मुंह से निकला।

शान्ति से उसने कुछ क्षण शशांक का मुआयना किया और फिर अपने मुंह पर से रुमाल हटाती वो कार से बाहर निकल आयी।

बेहोशी की दवा का हवा में कोई असर बाकी था तो वो कार के भीतर था।

सन्तुलित कदमों से चलती वो गैराज के पिछवाड़े में पहुंची जहां दीवार पर एक कील के सहारे गोल लपेटा हुआ प्लास्टिक के पाइप का बंडल टंगा था जो कि कार धोने के काम आता था। उसने पाइप को वहां से उतारकर खोला, अपनी जरूरत के मुताबिक अन्दाजन नाप कर एक लम्बा टुकड़ा उसमें से काटा और उसके साथ होंडा के पृष्ठ भाग में पहुंची। उस पाइप का एक सिरा उसने कार के एग्जास्ट पाइप के साथ जोड़ा, जेब से टेप निकाल कर जोड़ पर मजबूती से उसे लपेटा और दूसरे सिरे के साथ कार के एक पिछले दरवाजे के करीब पहुंची। उसने कार का उधर का शीशा सिर्फ इतना नीचे गिराया कि पाइप का सिरा भीतर दाखिल हो जाता। पाइप के भीतर दाखिल हो जाने के बाद फ्रेम और शीशे में जो झिरी बाकी बची, उसे उसने आगे ड्राइविंग सीट पर बैठकर टेप से भीतर से बन्द कर दिया। फिर उसने इंजन स्टार्ट किया और उसे चलता छोड़कर बाहर निकल आयी। अपने पीछे दरवाजा उसने मजबूती से बन्द किया।

और थोड़ी देर बाद कार गैस चैम्बर बन जाने वाली थी।

"बेचारा शशांक! खुदकुशी कर ली!"–बड़े सन्तुष्टिपूर्ण भाव से वो होंठों में बुदबुदाई–"बदनामी से घबरा गया! मंगनी टूटने के गम से टूट गया! बद्किस्मती का एक करारा झटका न झेल सका! खुद अपनी जान ले ली। अपने गैराज में, अपनी कार में, अपना पाइप एग्जास्ट से जोड़कर कार्बन मोनोआक्साइड का डोज ले लिया। बेचारा! जवानी में खुदकुशी करके मरा! बढ़िया! बढ़िया!"

पुलिस आती। गैराज बन्द पाती, गैराज को कोठी से जोड़ने वाला दरवाजा भीतर गैराज की तरफ से बन्द पाती, दरवाजा तोड़ कर गैराज में दाखिल होती जो आगे जो नजारा दिखाई देता, उससे क्या नतीजा निकालती?



Scanned by CamScanner

खुदकुशी! आत्महत्या! सुइसाईड!
परफैक्ट!
"मर, कमीने"–दान्त पीसती वो बोली–"मर!"
खामोशी मे वो वहां से रुखसत हो गयी।

"मैं आश्वस्त नहीं हूं।"–रास्ते में शेखर बोला–"थाने आ के कुछ पल्ले नहीं पड़ा। टालू जवाब मिला। इन लोगों के हाथ में ताकत है, इनके पास साधन हैं, एस.एच.ओ. चाहता तो कुछ कर सकता था। बहुत कुछ कर सकता था।"

"नहीं करता"–अनुराग सहमति में सिर हिलाता बोला–"क्योंकि उसके पास बहाना है कि वो नियमों से बन्धा है। इतनी जल्दी किसी को गुमशुदा नहीं माना जा सकता इसलिये उसको कोई हिलडुल करने की कोई जरूरत नहीं।"

"वो कुछ भी कहे, मुझे अभी भी अन्देशा है कि शशांक कोई गलत कदम न उठा बैठा हो।"

"खुदकुशी की बात उठी तो थी लेकिन उसने उसे बड़े आराम से खारिज कर दिया था।"

"उसके खारिज करने से क्या होता है?"

"आपका दिल मानता है, गवाही देता है, कि आपके ब्रदर अपने पस्ती के आलम में इतना गहरा धंस गये होंगे कि सुइसाइड करने की नीयत से उन्होंने जानबूझकर कार को क्रैश कर दिया होगा?"

"क्या कहूं! कहना तो चाहता हूं कि मेरा भाई इतना मजबूत है, इतना जुझारू है कि यूं जान दे देने वाला नहीं लेकिन जो बात खुद मुझे तसल्ली नहीं दे पा रही, उसे कैसे जुबान से निकालूं! मेरा दिल ये मान रहा होता तो मैं इस वक्त थाने से लौट रहा होता!"

"ठीक!"

"मुझे शशांक की सुबह की सूरत नहीं भूलती। उसकी हाउसकीपर कारमला कहती है कि घर पर वो उससे भी बुरे मूड में था। पता नहीं कहां चला गया, नालायक, क्या कर बैठा!"

"कुछ नहीं कर बैठा, घर पहुंचिये, शायद कोई गुड न्यूज वहां इन्तजार कर रही हो।"

"गॉड ब्लैस यू, माई डियर।"



Scanned by CamScanner

कातिला ने जब गैराज से बाहर कदम रखा, तब वो इस बात से कतई बेखबर थी कि वो दो जोड़ी आंखों की पहुंच में थी।

दो साये झाड़ियों में छुपे उसकी निगाहबीनी कर रहे थे।

वो उनके आगे से गुजरी तो उन दोनों ने और अच्छी तरह से झाड़ियों की ओट ले ली।

अपनी कामयाबी पर इतराती झूमती कातिला को उसके इतने करीब किसी की मौजूदगी की कतई कोई भनक न लगी।

झाड़ियों में छुपे साये सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल और सिपाही सुलतान सिंह थे।

"पीछे जा!"-बहल व्यग्रता से फुसफुसाया-"निगाह से ओझल न होने पाये।"

"साहब जी"-सुलतान सिंह बोला-"पहले हुई?"

"अब भी न होने पाये।"

"नहीं होगी, हो भी गयी तो बेरा है न आखिर कित पहुंचेगी।"

"फिर भी।"

"नहीं होगी।"

"जा। मैं गैराज की सुध लेता हूं।"

"जी, साहब जी।"

सुलतान सिंह झाड़ियों की ओट से निकला और दबे पांव साये की तरह कातिला के पीछे लग लिया।

सुनसान सड़कों पर चलते वो जब अपनी मंजिल के करीब पहुंचे तो एकाएक उन्हें अपने पीछे कदमों की आहट सुनाई दी। दोनों ने घूम कर पीछे देखा।

एक लड़की लपकी चली आ रही थी, उसके भूरे बाल हवा में उड़ रहे थे।

"श्रेया!"-अनुराग के मुंह से निकला।

"ये घर से बाहर क्या कर रही है?"-शेखर हैरानी से बोला।

"आप लोगों के पीछे थाने गयी थी।"-वो हांफती सी बोली-"एक शार्टकट ट्राई किया ताकि जल्दी वहां पहुंच पाती। पहुंची तो पता लगा आप लोग वहां से चले गये हुए थे। अब पीछे दौड़ी आ रही हूं। आप लोग बहुत ज्यादा तेज चल रहे थे, अब कहीं जाकर मेरी पकड़ में आये।"



Scanned by CamScanner

"लेकिन क्यों? क्यों गयी तू थाने? हमारे बाद वहां पहुंची तो हमें रस्ते में क्यों न मिली?"

"अंकल किधर ध्यान है। मैंने बोला न जल्दी पहुंचने की नीयत से एक शार्टकट ट्राई किया था।"

"ओह! लेकिन तू थाने गयी क्यों?"

"आप लोगों के पीछे गयी।"

"क्यों?"

"आपको गुड न्यूज देने के लिये।"

"गुड न्यूज! शशांक की कोई खबर मिली?"

"मिली न!"

"किसने दी?"

"उन्होंने ही दी।"

"क्या! क्या कह रही है?"

"शशांक अंकल ने फोन किया न! इत्तफाक से मैंने ही रिसीव किया..."

"कहां है वो? खैरियत से है न? कहां था..."

"भीतर चल कर बात करें तो कैसा रहे?"–अनुराग बोला।

"ठीक! ठीक!"

तीनों आगे बढ़े, घर के कम्पाउन्ड में दाखिल हुए।

तभी हेमा ने दरवाजा खोला।

"आवाजें सुनाई दीं।"–वो बोली–"खिड़की में से झांका तो आप लोग दिखाई दिये। लेकिन"–उसने शेखर की तरफ देखा–"तुम अभी यहीं हो? श्रेया ने बताया नहीं तुम्हें?"

"क्या नहीं बताया?"

"ये मुझे थाने में नहीं मिले"–श्रेया जल्दी से बोली–"रास्ते में भी नहीं मिले। अभी यहीं, बाहर मिले। कुछ कहने का मौका ही नहीं लगा।"

"अब तो कह, ईडियट।"

"अंकल, शशांक अंकल ने आपके लिये मैसेज छोड़ा था कि आप बीस मिनट में मार्बल आर्क पहुंच जायें। आपको ये मैसेज देने ही मैं थाने आपके पीछे दौड़ी थी क्योंकि टाइम शार्ट था। आप थाने मिल जाते तो वहीं से आगे निकल लिये होते।"

"अब तो"–हेमा बोली–"आधा घन्टा गुजर चुका है!"

"फोन! फोन कीजिये। कहिये, आ रहे हैं और फिर जाइये।"



Scanned by CamScanner

"फोन पर कैसा बोला था शशांक?"–शेखर ने व्यग्रभाव से पूछा–"नार्मल?"

"बिलकुल। वही खड़के-दबके वाली आवाज। अपना हुक्म सुनाया और लाइन बन्द। मुझे कुछ कहने ही नहीं दिया।"

"बहरहाल शुक्र है खुदा का कि वो खैरियत से है।"–शेखर टेलीफोन की ओर बढ़ा–"अब पता नहीं क्यों इतना अर्जेंट बुलाया है! ऐसा पहले तो कभी हुआ नहीं!"

उसने हड़बड़ाये भाव से नम्बर डायल किया और कुछ क्षण लाइन कनैक्ट होने की प्रतीक्षा की।

"हल्लो! कारमला!"–फिर एकाएक वो बोला–"शेखर बोलता हूं। शशांक से बात कराओ।"

"साहब तो इधर नहीं है।"–आवाज आयी–"अभी वापिस किधर लौटा!"

सब-इन्स्पेक्टर बहल ने दो तीन बार गैरेज के बन्द दरवाजे पर जाकर भीतर की आहट लेने की कोशिश की थी इसलिये भीतर के ड्रामे से वो कतई बेखबर हो, ऐसा नहीं था। इस बार वो दरवाजे पर पहुंचा तो उसने पाया कि रिमोट कन्ट्रोल वाला वो दरवाजा उसके हिलाये अपनी जगह से हिलने वाला नहीं था।

उसने दरवाजे और चौखट के बीच की झिरी में कान लगाया तो उसे भीतर कार का इंजन चलने की आहट मिली, उसी झिरी में नाक लगाई तो तीखी गन्ध का अहसास हुआ।

अपना अगला कदम उसने निसंकोच निर्धारित किया।

उसने दरवाजे की वो जगह तलाश कि जहां वो नीचे फर्श पर एक खांचे में आकर लॉक होता था और फिर अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकालकर वहां सावधानी से दो गोलियां दागीं।

लॉकिंग टूट गयी।

उसने दरवाजे को ऊपर उठाया तो वो निशब्द उठता चला गया।

अब गैस की दुर्गन्ध का गुबार ज्यादा तेजी से उसके गले और नथुनों से टकराया।

उसने स्विच बोर्ड तलाश करके बिजली का स्विच ऑन किया और फिर सांस रोके आगे बढ़ा

सबसे पहले उसने कार का इंजन ऑफ किया और उसके चारों दरवाजे खोले।



Scanned by CamScanner

शशांक साहनी पिछली सीट पर ढेर सा हुआ पड़ा था।

बहल ने बगलों के नीचे से उसकी बांहें थामीं और उसे घसीटकर कार से बाहर निकालकर उससे परे फर्श पर डाला। उसने जल्दी से उसकी नब्ज और सांसों का मुआयना किया तो पाया कि वो किसी भी तरह के खतरे से बाहर था। कार्बन मोनोआक्साइड गैस ने अभी उसको इतना अपने काबू में नहीं किया था कि वो उसकी जान के लिये खतरा बन गयी होती।

"कम्माल है!"–वो होंठों में बुदबुदाया–"आगाशे को कैसे मालूम था क्या होने वाला था!"

उसने अपना मोबाइल निकाला और पहले एम्बूलेंस को और फिर थाने फोन लगाया।

फिर तनिक हिचकिचाते हुए उसने विवेक आगाशे को भी काल लगाई।

सबसे पहले आगाशे वहां पहुंचा।

उसने हालात का जायजा लिया।

"हूं।"–फिर गम्भीर हूंकार भरी।

"हम पहले से सावधान थे"–बहल मन्त्रमुग्ध स्वर में बोला–"इसीलिये बच गया वर्ना कातिला ने तो अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी थी।"

"इसलिये भी कि तुमने फौरन एक्ट किया। तुम्हारी तुर्ती फुर्ती भी कोई कम काबिलेतारीफ नहीं, माई डियर।"

"सब आपका जहूरा है।"

"बहरहाल अब हमें मालूम है कातिला कौन है, कहां पायी जाती है!"

"अब तो हमें मालूम है। आपको तो पहले से मालूम था, जनाब।" आगाशे हंसा।

"कैसी बीती?"–फिर बोला–"कैसे बीती?"

"बढ़िया बीती। सिपाही सुलतान सिंह कातिला की ताक में था। वो घर से निकली तो सुलतान सिंह पीछे लग लिया। मैं इधर उसके होने वाले शिकार की टोह में था। वो इधर पहुंची तो यहां का ओटोमैटिक डोर अपने पास मौजूद रिमोट से खोलकर भीतर जा घुसी और डोर उसके पीछे बदस्तूर बन्द हो गया। थोड़ी देर बार अपनी यही होंडा खुद चलाता शशांक यहां पहुंचा और कार समेत गैराज में बन्द हो गया। मैंने गैराज के दरवाजे और चौखट की झिरी में कभी आंख कभी कान लगाकर कुछ देखा, कुछ सुना, कुछ समझा। फिर



Scanned by CamScanner

कातिला अपने कारनामे को अंजाम देकर–इसकी मौत का सामान करके–यहां से रुखसत हुई तो सुलतान सिंह को मैंने फिर उसके पीछे लगा दिया और खुद यहां सब सम्भाला।''

''गुड! माई डियर, तुम लोग तैयार न होते तो तीसरी कामयाबी तो समझ लो कि कातिला को हासिल हो ही गयी थी।''

''तैयार तो, जनाब, आप ही थे, हमने तो आपकी तैयारी पर सिर्फ अमल किया था। आपको कैसे मालूम था? कैसे गारन्टी थी? इस बार तो उसने अपनी कार्यप्रणाली भी बदल डाली थी। तौबा! असल शैतान की बेटी थी। यहां से निकलते वक्त जानते हैं क्या बड़बड़ा रही थी?''

''क्या?''

'' 'मर, कमीने, मर'। कितनी नफरत छुपी थी उन तीन लफ्जों में! जिस्म में झुरझुरी दौड़ गयी सुनने भर से।''

तभी एम्बूलेंस वहां पहुंची।

एम्बूलेंस के साथ आये डाक्टर ने शशांक को खड़काया, फिर बोला–''इमरजेन्सी वाली कोई बात नहीं। ये ठीक हैं। इन्हें हस्पताल पहुंचाने की कोई जरूरत नहीं है। अभी बड़ी हद पांच मिनट में ये होश में आ जायेंगे।''

''गुड!''–आगाशे बोला।

''यहीं रहते हैं?''

''हां। मालिक हैं।''

''तो इन्हें किसी आराम की जगह पर पहुंचाने का इन्तजाम कीजिये।''

तभी थाने की एक जीप वहां पहुंची।

बहल ने वो इन्तजाम नवागन्तुकों के हवाले किया।

फिर एम्बूलेंस को वहां से रुखसत किया।

और फिर आगाशे के निर्देश पर उसकी कार में उसके साथ सवार हो गया।

वे लोधी कालोनी और आगे थर्ड एवेन्यू पहुंचे।

शेखर साहनी उस वक्त मार्बल आर्क पहुंचने के लिये घर से बाहर कदम रख रहा था।

''कैसे आये?''–वर्दीधारी सब-इन्स्पेक्टर को देखकर वो व्यग्रभाव से बोला–''क्या मेरे ब्रदर की कोई खबर है? कब से गायब है वो। बड़ा आदमी है, वीआईपी है, फिर भी किसी को कोई परवाह नहीं।



Scanned by CamScanner

मैं थाने गया तो एस.एच.ओ. ने टरका दिया। कोई कुछ करने को ही तैयार नहीं..."

"आप धीरज रखिये, जनाब।"–बहल बोला।

"कहना आसान है। मेरा सगा भाई है जो गायब है। धीरज रखा जाता है!"

"टेक इज ईजी, सर।"–आगाशे बोला।

"जब मैं थाने में था तो उसका यहां फोन आया था। उसने यहां मेरे लिये मैसेज छोड़ा था कि मैं बीस मिनट में मार्बल आर्क पहुंचूं लेकिन मुझे मैसेज देर से मिला। मैंने मार्बल आर्क फोन किया तो हाउसकीपर से पता लगा कि वो वहां नहीं लौटा था। पता नहीं वो होक्स काल थी या कोई और बात है। शायद वहां से कुछ पता लगे। मैं अपने भाई के घर जा रहा हूं, साहबान इसलिये, सॉरी, मैं रुक नहीं सकता।"

"अरे, जनाब"–बहल बोला–"हमें भी तो कुछ कहने दीजिये।"

"क्या कहना चाहते हैं?"

"धीरज रखने की फिर दरख्वास्त करना चाहता हूं क्योंकि जिस फिराक में आप घर से निकलना चाहते हैं, वो अभी यहीं पूरी होती है।"

"क्या! आपको शशांक की कोई खबर है?"

"है।"

"है! कहां है वो? कैसा है?"

"अपनी कोठी पर है..."

"शुकर! शुकर!"

"लेकिन आपसे मिलने, आपसे बात करने की स्थिति में नहीं है।"

"ऐसा क्यों?"

"भीतर चलिये, बताते हैं।"

सब भीतर ड्राईंगरूम में पहुंचे।

जहां परिवार के बाकी तीन सदस्य मौजूद थे।

सबने सशंक भाव से नवागन्तुकों की तरफ देखा।

"शशांक घर लौट आया था"–शेखर ने घोषणा की–"लेकिन ये कहते हैं किसी से मिलने, बात करने की स्थिति में नहीं है।"

"क्या मतलब हुआ इसका?"–हेमा सशंक भाव से बोली।

"बताइये, जनाब।"–शेखर आगन्तुकों की तरफ घूमा–"सस्पेंस खत्म कीजिये।"

"क्या हुआ है शशांक अंकल को?"–श्रेया तीखे स्वर में बोली।

"क्यों आप लोग इतना सस्पेंस फैला रहे हैं?"–अनुराग बोला।



Scanned by CamScanner

"कोई सस्पेंस नहीं।"–आगाशे शान्ति से बोला–"सस्पेंस तो लोग ही फैला रहे हैं ये सोच सोच के कि कोई इस लायक बचा है। शेखर साहब, थाने में आपकी एस.एच.ओ. मीना साहब से जो बातचीत हुई थी, उसकी मोटे तौर पर मुझे खबर है। बराय मेहरबानी आप बताइये कि क्यों आपको ये अन्देशा सताता था कि आपके बड़े भाई शशांक साहनी खुद अपनी जान लेने की कोशिश कर सकते थे?"

"हे भगवान!"–श्रेया आतंकित भाव से बोली–"कहीं...कहीं..."

"क्या माजरा है।"–शेखर बोला–"क्या हुआ है? क्या कहना चाहते हैं?"

"किसी बात को धीरे से सरकाना चाहते हैं।"–हेमा बोली–"तुम कहते क्यों नहीं हो"–वो अपने पति की तरफ घूमी–"कि था तुम्हें अन्देशा कि देवर जी खुदकुशी कर सकते थे!"

शेखर ने बड़ी कठिनाई से सहमति में सिर हिलाया।

"वो परेशान था"–फिर धीरे से बोला–"हलकान था। पस्ती की गिरफ्त में था..."

"अब कहिये"–हेमा बोली–"क्या कहना है?"

"बताओ, भई।"–आगाशे बहल से बोला।

"मैं गश्त पर था"–खंखारकर गला साफ करता बहल बोला–"जबकि मैं मार्बल आर्क के बाजू में बने उसके गैराज के सामने की सड़क से गुजरा था। मुझे ये बात बड़ी अजीब लगी थी कि गैराज का दरवाजा बन्द था, भीतर कोई रोशनी नहीं जल रही थी लेकिन भीतर खड़ी एक कार का इंजन चल रहा था। मुझे वो बात तहकीकात के काबिल लगी थी, लिहाजा किसी तरह से दरवाजा खोलकर मैं गैराज के भीतर दाखिल हुआ था। तब...तब मुझे वो हौलनाक नजारा दिखाई दिया था। तब मेरी समझ में आया था कि क्यों स्टेशनरी कार का इंजन चल रहा था!"

"क्यों चल रहा था?"–अनुराग ने पूछा।

"कार के एग्जास्ट के साथ टेप की मदद से एक पाइप जुड़ा हुआ था जिसका दूसरा सिरा कार की पिछली, जरा सी खुली खिड़की से कार के भीतर दाखिल हो रहा था और पिछली सीट पर बेहोशी की हालत में मिस्टर शशांक साहनी लुढ़के पड़े थे।"

"क्या मतलब हुआ इसका?"–शेखर तीखे स्वर में बोला।

"मतलब तो साफ है, जनाब।"

"क्या?"



Scanned by CamScanner

"प्लीज अन्डरस्टैण्ड, सर।"–आगाशे बोला–"नोबाडी हैज टु डू यू ए डायग्राम। यूं इंजन चलता होने से एग्जास्ट से निरन्तर कार्बन मोनोआक्साइड गैस निकलती है जिसे कि पाइप के जरिये बन्द कार के भीतर पहुंचाने का इन्तजाम किया गया था ताकि वो घातक गैस भीतर मौजूद आपके ब्रदर की खामोश मौत की वजह बन पाती।"

"यानी कि"–हेमा धीरे से बोली–"खुदकुशी की बाबत इनका अन्देशा सच निकला!"

"मुझे अन्देशा था।"–शेखर पूर्ववत् तीखे स्वर में बोला–"जब किसी के कुशल मंगल की फिक्र हो तो ऐसे अन्देशे सताते ही हैं। ऊपर से खुदकुशी के दायें बायें से हिंट ड्राप किये जा रहे थे। फिर भी शशांक सच में ऐसा कोई कदम उठा बैठेगा, मैंने सपने में नहीं सोचा था। कैसे कोई इतना नादान हो सकता है! पस्ती में, डिप्रेशन में हर कोई अपनी जान लेने पर आमादा होने लगे तो आधी दुनिया खत्म हो जाये। शशांक मजबूत मर्द था, बहादुर शख्स था, वो आत्महत्या जैसा कायरतापूर्ण कदम नहीं उठा सकता था।"

हेमा उठकर अपने पति के पास पहुंची, उसने हौले से आश्वासनपूर्ण भाव से, उसकी पीठ पर हाथ रखा।

"हौसला रखो।"–वो बोली–"जो हुआ, बुरा हुआ लेकिन..."

"वैसे न हुआ"–आगाशे बोला–"जैसे आप लोग सोच रहे हैं।"

"क्या मतलब?"

"शशांक साहनी ने खुदकुशी की कोशिश नहीं की थी।"

"क्या?"

"उसके कत्ल की कोशिश की गयी थी।"

"कत्ल!"

"और ये कोशिश करने वाली वही कातिला थी जो पहले भी दो कत्ल कर चुकी है। एक परमीत मेहरा का और दूसरा जॉन पाब्लो उर्फ जॉन अंकल का। इस खूनी खेल की ये उसकी तीसरी कोशिश थी।"

"ऐसा कैसे हो सकता है?"–शेखर जोर से बोला–"नहीं हो सकता।"

"क्यों भला?"–आगाशे शान्ति से बोला।

"अरे, आपने खुद तो कहा कि वो अपने गैराज में खड़ी अपनी कार में एग्जास्ट की गैस का शिकार बनता पाया गया था और गैराज भीतर से बन्द था। ये सुईसाइड का सीनेरियो न हुआ तो और क्या हुआ? अब क्या आप ये कहना चाहते हैं कि कातिला के पिछले दो शिकारों की तरह उसे जहर के कैप्सूल वाली चॉकलेट खिलाई गयी थी?"



Scanned by CamScanner

"नहीं। इकीकत [illegible] अपनी मौंडस अपरान्ती [illegible] अपने हथियार के तौर पर एक्जाक्ट से [illegible] चुना था। लेकिन इस बार कामयाबी उसके [illegible] है। इस बार वो बच नहीं सकती, क्योंकि इस बार [illegible] थी।"

"तैयार थी!"–श्रेया हैरानी से बोली–"क्या मतलब हुआ इसका? पुलिस जानती है वो कौन है? कैसे जानती है? किसने देखा? क्या देखा? कुछ देखा या सब गैसवर्क है? तुक्का है?"

"तुक्का नहीं है, माई डियर। इतना बड़ा दावा तुक्कों की, अन्दाजों की, गैसवर्क की बुनियाद पर नहीं किया जा सकता।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है।"

"अभी आ जायेगा। सबकी समझ में आ जायेगा।"–एकाएक उसने कान खड़े करके कोई आहट लेने की कोशिश की–"बस, आ ही गया समझो।"

काल बैल बजी।

शेखर आगे बढ़ा।

"आप तकलीफ न करें।"–तत्काल आगाशे तीव्र स्वर में बोला–"मुझे खिदमत का मौका दीजिये।"

शेखर ठिठक गया।

आगाशे वहां से बाहर निकल गया।

पीछे भारी सस्पेंस का माहौल छोड़कर।

बाहर मेन डोर खुलने और बन्द होने की आहट हुई।

फिर ड्राईंगरूम की चौखट पर किसी के एक कदम आगे चलता आगाशे प्रकट हुआ। वो और नवागन्तुक ड्राईंगरूम में दाखिल हो गये, भीतर बाकी जनों के करीब आ गये तो आगाशे एक तरफ हटा।

सबकी निगाह एक साथ ओट से नमूदार हुए आगन्तुक पर पड़ी।

शशांक साहनी!

जिन्दा! सही सलामत! मजबूती से अपने पैरों पर खड़ा।

एक क्षण के लिये सबको जैसे लकवा मार गया। फिर वातावरण का तलवार की धार सा पैना सन्नाटा एक तीखी चीख से टूटा।

जो कि हेमा के गले से निकली थी।

जो यूं एकाएक पीछे हटी थी जैसे ड्राईंगरूम की पीठ पीछे की दीवार में पनाह पाना चाहती हो।



Scanned by CamScanner

□□□

वो चीख ऐसी भयानक थी, उसमें ऐसा आतंक निहित था कि सुनने वालों के प्राण कांप गये। क्या शेखर, क्या श्रेया, क्या अनुराग सब हक्काबक्का से हेमा का मुंह देखने लगे जो चाक सा सफेद निकला आया था, जिससे खून की आखिरी बून्द तक निचुड़ चुकी थी। हेमा की आंखें कटोरियों से बाहर उबली पड़ रही थीं, चेहरा विकृत था और गर्दन की नसें खिंची हुई तारों की तरह बाहर निकल आयी थीं।

"मैडम"–आगाशे हेमा से सम्बोधित हुआ–"शशांक साहनी के जिन्दा, सही सलामत यहां एकाएक प्रकट होने की मैं आप पर ऐसी ही प्रतिक्रिया की अपेक्षा कर रहा था। इसलिये मैंने इस तरीके से यहां इसके आगमन का इन्तजाम किया था। जो भीषण प्रतिक्रिया आप पर हुई सबको दिख रही है, आपकी पोल खोल देने के लिये वही काफी है। अब आपका खेल खत्म है। आपका देवर जिन्दा है और सही सलामत आपके सामने खड़ा है। आगे इसकी गवाही आपको कहां पहुंचायेगी, उसकी कल्पना आप कर सकती हैं। या नहीं कर सकतीं?"

हेमा के मुंह से कराह सी निकली, वो जोर से सिर से पांव तक कांपी।

"अब बस कीजिये।"–शशांक क्षीण स्वर में बोला–"मेरे से ये सब नहीं देखा जाता। भ्राजी, भरजाई को सम्भालिये। मुझे...मुझे कुछ हो रहा है..."

शेखर ने अपने एकाएक सूखे गये होंठों पर जुबान फेरी और बेचैनी से पहलू बदला। फिर बड़ी शिद्दत से वो अपनी जगह से हिला और जाकर बीवी के पहलू में खड़ा हुआ।

"आई एम सॉरी, सर।"–आगाशे बोला–"लेकिन ये शॉक ट्रीटमेंट देना जरूरी था। कातिला के रुख से पर्दा इतनी कामयाबी से और कोई जरिया नहीं उठा सकता था।"

"आप पागल हैं। आपका दिमाग खराब है।"–शेखर चिल्लाया–"क्या वाही तवाही बके जा रहे हैं आप मेरी बीवी के बारे में?"

"अपने ब्रदर से पूछिये।"–आगाशे शान्ति से बोला–"ये बेहतर जवाब दे सकते हैं।"

"शशांक, तुम..."



Scanned by CamScanner

"किसी से कुछ पूछने की जरूरत नहीं।" वो बोली–"प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं होती।"

"हेमा! ये तुम क्या कह रही हो।"

"आई एम सॉरी, शेखर। लेकिन तुम हकीकत को नहीं झुठला सकते। और हकीकत ये है कि मैं बाजी हार चुकी हूं।"

"क्या!"

"मुझे अपनी हार का दुख है। क्योंकि मैं समझती थी मैं बहुत चालाक हूं। लेकिन तकदीर से हार गयी। तकदीर के आगे मेरी चालाकी न चली।"

"आंटी!"–श्रेया के मुंह से निकला–"क्या कह रही हो?"

"हां"–शेखर बोला–"क्या कह रही हो? यकीन नहीं आता। कैसे? कैसे तुम..."

वो आगे न बोल पाया।

"आप पर खुदा की मार, मिस्टर आगाशे।"–हेमा दांत पीसती बोली–"आप और सिर्फ आप मेरी हार के जिम्मेदार हैं।"

सब चौंके।

कितनी जल्दी हेमा ने खुद पर काबू पाया था! अभी लग रहा था कि जहां खड़ी थी, वहीं ढेर हो जायेगी और अभी फिर कड़क रही थी, आगाशे के लिये नफरत के शोले उगल रही थी।

"मेरे को कोसना बेमानी है, मैडम।"–आगाशे शन्ति से बोला–"आप अपनी तकदीर को बहुत अच्छा अच्छा कोस रही थीं, उसी को कोसती रहिये जिसने कि आखिर तक आपका साथ न दिया। आपकी बद्किस्मती कि आपका देवर जिन्दा है, इसकी खुशकिस्मती कि ये आपके हाथों वीरगति को प्राप्त न हुआ। इसे कहते हैं वन मैंस फूड, अदर मैंस प्वायजन।"

हेमा ने दान्त किटकिटाये।

"नाओ, लैट लॉ आफ दि लैंड टेक इट्स कोर्स।"

बहल ने सहमति में सिर हिलाया, वो एक कदम आगे बढ़ा और बोला–"मैडम, यू आर अन्डर अरैस्ट।"

"खबरदार!"–शेखर भड़का।

बहल ने प्रश्नसूचक नेत्रों से उसकी तरफ देखा।

"ये नहीं हो सकता।"

"क्या नहीं हो सकता?"–बहल बोला–"क्यों नहीं हो सकता?"



Scanned by CamScanner

"अरे, तुम बोलती क्यों नहीं हो?"–शेखर बीवी पर झल्लाया–"कहो, सब गलत है, झूठ है, बेबुनियाद है!"

"जो कुछ ये कह चुकी हैं, उसके बाद ये सब कहेंगी तो चलेगा!"

"कुछ नहीं कह चुकीं। सब धोखा है, फरेब है, झूठ है, बकवास है। कैसी भी बात का अपने मतलब का मतलब निकाल लेना आप लोगों की आदत है। बात का बतंगड़ बनाना आप लोगों का शगल है। यहां इसके किसी कहे की कोई कीमत नहीं, मुझे क्या मालूम नहीं!"

"ये आपके ब्रदर की गवाही को कैसे झुठलायेंगी जिसका इन्होंने खून करने की कोशिश की?"

"ब्रदर मेरा है, मेरा खून है, इसका देवर है, ये अपनी बड़ी भाभी के खिलाफ कोई गवाही नहीं देगा।"

"और मैं?"

"तुम क्या?"

"मैं भी तो गवाह हूं!"

"क्या!"

"इनकी करतूत का। गैराज में कत्ल की जो स्टेज इन्होंने सैट की, मेरे सामने की। मेरे सामने ये वहां पहुंचीं, मेरे सामने वहां से विदा हुईं।"

शेखर मुंह बाये बहल को देखने लगा।

"कोई फायदा नहीं।"–हेमा बोली–"तकदीर रूठ जाये तो कुछ ठीक नहीं होता, तो जो पासे सहज ही सीधे पड़ रहे होते हैं, वो भी उलटे पड़ने लगते हैं। तभी तो मुझे पता न लगा कि पुलिस मेरे पर निगाह रखे थी। खैर"–उसने गहरी सांस ली–"मिस्टर पुलिस ऑफिसर, मैं अपना इकबालिया बयान दर्ज कराने को तैयार हूं।"

"आप कुबूल करने को तैयार हैं"–बहल बोला–"कि आपने परमीत मेहरा का कत्ल किया? आपने जॉन पाब्लो का कत्ल किया? और आपने शशांक साहनी के कत्ल की कोशिश की?"

"इकबालिया बयान का मेरे खयाल से यही मतलब होता है।"

"हेमा!"–शेखर चेतावनीभरे स्वर में बोला।

"माई डियर हसबैंड, नाओ आई डोंट केयर।"

"अगर ये अपना बयान देना चाहती हैं"–बहल बोला–"तो आपके दखलअन्दाज होने का कोई मतलब नहीं।"

"क्यों मतलब नहीं?"–शेखर गुस्से से बोला–"ये मेरी बीवी है।"



Scanned by CamScanner

"बीवी होने के अलावा और भी कुछ है तुम्हारा।"

"हे भगवान! हेमा! हेमा! तुम कहती क्यों नहीं कि तुमने कोई कत्ल नहीं किया! कहती क्यों नहीं कि तुमने कोई कत्ल की कोशिश नहीं की..."

"जनाब, बाज आ जायें। वर्ना मुझे आपको भी गिरफ्तार करना पड़ेगा।"

"मु...मुझे भी?"

"मुलजिम को बयान देने से रोकना उसकी मदद करने के समान है। आई विल अरैस्ट यू फार एडिंग एण्ड अबेटिंग ए क्रिमिनल। आई विल अरैस्ट यू फार इन्टरफियरिंग इन पुलिस इनवैस्टिगेशन।"

"ही इज राइट।"–आगाशे बोला–सर, प्लीज एक्ट सैन्सीबली।"

शेखर असहाय भाव से गर्दन हिलाता एक कुर्सी पर ढेर हुआ, उसने अपने हाथों से अपना माथा थाम लिया।

"सहयोग का शुक्रिया, मिस्टर शशांक साहनी"–आगाशे शशांक की तरफ घूमा–"अब आपका यहां रुकना जरूरी नहीं। आप चाहें तो जा सकते हैं।"

"नहीं।"–शशांक दृढ़ता से बोला–"मैं यहां रुकूंगा। इस औरत ने मुझे जान से मार डालने की कोशिश की, वजह जाने बिना मैं यहां से नहीं जा सकता।"

"वजह!"–हेमा विद्रुपपूर्ण भाव से हंसी–"तुम तो यही कहोगे मैं पागल हूं, मेरा दिमाग खराब है!"

"नहीं, ऐसी तो तुम नहीं हो। वजह तो कोई खास ही है।"

"क्या? ये कि मैं मैनहेटर हूं?"

शशांक खामोश रहा।

"इतने साल हो गये हमारी शादी को, मेरी तुम्हारे भाई से आज तक नहीं बनी। हमेशा कुत्ते बिल्ली जैसा रिश्ता ही रहा हम दोनों के बीच। हम दोनों के बीच कोई कॉमन बांड था तो वो नफरत थी जिसकी दोनों तरफ बराबर हाजिरी थी। श्रेया तुझे, या अनुराग तुम्हें, इस बात का कभी अहसास न हुआ तो मुझे हैरानी है। लेकिन ये हकीकत है, मेरे बयान किये जिस पर यकीन नहीं आ रहा तो शेखर से पूछ लो।"

श्रेया और अनुराग अविश्वासपूर्ण निगाहों से कभी हेमा को तो कभी शेखर को देखने लगे।

शेखर ने बड़े यत्न से हाथों पर से सिर उठाया और सहमति में सिर हिलाया।



Scanned by CamScanner

"ये सच है।"–वो बुदबुदाता सा बोला–"कुबूल करते दिल दुखता है लेकिन सच है।"

"देखा!"–हेमा बोली–"प्राणनाथ झूठ नहीं बोलते।"

"कैसे हो सकता है!"–श्रेया अविश्वासपूर्ण स्वर में बोली–"हमेशा आप दोनों इतने खुश दिखाई देते थे। एक दूसरे से इतने राजी दिखाई देते थे। जब से मैं आप लोगों के साथ रह रही हूं, मैंने तो आप दोनों के बीच में अनुराग और सद्भावना को ही स्थापित देखा।"

"क्योंकि हम दोनों को ही एक्टिंग में महारत हासिल है। मन के भाव चेहरे पर न झलकने देने में कमाल कर देते हैं। जो भी देखता है, उसे हम आदर्श जोड़ी जान पड़ते हैं, 'मेड फार ईच अदर' जान पड़ते हैं। लेकिन सब निगाह का धोखा था जो, श्रेया, औरों की तरह तूने भी खाया। तुझे हम हमेशा कबूतरों के जोड़े की तरह गुटरगूं करते दिखाई दिये लेकिन तेरी पीठ पीछे हमारे बीच जो तलवारबाजी होती थी वो तूने कभी न देखी। हम दोनों ने ही इस सिलसिले में हमेशा खास एहतियात बरती।"

"लेकिन क्यों? आंटी क्यों? क्यों आप दोनों को एक दूसरे से इतनी नफरत थी? क्यों आपको उस नफरत को औरों से छुपाकर रखना जरूरी लगता था?"

"मुझे जरूरी लगता था।"–शेखर बोला–"क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि हमारे तल्ख रिश्तों की परछाई तुम पर पड़ती। हमारे बीच खड़ी नफरत की दीवार तुम्हें दिखाई देती। ताली दो हाथ से बजती है, जब कभी तुम घर में होती थीं तो इस काम के लिये मेरा हाथ उपलब्ध नहीं होता था।"

"सर"–आगाशे दखलअंदाज हुआ–"आप प्लीज, जरा मैडम को कुछ कहने दें।"

शेखर खामोश हो गया।

"आप बोलिये, मैडम।"

"मैंने जब शेखर से शादी की थी"–हेमा संजीदगी से बोली–"तो स्वाभाविक तौर से सोच लिया था कि बड़ा बेटा होने की वजह से अपने पिता की सम्पत्ति का वारिस शेखर था। पिता बहुत ही इंसाफपसन्द होते तो वारिस दोनों पुत्रों को बना कर जाते, यानी कि आधी सम्पत्ति का वारिस शेखर फिर भी होता। उत्तराधिकारी हमेशा बड़े बेटे को माना जाता है लेकिन छोटा, शशांक, बिजनेस में पिता का ज्यादा हाथ बंटाता था और जब भी पिता बीमार पड़े होते थे या



Scanned by CamScanner

किसी और वजह से इनडिस्पोज्ड होते थे तो शशांक तमाम बिजनेस सम्भालता था। उन दिनों पिता की हैल्थ पोजीशन ये थी कि अक्सर ही बीमार रहते थे, वो धीरे धीरे अपनी मौत के करीब पहुंच रहे थे। आखिरकार एक दिन अपनी आखिरी मंजिल पर पहुंच गये, परलोक सिधार गये। तब मेरे कलेजे पर जैसे किसी ने मूसल मारा जब मुझे पिता के वकीलों से पता चला कि पिता–कम्बख्त, कमीने, नालायक, नामाकूल पिता–अपनी तमाम चल अचल सम्पत्ति शशांक के नाम लिख गये थे। इतना जुल्म, इतनी नाइंसाफी पिता ने की। इतना कहर वो मेरे अरमानों पर अपनी मौत से पहले बरपा के गये। तब हमारी शादी को अभी थोड़ा ही अरसा हुआ था और तब मैं हर घड़ी, हर पल रुतबे, रसूख और हैसियत के सपने देखती थी। उस दौलत के सपने देखती थी जिसका मेरे पति की झोली में आ पड़ना महज वक्त की बात थी। लेकिन क्या मिला? झुनझुना! क्या हुआ? तमाम सपने एक ही झटके में चकनाचूर हुए। वो बद्बख्त, नामुराद बूढ़ा अपने विरसे से शेखर को–अपने बड़े बेटे को, स्वाभाविक उत्तराधिकारी को–मुकम्मल तौर से बेदखल करके मरा। और मेरी निगाह में मेरा वो उतना बड़ा गुनहगार नहीं था जितना कि शशांक था–लालची, शरारती, तिगड़मी शशांक था–जिसने ईश्वर जाने कैसे उस इतने बड़ी जुल्म की, कहर की, दगाबाजी की बुनियाद खड़ी की थी।''

''मैंने कुछ नहीं किया था।''–शशांक बोला।

''शट युअर माउथ!''–वो शशांक से यूं मुखातिब हुई जैसे अलफाज उसके मुंह पर थूक रही हो–''शट युअर फिल्दी माउथ, यू डर्टी, स्कीमिंग बैकबाइटिंग सन आफ ए बिच! तुम्हीं ने अपने भाई के खिलाफ अपने बाप के मन में जहर भरा, उसके कमजोर, लाचार, कोई फैसला करने की कूवत खोते, मरते दिमाग में ये बात बिठाई कि शेखर बिजनेस सम्भालने के कतई नाकाबिल था, शेखर तो खुद अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो सकता था, बिजनेस को कैसे खड़ा कर सकता था! तुमने बुढ़ऊ की क्षीण होती अक्ल पर पर्दा डाला, तुमने ऐसे हालात पैदा किये कि वो किसी कमजोर विवेकहीन घड़ी में अपना सब कुछ तुम्हारे–सिर्फ तुम्हारे–नाम लिख गया। बूढ़ा मर के निजात पा गया, तुम मेरी पहुंच से बाहर थे इसलिये मेरी बेबसी का गुस्सा, मेरे आक्रोश का लावा शेखर पर फूटा जो किसी गैर के किये नहीं, खुद अपने बाप के हाथों उल्लू बना, जिस ईडियट को अर्श पर होना था उसे पता ही न लगा कब फर्श पर आ गया। वो दिन था और



Scanned by CamScanner

आज का दिन है, मेरे मन में तिरस्कार के अलावा शेखर के लिये कुछ न पनप सका। अपने सपनों के संसार के धूलिधूसरित हो जाने का जिम्मेदार हमेशा मैंने शेखर को ठहराया।''

वो खामोश हुई और उत्तेजना से अव्यवस्थित हुई अपनी सांसों को व्यवस्थित करने लगी। कुछ क्षण खामोशी बरकरार रही।

''कैसी विडम्बना थी''–फिर हेमा ने खामोशी भंग की–''जो हर घड़ी, हर पहर मेरा मुंह चिड़ाती थी! कैसी विसंगति थी जिसे आठ आठ आंसू रोते दिन रात मुझे झेलना पड़ता था! मैं मार्बल आर्क की तरफ रुख करती थी तो मेरी आंखों से खून टपकता था। छोटा भाई बाप की दौलत को, बाप के बिजनेस को, बाप की स्थापित की गुडविल को कब्जाये राजा बना बैठा था। और बड़ा भाई–मेरा खसम, दाल रोटी की दौड़ में शरीक मेरा सुहाग–रंक था, सुदामा था, बेहैसियत लायब्रेरियन था, रिजक की दौड़ में तिल तिल करके सर्फ हो जाना जिसका नसीब था, जो अपनी निकम्मी, वाहियात नौकरी के सदके ताजिन्दगी अपनी कोई औकात नहीं बना सकता था। मेरा मुजरिम उसका बद्अक्ल, बद्बख्त बाप नहीं था, उसका खुदगर्ज भाई नहीं था, वो खुद था। सालों मेरे भीतर नफरत का लावा उबलता रहा लेकिन मैंने किसी पलटवार के बारे में कभी न सोचा, आखिरकार सोचा तो तब सोचा जब पिछले महीने मुझे खबर लगी कि मेरे देवर की काटनकिंग स्वराज पुंज की बेटी शिवांगी से मंगनी हो गयी थी और जल्दी ही शादी होने वाली थी। तब जैसे एकाएक मैं सोते से जागी, मेरे अन्दर से आवाज उठी कि अब कुछ कर गुजरने का वक्त आ गया था नतीजतन मैंने वो...वो कदम उठाये।''

वो फिर खामोश हुई।

उस दौरान अनुराग मन्त्रमुग्ध सा सोचने लगा कि जो लड़की जोरबाग रोड पर हुए पहले कत्ल के फौरन बार मोड़ पर उससे टकराने से बाल बाल बची थी, क्या वाकेई वो हेमा थी! जॉन पाब्लो के कत्ल के बाद जो लड़की उसे फुटपाथ पर अपने से आगे चलती दिखाई दी थी, जिसे उसने रोमिला जौली समझ लिया था, वो भी क्या वाकेई हेमा थी!

कैसे हो सकता था?

क्यों दोनों मर्तबा उसके इतने करीब होने के बावजूद उसने हेमा को पहचाना नहीं था...और दूसरी बार तो एक गलत लड़की के तौर पर बाकायदा शिनाख्त की थी!



Scanned by CamScanner

लेकिन अब उसका चिकोटी काटी जाने पर बिना घूमे भाग खड़ी होना समझ में आता था! क्योंकि जानती थी कि घूमती तो यकीनी तौर पर पहचान ली जाती। रोमिला जौली का उस वक्त का व्यवहार अजीब और हैरान कर देने वाला था, क्योंकि वो रोमिला जौली थी ही नहीं। उसने न सिर्फ शिनाख्त गलत की थी, अपनी शिनाख्त पर जिद करके, अड़े रह कर, और बड़ी हिमाकत की थी।

कितनी बड़ी एक्ट्रेस थी हेमा कि वो दोनों मर्तबा उससे जरा ही पहले घर पहुंची थी फिर भी उसे वैसी ही शान्त और खुशमिजाज लगी थी जैसी घर में हमेशा होती थी।

अब उसे ये भी याद आया कि इस बात की तरफ इशारा करने वाली–खास जोर देने वाली–भी हेमा ही थी कि जो पहली लड़की उससे टकराई थी, वो एकता शुक्ला हो सकती थी, उसका बयान किया हुलिया उसी पर फिट बैठता था, उसी के बाल भूरे थे, वही महरून कलर का चमड़े का कोट पहनती थी वगैरह।

तौबा!–वो मन ही बोला–ऐसे ही औरत को जन्मजात अभिनेत्री नहीं कहा गया था।

"देवर जी"–हेमा फिर बोली–"तुम्हारी मंगनी की खबर ने ही मुझे कुछ कर गुजरने को प्रेरित किया था। तभी मैंने तुम्हें जान से मार डालने का निर्णय लिया था।"

"हेमा!"–शेखर डपट कर बोला।

"क्या हेमा! मैं जानती हूं मैं क्या कह रही हूं और जो मैं कह रही हूं, वो मैं कहना चाहती हूं। इसलिये खामोशी से सुनो। जैसे मिस्टर आगाशे सुन रहे हैं। जैसे ये पुलिस ऑफिसर सुन रहा है। जो ये साहबान मेरे बिना कहे भी जानते हैं, उसे दोहराने से क्या फर्क पड़ता है अब! इसलिये सुनो। समझो, क्यों मैंने तुम्हारे भाई को मार डालने का निर्णय लिया! क्यों मैंने वक्त रहते वो कदम उठाने का दृढ़ निश्चय किया जो मेरी ही नहीं, तुम्हारी भी जून संवार सकता था! ये शादी कर लेता तो आगे अपने वक्त पर औलाद की सूरत में अपना वारिस खड़ा कर लेता। बेऔलाद और गैरशादीशुदा मरता तो इसके इकलौते और स्वाभाविक वारिस तुम होते। इसके शादी कर लेने का सीधा मतलब था कि दौलत और हैसियत वाला बनने की तुम्हारी कोई उम्मीद बाकी न रह जाती।"

"भरजाई, सच बोलो।"–शशांक बोला–"ये कहो कि *तुम्हारी* कोई उम्मीद बाकी न रह जाती। भ्राजी संतोषी जीव हैं, वो जैसे हैं, वैसे



Scanned by CamScanner

रही है। आग तो तुम्हारी उम्मीदों की, तुम्हारी महत्त्वाकांक्षाओं की भड़क रही थी। धनदीवानी तुम हो।''

''मुझे इस इलजाम से कोई इनकार नहीं। हर औरत होती है। इसीलिये तो मैंने तुम्हारे भाई से शादी की थी।''

''जो ख्वाहिश तब पूरी न हुई, वो अब करतीं?''

''हां। तुम्हारा कत्ल करके। इस तरीके से तुम्हारा कत्ल करके कि ये काम किसी ऐसे अनजान, गुमनाम सिरफिरे का जान पड़ता, जिसकी कभी कोई शिनाख्त न हो पाती। कोई ऐसा होमीसिडल मैनियाक जो नाहक कत्ल करता था, जो अपना शिकार चुनने तक की जहमत नहीं करता था, जो किसी पर भी वार कर सकता था, बस, उसकी मौज आने की बात थी।''

''वैरी गुड!''

''थैंक्यू।''–हेमा ने यूं बधाई स्वीकार की जैसे उसके सम्मान में सभा हो रही हो–''मैं जानती थी कि देवर जी को अपना इकलौता शिकार बनाना मेरे लिये खतरनाक–बल्कि घातक–साबित हो सकता था। शशांक की मौत कई रहस्यमयी और अर्थहीन मौतों में से एक होनी चाहिये थी–तभी ये किसी सिरफिरे का काम जान पड़ता–और तुम्हारा इस ढंग से मरना जरूरी था कि मेरी तरफ किसी तरह की कोई शक की उंगली न उठ पाती। अपनी इस योजना के तहत अपना पहला शिकार मैंने परमीत मेहरा को चुना। मैं उसकी रिप्यूट से वाकिफ थी, उसकी उन वाहियात हरकतों से वाकिफ थी जो वो इलाके की तनहा लड़कियों के साथ करता था, यानी कि वो एक घटिया, जलील, रोड रोमियो था, लड़कियों की फिराक में भटकना जिसका रेगुलर शगल था। मेरी निगाह में ऐसे मोरी के कीड़े को कुचल देने में कोई हर्ज नहीं था। इलाके में शिकार की टोह में भटकता वो मुझे अक्सर दिखाई देता था। लिहाजा एक शाम जब मेरा पति घर में टेलीविजन देख रहा था–देख क्या रहा था, टेलीविजन के सामने बैठा ऊंघ रहा था–और श्रेया भी घर से बाहर थी, क्योंकि उसका हैबीटैट में अनुराग के साथ पिक्चर का प्रोग्राम था, मैंने परमीत मेहरा को फोन किया।''

''नम्बर मालूम था।''–बहल ने पूछा।

''वैस्ट निजामुद्दीन के जिस गैस्ट हाउस में वो रहता था, उसकी मुझे खबर थी। आगे गैस्ट हाउस–मिसेज सीरोज–का नम्बर मालूम कर लेना क्या मुश्किल काम था!''



Scanned by CamScanner

"ठीक।"

"मैंने उसे फोन किया और कहा 'आज शाम अपनी पसन्दीदा गश्त पर निकलो तो सवा सात बजे जोरबाग रोड से गुजरना, ईनाम मिल जायेगा'। मुझे यकीन था कि वो लम्पट, वो औरतखोरा इस बात का मतलब गोली की तरह समझता और यकीनन निर्धारित वक्त पर निर्धारित जगह पर भटकता दिखाई देता। शाम को ऐन यही हुआ। जोरबाग रोड पर मैं उसे दिखाई दी, अपनी स्थापित लारटपकाऊ रूटीन के तौर पर उसने मुझे लिफ्ट ऑफर की, मैंने लिफ्ट कुबूल की और फिर कार में उससे जहरभरी चॉकलेट खाने की मनुहार की और उसे मौत के चुम्बन से नवाजा। यूं एक नये तरीके से एक जुदा किस्म का कत्ल वाकया हुआ। मुझे अपने कारनामे पर अभिमान है।"

"हर कातिल के साथ ऐसा ही होता है, मैडम।"–आगाशे बोला–"अपनी कामयाबी पर, अपनी चतुराई पर फूला नहीं समाता। लेकिन आखिरकार उनका ये मिजाज ही उनका वाटरलू बनता है। पहले से बेहतर तरीके से अपने नापाक कारनामे को अंजाम देने का उनका जुनून ही आखिर उनकी पोल खोलता है।"

"मेरे से क्या गलती हुई?"–हेमा भुनभुनाई–"मेरी कैसे पोल खुली? मेरी होशियारी में, मेरी चतुराई में कोई खोट नहीं थी, कोई प्राब्लम बनी तो सिर्फ ये इकलौती बात बनी कि आप मेरे से ज्यादा चतुर सुजान निकले वर्ना मुझे फांस लेने में आप लोग कामयाब न हुए होते।"

"जॉन पाब्लो की बात कीजिये।"

"वो वो शख्स था जिसे मैंने अपने अगले शिकार के तौर पर चुना था। वो तो परमीत मेहरा से भी ईजी टारगेट था। उसका तो बस मैंने उस खंडहर मकबरे में इन्तजार करना था जिसके इकलौते सलामत कमरे को वो अपना घर बनाये था और गाहे बगाहे जहां वो रात को कोटला मुबारकपुर के बेवड़े के अड्डे से टुन्न होकर लौटता था। नशे के हवाले दीन दुनिया से बेखबर जब वो अपने तख्तपोश पर ढेर हुआ पड़ा था तो मैंने उसके मुंह में जहरभरी चॉकलेट धकेल दी थी और गाल पर लिपस्टिक थोप दी थी ताकि वो भी उसी कातिल हसीना का कारनामा जान पड़ता जिसने कि पहले परमीत मेहरा की वैसे ही जान ली थी। यूं मैंने पुलिस के लिये कातिल हसीना की मिथ खड़ी की जिसके दिमाग में फितूर था, जो नाहक किसी की भी जान ले



Scanned by CamScanner

लेती थी और जिसका कोई अता पता पाना नामुमकिन था। ऐसी किसी लड़की का वजूद होता तो उसका अता पता मिलता न!''

''ठीक!''

''यही मेरी मंशा थी, यही मेरी योजना थी जिस पर अमल करते मैंने शशांक तक पहुंचना था जो कि मेरा अगला शिकार था। मूलरूप से मैंने शशांक का भी वैसे ही मरना निर्धारित किया था जैसे कि पहले परमीत मेहरा और फिर जॉन पाब्लो मरा था। और अभी मेरा इरादा स्कोर चार तक पहुंचाने का भी था ताकि ये बिलकुल ही किसी सिरफिरे का, किसी होमीसिडल मैनियाक का काम जान पड़ता जो नाहक जान लेता था, जो बिना सोचे समझे जो सामने पड़ जाता था, उस पर वार कर देता था। लेकिन हालात ऐसे बन गये कि मुझे अपनी स्ट्रेटेजी चेंज करनी पड़ी। मैंने खता खाई तो इस बात में खाई कि मैंने आपकी काबिलियत को, आपकी जेहनियत को कम करके आंका। मिस्टर आगाशे, पुलिस के साथ आपकी मौजूदगी को मैंने कोई अहमियत नहीं दी थी, मैंने इसे महज इत्तफाक माना था।''

''इत्तफाक ही था।''

''मुझे यकीन नहीं। हर जगह आपकी हाजिरी है। ये इत्तफाक नहीं हो सकता।''

आगाशे खामोश रहा।

''हर काम मैंने''–हेमा पराजित स्वर में बोली–''बारीक से बारीक डिटेल को ध्यान में रख कर किया, अपनी स्कीम की हर नोक पलक पूरी शिद्दत से संवार कर किया। पहले कत्ल के सिलसिले में शक की सुई एकता शुक्ला की तरफ फेरने के तहत मैंने ऐन उसके जैसा महरून कलर का चमड़े का कोट मुहैया किया, कैप मुहैया की, ऐन उस जैसे हेयर स्टाइल वाले हल्के भूरे बालों वाले विग का इन्तजाम किया और इन चीजों से लैस होकर ही अपने पहले शिकार परमीत मेहरा के रूबरू हुई। कत्ल के बाद बदकिस्मती से मोड़ पर मैं अनुराग से टकराने से बाल बाल बची लेकिन गनीमत हुई, इसने मुझे न पहचाना–मुझे कोई और ही, एकता शुक्ला, समझा–और मैं इससे पहले घर पहुंचने में कामयाब हो गयी। बाद में वो ही कोट बमय कैप मैंने पार्क में सूखी पत्तियों के ढेर के नीचे छुपा दिया...''

''विग का क्या किया?''–बहल ने पूछा।

''जाहिर है पास तो न रखे रखा।''



Scanned by CamScanner

"क्या किया?"

"जला दिया। दिनभर घर में अकेली होती हूं, क्या प्राब्लम थी! किचन में जलाया और राख सिंक में बहा दी। ईजी।"

"कोट की बात आगे बढ़ाइये।"

"कोट मैंने जहां छुपाया था, वहां से पार्क में खेलते बच्चों ने उसे बरामद किया और, जैसा कि मैं चाहती थी, समझा गया कि वो हरकत एकता शुक्ला की थी जिसका कि वो ट्रेडमार्क था, जिसकी कि वो इलाके में स्थापित शिनाख्त थी और जो उस कोट, कैप से पीछा छुड़ाना चाहती थी।"

"उसकी लिपस्टिक के बाबत कैसे जाना? कैसे जाना कि लोरियल ब्रांड चेरी रैड उसका फेवरेट शेड था?"

"क्यों? थोबड़े पर थुपा दिखाई नहीं देता था?"

"यूं शेड पहचाना जा सकता है, उसका ब्रांड तो..."

"चेरी रैड सिर्फ लोरियल ब्रांड में उपलब्ध है।"

"ऐसा भी होता है?"

"होता है।"

"आप कहती हैं तो होता होगा लेकिन..."

"मैं कहती हूं।"

"ओके। आगे?"

"आगे रोमिला जौली..."

वो ठिठकी, अनुराग की तरफ घूमी, उसने अपलक अनुराग की तरफ देखा।

"क्या है?"–अनुराग नर्वस भाव से बोला।

उसने अपने कूल्हे को छुआ, हौले से मसला।

अनुराग सकपकाया।

"बोल दिया चिकोटी बांह पर काटी...ये सोच के बोल दिया कि किसी को कुछ पता तो लगना नहीं था, कोई रोमिला जौली से इस बाबत कुछ पूछने तो जाने वाला नहीं था।"

"हेमा जी, वो बात नहीं थी। मैंने तो..."

"मजाक में चिकोटी काटी"–वो मीठे स्वर में बोली–"तो ये हाल किया कि अभी तक दुखता है, सीरियसली काटते तो क्या करते? बोटी नोच लेते?"

अनुराग पानी पानी हो गया।

"वो...वो..."–वो हकलाया–"वो क्या है कि..."



Scanned by CamScanner

"रिलैक्स। रिलैक्स। मुझे मालूम है क्या है!"

अब अनुराग को कतई कोई शक न रहा कि जो कुछ भी वो कह रही थी, ऐन सच कह रही थी।

"रोमिला जौली जैसा सफेद मैकिंटोश"–हेमा का लहजा फिर संजीदा हुआ–"मुहैया करने में मुझे थोड़ी दिक्कत पेश आयी–क्योंकि फारेन आइटम थी–लेकिन आखिरकार मैं उस काम में भी कामयाब हुई। नाकामी का कोई मतलब ही नहीं था। मेरी सूझबूझ ने हर किसी को–खासतौर से पुलिस को–छकाया लेकिन मुझे खेद है कि मिस्टर आगाशे, आपके आलादिमाग के आगे मेरी पेश न चली।"

"पुलिस को तो बराबर छकाया।"–बहल धीरे से बोला–"हम मिस्टर आगाशे की कद्र करते हैं, इनके तजुर्बे और आला सूझबूझ की कद्र करते हैं, क्रिमिनालोजी की इनकी स्पैशलिटी की कद्र है लेकिन इनकी शान में गुस्ताखी की माफी के साथ अर्ज है कि हमें–दिल्ली पुलिस को–इनकी कोई मोहताजी नहीं है।"

"आई नो।"–आगाशे सहमति में सिर हिलाता बोला।

"आगाशे साहब की अपनी रिहायश इसी इलाके में न होती तो ये केस में वो फौरी दिलचस्पी न ले पाये होते जो कि इन्होंने ली।"

"यू आर राइट, माई डियर।"

"कत्ल तब भी होते थे, कातिल तब भी पकड़े जाते थे, जबकि आगाशे साहब दिल्ली में नहीं पाये जाते थे और ये सब तब भी होगा जब ये दिल्ली छोड़ जायेंगे।"

"दुनिया।"

"कहने का मतलब है पुलिस एक व्यापक आर्गेनाइजेशन है जिसने अपना काम हर हाल में करना है। मौजूदा केस में भी हमने अपने काम को, अपने फर्ज को, अपनी ड्यूटी को ये सोच के नजरअन्दाज नहीं कर दिया था कि मिस्टर आगाशे ही सब सैट कर देंगे। कातिल तक पहुंचने की हमारी अपनी कोशिशों को केस में मिस्टर आगाशे की हाजिरी से कोई अंकुश नहीं लग गया था। हम अपने तरीके से केस के हल की तरफ बढ़ रहे थे अलबत्ता, जैसा कि अब जाहिर है, जो कैन्डीडेट बतौर कातिल हमने चुना था, वो गलत था।"

"किसे चुना था?"–अनुराग उत्सुक भाव से बोला।

"आपकी मंगेतर को।"

"ओह, नो!"



Scanned by CamScanner

"ये बात हमारी जानकारी में थी कि श्रेया ने आपको हैबीटैट में मिलना था लेकिन मिली नहीं थी। उसका वहां लम्बा इन्तजार करने के बाद आप यहां लौटे थे तो तभी ये भी यहां लौटी थी। बच्चे के एक्सीडेंट वाली इसकी स्टोरी स्थापित नहीं थी। लिहाजा पहले कत्ल के वक्त के आसपास ये कहां थी, इसकी किसी को कोई खबर नहीं थी। इसके बाल भूरे हैं और फैशनेबल ढंग से कटे हुए हैं। इसका कदकाठ मोटे तौर पर कातिला से, जो कि आप कहते हैं कि आपसे टकराने से बाल बाल बची थी, मिलता है। कहने का मतलब ये है कि शुरुआती दौर में इस पर शक करके हम नहीं समझते कि हमने कोई गलती की थी।"

"की न!"

"अब मालूम है। तब नहीं मालूम था।"

"एस.आई. साहब"–शेखर वार्तालाप में दखलअन्दाज हुआ–"आपने, आपकी पुलिस ने, कुछ किया तो ये किया कि मेरे एक फैमिली मेम्बर का पीछा छोड़ा तो दूसरे का थाम लिया!"

"क्या गलत किया? मैडम के इकबालिया बयान की रू में बताइये क्या गलत किया?"

"फिर भी..."

"क्या फिर भी? क्या एतराज है आपका? किस बात पर एतराज है आपका? या आप महज जिम्मेदार पति बन कर दिखाने की कोशिश कर रहे हैं?"

"जो कि ये"–हेमा के स्वर में व्यंग्य का पुट आ गया–"तमाम जिन्दगी न बन सके।"

शेखर ने जोर से थूक निगली।

"दिल्ली के आधे मैरीड कपल्स की आपस में नहीं बनती"–फिर हिम्मत करके बोला–"लेकिन पति पत्नी वो फिर भी रहते हैं, एक छत के नीचे वो फिर भी रहते हैं।"

"हमारे पर अब ये बात लागू नहीं। हम रहते थे। अब मेरा मुकाम कहीं और है।"

शेखर ने बेचैनी से पहलू बदला।

"अब अगर प्राणनाथ इजाजत दें तो मैं अपनी बात मुकम्मल करूं?"

शेखर ने मुंह खोला, बन्द किया, फिर परे देखने लगा।

"अब सुनिये, जान लेने का अपना जहर वाला तरीका मैंने तीसरी



Scanned by CamScanner

कर क्यों न इस्तेमाल किया। मैंने उसे शशांक पर इसलिये न आजमाया क्योंकि जरूरी नहीं था, क्योंकि उससे कहीं उम्दा तरीका मेरे सामने था।"–वो एक क्षण ठिठकी और फिर बोली–"या यूं कहिये कि तब मैंने ऐसा समझा कि वो उम्दा तरीका था। लेकिन अब जाहिर है कि मैंने अल्दबाजी से काम लिया। मैं न समझ सकी कि जिन हालात को मैं अपने लिये रेडीमेड मान रही थी वो ही आगे चल कर मेरे लिये फन्दा बनने वाले थे, मिस्टर आगाशे का फैलाया जाल बनने वाले थे। आज सुबह इसी घर में मैंने शशांक की जो हालत देखी, उसी ने मुझे अपनी पूर्वस्थापित स्ट्रेटेजी को तब्दील करने के लिये उकसाया। एकता शुक्ला को लेकर मीडिया ने इसके लिये जो स्कैण्डल खड़ा किया था, उसने इसे हिलाकर रख दिया था और पस्ती के ऐसे गहरे गर्त में धकेल दिया था कि साफ लगता था कि ये खुद अपनी जान लेने पर आमादा हो सकता था। ये खुदकुशी कर सकता था, ये अन्देशा मेरे पति के जेहन में था, इसकी हाउसकीपर के जेहन में था, यहां तक कि–जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ था–आपके एस.एच.ओ. का भी यही रोशन खयाल था। जब ये कार लेकर घर से निकल पड़ा था और सारा दिन इसकी कोई खोजखबर नहीं लगी थी तो कोई दिल पर हाथ रखकर कहे कि उसे ये अन्देशा नहीं सताता रहा था कि आखिर ये कहीं अपनी दुर्घटनाग्रस्त कार में मरा पड़ा मिलेगा।"

कोई कुछ न बोला।

"मेरा पति और अनुराग जब इस सिलसिले में थाने गये तो पीछे शशांक का यहां फोन आ गया। तब मुझे अहसास हुआ कि कुछ नया ही कर गुजरने का कितना सुनहरा मौका मेरे सामने था! मैंने श्रेया को इन दोनों के पीछे थाने रवाना कर दिया तो पीछे घर में मैं अकेली रह गयी। उस फोन काल की वजह से मैं जानती थी कि आइन्दा दस पन्द्रह मिनट में शशांक अपने घर पहुंच जाने वाला था। कितना अच्छा होता कि खुद इसके हाथों इसकी जान जाती! अपनी डिप्रेशन की हालत के मद्देनजर इसका आत्महत्या कर ली होना कितना स्वाभाविक जान पड़ता! मैंने इसकी आत्महत्या का ड्रामा ही तो स्टेज करना था! मार्बल आर्क पहुंचकर वहां इसका इन्तजार ही तो करना था! यही मैंने किया।"

"गैराज में?"–बहल बोला।

"हां।"



Scanned by CamScanner

"गैराज के मालिक की वहां आमद से पहले भीतर मौजूद रह कर?"

"एस.आई. साहब, मैं तुम्हारी बात समझ रही हूं। तुम्हारे जेहन में एक नहीं, दो शंकायें हैं जिनका समाधान तुम्हें चाहिये। नहीं?"

"हां।"

"तुम जानना चाहते हो मुझे कैसे मालूम था कि शशांक ने गैराज में लौटना था और जब नये तरीके से कत्ल की योजना मैंने खड़े पैर तैयार की थी तो मेरे पास गैराज का आटोमैटिक डोर खोलने के लिये रिमोट पहले से क्योंकर उपलब्ध था! ठीक?"

"ठीक। मैडम, मैं आपकी दानाई और दूरअन्देशी की दाद देता हूं।"

"मैं, विद थैंक्स, कुबूल करती हूं। एस.आई. साहब, पहले सवाल का जवाब आसान है, दूसरे के लिये मुझे एक ब्रीफ साइड स्टोरी में जाना पड़ेगा। पहले सवाल का जवाब ये है कि मुझे मालूम था कि शशांक अपनी कार खुद चलाता घर से निकला था–मेरे पति को, जो कि भाई की खबर लेने मार्बल आर्क गया था, ये बात हाउसकीपर कारमला ने बतायी थी और शेखर ने घर लौटकर सबको बताई थी–ये शशांक की स्थापित रूटीन है कि जब कभी भी ये अपने ड्राइवर की सेवाओं से परहेज करता है तो कार खुद चलाता गैराज के साइड डोर से ही रुखसत होता है और उधर से ही लौटता है क्योंकि गैराज से ही सीधे इसके बैडरूम में चले जाने की सुविधा उपलब्ध है।"

"इसलिये आप गैराज में पहले जा छुपीं क्योंकि आपको मालूम था इन्होंने कार के साथ वहीं लौटना था?"

"हां।"

"साइड स्टोरी? रिमोट से ताल्लुक रखती?"

"शशांक को इलीमीनेट करने की अपनी मौजूदा स्कीम को अमल में लाने से पहले भी इसके कत्ल का खयाल मेरे जेहन में बराबर आया था। इसलिये किसी मुनासिब और सेफ मौके की तलाश में कुछ अरसा मैंने इसकी मूवमेंट्स की निगाहबीनी की थी। तब मुझे मालूम हुआ था कि गैराज से बैडरूम तक के खुफिया रूट को ये एकता शुक्ला को वहां ले जाने के लिये भी इस्तेमाल करता था। मेरी पहली स्कीम, जिस पर अमल करने का खयाल मैंने लगभग फौरन ही छोड़ दिया था, ये थी कि मैं इस पर वाच रखती और जब कभी



Scanned by CamScanner

थे एकता शुक्ला के साथ अपने बैडरूम में मौजूद होता तो मैं चुपचाप वहां पहुंचती और दोनों को शूट कर देती।''

''तौबा!''

''तफ्तीश पर ये काम किसी जैलस लवर का, एकता के किसी दूसरे, हसद के मारे, प्रेमी का जान पड़ता। बैडरूम तक अप्रोच बनाने के लिये मैंने गैराज के दरवाजे का रिमोट तो बड़ी आसानी से हासिल कर लिया, गन भी जैसे तैसे हासिल कर ही लेती लेकिन तब तक मुझे अपनी स्कीम ही वाहियात और बचकानी लगने लगी। गन मैंने कभी चलाई नहीं थी इसलिये ऐन वक्त पर कामयाबी से उसका इस्तेमाल सन्दिग्ध था। गैराज को कोठी से जोड़ने वाला दरवाजा कोठी की तरफ से बन्द हो सकता था। शशांक के बैडरूम के भीतर अप्रोच बनाना मुश्किल खड़ी कर सकता था। कोई मुझे कोठी में दाखिल होता या निकलता देख सकता था। और भी कई शंकायें थीं, कई फच्चर थे जिन्होंने मुझे उस स्कीम से किनारा कर लेने के लिये प्रेरित किया। वो किनारा मैंने इसलिये भी कर लिया क्योंकि तब तक मुझे वो स्कीम सूझ गयी जिस पर कि मैंने इतनी नफासत से अमल किया।''

''रिमोट इसलिये आपके पास था?''

''हां।''

''न होता तो?''

''तो क्या पता क्या होता? जो काम हुआ नहीं, उसकी बाबत क्या बोलूं?''

''जो हुआ''–शशांक बोला–''उसकी बाबत बोलो!''

''क्या? क्या बोलूं?''

''कैसे...कैसे तुमने शशांक को अपने सोचे, अपने रचे, नापाक ड्रामे का अहम किरदार बनने के लिये मजबूर किया? जब तुम कार के एग्जास्ट के साथ पाइप का एक सिरा जोड़ कर दूसरे सिरे को बन्द कार में सरकाकर इंजन स्टार्ट कर रहीं थीं, तब कैसे ये खामोश तमाशाई बना रहा?''

''इसी से पूछो।''

शेखर ने भाई की तरफ देखा।

''इसके पास कोई स्प्रे था''–शशांक बोला–''जो इसने मेरी नाक के नीचे एकाएक छिड़क दिया था। वो स्प्रे क्या था, मैं नहीं जानता लेकिन उसको सूंघने से उसका असर मेरे पर ये हुआ था कि मैं बेहोश



Scanned by CamScanner

हो गया था। आगे इसने जो कुछ किया था, मेरी बेहोशी के दौर में किया था।''

''सब कुछ करने में पांच या छः मिनट लगे थे।''–हेमा बोली–''इसे कार में मरता छोड़कर मैं यहां वापिस लौट आयी थी और किसी को कोई खबर नहीं लगी थी कि बीच का कोई अरसा मैं घर से गैरहाजिर रही थी। लेकिन''–उसने आहभरी–''खामखयाली थी वो मेरी।''

''यू आर एब्सोल्यूटली राइट, मैडम।''–आगाशे बोला–''आपकी मार्बल आर्क की आवाजाही की हर घड़ी पर पुलिस की निगाह थी।''

''मेरी बद्किस्मती, जिसके रचयिता आप हैं, वर्ना खुदकुशी का ड्रामा पूरी कामयाबी से स्टेज करने में मैंने कोई कसर नहीं छोड़ी थी। देवर जी का काम हो जाता, इनकी खुदकुशी स्थापित हो जाती तो इनका नेचुरल वारिस मेरा पति होता, साहनी बिल्डर्स के तमाम कारोबार का मालिक शेखर साहनी होता। यूं मेरा मिशन कामयाब होता। दौलत का बेपनाह सुख पाने की मेरी मुराद पूरी होती। पुलिस कभी केस हल न कर पाती और आखिरकार उसे ठण्डे बस्ते में डालने के लिये मजबूर हो जाती। मेरे पर किसी तरह का कोई शक होने का कोई मतलब ही न होता। फिर एक दिन मैं मार्बल आर्क में रह रही होती। दौलत, रुतबा, रसूख, सुख सुविधा, ऐश्वर्य, नौकर चाकर, सब मुझे हासिल होता। लेकिन मक्खी पड़ गयी। मेरी पकी पकाई खीर में नाहक मक्खी पड़ गयी। खुश होकर दिखाईये न, जनाब! मेरी बद्किस्मती पर अट्टहास लगाइये, मिस्टर आगाशे। मेरी हार पर मेरी खिल्ली उड़ाइये और अपनी जीत का जश्न मनाइये।''

उसका गला रुंध गया।

''तुम''–शेखर बोला–''तुम कातिल हो!''

''अब क्या लिखकर दूं?''

''मैं अपनी बीवी को जानता था। लेकिन तुम्हें तो मैं बिलकुल नहीं जानता। तुम तो कोई अजनबी हो। तुम्हारे पर निगाह डालने से मेरा दिल हिलता है। जैसे मिस्टर आगाशे तुम्हें समझ सके, वैसे मैं क्यों न समझ सका? जैसे मिस्टर आगाशे तुम्हारे भीतर झांक सके, वैसे कभी मैं क्यों न झांक सका? कौन हो तुम?''

''पूछो कौन नहीं हूं मैं! मैं तुम्हारी बीवी नहीं हूं। बहुत जल्दी तुम अपना नया घर संसार बसाने के लिये आजाद होगे। मेरी रिप्लेसमेंट



Scanned by CamScanner

तो ताड़ी ही हुई होगी? कौन है वो खुशनसीब? सुरभि परमार ही होगी! वही है न?''

''खबरदार, जो...''

''क्या खबरदार! तुम समझते हो मैं कुछ नहीं जानती! अन्धी हूं! बहरी हूं! वो लड़की तुम्हारे पर जान छिड़कती है। जब तुम्हारी तरफ देखती है, आंखों में दिल रखकर देखती है। प्राणनाथ, मैं तुम पर बेवफाई का इलजाम नहीं लगा रही हूं। इतने हौसलामंद कहां हो तुम कि ऐसा कोई कदम उठा सको! होते तो बात ही क्या थी! तुम्हें तो पता भी नहीं होगा कि किस कदर वो लड़की तुम पर फिदा है। शादी कर लेना उससे। खुश रहोगे। जो खुशी तुम्हें कभी हासिल न हुई वो अब हासिल कर लोगे। बधाई।''

शेखर अपनी बीवी का मुंह पकड़ने की या उससे निगाह मिलाने की ताब न ला सका।

''मुझे''–फिर बड़ी मुश्किल से कह पाया–''तुमसे हमदर्दी है।''

''उंह! और है क्या तुम्हारे पास हमदर्दी के अलावा! नंगा नंगे को क्या देगा!''

शेखर के मुंह से बोल न फूटा।

कुछ क्षण खामोशी रही।

''आप''–फिर बहल बोला–''और कुछ कहना चाहती हैं?''

''नहीं।''

''तो चलें?''

''जरूर। चलिये, जहां लेकर चलना है मुझे। बस, सिर्फ कपड़े तब्दील कर लेने का मौका दीजिये।''

''ठीक है।''

''नहीं ठीक है।''–आगाशे जल्दी से बोला।

बहल सकपकाया।

''जो कपड़े आप पहने हैं, उनमें कोई खराबी नहीं। ऐसे ही चलिये।''

''ओके! ओके! लेकिन अभी मेरा मीडिया से आमना सामना होगा। मैं थोड़ी लिपस्टिक लगा लूं, जरा बाल संवार लूं''–वो हाथ में थमा अपना पर्स खोलने लगी–''इससे तो आपको कोई एतराज नहीं होगा!''

''नो!''

आगाशे ने आगे बढ़कर उसके हाथ से पर्स झपट लिया।



Scanned by CamScanner

वो हंसी।

आगाशे पर्स को खोल कर भीतर का सामान टटोलने लगा।

"नहीं मिलने का।"–वो बोली।

"क्या?"

"जो आप ढूंढ रहे हैं।"

"क्या ढूंढ रहा हूं मैं?"

"आप जहरभरा कैप्सूल ढूंढ रहे हैं, क्योंकि आपको अन्देशा है अपने अंजाम से बचने के लिये कहीं मैं खुदकुशी न कर लूं। कैप्सूल नहीं है।"

"होना तो चाहिये। मिस्टर शशांक साहनी की खुदकुशी का ड्रामा स्टेज करने का आइडिया आपको खड़े पैर आया था। ऐसा न हुआ होता तो आप अपनी स्थापित कार्यप्रणाली पर अमल करतीं। आप मिस्टर शशांक साहनी को भी जहरभरी चॉकलेट से ही नवाजतीं। इस लिहाज से कम से कम एक कैप्सूल और अभी आपके पास होना चाहिये।"

"काफी समझदार हैं।"

"कैप्सूल पर्स में नहीं है।"

"पर्स वापिस कीजिये।"

"मैडम, आप बहुत खूबसूरत हैं। लिपस्टिक आपकी खूबसूरती में कोई इजाफा नहीं करने वाली।"

"श्योर?"

"यस।"

"मैं आपकी गुणग्राहकता के आगे, आपके सुपीरियर जजमेंट के आगे नतमस्तक हूं, मैं लिपस्टिक का खयाल छोड़ती हूं।"

"थैंक्यू।"

"और बालों का क्या है, वो तो उंगलियों से ही संवर जाते हैं।"

उसने अपने बालों में कंघी की तरह दायें हाथ की उंगलियां सिर्फ एक बार फिराईं, फिर उसका हाथ उसके होंठों से जाकर लगा। केवल एक क्षण के लिये, पलक झपकने जितने वक्फे के लिये, कैप्सूल उसके दान्तों में दबा दिखाई दिया, फिर तत्काल दान्तों के बीच आकर उसके टूटने की आवाज हुई।

"मैं ही मुलजिम हूं, मैं ही मुंसिफ हूं"–वो क्षीण स्वर में बोली–"कोई सूरत नहीं रिहाई की।"

अगले ही क्षण वो फर्श पर गिरी पड़ी तड़प रही थी।

फिर सब खत्म।



Scanned by CamScanner

ड्राइंगरूम में मुकम्मल सन्नाटा था।

प्रेया अनुराग की बांह के घेरे में थी और उसके कन्धे से लगी सुबक रही थी। शेखर एक कुर्सी पर ढेर था और अपना माथा हाथ में थामे था।

शशांक खिड़की के पास चौखट का सहारा लिये खड़ा था।

फर्श पर से सैन्टर टेबल हटाकर एक ओर कर दी गयी थी और वहां कार्पेट पर पड़ी हेमा की लाश को एक कम्बल से ढंक दिया गया था। अब वहां एम्बुलेंस और थाने से एस.एच.ओ. की आमद का इन्तजार हो रहा था।

"बालों में था!"–सब-इन्स्पेक्टर बहल दबे स्वर में बोला–"आरसेनिक का कैप्सूल बालों में छुपाये थी!"

"हां।"–आगाशे गहरी सांस लेता बोला–"मुझे सख्त अफसोस है ये बात मुझे देर से सूझी कि इसके पास एक कैप्सूल और होना चाहिये था। सूझी तो स्वाभाविक तौर पर पर्स का खयाल आया।"

"ठीक ही आया, जनाब। बालों का खयाल किसे आता!"

"वाट ए वूमेन! जैसा आसान उसके लिये जान लेना था, वैसा ही आसान जान देना निकला, अपने को खुद सजा देना निकला। जज भी खुद, जल्लाद भी खुद। वाह!"

"सब दौलत के लिये किया!"

"हां। और आखिर में सुपर क्लाइमैक्स के तौर पर जो किया, गिरफ्तारी की फजीहत से बचने के लिये किया। सजा से बचने के लिये किया। दो मर्डर, एक नियर मर्डर, फांसी तो न होती क्योंकि हमारे मुल्क में औरत को फांसी देने से परहेज किया जाता है, उम्रकैद कोई बड़ी बात नहीं कि उम्र के साथ ही खत्म होती।"

"इसलिये अपनी मर्जी का, अपनी पसन्द का, अपना इंसाफ खुद किया?"

"हां।"

"हर अंजाम के लिये तैयार थी!"

"हमेशा! हर वक्त! वाट ए वूमेन!"

"दीवानी!"–परे बैठा शेखर सिर उठाते बोला–"जो कुछ किया किसी दीवानगी के हवाले होकर किया। जिन्दगी खोई! पाया कुछ भी नहीं!"

"टु ईच हिज ओन!"



Scanned by CamScanner

"अभी भी बहुत बातें क्लियर नहीं हैं।"

"हो जायेंगी। अब क्या जल्दी है? अब तो वक्त ही वक्त है।"

"मुझे तो"–श्रेया कांपती आवाज में बोली–"अभी भी यकीन नहीं आ रहा कि सब...आंटी ने किया।"

"किया। और अपनी तरफ से अपनी जान देकर खामियाजा भुगता।"

"आपके और सुरभि परमार के बारे में जो कहा, सच कहा?"

"उस बारे में हम फिर बात करेंगे।"

"फिर भी?"

"हेमा जैसी भी थी मेरी बीवी थी, सात फेरे लेकर बनी मेरी अर्धांगिनी थी, उसके होते किसी परस्त्री के बारे में सोचना अधर्म था। उसके होते बोला मैंने।"

"आई थिंक आई अन्डरस्टैण्ड, अंकल।"

तभी बाहर एम्बूलेंस पहुंचने की आवाज आयी।

❑❑❑

बुधवार शाम को सूरज छुपने के बाद आगाशे शेखर साहनी के आवास पर पहुंचा जहां उसने श्रेया और अनुराग को भी मौजूद पाया।

वो जानता था कि पोस्टमार्टम वगैरह की औपचारिकता के अलावा उसी रोज सुबह लाश की सुपुर्दगी हुई थी और दोपरहबाद उसका अन्तिम संस्कार हुआ था।

"आइये।"–शेखर बोला–"मैं आपको याद ही कर रहा था।"

"अच्छा!"–आगाशे बोला।

"जी हां। विराजिये।"

"वजह?"

"आपको मालूम ही है।"

"क्योंकि समझते हैं कि बहुत सी बातें क्लियर नहीं हैं?"

"जी हां।"

"मसलन बताइये कोई ऐसी बात?"

"एक तो जहर की बाबत ही है। आरसेनिक जैसा घातक जहर हेमा को कहां से मुहैया हुआ होगा?"

"अन्दाजा तो आपको होना चाहिये! दिमाग पर जोर देते तो जवाब जरूर सूझता।"

"मैं समझा नहीं।"



Scanned by CamScanner

"आपकी बीवी का–भगवान उसकी आत्मा को शान्ति दे–एक अंकल डाक्टर उपेन्द्रनाथ साईंटिस्ट था, ये बात मामूली पड़ताल से मेरी जानकारी में आ गयी तो इसकी आपको भी जानकारी होनी चाहिये।"

"है। क्या कहना चाहते हैं उस बाबत!"

"आपकी बीवी ने, सुना है, एक लम्बा अरसा डाक्टर उपेन्द्रनाथ की रिसर्च लैब में बतौर लैबोरेट्री असिटेंट काम किया था..."

"ये तो"–अनुराग बोला–"मुझे भी मालूम है।"

"आप आगे बढ़िये।"–शेखर उतावले स्वर में बोला।

"रिसर्च लैब्स में"–आगाशे बोला–"आरसेनिक का बतौर कैमीकल इस्तेमाल होता है। इसलिये आपकी बीवी की–उस लैब की असिस्टेंट की–सहज ही उस तक पहुंच थी।"

"ओह!"

"जब भी किसी घातक जहर से कोई कत्ल की वारदात होती है तो उसकी तफ्तीश के दौरान पुलिस का अहमतरीन कदम ये पता लगाना होता है कि वो जहर कहां उपलब्ध था और किसकी उस तक पहुंच मुमकिन थी! इस सन्दर्भ में पुलिस की नजरेइनायत अनुराग पर होना स्वाभाविक था क्योंकि पहले तो वो उसी को प्राइम मर्डर सस्पैक्ट मान बैठी थी। उसकी पड़ताल के सिलसिले में हेमा की अपने अंकल उपेन्द्रनाथ की लैब में नौकरी की बात सामने आयी, लैब की एम्पलाई होने की वजह से जिसकी वहां उपलब्ध आरसेनिक तक पहुंच थी। पहले पुलिस ने अपनी सोच बरकरार रखी थी कि कातिल अनुराग था, उसने हेमा को जाने अनजाने महज जहर तक पहुंच बनाने का जरिया बनाया था, लेकिन जब ये स्थापित हो गया कि कत्ल किसी मर्द का काम था ही नहीं, वो किसी औरत का काम था, तो पुलिस ने कातिला के रोल में हेमा का तसव्वुर करना शुरू कर दिया।"

"सिर्फ इतने से पुलिस ने हेमा को मर्डर सस्पैक्ट मान लिया कि वो एक ऐसी लैब में मुलाजिम रह चुकी थी जहां कि आरसेनिक उपलब्ध था?"

"मान न लिया लेकिन शक की बुनियाद तो बनी, शक के दायरे में तो वो आयी, बतौर मर्डर सस्पैक्ट पुलिस ने उसकी बाबत सोचा तो सही!"

"लेकिन लैब की नौकरी छोड़े तो हेमा को दो साल हो चुके थे!



Scanned by CamScanner

जबकि कत्ल का खयाल तो उसके जेहन में अब, शशांक की भांजी की खबर सुनने के बाद, आया था!''

''आप भूल रहे हैं कि हेमा का एम्पलायर कोई गैर नहीं था, नौकरी छोड़ते ही जिससे उसका नाता टूट गया हो, हेमा का अपना अंकल था जो एम्पलायर रहता या न रहता, अंकल तो फिर भी होता!''

''तो?''

''तो ये कि अगर नौकरी छोड़ चुकने के बाद भी हेमा अंकल से मिलने अंकल की लैब में जाती तो क्या अंकल उसे बाहर खड़ा कर देते?''

''आप ये कहना चाहते हैं कि अपनी ऐसी किसी विजिट के दौरान हेमा ने वहां से जहर सरकाया? आरसेनिक की चोरी की?''

''और कौन सा जरिया था हेमा के पास आरसेनिक हासिल करने का? जिस लैब का वो हिस्सा रह चुकी थी, अपनी किसी विजिट के दौरान उसकी किसी आइटम पर घात लगा लेना उसके लिये क्या बड़ी बात थी? जो औरत इतने बड़े, इतने खतरनाक काम कर पायी, वो एक मामूली चोरी को–वो भी अपने अंकल की लैब में–अंजाम नहीं दे सकती थी?''

''ओह!''

''लेकिन ये इकलौता क्लू था, इस क्लू को बल देने वाली कोई बात पुलिस को उपलब्ध नहीं थी। कातिला के बाल स्टाइलिश, फैशनेबल ढंग से कटे हुए हल्के भूरे रंग के बताये गये थे लेकिन आपकी बीवी के बाल स्याह काले थे। उसको महरून कलर का चमड़े का कोट पहने कभी नहीं देखा गया था और सौ बातों की एक बात, पहले कत्ल के बाद, लाश से दो चार होने के बाद, अनुराग जब यहां पहुंचा था तो हेमा यहां मौजूद थी, कालबैल के जवाब में अनुराग को दरवाजा ही उसने खोला था।''

अनुराग ने सहमति में सिर हिलाया।

''इसी वजह से शुरुआती दौर में बतौर कातिला श्रेया पर पुलिस का ऐतबार ज्यादा था जिसके बाल नेचुरली हल्के भूरे थे और जिसका कद काठ अनुराग के बयान की कथित कातिला के कद काठ से मिलता था। लेकिन जब दूसरे कत्ल की तफ्तीश के दौरान ये बात स्थापित हुई कि कातिला भूरे बालों का विग लगाये हो सकती थी तो शक की सूई फिर हेमा की तरफ घूम गयी, जहर तक जिसकी पहुंच पूर्वस्थापित थी। जनाब, आपकी बीवी समझती थी, उसको गुमान था कि उसने हर काम बड़ी चतुराई से, बड़ी सफाई से



Scanned by CamScanner

किया था लेकिन कत्ल के मामलात में परफेक्ट कुछ नहीं होता, कहीं न कहीं तकदीर कोई फच्चर डाल ही देती है। ये तकदीर का डाला फच्चर नहीं था तो और क्या था कि दोनों कत्लों के वक्त उसका ऐसा आमना सामना अनुराग से होने से बाल बाल बचा जिसमें कि अनुराग उसकी सूरत देख लेता।''

''ठीक।''–अनुराग बोला।

''हेमा की मूल योजना ये थी कि परमीत मेहरा का कत्ल और उसके बाद होने वाले कत्ल किसी सिरफिरी कातिला के, फीमेल होमीसिडल मैनियाक के, काम लगते। तीन कत्ल, जिनका कोई दूरदराज का उद्देश्य भी सामने न होता, जिनमें मकतूलों में कोई आपसी रिश्ता स्थापित न होता, जो एक दूसरे से वाकिफ तक न होते, यकीनन पुलिस के लिये बड़ी, न हल हो सकने वाली, पहेली बन के रह जाते। कहने का मतलब ये है कि जब दो टोटली अनकनैक्टिड मर्डर्स के बाद शशांक साहनी का कत्ल वाकया होता तो वो उस सीरीज का ही हिस्सा दिखाई देता जिसका सेहरा पुलिस किसी अनजान, गुमनाम, सिरफिरी कातिला के सिर बांधे थी। किसी दूरदराज तरीके से भी उसका रिश्ता उसकी भाभी से जोड़ पाना मुमकिन न हो पाता। इस स्कीम की एक जरूरत ये भी थी कि तमाम वारदात इसी इलाके में होतीं ताकि तीसरा–शशांक का–कत्ल स्वाभाविक तौर पर एक सीरीज का हिस्सा जान पड़ता। जान पड़ता कि क्योंकि सिरफिरी कातिला इस इलाके में विचरती थी इसलिये ये महज इत्तफाक था कि उसका तीसरा शिकार शशांक साहनी बना था। आप समझ रहे हैं मेरी बात?''

तीनों ने सहमति में सिर हिलाया।

''आपकी बीवी ने अपनी स्कीम बहुत नफासत से, उसकी हर नोक पलक संवारकर बनाई थी। अपना पहला शिकार परमीत मेहरा उसने ऐन फिट चुना था और उतना ही परफेक्ट उसने शाम का वो वक्त चुना था जबकि धुंध की वजह से सर्दियों का अन्धेरा और भी गहराया हुआ था। जबकि वो जानती थी कि सुस्त मौसम के हवाले टेलीविजन के आगे बैठे आप अपनी स्थापित आदत के मुताबिक ऊंघ रहे होते–बल्कि सो ही गये होते–और जबकि हैबीटैट में पिक्चर के प्रोग्राम की वजह से श्रेया घर न होती–और अनुराग उसके साथ होता–इसलिये उसके एकाएक आ जाने का कोई खतरा न होता। एकता शुक्ला जैसे महरून कलर के चमड़े के कोट का और मैचिंग



Scanned by CamScanner

कैप का और भूरे बालों के विग का हेमा ने पहले से इन्तजाम किया हुआ था ताकि उन चीजों को पहनकर जो हुलिया वो प्रोजेक्ट करती वो मोटे तौर पर एकता शुक्ला का होता और कत्ल के बाद शक होता तो एकता शुक्ला पर होता। मैं नहीं समझता कि उसे उम्मीद थी कि उसके उस स्टण्ट से एकता शुक्ला कत्ल के केस में फंस ही जाती लेकिन उसकी तरफ यूं तवज्जो जाना पुलिस को गुमराह करने के बाखूबी काम आता। अब यहां फच्चर वाली बात का दखल आता है जो साबित करती है कि कत्ल की कोई साजिश, कोई स्कीम परफेक्ट नहीं होती।''

''जैसे''–अनुराग के मुंह से निकला–''मैं और श्रेया पिक्चर न जा सके!''

''ऐग्जैक्टली! श्रेया में दयाभाव ज्यादा जान पड़ता है, ये एक्सीडेंट में घायल बच्चे को सम्भालने में लग गयी और वक्त पर तुम्हारे पास हैबीटैट सेंटर न पहुंच सकी। इसके वहां इन्तजार से आजिज आकर तुम वापिस लौट पड़े और जोरबाग रोड से ऐन उस घड़ी गुजरे जबकि परमीत मेहरा का कत्ल हो के हटा था और जहां तुम मोड़ पर तब हेमा से टकराने से बाल बाल बचे जबकि वो अपने कारनामे को अंजाम दे चुकने के बाद वहां से कूच कर रही थी।''

''तौबा!''–अनुराग मन्त्रमुग्ध स्वर में बोला–''कितना करीब था मैं! फिर भी पहचान न सका। लेकिन मोड़ काटते ही वो यूं एकाएक सामने पड़ी थी कि मेरी सूरत पर तो निगाह पड़ी ही नहीं थी, मेरी मुकम्मल तवज्जो तो टक्कर से बचने की तरफ थी, कुछ देखा तो बस साये का आकार देखा, पोशाक देखी। उसके हेमा होने की बाबत तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता था। हेमा तो मुझे यहां चाय सर्व करने की तैयारी में लगी मिली थी, चाय की ट्रे थामे किचन से बाहर निकलती मिली थी। कैसे...कैसे मुमकिन था! मोड़ पर मेरे से टकराते बची, फिर मेरे से पहले यहां पहुंच गयी, चाय भी तैयार कर ली...''

''माई डियर, तुम दोनों का वापिसी का सफर एक साथ शुरू नहीं हुआ था। उस टकराव से बचने के बाद तुम मकतूल की कार के करीब पहुंचे थे, उसके करीब ठिठके थे, तुमने भीतर ड्राईविंग सीट पर निश्चेष्ट पड़े परमीत मेहरा की तरफ तवज्जो दी थी, उसके हाल-बद्हाल की बाबत सोचा था, उसका छोटा मोटा मुआयना किया था, उस कोशिश में अपने फिंगरप्रिंट्स दरवाजे पर छोड़े थे और तब कहीं वापिस लौटे थे।''



Scanned by CamScanner

"लेकिन चाय..."

"हेमा चाय का पानी चूल्हे पर चढ़ाकर घर से निकली हो तो जाहिर है कि वापिसी पर पानी उसे उबलता मिलता। चाय बनाने में देर लगने वाला और कौन सा काम होता है?"

"कोई नहीं।"

"उसने करना क्या था? आकर एकता शुक्ला से मिलती जुलती अपनी पोशाक को और भूरे बालों वाले विग को उतार कर छुपाना था, उबलते पानी में चायपत्ती डालनी थी, चाय, चीनी, दूध, कप ट्रे पर रखने थे कि काम खत्म! कितना टाइम लग जाता इन कामों में? उससे तो कम ही लगता जितना तुमने रास्ते में अटक कर लगा लिया था!"

अनुराग ने सहमति में सिर हिलाया।

"तुम खुद कहते हो ये"–उसने शेखर की तरफ संकेत किया–"तुम्हें टीवी के सामने बैठे, छाती पर सिर डाले, झपकी लेते मिले थे। उस हालत में इन्हें घर में आये गये की क्या खबर लगी होती?"

"ठीक!"–शेखर ने अनुमोदन किया।

"जमा, लायब्रेरी से लौटने के बाद टीवी के सामने बैठे ऊंघ जाना इनकी स्थापित आदत बताई जाती है। हेमा ने इस आदत को भी कैश करना था जो कि उसने बाखूबी किया। गैस बर्नर पर उबलने को पानी चढ़ाकर वो पिछवाड़े के रास्ते से चुपचाप घर से निकली, अपने कारनामे को अंजाम दिया और चुपचाप लौट आयी। तुम"–उसने अनुराग की तरफ देखा–"यहां पहुंचे तो तुमने उसे चाय की ट्रे थामे, यूं चाय सर्व करने को तैयार देखा जैसे वो घर से बाहर कहीं गयी ही नहीं थी, शुरू से यहीं थी।"

"यू आर राइट, सर।"

"हेमा की प्रत्यक्षतः फूलप्रूफ स्कीम में सबसे बड़ा फच्चर मकतूल की कार पर छूटे तुम्हारे फिंगरप्रिंट्स थे, जिनकी–पुलिस के पास रिकार्ड होने की वजह से–आननफानन शिनाख्त हो गयी, आगे तुम्हारी शिनाख्त हो गयी और पुलिस यहां आ धमकी। मुझे यकीन है कि पुलिस की एकाएक यहां आमद से हेमा को दिल का दौरा पड़ते बचा होगा। जरूर उसने यही सोचा होगा कि किसी करिश्माई तरीके से, बदकिस्मती के किसी अनचीन्हे थपेड़े से उसका खेल शुरू हो पाने से पहले ही खत्म हो गया था। वर्ना क्योंकर एक अनजान कातिल की तलाश में भटकते फिरने की जगह पुलिस नाक की सीध में यहां पहुंच



Scanned by CamScanner

गयी थी! पुलिस के पास हेमा पर शक करने की कोई वजह नहीं थी लेकिन वारदात के फौरन बाद पुलिस को अपने इतने करीब देखकर बड़े बड़े तजुर्बेकार कातिलों के छक्के छूट जाते हैं। उसकी स्कीम के मुताबिक तो पुलिस का इधर रुख भी नहीं होना चाहिये था, इस हाउसहोल्ड की तरफ उनकी तवज्जो तक नहीं जानी चाहिये थी!"

"ठीक!"

"लेकिन बुरे संयोगों का दौर यहीं तक सीमित रहा होता तो भी कोई बात थी। हेमा की स्कीम में ये भी एक बड़ा फच्चर था कि शशांक साहनी का एकता शुक्ला से अफेयर निकल आया। पहले कत्ल के बाद हेमा के असली शिकार के–अल्टीमेट टारगेट के–इसी इलाके में रहती एक कालगर्ल से ऐसे ताल्लुकात को हवा मिल गयी जिनकी कि हेमा को कतई कोई खबर नहीं थी। उन ताल्लुकात का एक्सपोज मीडिया में छपा, उस स्कैण्डल ने शशांक साहनी के होश उड़ा दिये। एक्सपोज की वजह एकता शुक्ला बनी लेकिन वो मजबूर थी, उस पर ऐसा चौतरफा दबाव पड़ा कि वो शशांक साहनी से अपने ताल्लुकात की बाबत खामोश न रह सकी, शशांक साहनी से खामोश रहने की कीमत हासिल कर चुकने के बावजूद खामोश न रह सकी। वो मीडिया की निगाहों में आयी तो शशांक की एक गलत मूव की वजह से वो भी मीडिया की निगाहों में आ गया। नतीजतन अखबारों की उसकी बाबत सुर्खियों ने उसके किरदार को चाक चाक करके रख दिया।"

"मीडिया ने ओवररियेक्ट किया।"–शेखर तीखे स्वर में बोला–"उन्हीं की वजह से शशांक की मंगनी टूटी, उसकी समाजी महत्वाकांक्षाओं का खून हुआ और वो गम्भीर डिप्रेशन की गिरफ्त में आ गया।"

"और इसी वजह से आपको अन्देशा सताने लगा कि कहीं वो खुदकुशी न कर ले। आपकी खास खुराफाती बीवी ने इस बात को भी कैश करने की जुगत लगा ली। लेकिन वक्त कम होने की वजह से कोई नफीस प्लान वो न बना सकी, उसने जो किया, जल्दबाजी में किया इसलिये उसको खबर न लग सकी कि मेरी दरख्वास्त पर पुलिस ने सारे इलाके की खामोश निगाहबीनी का इन्तजाम किया हुआ था।"

"आपकी ऐसी दरख्वास्त किसलिये?"

"क्योंकि मुझे आपकी बीवी पर शक था। और मैं नहीं चाहता था कि उसे अब तीसरे कत्ल को अंजाम देने का मौका मिलता।"



Scanned by CamScanner

"ओह!"

"बहरहाल अपनी नयी स्कीम के मुताबिक उस पर अमल की जल्दी तैयारी के साथ शशांक का काम तमाम करने की नीयत से जब वो घर से निकली तो उसे नहीं मालूम था कि वो हर क्षण पुलिस की निगाह में थी। पहले सिपाही सुलतान सिंह की उस पर निगाह थी जो यहां से उसके निकलते ही साये की तरह उसके पीछे लग लिया था और उसे खबर नहीं हुई थी, फिर वो सब-इन्स्पेक्टर पुनीत बहल की निगाह में थी जिसने उसे मार्बल आर्क के गैराज का आटोमैटिक डोर अपने पास उपलब्ध रिमोट से खोलकर भीतर जा छुपते अपनी आंखों से देखा था। फिर अपनी कार पर शशांक को वहां पहुंचते और गैराज में बन्द होते देखा था। आगे भीतर जो ड्रामा वाकया हुआ था उसका काफी सारा हिस्सा वो दरवाजे और चौखट की झिरी में कभी आंख तो कभी कान लगाकर देख सुन चुका था। वो शशांक के सिर पर मंडराते खतरे से पूरी तरह से वाकिफ था लेकिन ये भी जानता था कि कार का इंजन चलते रहने से एग्जास्ट से निकलती कार्बन मोनोआक्साइड गैस फौरन ही जान नहीं ले सकती थी। शशांक की खुदकुशी की स्टेज सैट करके जब हेमा वहां से रुखसत हुई तो उसने सिपाही सुलतान सिंह को फिर उसके पीछे लगा दिया, खुद वो गैराज के दरवाजे की लॉकिंग तोड़कर भीतर दाखिल हुआ, उसने कार का इंजन बन्द किया और शशांक साहनी को कार से बाहर निकाला।"

कोई कुछ न बोला।

"आगे जो हुआ उसकी आपको खबर है। शशांक की यहां ड्रामेटिक एन्ट्री का मैंने जो इन्तजाम किया उसका, आप सबने देखा ही था कि, हेमा पर क्या असर हुआ था! शशांक को जिन्दा अपने सामने देखकर उसके प्राण कांप गये थे। उस पर निगाह पड़ते ही जो भयानक चीख उसके मुंह से निकली थी, उसने उसके गुनाह को निर्णायक रूप से मोहरबन्द कर दिया था। वो समझ गयी थी कि उसका खेल खत्म था। वो हर बात से मुकर सकती थी, हर इलजाम को झुठला सकती थी लेकिन शशांक के बयान का, अपने शिकार का, भुक्तभोगी का कोई तोड़ नहीं निकाल सकती थी इसलिये अपनी जुबानी उसने अपना गुनाह कुबूल किया और खुद अपना इंसाफ किया। कैसी भी थी, बहादुर औरत थी जो खुद अपना जज और एग्जीक्यूशनर बनी। मे हिज सोल रैस्ट इन पीस।"



Scanned by CamScanner

❑❑❑

केस का समापन हो गया।

लेकिन उसके बाद भी कुछ ऐसी घटनायें घटित हुईं, पिछली घटनाओं का असर जिन पर था इसलिये जो जिक्र के काबिल थीं।

मौत का निवाला बनने से बाल बाल बचा शशांक बिलकुल बदल गया। उसमें ऐसा आमूलचूल परिवर्तन स्पष्टतया दिखाई देने लगा कि वो पहले वाला अभिमानी, बड़बोला, खुन्दकी शशांक लगता ही नहीं था।

उस बात का शिवांगी पुंज पर–उसका योरोप भ्रमण पर निकलना उसके पिता का शशांक को हतोत्साहित करने के लिये बोला झूठ साबित हुआ था–ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने पिता के हुक्म पर न सिर्फ मंगनी की अंगूठी लौटाने से इनकार कर दिया बल्कि जिद ठान ली कि वो शादी करेगी तो शशांक से ही करेगी।

स्वराज पुंज को उसकी जिद के आगे झुकना पड़ा।

बहुत धूमधाम से शशांक और शिवांगी की शादी हुई जिसमें शेखर ने सिर पर गुलाबी पगड़ी बांधकर शिरकत की और पिता का रोल निभाया।

उसी मंडप में अनुराग और श्रेया की शादी हुई और शेखर ने कन्यादान का पुन्य कमाया।

दूसरी इंकलाबी घटना ये घटित हुई कि शशांक ने अपने बड़े भाई को कानूनी तौर पर अपना बिजनेस पार्टनर और अपने पिता के विरसे का बराबर का हकदार घोषित किया। ये भी विडम्बना थी कि शेखर साहनी की जो औकात खून से हाथ रंग कर और खुद अपनी जान देकर हेमा के बनाये न बनी, वो हेमा की मौत के बाद उसकी अनायास बन गयी।

साहनी बिल्डर्स का पार्टनर बन जाने पर शेखर को मजबूरन अपनी लायब्रेरियन की नौकरी छोड़नी पड़ी लेकिन वैसा करने पर पीछे एक नहीं, दो वेकेन्सियां पैदा हुईं।

और चन्द दिनों के बाद शेखर की पत्नी बनने जा रही सुरभि परमार का लायब्रेरी की नौकरी करते रहने का कोई मतलब जो नहीं रहा था।

❑❑❑

Scanned by CamScanner

This Novel is
Scanned by
Chinmay Panda
comicsmylife@gmail.com
Visit my blog
comicsmylife.blogspot.com
comicsmylife-blogspot.in

Scanned by CamScanner